comicsmylife.blogspot.in
नया उपन्यास
अनिल मोहन
केकड़ा
देवराज चौहान सीरीज
comicsmylife.blogspot.in

देवराज चौहान ने करना था एक कत्ल, रतनचंद का और रतनचंद को बचाने आ गया R.D.X.!

R.D.X. यानि कि

R – राघव

D – धर्मा

X – एक्स्ट्रा (X–TRA)

और रतनचंद का निशाना लेना देवराज चौहान को समस्या, जैसा लगने लगा।

केकड़ा

"जिसे तू रतनचंद समझ रहा है, वो रतनचंद नहीं, देवराज चौहान है।"–एक्स्ट्रा (X–TRA) ने कड़वे स्वर में कहा।

"ये नहीं हो सकता!" सुन्दर की आंखें फैल गईं।

"ये ही हुआ पड़ा है। देवराज चौहान ने हमें तगड़ा गच्चा दिया है।" एक्स्ट्रा खुन्दक भरे स्वर में बोला–"वो हमारे बीच रहता रहा, परन्तु हमें पता न चला। राघव जब जगजीत से मिलने गया तो, देवराज चौहान ने वहां अपने बंदे भेज दिए कि राघव को पकड़ कर कैद में डाला जा सके। धर्मा जब बाहर निकला तो देवराज चौहान पहले ही बाहर जा खड़ा हुआ और उसके रतनचंद होने की वजह से, धर्मा गच्चा खा गया और फंस गया।"

"लेकिन देवराज चौहान ऐसा कैसे कर पायेगा? सेठ जी की जगह कैसे ली होगी?"

"रतनचंद के चेहरे वाला फेस मॉस्क तो देवराज चौहान ने बनवा लिया था। उस दिन जब हम रतनचंद के साथ उसके साले की शादी पर गये, रतनचंद गनमैन बना, हमारे साथ मौजूद था, तो वहां काशीनाथ ने हो-हल्ला किया।"

सुन्दर ने सिर हिलाया।

"उसी हो-हल्ले में देवराज चौहान ने रतनचंद पर हाथ डाला। वो जानता था कि रतनचंद गनमैन बना हुआ है। मैं नहीं जानता कि ये खबर देवराज चौहान तक कैसे पहुंची, बहरहाल वो ही वक्त था, जब देवराज चौहान ने रतनचंद की जगह ले ली और रतनचंद को अपनी कैद में कर लिया। मुझे याद है, तब मैं रतनचंद के पास गया था और उसके चेहरे पर लगी दाढ़ी को मैंने ही ठीक किया था, जो कि एक तरफ हटकर लटक रही थी। तब मुझे क्या मालूम था कि मैं रतनचंद की नहीं, देवराज चौहान की दाढ़ी ठीक कर रहा हूं।"

उपन्यास : केकड़ा (देवराज चौहान सीरीज़)
उपन्यासकार : अनिल मोहन

प्रकाशक : रवि पॉकिट बुक्स,
33, हरी नगर, मेरठ–250 002
फोन : (0121) 2531011
फैक्स : (0121) 2521067
टाइप सैटिंग : राधिका कम्प्यूटर्स, मेरठ
मुद्रक : न्यू रिषभ ऑफसैट प्रिन्टर्स, मेरठ।

केकड़ा : उपन्यास : अनिल मोहन

मूल्य : चालीस रुपये मात्र

कौन था केकड़ा.... ?
जो देवराज चौहान के हर कदम की खबर रतनचंद को दे रहा था। ये महसूस करके देवराज चौहान ने रतनचंद को शूट करने का काम दूसरे नम्बर पर रख दिया, और अब पहला काम केकड़ा के बारे में हकीकत जानना था....।

प्रकाशक :
रवि पॉकिट बुक्स

प्रकाशक :
रवि पॉकेट बुक्स
33, हरी नगर, मेरठ शहर - 250 002

अनिल मोहन का नमस्कार,

हाजिर है, देवराज चौहान सीरीज का नया उपन्यास **'केकड़ा'**।

रवि पॉकेट बुक्स से पूर्वप्रकाशित मोना चौधरी सीरीज का **'हुक्म मेरे आका'** पढ़ा और पसन्द किया गया, मुझे आशा है कि **'केकड़ा'** भी आपको पसन्द आयेगा।

'केकड़ा' में R.D.X. का जिक्र आता है, तो लगता है, किसी बारूद का जिक्र हो रहा है। परन्तु मैं बारूद के रूप में तिकड़ी पेश कर रहा हूं। R–राघव, D–धर्मा, X–एक्स्ट्रा (X-TRA)। पाठकों, तीन पात्रों की तिकड़ी खतरनाक है, मजेदार है। प्रस्तुत उपन्यास **'केकड़ा'** में इस तिकड़ी को **देवराज चौहान** के सामने खड़ा किया गया है और ये तिकड़ी अच्छी रही है उपन्यास में। देवराज चौहान सीरीज के चंद उपन्यासों में आपको R.D.X. मिलेंगे, उसके बाद R.D.X. सीरीज के रूप में आपको उपन्यास मिलने लगेंगे। परन्तु इसके लिये मुझे आपके विचार भी जानने हैं। उपन्यास पढ़िये और अपनी राय लिख भेजिये।

'केकड़ा' में देवराज चौहान को एक कत्ल करना था और R.D.X. ने कत्ल होने से बचाना था। पूरे उपन्यास में देवराज चौहान और R.D.X. की खींचातानी है, चालबाजियां हैं, चालाकियां हैं। यूं देवराज चौहान के सामने किन्हीं नये पात्रों को खड़े कर देना आसान नहीं, परन्तु मेरे ख्याल में R.D.X. देवराज चौहान के सामने बेहतर टिके रहे हैं।

रवि पॉकेट बुक्स के आगामी सैट में मोना चौधरी सीरीज का नया उपन्यास **'अघोरी'** प्रकाशित होगा। हाल ही में आपने मोना चौधरी सीरीज़ का उपन्यास 'खबरी' पढ़ा। जिसमें शैतान का बेटा, भवतारा नर्क से मानवीय जीवन में वापस, धरती पर आना चाहता है, ताकि इन्सानों का खून पी सके। पूरा उपन्यास इसी घटनाक्रम पर था और 'भवतारा' धरती पर आ भी पहुंचा। परन्तु मोना चौधरी, मंगलू और सतपाल की दिल दहला देने वाली चेष्टाओं के पश्चात ही शैतान के बेटे भवतारा को खत्म

अब प्रकाशित होने वाला **'अघोरी'** भी कुछ इसी तरह का हॉट टच लिए होगा। मेरी पूरी चेष्टा होगी कि तंत्र-मंत्र के चेहरे को नये अंदाज में आपके सामने पेश कर सकूं। शैतान का बेटा भवतारा, मोना चौधरी, सतपाल और मंगलू की वजह से वापस नर्क में पहुंच चुका है और वो मोना चौधरी पर क्रोधित है, सतपाल और मंगलू पर उसे गुस्सा है, वो नर्क से ही अपनी ताकतों का इस्तेमाल करके इन तीनों को मार देना चाहता है। इसके लिए वो इस्तेमाल करता है अपने तांत्रिकों को, अघोरियों को—जो कि भवतारा के आशीर्वाद से बेपनाह ताकतों के मालिक हैं। रवि पॉकेट बुक्स से प्रकाशित होने वाला मेरा आगामी उपन्यास **'अघोरी'** अवश्य पढ़ें, क्योंकि तांत्रिकों के करतबों और इस रहस्यमय दुनियां के चंद भीतरी रहस्यों को जानने का भी आपको मौका मिलने जा रहा है।

तो अब शुरू करते हैं देवराज चौहान सीरीज का उपन्यास **'केकड़ा'**।

रवि पॉकेट बुक्स के आगामी सैट में शीघ्र ही मुलाकात होगी मोना चौधरी सीरीज के उपन्यास **'अघोरी'** में।

शेष फिर

आपका अपना

अनिल मोहन

पोस्ट बॉक्स नम्बर - 6627

नई दिल्ली - 110018

(देवराज चौहान सीरीज)

केकड़ा

अनिल मोहन

देवराज चौहान ने सड़क के किनारे कार रोकी कि जगमोहन दरवाजा खोल कर बाहर निकला।

"मैं पांच मिनट में आया।" कहते हुए वो सामने नज़र आ रहे शॉपिंग सेंटर की तरफ बढ़ गया।

देवराज चौहान ने इंजन बंद किया और सिग्रेट सुलगा ली।

पीछे वाली सीट पर सोहनलाल पसरा, गोली वाली सिग्रेट के कश ले रहा था।

"इधर क्या काम था जगमोहन को?" सोहनलाल ने पूछा।

"किसी से मिलना था।" देवराज चौहान ने कार से बाहर देखते हुए कहा।

"किससे?"

"ये मैं भी नहीं जानता। पूछा भी नहीं मैंने।"

आज गर्मी ज्यादा थी। तेज धूप थी और हवा चलने का कहीं अता-पता नहीं था। रह-रहकर चेहरे पर पसीने की लकीरें नज़र आने लगती थीं। देवराज चौहान ने गालों और गले पर आये पसीने को उल्टी हथेली से साफ किया और जेब से रूमाल निकाल कर चेहरे पर फेरने लगा।

सोहनलाल ने कलाई पर बंधी घड़ी में वक्त देखा। दोपहर के ढाई बज रहे थे।

"कहीं लंच करें। मैंने आज नाश्ता भी ठीक से नहीं किया। भूख लग रही है।" सोहनलाल बोला।

"जगमोहन को आने दो। लंच भी ले लेंगे।"

"यहां से थोड़ा आगे ही, एक रैस्टोरेंट है, वहां....।"

सोहनलाल अपनी बात पूरी न कर सका।

तभी दरवाजा बाहर से खुला, जहां से जगमोहन निकल कर गया था और चालीस-ब्यालीस बरस का एक आदमी भीतर आ बैठा। दरवाजा बंद कर लिया।

देवराज चौहान ने आंखें सिकोड़कर उसे देखा।

सोहनलाल भी सीधा होकर बैठ गया।

"कौन हो तुम, और भीतर कैसे बैठ गये?" देवराज चौहान कह उठा।

सोहनलाल का हाथ जेब में पड़ी रिवाल्वर पर जा पहुंचा।

"तुम्हारे पास बैठकर मुझे अच्छा लग रहा है देवराज चौहान।" वो व्यक्ति मुस्कराकर बोला।

देवराज चौहान सतर्क नज़र आने लगा।

सोहनलाल ने रिवाल्वर निकालकर हाथ में ले ली।

"मेरा नाम प्रताप कोली है।" वो पुनः बोला।

"बाहर निकलो।" पीछे बैठे सोहनलाल ने कहा।

"ऐसा मत कहो, मैं तुम्हारा दोस्त हूं सोहनलाल।"

"ओह! तो तुम मुझे भी जानते हो।"

"दोस्तों के बारे में जानकारी रखनी पड़ती है।"

तभी देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं।

कार के बोनट के पास दो व्यक्ति टेक लगाकर खड़े हो गये थे।

यकीनन वो इसी प्रताप कोली के साथ थे।

"ये आदमी तुम्हारे ही हैं।" देवराज चौहान बोला।

"हां। लेकिन इस बारे में तुम्हें ज्यादा सोचने की जरूरत नहीं। ये हमारी सुरक्षा के लिये हैं।"

"सुरक्षा? किससे?"

"तुम्हारे दुश्मन से, या मेरे दुश्मन से। कोई हम पर अचानक हमला न कर दे।" प्रताप कोली मुस्करा कर कह उठा।

"तुम हमारा पीछा कर रहे थे?"

"हां।"

"क्यों?"

"तुमसे बातें जो करनी थीं।"

"क्या चाहते हो?" पूछते हुए देवराज चौहान ने कश लिया और सिग्रेट बाहर उछाल दी।

"सौदा।"

"बोलते रहो।"

"सिर्फ एक मर्डर के लिए मैं तुम्हें तगड़ी रकम दूंगा।" प्रताप कोली ने कहा।

"किसी और को ढूंढ लो।"

"क्यों?"

"मैं किसी के लिए काम नहीं करता। किसी के कहने पर किसी का मर्डर नहीं करता।" देवराज चौहान ने सपाट स्वर में कहा।

"देवराज चौहान, तुम तो यूं कह रहे हो, जैसे किसी का मर्डर किया ही न हो।" प्रताप कोली ने उसे देखा।

देवराज चौहान मुस्कराया।

"ये हुई न बात।" प्रताप कोली भी मुस्करा पड़ा—"तुम मुस्कराते हुए बहुत अच्छे लगते हो।"

"दरवाजा खोलो और बाहर निकल जाओ।"

"क्या?" प्रताप कोली के चेहरे पर अजीब से भाव उभरे—"तुम काम करने को तैयार नहीं हो?"

"नहीं।"

"तो मुस्कराये क्यों?"

"तुम्हारी बात पर।"

प्रताप कोली ने पहलू बदला और खुद पर सब्र रखते हुए कह उठा—

"एक मर्डर के लिए तुम्हें एक करोड़ रुपया दे सकता हूं।"

"कार से निकलो।"

"ठीक है, डेढ़ करोड़..."

"बाहर निकल जाओ।" देवराज चौहान का स्वर शांत था।

प्रताप कोली ने देवराज चौहान से पूछा—

"बुरा न मानो तो एक बात पूछूं...?"

देवराज चौहान उसे देखने लगा।

"तुम्हारा दिमाग तो ठिकाने है?"

"इसमें बे-ठिकाने वाली कौन सी बात आ गई?"

"मैं तुम्हें एक मर्डर के लिये डेढ़ करोड़ रुपया दे रहा हूं और तुम ना-ना करते फिर रहे हो।"

"मैं किसी के कहने पर किसी का मर्डर नहीं करता।"

"बेशक डेढ़ करोड़ मिलें?"

"ठीक समझे—तुम यहां से बाहर निकलो।"

प्रताप कोली कुछ कहने लगा कि पीछे से सोहनलाल ने रिवाल्वर वाला हाथ आगे कर दिया।

प्रताप कोली ने रिवॉल्वर पर नज़र मारी, फिर गर्दन घुमाकर सोहनलाल को देखा।

सोहनलाल ने दांत फाड़ दिए।

"मैं शराफत की बातें कर रहा हूं और तुम लोग मुझे रिवॉल्वर दिखा रहे हो।"

"हम भी शराफत से बात कर रहे हैं। रिवॉल्वर चलाई नहीं, दिखाई है। तेरे को दस बार कह दिया कि निकल बाहर तो बाहर निकल जा। देवराज चौहान मर्डर नहीं करेगा। बात खत्म, रास्ता नाप ले अपना।"

प्रताप कोली ने सिर हिलाया और दरवाजा खोलकर बाहर निकल गया।

"अब मेरा पीछा मत करना।"—देवराज चौहान ने कहा।

प्रताप कोली कुछ न बोला। वहीं खड़ा रहा।

तभी सामने से जगमोहन आता दिखा तो सोहनलाल कह उठा—

"साहब आ रहे हैं, पीछे हट जा।"

प्रताप कोली एक तरफ हट गया।

देवराज चौहान के कार स्टार्ट करते ही, बोनट से टेक लगाकर खड़े दोनों व्यक्ति एक तरफ हो गये।

जगमोहन पास पहुंचा। उसने प्रताप कोली और दोनों व्यक्तियों पर नज़र मारी।

"क्या बात है?" जगमोहन ने पूछा।

"अन्दर बैठ।" भीतर से सोहनलाल ने कहा—"मैं बताता हूं।"

उलझन में फंसा जगमोहन कार के भीतर बैठा, दरवाजा बंद किया तो देवराज चौहान ने कार आगे बढ़ा दी।

प्रताप कोली कार को जाता देखता रहा।

वो दोनों आदमी उसके पास पहुंचे और एक ने पूछा।

"क्या हुआ—क्या बोला देवराज चौहान?"

"नहीं माना।" प्रताप कोली ने कहते हुए जेब से मोबाईल निकाला और नम्बर मिलाने लगा।

"तुमने क्या ऑफर दी?"

"डेढ़ करोड़।" प्रताप कोली ने फोन कान से लगा लिया।

"तब भी नहीं माना, हैरानी है।" दूसरा बोला।

तभी प्रताप कोली के कानों में दूसरी तरफ से दिनेश चुरू की आवाज पड़ी।

"बोल।"

"देवराज चौहान से बात की, वो नहीं मानता।"

"क्या कहता है?"

"मेरे को कार से बाहर निकाल दिया, बोलता है कि वो किसी के कहने पर किसी का मर्डर नहीं करता।" प्रताप कोली ने फोन पर कहा।

"तूने ठीक से बात नहीं की होगी।" दिनेश चुरू की सोच भरी आवाज कानों में पड़ी।

"तेरे को ऐसा लगता है क्या?"

दिनेश चुरू की तरफ से आवाज न आई।

प्रताप कोली फोन कानों से लगाए खड़ा रहा।

"देवराज चौहान गया?"

"हां।"

"उस पर इस वक्त कौन नज़र रख रहा है?"

"मुकेश।"

"मैं देवराज चौहान से बात करूंगा। मुकेश से कहना कि मुझे खबर करे, देवराज चौहान किधर है।"

"ठीक है, मैं अभी मुकेश को फोन कर देता हूं।" प्रताप कोली ने फोन काटा और मुकेश का नम्बर मिलाया।

"हैलो।" फौरन ही मुकेश की आवाज कानों में पड़ी।

"कहां है देवराज चौहान?"

"अभी-अभी उनकी कार एक रैस्टोरेंट के सामने रुकी है, मेरा ख्याल है कि वो लंच करेंगे। हां—वो अब कार से बाहर निकले हैं और...अब रैस्टोरेंट की तरफ जा रहे हैं।"

"ठीक है। दिनेश को फोन कर और देवराज चौहान की पोजीशन उसे बता। दिनेश वहां पहुंचेगा।"

❑❑❑

जगमोहन को जब पता चला कि एक मर्डर के लिए कोई डेढ़ करोड़ दे रहा था और देवराज चौहान ने इन्कार कर दिया तो, उसका मूड खराब हो गया।

"क्या हर्ज था।" जगमोहन कह उठा—"उनसे बात कर लेते। एक मर्डर ही तो करना था।"

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा। ड्राईव करता रहा।

जगमोहन ने गर्दन घुमाकर सोहनलाल को देखा।

"तूने देवराज चौहान को समझाया नहीं?"

"समझाया?" सोहनलाल सकपका उठा—"मैं समझाऊंगा?"

"तेरे को समझाने में शर्म आती है?"

"समझदार को क्या समझाता मैं।"

"कोई समझदार नहीं होता। इन्सान बूढ़ा हो जाने के बाद भी नई-नई बातें सीखता रहता है। कई बार समझ नहीं होती, परन्तु समझाने पर आ जाती है। एक बार तो समझाया होता देवराज चौहान को।"

"अच्छा।" सोहनलाल ने कुछ ज्यादा ही लम्बी सांस ली।

"क्या अच्छा?"

"अब समझाऊंगा।"

"तो समझा।"

"ये मौका तो हाथ से निकल गया। अगले किसी मौके पर समझाऊंगा।"

जगमोहन ने सोहनलाल को घूरा।

सोहनलाल दांत दिखा कर कह उठा—

"भूख लग रही है, तेरे को बढ़िया जगह लंच कराता हूं।"

"मेरी तो भूख ही मिट गई। अब तो नमक का भी स्वाद नहीं आयेगा।" जगमोहन ने उखड़े स्वर में कहा।

कुछ देर बाद सोहनलाल के कहने पर एक रैस्टोरेंट के सामने कार रोक दी।

❑❑❑

तीनों ने लंच किया।

इस दौरान जगमोहन उखड़ा-सा चुप-चुप ही रहा।

देवराज चौहान जगमोहन की मीठी नाराजगी को महसूस करके मुस्कराने लगता था।

लंच के बाद वेटर बर्तन ले गया। उन्होंने तीन कॉफी का आर्डर दिया।

तभी उनके पास पैंतीस वर्षीय व्यक्ति आ खड़ा हुआ। कठोर से चेहरे, परन्तु सभ्य-से दिखने वाले इस व्यक्ति के चेहरे पर शांत सी मुस्कान उभरी हुई थी।

तीनों ने उसे आते देखा तो वो बोला—

"क्या मैं आप लोगों के साथ बैठ सकता हूं?"

"क्यों?" जगमोहन ने उसे घूरा।

देवराज चौहान एकटक उस व्यक्ति को देख रहा था।

"मैं प्रताप कोली का दोस्त हूं, जो कुछ देर पहले देवराज चौहान से मिला था।"

"डेढ़ करोड़ वाला प्रताप कोली?"

"हां—वो ही।"

जगमोहन का चेहरा चमक उठा।

"बैठो-बैठो, खड़े क्यों हो?"

सोहनलाल ने देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान का चेहरा शांत था।

दिनेश चुरू खाली पड़ी कुर्सी पर बैठ गया।

"नाम क्या है तुम्हारा?" जगमोहन ने पूछा।

"दिनेश चुरू।"

"इस काम के लिये मैं इन्कार कर चुका हूं।" देवराज चौहान ने कहा।

"सुन तो लेने दो क्या कहता है।" जगमोहन बोला—"शायद कोई नई बात ले के आया हो।"

देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा।

जगमोहन ने तुरन्त मुंह फेर लिया और सोहनलाल से बोला—

"तुम इसे समझाओ, तब तक मैं दिनेश चुरू से बात करता हूं।"

सोहनलाल खामोश रहा

"तो तुम लोग किसी का मर्डर करवाना चाहते हो देवराज चौहान से और बदले में डेढ़ करोड़ दे रहे हो।"

"हां।"

"अब तुम्हें क्या कहूं, खून-खराबा अच्छी बात नहीं होती।"

"इस काम का दो करोड़ भी मिल सकता है।"

"दो करोड़, एक मर्डर के लिए?"

दिनेश चुरू ने सिर हिलाया।

"लेकिन देवराज चौहान का उसूल है कि दो बन्दों की लड़ाई में दखल न दो। तुम जिसका मर्डर कराना चाहते हो, उसका तुम लोगों के साथ पंगा होगा—इसलिए हमारा बीच में आना किसी भी तरफ से ठीक नहीं।"

निदेश चुरू के चेहरे पर गम्भीरता नज़र आने लगी।

"जिसे मारना है, हमारी उससे कोई दुश्मनी नहीं।"

"कोई दुश्मनी नहीं?"

"जरा भी नहीं।"

जगमोहन ने देवराज चौहान को देखकर कहा—

"सुना तुमने! ये शरीफ लोग हैं। जिसकी जान लेना चाहते हैं, उसके साथ इनकी कोई दुश्मनी नहीं है।"

"मेरी बात को मजाक में मत लो जगमोहन।"

"मैं मजाक में नहीं ले रहा, गम्भीर हूं। ये बताओ कि फिर क्यों उसकी जान लेने के लिए दो करोड़ खर्च कर रहे हो?"

"वो एक सफेदपोश है। दिखावे के तौर पर सफेद धंधे करता है और शहर में इज्जतदारों की तरह रहता है। जबकि हकीकत में वो ड्रग्स किंग है। नशे का व्यापार करता है वो और युवा पीढ़ी को बरबादी की गर्त में भेज रहा है।"

"कौन है वो?"

"रतनचंद कालिया। शहर का नामी आदमी है।"

देवराज चौहान एकटक दिनेश चुरू को देख रहा था।

जगमोहन ने फौरन देवराज चौहान से कहा—

"अगर ये सही कह रहा है तो फिर मर्डर किया जा सकता है।"

"मैं सही कह रहा हूं।"

"माना कि तुम सही कह रहे हो, लेकिन तुम क्यों दो करोड़ खर्च कर रहे हो। शहर में और भी ढेरों लोग हैं....।"

"मैं नहीं खर्च कर रहा।"

"तो?"

"शोरी साहब खर्च कर रहे हैं।"

"ये कौन हैं साहब?"

"नागेश शोरी। शहर के चंद दौलतमंदों में से एक हैं और शोरी साहब को नशे से सख्त नफरत है। दो करोड़ इनके लिए ऐसी रकम है जैसे हम लोगों के लिए दो सौ रुपये। शोरी साहब को पैसे की जरा भी परवाह नहीं है।"

जगमोहन के चेहरे पर सोच के भाव नाच उठे, वो दिनेश चुरू को देखने लगा था।

दिनेश चुरू गम्भीर था।

तभी वेटर तीन कॉफी ले आया।

"एक और कॉफी ले आओ।" जगमोहन ने कहा।

वेटर चला गया।

"इस काम के लिये तुम्हें दो लाख में भी बंदे मिल सकते हैं।" जगमोहन ने कहा।

"शिकार दमदार हो तो, शिकारी को भी दमदार होना चाहिये। तभी बात बनती है।" दिनेश चुरू बोला—"हमने कम से कम बीस नामी आदमियों की लिस्ट शोरी साहब को सौंपी, जो ये काम करने का हौंसला रखते हैं और उन बीस में से उन्होंने, देवराज चौहान को पसन्द किया कि ये काम देवराज चौहान को सौंपा जाये। उसके बाद हम लोगों ने देवराज चौहान को गुप-चुप तौर पर ढूंढने में दो महीने लगा दिए। अब जाकर हमारी बात हो रही है।"

देवराज चौहान ने कॉफी का घूंट भरा।

"लो तुम काफी पियो। खाली बैठोगे तो मुझे देखते रहोगे।" जगमोहन ने उसकी तरफ कॉफी का प्याला सरकाया।

"एक मर्डर के लिये दो करोड़ कम नहीं होते।"

"अभी मोल-भाव का वक्त नहीं आया।"

"क्या मतलब?"

"पहले ये देखना है कि रतनचंद कालिया के बारे में तुमने जो कहा है, क्या वो सच है?" जगमोहन बोला।

"सच है।"

"तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं किया जा सकता।"

"तो?"

"हम खुद पता लगायेंगे।"

दिनेश चुरू ने जेब से अखबारों की कटिंग्स का पुलन्दा निकालकर उसके सामने टेबल पर रखा।

"ये अखबारों की कटिंग्स हैं, जिनसे ये स्पष्ट हो जाता है कि रतनचंद कालिया ड्रग्स के धंधे में गले तक फंसा पड़ा है। इन खबरों में, पुलिस द्वारा ड्रग्स को जब्त किए जाने की जगहों का विवरण है और हर जगह रतनचंद कालिया ही है।"

"इन अखबारों की कटिंग को तुम साथ लिए घूम रहे हो?" जगमोहन के होंठ सिकुड़े।

"यहां आने से पहले इन्हें साथ ले लिया, कि कहीं जरूरत ना पड़ जाये और जरूरत पड़ गई। इन अखबारों में छपी खबर से ये साफ है कि रतनचंद कालिया ड्रग्स किंग है। उसके ठिकानों पर जितने भी आदमी पकड़े गये, उन्होंने पुलिस के सामने कबूला कि वो रतनचंद कालिया के लिये काम करते हैं। परन्तु रतनचंद कालिया इतना बेशर्म है कि वो साफ मना करता है कि वो ड्रग्स का धंधा करता है।"

"तो पुलिस ने उसे छोड़ दिया?"

"केस चल रहा है। रतनचंद कालिया जमानत पर है और अपने को बचाने के लिए बड़े-बड़े वकीलों की फौज खड़ी कर रखी है। शोरी साहब को नहीं लगता कि वो कभी कानून के शिकंजे में फंसेगा।"

"इसलिए शोरी उसका मर्डर करा देना चाहता है।"

दिनेश चुरू ने सहमति से सिर हिलाया

"कुछ बात गले नहीं उतर रही।" जगमोहन सोच भरे स्वर में बोला—"शोरी के पास कोई ठोस वजह नज़र नहीं आ रही कि वो रतनचंद कालिया का मर्डर क्यों कराना चाहता है। कालिया ड्रग्स का धंधा करता है, कानून उसे सजा नहीं दे पा रहा, इसलिए वो कालिया का मर्डर कराना चाहता है, जंच नहीं रहा कुछ।"

"तुम्हें क्या, तुम मर्डर करो और दो करोड़ गिन लो।"

"हमने मर्डर करने की दुकान नहीं खोल रखी, ना ही हम किसी के कहने पर किसी की जान लेते हैं। ये तो तू सुन ही चुका है। फिर भी किसी की जान ले सकते हैं, बशर्ते कि वो आदमी जीने की काबलियत न रखता हो। अब ये तुम्हें साबित करना है कि रतनचंद कालिया जीने की काबलियत खो चुका है। वो ड्रग्स किंग

है, देश को नशे की गर्त में धकेल रहा है तो उसे जरूर मरना चाहिए, परन्तु नागेश शोरी क्यों उसे मरवा देना चाहता है, ये बात....।"

"साल भर पहले नागेश शोरी की खूबसूरत पत्नी नशे की लत में पड़ कर अपनी जान गवां बैठी। शोरी उसे बहुत प्यार करता था। शोरी ने अपनी पत्नी को बचाने की बहुत चेष्टा की, लेकिन नशा जीत गया और उसकी पत्नी मर गई। ये है वजह कि नागेश शोरी साहब नशे का व्यापार करने वाले को खत्म करा देना चाहते हैं।"

"हूं, तो ये है असल बात।" जगमोहन कह उठा।

देवराज चौहान ने कॉफी का घूंट भरा।

"बोलो देवराज चौहान।" दिनेश चुरू बोला—"तुम....।"

"मैं तुमसे बात कर रहा हूं, तुम मेरे से बात करो। देवराज चौहान के पास सोचने को बहुत कुछ है। देवराज चौहान ने क्या काम करना है और क्या नहीं, ये मैं ही तय करता हूं।"

"तुम तय करते हो?"

"हां, और कितना पैसा लेना है, ये भी मैं तय करता हूं।"

"पैसा तो दो करोड़ है ही।"

"ये तुम लोगों ने तय किया है, मैंने नहीं। ये बात बाद में तय करेंगे। उससे पहले तो ये देखना है कि रतनचंद कालिया सच में ड्रग्स के धंधे में फंसा हुआ है! तुम अपना फोन नम्बर दो और जाओ।"

"लेकिन...।"

"जल्दी मत करो। गर्म मत खाओ। तुमने अपनी समस्या हमें बता दी, अब आगे काम हमारा है। नोट आते मुझे भी बुरे नहीं लगते। परन्तु तुम्हें दो-तीन दिन का इन्तजार करना होगा कि तुम्हारी बातों की सच्चाई जानी जा सके।"

"तो मैं शोरी साहब से क्या कहूं...वो...।"

"रतनचंद कालिया के बारे में हमें जो कहा है, वो सच है तो परसों तुमसे बात करेंगे। नागेश शोरी से भी मिलेंगे। अपना फोन नम्बर दो। कार्ड-वार्ड है तो ठीक, नहीं तो यूं ही कागज पर लिख दो। सब चलेगा। अब हमारे पीछे मत रहना। कोई हम पर नज़र न रखे। हमारी गाड़ी उलटी चल पड़ी तो सब रगड़े जाओगे। समझे कि नहीं?"

"समझा।"

"समझा-समझा क्या कर रहा है, फोन नम्बर दे और खिसक ले।" जगमोहन मुंह बना कर कह उठा।

❑❑❑

दिनेश चुरू अपना फोन नम्बर देकर चला गया।

जगमोहन ने देवराज चौहान से पूछा—

"तुम्हें क्या लगता है?"

"गड़बड़।"

"कैसी गड़बड़?"

"मेरा ख्याल है कि असल बात कोई और ही है रतनचंद कालिया की हत्या करवाने के पीछे।"

"पता करता हूं कि क्या रतनचंद कालिया वास्तव में ड्रग्स किंग है!"

देवराज चौहान ने हाथ बढ़ाकर अखबारों की कटिंग्स का बंडल उठा लिया।

"ये भी पता करना है कि रतनचंद कालिया और नागेश शोरी के बीच क्या कोई दुश्मनी है!"

जगमोहन ने सिर हिलाया और सोहनलाल से कहा—

"फुर्सत में है तो मेरे साथ लग जा इस काम में।"

"फुर्सत ही है, अभी लग जाते हैं इस काम में।" सोहनलाल कह उठा।

❑❑❑

रात के दस बज रहे थे। दिन भर के कामों से फारिग होकर देवराज चौहान ने, दिनेश चुरू का दिया अखबारों की कटिंग्स का बंडल देखना और पढ़ना शुरू कर दिया। छोटी-बड़ी, अट्ठारह-बीस कटिंग्स थीं। पढ़ते-पढ़ते देवराज चौहान कटिंग्स की खबरें पूरी तरह पढ़ गया। उन खबरों से जाहिर हो रहा था कि रतनचंद कालिया ड्रग्स का व्यापार भारी पैमाने पर करता है। इसी सिलसिले में उस पर केस चल रहा था और वो जमानत पर छूटा हुआ था।

यानि कि दिनेश चुरू ने जो भी कहा था, सच कहा था।

परन्तु जाने क्यों देवराज चौहान को कुछ अटपटा लग रहा था। क्या अटपटा लग रहा है, ये बात समझ नहीं आ रही थी उसे। देवराज चौहान ने वक्त देखा, रात के ग्यारह बज रहे थे। जगमोहन और सोहनलाल अभी तक नहीं लौटे थे।

देवराज चौहान किचन में पहुंचा और कॉफी बनाई। इस दौरान सोचों में डूबा रहा। फिर कॉफी के घूंट लेता हुआ, प्याले के साथ ड्राईगरूम में पहुंचा तो कॉलबैल बजी।

देवराज चौहान दरवाजे के पास ही बनी खिड़की पर पहुंचा और ज़रा सा पर्दा हटा कर बाहर देखा।

पोर्च की लाईट ऑन थी और जगमोहन, सोहनलाल को वहां देखा।

देवराज चौहान ने दरवाजा खोला।

दोनों भीतर आये। सोहनलाल ने दरवाजा बंद किया।

"डिनर किया?" जगमोहन ने पूछा।

"हां, फ्रिज में जो पड़ा था, उससे काम चला लिया।" देवराज चौहान ने कहा।

"हम भी खाकर आ रहे हैं।"

दोनों सोफों पर जा बैठे।

देवराज चौहान ने हाथ में पकड़े प्याले से कॉफी का घूंट भरा और बैठता हुआ बोला—

"क्या रहा?"

"रतनचंद कालिया ड्रग्स किंग ही है।" जगमोहन ने कहा।

"कैसे पता चला?"

"हम ड्रग्स के खरीददार बनकर कुछ लोगों से मिले और उनसे ही हमें जानकारी मिली कि रतनचंद कालिया ड्रग्स किंग है।"

"पक्का?"

"इससे ज्यादा और क्या पक्का होगा कि सबकी जुबान पर रतनचंद कालिया का ही नाम है कि इस शहर में ड्रग्स का धंधा वो ही कंट्रोल करता है और किसी अन्य को टिकने नहीं देता। वो खतरनाक आदमी माना जाता है।"

देवराज चौहान ने कॉफी का घूंट भरा।

"नागेश शोरी के बारे में भी पता किया।" सोहनलाल ने कहा—"शोरी बेहद दौलतमंद इन्सान है। कई बड़े धंधों का मालिक है। उसकी पहुंच ऊंची है। अपने आप में दम रखता है। साल भर पहले उसकी पत्नी को नशे की आदत की वजह से मरना पड़ा। धीरे-धीरे वो बहुत ज्यादा नशा करने लगी थी। इलाज से कोई फायदा न हुआ और वह मर गई।"

"रतनचंद कालिया और नागेश शोरी में सीधी दुश्मनी क्या है?"

"कुछ भी नहीं। हमने पता किया, लेकिन दोनों में लिंक यही मिला कि रतनचंद कालिया नशे का धंधा करता है और नागेश शोरी की बीवी को नशे की लत की वजह से अपनी जान गंवानी पड़ी।" सोहनलाल ने कहा।

"तो हम ये सोचें कि दिनेश चुरू ने जो कहा, ठीक कहा है?" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"यही नतीजा निकलता है।" जगमोहन बोला।

"लेकिन दो करोड़ कम दे रहा है वो।" जगमोहन ने दोनों को देखा।

"कम है?" सोहनलाल ने हैरानी से उसे देखा।

"वैसे तो ठीक है।" जगमोहन मुस्कराया—"लेकिन नागेश शोरी की जो हैसियत पता लगी है आज, उस हिसाब से कम है।"

"कल हम नागेश शोरी से मिलेंगे।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

❑❑❑

अगले दिन सुबह नौ बजे जगमोहन ने दिनेश चुरू को फोन किया।

"हैलो!" दिनेश चुरू का स्वर कानों में पड़ा।

"मैं—पहचाना?"

"जगमोहन?" दिनेश चुरू की आवाज में उत्साह उभरा।

"ठीक पहचाना। नागेश शोरी से हमारी मुलाकात का इन्तजाम कर।" जगमोहन ने कहा।

"काम करने को तैयार हो?"

"तभी तो कह रहा हूं।"

"शोरी साहब से मिलने की जरूरत क्या है?" दिनेश चुरू ने कहा।

"क्या मतलब?"

"सौदा हो गया, शिकार तुम लोगों के सामने है, काम खत्म करो और नोट लो।"

"काम खत्म करके नोट? पागल तो नहीं हो गया...मैं नोट पहले लेता हूं। उसके बाद काम शुरू करता हूं।

"एक करोड़ तुम्हें पहले दे...देता....।"

"सुन।" जगमोहन एकाएक उखड़ा—"काम करवाना है?"

"हां, तभी तो...."

"तो नागेश शोरी से मुलाकात का इन्तजाम करवा, हम चमचों से फाईनल बात नहीं करते।"

"ठीक है।" दिनेश चुरू ने गहरी सांस ली—"तुम आधे घंटे बाद मुझे फोन करना।"

जगमोहन ने एक घंटे बाद दिनेश चुरू को फोन किया।

"4 नम्बर, वरसोवा पर आ जाओ। देवराज चौहान भी साथ होगा न?"

"उसके बिना मैं क्या करने आऊंगा!" जगमोहन ने कहा और फोन रख दिया।

❑❑❑

देवराज चौहान, जगमोहन और सोहनलाल 4 नम्बर, वरसोवा पर पहुंचे।

बहुत शानदार और बड़ा बंगला था।

मुख्य गेट पर दो गनमैन खड़े थे। उनके पास ही मौजूद था प्रताप कोली। वो उन्हें देखते ही मुस्करा कर उनकी तरफ बढ़ा और कह उठा—

"आइये, मैं आप लोगों के लिये ही यहां खड़ा था।"

गनमैनों ने विशाल गेट को खोला तो वे कार भीतर ले गये। जगमोहन ने पोर्च में ले जाकर कार रोकी, वहां तीन विदेशी कारें पहले से ही मौजूद थीं।

तीनों कार से बाहर निकले तो पीछे से प्रताप कोली, उनके पास आ पहुंचा

"आईये-आईये।" वो आगे चलने का उपक्रम करता कह उठा।

"मैं यहीं रहूंगा।" सोहनलाल ने कहा।

"बाहर?" प्रताप कोली ने उसे देखा।

"हां।"

"अगर तुम भीतर नहीं जाना चाहते तो मैं तुम्हारे बैठने का कहीं प्रबन्ध कर....।"

"मुझे भूल जाओ और इन्हें भीतर ले जाओ।" सोहनलाल ने आस-पास नज़रें दौड़ाते हुए कहा।

"मर्जी तुम्हारी। परन्तु आज से पहले किसी मेहमान ने ऐसा नहीं किया कि वो बाहर रहे...।"

सोहनलाल ने उसकी तरफ पीठ कर ली।

प्रताप कोली, देवराज चौहान और जगमोहन को लेकर भीतर चला गया।

दो मिनट भी न बीते होंगे कि दिनेश चुरू सोहनलाल के पास पहुंचा।

"मुझे पता चला है कि तुम भीतर नहीं आये।" वो बोला।

"तुम्हें कोई परेशग्नी है?" सोहनलाल ने उसे देखा।

"परेशानी तो होनी चाहिए। यहां कोई आये और बाहर ही रुक जाये।" दिनेश चुरू ने कहा।

"एक आदमी बाहर भी होना चाहिए।"

"तो तुम हम पर किसी तरह का शक कर रहे हो?"

"मैं सावधानी बरत रहा हूं। भीतर मेरा कोई काम नहीं था, इसलिए बाहर रुक गया।"

"ठीक है। मैं तुम्हारे साथ रहूं तो तुम्हें बुरा तो नहीं लगेगा?"

"मुझे अकेला छोड़ दो।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी। लेकिन यहां सब ठीक है। तुम्हें किसी भी तरह की चिन्ता करने की जरूरत नहीं।" कहकर वो भीतर चला गया।

सोहनलाल सतर्कता भरे अन्दाज में बाहर ही टहलने लगा।

❑❑❑

वो पचास बरस का, गठे जिस्म का मालिक था। उसने सूट पहना हुआ था। चेहरे पर दौलत की चमक विद्यमान थी। उसके हाव-भाव में चुस्ती थी। ए.सी. की ठण्डक उस कमरे में फैली हुई थी।

उसके अलावा वहां दो अन्य व्यक्ति भी थे।

हरीश मोगा और अवतार सिंह। दोनों इस वक्त सतर्क थे।

देवराज चौहान और जगमोहन के वहां प्रवेश करते ही, उनकी निगाहें उन पर टिक गई थीं।

प्रताप कोली दरवाजे से कुछ भीतर आकर ठिठक गया था।

देवराज चौहान की निगाह नागेश शोरी पर जा टिकी थी।

नागेश शोरी मुस्कराकर आगे बढ़ा और देवराज चौहान से हाथ मिलाता कह उठा—

"देवराज चौहान को अपने सामने पाकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।"

"मुझे भी।"

नागेश शोरी ने जगमोहन से भी हाथ मिलाया।

फिर वो एक तरफ मौजूद कुर्सियों पर जा बैठे।

अवतार सिंह एक तरफ मौजूद फ्रिज के पास पहुंचा, उसे खोला और लिम्का की बोतल निकाल कर फ्रिज के ऊपर ही रखे गिलासों में डाली और उन्हें लिए आगे बढ़ा और उन तीनों के बीच मौजूद टेबल पर गिलास रखे और पीछे हटते हुए वापस अपनी जगह पर जा खड़ा हुआ।

देवराज चौहान ने अवतार सिंह, हरीश मोगा और प्रताप कोली पर नज़र मारकर कहा—

"क्या इनका यहां मौजूद रहना ठीक है?"

"इनसे मेरा कुछ नहीं छिपा, फिर भी तुम्हें परेशानी हो तो...।"

"अगर ये तुम्हारे विश्वासी हैं तो मुझे कोई परेशानी नहीं है।"

नागेश शोरी ने गिलास उठाया और लिम्का का घूंट भरा।

"रतनचंद कालिया से तुम्हारी क्या दुश्मनी है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"कोई दुश्मनी नहीं।" संजीदा होता नागेश शोरी बोला—"वो ड्रग्स का व्यापार करता है और मेरी खूबसूरत बीवी ड्रग्स की लत की वजह से अपनी जान गवां बैठी। मैं उसे बहुत प्यार करता था। उसके बिना जीने की कल्पना भी नहीं कर सकता था। मैं नहीं जानता कि कब उसने नशा करना शुरू किया। मुझे इसका तब पता चला, जब वो इस रास्ते पर काफी आगे जा चुकी थी। फिर भी मैंने पूरी कोशिश की कि उसे बचा लूं। उसकी नशे की आदत को छुड़ा लूं, परन्तु कामयाब नहीं हो सका। वो मर गई।"

देवराज चौहान उसे देखता रहा।

"उसके बाद मुझे नशे से, ड्रग्स से और नशे के व्यापार करने वालों से नफरत हो गई। तब मैंने नशे के व्यापार करने वाले अन्जाने दुश्मनों की तलाश शुरू की तो पता चला कि शहर का ड्रग्स किंग रतनचंद कालिया है।"

"और तुमने उसे मरवा देने का इरादा बना लिया।"

"ऐसी बात नहीं। पहले मेरा इरादा था कि उसे कानून की

गिरफ्त में पहुंचा दूं। इसके लिए मैंने बहुत मेहनत की। मेरे इशारे पर अखबारों ने रतनचंद कालिया को बेनकाब करना शुरू कर किया। कानून को उसके पीछे डलवा दिया। परन्तु खास फायदा नहीं हुआ। कानून के हाथों में पहुंच कर भी वो आजाद हो गया। अब जमानत पर है और केस चल रहा है। मुझे नहीं लगता कि उसे सजा हो पायेगी। क्योंकि वो खुद भी दम रखता है। जो जज इस केस को देख रहा है, सुना है कि उसने जज को भी खरीद लिया है। आखिरकार थक हार कर मैंने उसे खत्म करवा देने का फैसला कर लिया।"

"इस तरह तुम कानून को अपने हाथ में ले रहे हो।"

"मैंने अच्छे काम के लिये सोचा है, इसलिए कानून का मुझे ज़रा भी डर नहीं है। वैसे भी किसी को पता नहीं लगेगा कि ये सब मैंने करवाया है।"

"बात बाहर भी निकल सकती है।"

"ऐसा हुआ तो मैं अपने को बचा लूंगा। तुम मेरी चिन्ता मत करो। अपने काम के बारे में सोचो। मैंने सुना है कि तुम बेहतरीन निशानेबाज हो। यही वजह है कि मैंने इस काम के लिए तुम्हारा चुनाव किया है।" नागेश शोरी मुस्कराया।

"मुझे रतनचंद कालिया के बारे में भीतरी जानकारी चाहिए होगी।"

"प्रताप कोली और दिनेश चुरू के पास तुम्हारे काम की हर जानकारी है। इस बारे में तुम्हें वक्त खराब करने की जरूरत नहीं। ये दोनों काम के दौरान तुम्हारे साथ ही रहेंगे।"

"मेरे साथ?"

"अगर तुम्हें एतराज न हो तो। ये तुम्हारे काम आयेंगे। ये रास्ते में आने वाली हर समस्या को दूर करेंगे। इनकी वजह से तुम्हें ज़रा भी परेशानी नहीं होगी।" नागेश शोरी ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

"साथ रहने दो।" जगमोहन ने देवराज चौहान से कहा—"हमें क्या एतराज है।"

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई। कश लिया, फिर बोला—

"रतनचंद कालिया को लेकर जो वजह तुमने बताई है, वो ही वजह है उसे मारने की, दूसरी वजह तो नहीं?"

"जो मैंने बताया है, सिर्फ वो ही वजह है। दूसरी कोई वजह नहीं।"

"दूसरी वजह हुई तो तुम मुसीबत में पड़ सकते हो। मुझसे कोई झूठ बोले, ये मुझे पसन्द नहीं।"

"तुम।" नागेश शोरी मुस्कराया—"निश्चिंत होकर अपना काम शुरू कर सकते हो।"

देवराज चौहान ने कश लिया। बोला कुछ नहीं।

"तुम्हारी बात हो गई हो तो मैं बात कर लूं।" जगमोहन कह उठा।

देवराज चौहान खामोश रहा तो जगमोहन, नागेश शोरी से बोला—

"अब हम जरा नोटों की बात कर लें।"

"नोटों की? वो तो हो गई।"

"क्या हुई?"

"इस काम का दो करोड़ तुम लोगों को मिलेगा, बेशक एक घंटे में काम निपटा लो।"

"दो करोड़ किसने कहा—क्या मैंने?"

"नहीं।" नागेश शोरी मुस्कराया—"ये ऑफर मेरी तरफ से दी गई थी।"

"तो अभी हमने अपनी डिमांड नहीं रखी।"

"मैंने तो सोचा था कि सौदा तय हो गया।"

"तुम्हारे सोचने से क्या होता है! इस काम का कम से कम पांच करोड़ लगेगा।"

"पांच करोड़!"

"तुम्हारे लिये तो ये मामूली रकम है।"

"तुम्हारा मतलब है कि मैं अपनी दौलत लुटा-लुटा कर बर्बाद कर दूं?"

"तुम लुटा नहीं रहे, बल्कि हमसे कत्ल करवा रहे हो रतनचंद कालिया का। ये सब तुम अपनी मर चुकी खूबसूरत पत्नी की आत्मा को शांति पहुंचाने के लिए कर रहे हो। रतनचंद कालिया की हत्या करनी आसान नहीं शोरी, तभी तुमने देवराज चौहान को चुना और दो करोड़ जैसी रकम की ऑफर दी।" जगमोहन ने कहा।

"और अब तुम नाजायज फायदा उठाने की फिराक में हो।" नागेश शोरी ने कहा।

"ऐसा तो नहीं।"

"ऐसा ही है, तभी तो तुम पांच करोड़ मांग रहे हो।"

"तुम्हारे लिए ये मामूली रकम है।"

"देवराज चौहान!" शोरी बोला—"मैं दो करोड़ से ज्यादा नहीं...।"

"मेरे से बात करो। जब देवराज चौहान तुमसे बात कर रहा था तो मैंने दखल नहीं दिया, अब वो मेरी बात में दखल नहीं देगा। नोटों की बात तय करना मेरा काम है, देवराज चौहान का नहीं। देवराज चौहान शरीफ बंदा है। वो तुम्हारा काम मुफ्त में भी कर देगा। इसी वास्ते मैं देवराज चौहान से चिपका रहता हूं।"

"मैं दो करोड़ से ज्यादा नहीं दे सकता।"

"फिर तो तुम्हारा काम नहीं होगा। किसी ऐसे को ढूंढ लो जो दो लाख में काम कर दे।"

जगमोहन और नागेश शोरी की नज़रें मिलीं।

"ये तुम गलत बात कर रहे हो।"

"मैं ऐसे ही बात करता हूं।"

"तुम्हें दो करोड़ दस लाख दे दूंगा।"

"मैं पांच करोड़ की बात कर रहा हूं।"

"इतना मैं नहीं दे सकता।"

जगमोहन उठा और देवराज चौहान से बोला—

"हमें यहां से चलना चाहिए। ये काम हमारे बस का नहीं है।"

देवराज चौहान खामोशी से उठ खड़ा हुआ।

"ठीक है।" नागेश शोरी कह उठा—"मैं ढाई करोड़ देने को तैयार हूं।"

"ज़रा-ज़रा क्या आगे बढ़ रहे हो। सीधे-सीधे क्यों नहीं कहते कि तीन करोड़ दोगे।" जगमोहन बोला।

"चलो!" नागेश शोरी मुस्कराया—"ऐसा ही सही।"

"एडवांस—नकद—पहले—। उसके बाद काम शुरू होगा और खत्म हो जायेगा।"

"शाम को ले जाना।"

"कितने बजे?"

"प्रताप कोली और दिनेश तुम्हारे साथ रहेंगे, इन्हें फोन पहुंच जायेगा।" नागेश शोरी ने कहा।

"ये ठीक रहेगा।"

❑❑❑

रतनचंद कालिया।

साठ बरस का सेहतमंद किन्तु पतला-सा था वो। या यूं कह लें कि कद-काठी सामान्य थी। सिर के बाल आधे से ज्यादा सफेद थे और सफेद में काले बाल उसे आकर्षक बनाते थे। क्लीन चेहरा। सीधे हाथ की चार उंगलियों में रंग-बिरंगे हीरों की अंगूठियां पड़ी रहती थीं। गले में सोने की भारी जंजीर, जिसके साथ मोटा हीरा फंसा रहता था।

एक ही निगाह में महसूस हो जाता था कि वो दौलतमंद ही नहीं, दौलत का मजा भी ले रहा था।

शहर का जाना-माना व्यक्ति था वो।

इस वक्त वो बांद्रा स्थित बहुत बड़े और शानदार बंगले में मौजूद था। करीब दो हजार गज में ये बंगला बना था। आठ साल पहले उसका हजार गज का बंगला था, बगल का बंगला बिका तो वो भी उसने खरीदा, उसके बाद दोनों बंगलों को एक करके दो मंजिला बंगला बना लिया।

रतनचंद कालिया अपने बंगले की पहली मंजिल पर स्थित अपने कमरे की खिड़की पर खड़ा, बाहर का नजारा कर रहा था। उसे याद नहीं कि पहले कभी वो इस खिड़की पर कब खड़ा हुआ था। खुले में आने से वो कतराता था। क्योंकि उसे मालूम था कि उसके बहुत दुश्मन हैं, कोई भी उसकी जान ले सकता है।

खिड़की के आगे बंगले का नीचे वाला हिस्सा था। उसके बाद बंगले की दीवार, फिर आगे सड़क तक काफी बड़ा हिस्सा खुला हुआ था। वो सड़क व्यस्त रहती थी। सड़क पार बहुत बड़ी खुली जगह के पश्चात डिस्ट्रिक्ट सैन्टर की आसमान को छूती पांच-सात इमारतें बनी हुई थीं। कोई पन्द्रह मंजिल की, तो कोई बाईस मंजिल की। मतलब कि रतनचंद कालिया के बंगले के सामने इमारत के नाम पर डिस्ट्रिक्ट सेन्टर ही पड़ता था, जो कि सौ से डेढ़ सौ मीटर दूर था।

रतनचंद कालिया खिड़की से हट गया।

ये काफी बड़ा कमरा था। एक तरफ उसका शानदार डबल बैड लगा था। दूसरी तरफ तीन कुर्सियां और पालिश की गई गोल टेबल थी। फर्श पर कालीन था। दीवार पर ही टी.वी स्क्रीन लगी दिखाई दे रही थी। तीसरी तरफ छोटा सा सोफा लगा था कि बैठने की जरूरत हो तो बैठा जा सके। वो सोफे पर जा बैठा था।

तभी उसके कानों में कदमों की आहटें पड़ने लगीं।

रतनचंद कालिया की निगाह दरवाजे की तरफ उठी।

पचपन बरस की औरत ने देखते-ही-देखते भीतर प्रवेश किया। वो साड़ी में सजी-धजी खूबसूरत लग रही थी। उसके भीतर आते ही परफ्यूम की महक रतनचंद की सांसों में पड़ी। वह मुस्करा कर बोला–

"आज तो बहुत खूबसूरत लग रही हो।"

"हटो जी! आप तो इस उम्र में भी छेड़ने से नहीं हटते।" वो मुस्कुराकर कह उठी। उसका नाम सोनिया था।

"क्या हुआ है, मेरी उम्र को?"

"बच्चे घर में हैं। मैं तो ये बताने आई थी कि पवन और आस्था के साथ मैं अपने भाई के घर जा रही हूं। पहले ही देर हो गई है। सगाई की रस्म शुरू होने वाली होगी।"

"गनमैनों को तैयार रहने को कह दिया था?"

"हां, वो तो तैयार ही हैं। मैं तो दुखी हो गई हूं इन गनमैनों से! जहां भी जाती हूं, साथ भेज देते हैं। बच्चे भी तंग आ चुके हैं।"

"ये जरूरी है।" रतनचंद कालिया ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मैं जा रही हूं। रात को शायद न आ सकूंगी, कल ही दिन में किसी वक्त आयेंगे हम। और भाई के घर पहुंचकर मैं गनमैनों को वापस भेज दूंगी। मुझे नहीं अच्छा लगता कि वे भाई के घर के आस-पास मंडराते रहें।"

रतनचंद कालिया ने सिर हिला दिया।

"आप भी चलते तो कितना अच्छा रहता!"

"मुझे काम है। परन्तु वादा रहा कि शादी में जरूर चलूंगा।"

सोनिया चली गई।

रतनचंद कालिया ने वक्त देखा, शाम के चार बज रहे थे। वो उठा ही था कि फोन बजा। तिपाई पर रखा लैंडलाइन का फोन बज रहा था, जिसका नम्बर बहुत कम लोगों के पास था।

आगे बढ़कर रतनचंद कालिया ने रिसीवर उठाया।

"हैलो।"

"नमस्कार।" खुशनुमा-सी आवाज दूसरी तरफ से आई।

"नमस्कार।" रतनचंद उलझन में पड़ा–"मैंने आपको पहचाना नहीं।"

"जबरदस्ती के मेहमान को, कम लोग ही पहचानते हैं कालिया साहब।" उधर से पूर्ववतः लहजे में कहा गया।

रतनचंद कालिया की आंखें सिकुड़ीं।

"कौन हो तुम?"

"ये पूछो क्या काम है!"

"बोलो।"

"तुम्हारी हत्या की शानदार साजिश को जन्म दे दिया गया है।"

"मेरी हत्या की साजिश?"

"आज रच दी गई है।"

रतनचंद कालिया की आंखें सिकुड़ीं।

कुछ पल खामोशी रही।

"कैसा लगा सुनकर?" उधर से पुनः कहा गया।

"कौन हो तुम?"

"अपने बारे में बताना ठीक नहीं, निशानी के तौर पर मेरा कोई भी नाम रख सकते हो।"

"कैसा नाम?"

"कोई भी–चलो तुम मुझे 'केकड़ा' कह लो।"

"केकड़ा?"

"बुरा नहीं है। तो मैं तुम्हारी हत्या के बारे में...।"

"तुम क्या समझते हो कि मैं तुम्हारी कही बात का यकीन कर लूंगा?"

"मत करो, जल्दी ही अंजाम तुम्हारे सामने आ जायेगा।"

"कौन मेरी जान लेना चाहता है?"

"एक ने तुम्हारी मौत की सुपाड़ी दी है, दूसरा तुम्हें मारेगा। परन्तु नाम मैं किसी का भी नहीं बताऊंगा।"

"क्यों?"

"क्या फायदा बताने का, मेरे को तो कुछ मिल नहीं रहा।"

"तुम जो भी लाख-दो लाख लेना चाहते हो, मेरे से ले लो, मुझे उनके नाम.....।"

"लाख दो लाख!" उधर से केकड़ा ने हंस कर कहा—"मेरी नहीं तो अपनी इज्जत का ही ख्याल कर लो। तुम्हारे नाम की सुपाड़ी तीन करोड़ में दी गई है। इसी से समझ जाओ कि तुम्हारी मौत निश्चित ही है। जिसने सुपाड़ी ली है, वो अण्डरवर्ल्ड का नामी बंदा है। काम हाथ में लेकर वो हर हाल में काम पूरा करता है। तुम मृत्यु के द्वार पर खड़े हो रतनचंद।"

रतनचंद कालिया को एकाएक टांगों में कम्पन-सा महसूस हुआ।

उसे लगा जैसे रिसीवर थामे, हथेली में पसीना भर आया हो।

"अपनी सुरक्षा के इन्तजाम फौरन से भी फौरन कर लो। मुझे नहीं लगता कि तुम बचोगे, लेकिन तुम्हें बचने की चेष्टा अवश्य करनी चाहिए। मेरी पूरी हमदर्दी तुम्हारे साथ है रतनचंद्र कालिया।"

"हैलो।"

"हां-हां, कहो।" केकड़ा का शांत स्वर कानों में पड़ा—"सुन रहा हूं। फोन पर हूं।"

"तुम ये सब मुझे क्यों बता रहे हो—इसमें तुम्हारा क्या फायदा?"

"आने वाले वक्त में मैं तुम्हें मुर्गा बनाऊंगा। खबर देने के बदले तुमसे मोटे नोट वसूलूंगा। अभी तो खेल शुरू हुआ है। एक बात और मेरे बारे में जानने की चेष्टा कभी मत करना, वरना मैं फोन करना बंद कर दूंगा और तुम ताज़ा खबरों से दूर हो जाओगे।"

"सुनो...तुम अभी मुझे मिलो। मैं तुम्हें नोट....।"

"नोट भी लूंगा। मुझे लेने की जल्दी नहीं है तो, तुम्हें देने की जल्दी क्यों पड़ी है। मेरी मानो तो रिसीवर नीचे रखो और अपनी सुरक्षा का इन्तजाम करो। मामला सच में गम्भीर है रतनचंद, तेजी दिखाओगे तो शायद बच सको।"

"लेकिन केकड़ा....तुम....।"

"मैं तुम्हें फिर फोन करूंगा।" इसके साथ ही लाइन कट गई।

रतनचंद कालिया हाथ में रिसीवर थामे खड़ा रहा, फिर रिसीवर वापस रखा। चेहरा सख्त हो चुका था। आंखें और होठों में सिकुड़न

थी। आगे बढ़कर उसने टेबल का ड्राज़ खोला और रिवॉल्वर निकाल कर उसकी मैग्जीन चैक की, फिर उसे जेब में रखने के पश्चात जेब से मोबाईल फोन निकाला और एक नम्बर मिलाया।

फौरन नम्बर मिला और आवाज कानों में पड़ी—

"कहिये।"

"सुन्दर, इसी वक्त मेरे पास आओ।" कहकर रतनचंद कालिया ने फोन बंद किया और जेब में रखते बड़बड़ा उठा—"केकड़ा...।"

❑❑❑

सुन्दर, जो कि बंगले के दूसरे हिस्से में ही मौजूद था, वो पांच मिनट में वहां आ पहुंचा।

पैंतीस बरस का सुन्दर, समझदार व्यक्ति लग रहा था वो। उसने पेंट-शर्ट पहन रखी थी। तेइस बरस की उम्र में ही वो नामी निशानेबाज बन चुका था। कई प्रतियोगिता उसने जीती थीं। बी.एस.एफ. में नौकरी करता था, परन्तु अपने ऑफिसर से झगड़ा कर लेने की वजह से उसे नौकरी से हाथ धोना पड़ा। तब वो नौकरी की तलाश में था और रतनचंद कालिया से उसकी मुलाकात हो गई। रतनचंद कालिया ने उसके निशानेबाजी के गुण की वजह से अपने पास रख लिया और दस सालों में सुन्दर आज रतनचंद कालिया का सबसे खास गनमैन था और जरूरत पड़ने पर सलाहकार के रूप में हैसियत रखता था।

जब-जब रतनचंद कालिया मुसीबत में पड़ा, सुन्दर ने उसे मुसीबत से निकाला।

और आज भी रतनचंद कालिया खुद को मुसीबत में फंसा महसूस कर रहा था।

"सर!" सुन्दर ने भीतर प्रवेश करते ही कहा।

रतनचंद कालिया ने उसे देखा और बैठने को कहा।

सुन्दर बैठ गया।

कुछ पल कमरे में अजीब सी खामोशी छाई रही। फिर रतनचंद ने कहा—

"मैं अपने को अजीब-सी स्थिति में फंसा महसूस कर रहा हूं।"

"मुझे बताइये सर।"

"अभी मुझे एक फोन आया। फोन करने वाले ने अपना

नाम नहीं बताया, कहने लगा, याद रखने के तौर पर मुझे 'केकड़ा' कह सकते हो। केकड़ा कहता है कि आज मेरी हत्या की सुपाड़ी दी गई है।"

"हत्या की सुपाड़ी?" सुन्दर चौंका।

"हां।" रतनचंद कालिया ने सिर हिलाया—"उसने यही कहा। तीन करोड़ में मेरी हत्या की सुपाड़ी दी गई है, लेने वाला अण्डरवर्ल्ड का कोई नामी इन्सान है। और वो मेरी जान लेकर रहेगा।"

"वो...मजाक कर रहा.....।"

"नहीं, वो मजाक नहीं कर रहा था।" रतनचंद कालिया ने कहते हुए इन्कार में सिर हिलाया।

"ये आप कैसे कह सकते हैं कि वो मजाक नहीं....।"

"उसकी बातों से मैंने महसूस किया था कि वो सच कह रहा है।"

"ओह!"

"ये गम्भीर मामला है। तभी मैंने तुम्हें बुलाया। उसने जो कहा है, सच कहा है।"

"परन्तु उसने अपने बारे में क्यों नहीं बताया कि वो कौन है!" सुन्दर बोला।

"अपने बारे में नहीं बताना चाहता.....।"

"आपने उससे पूछा?"

"हां, परन्तु उसने बताने से इन्कार कर दिया।"

"उसने ये नहीं बताया कि किसने तीन करोड़ में आपकी मौत की सुपाड़ी दी और किसने ये ठेका उठाया?"

"नहीं बताया।"

"तो यह बात उसने आपको क्यों बताई—क्या चाहता है वो?"

"मेरे ख्याल से दौलत। उसने कहा है कि वो मुझे इस बारे में और भी खबरें देता रहेगा। लेकिन पहले अपनी सुरक्षा के इन्तजाम कर लूं। उसके बाद वो मुझसे बात करेगा।" रतनचंद कालिया ने गम्भीर स्वर में कहा।

"और आप उसकी कही बातों को सच मानते हैं?"

"वो सच कह रहा था।"

सुन्दर चुप रहा। सोचों में गुम रहा।

"मुझे अपनी सुरक्षा के इन्तजाम करने हैं।"

"हुक्म दीजिये।"

"तुम बताओ, मुझे कैसे अपनी सुरक्षा करनी चाहिये?"

"सर, सबसे पहले तो मैं कहूंगा कि मुझे नहीं लगता कि फोन करने वाले ने आपसे सच कहा है।"

"ऐसा क्यों लगता है?"

"पता नहीं, परन्तु किसी अन्जान आदमी की कही बात को फौरन सच मान लेना, अजीब ही बात है।"

"मुझे कुछ भी अजीब नहीं लगता। किसी के पास इन बातों की भीतरी जानकारी है और वो मुझे जानकारी देकर, दौलत कमाना चाहता है। सीधा सा सौदा है।" रतनचंद कालिया ने कहा।

"बेहतर होगा कि आप खुद को कुछ दिनों के लिये बंगले पर कैद कर लें।" सुन्दर बोला।

"ये नहीं हो सकता। मैं अपने जरूरी काम नहीं छोड़ सकता।"

"तो सुरक्षा बढ़ा लीजिए।"

"हां, इस बारे में सोचा जायेगा।"

"जिसने आपकी हत्या की सुपाड़ी दी है, अगर वो अण्डरवर्ल्ड का पुराना घाघ है तो दूर रहकर आपको शूट करेगा।"

रतनचंद कालिया ने सुन्दर को देखा।

"निशाना लेगा?"

"अगर वो मंजा हुआ खिलाड़ी है तो निशाना ही लेगा।" सुन्दर ने कहा—"बेहतर होगा कि आप खुले में न रहें।"

"मैं कोशिश करूंगा।"

"पूरी तरह मेरी बात पर विश्वास न करें। वो आपको करीब आकर भी मार सकता है। आपको आस-पास वालों से सतर्क रहना होगा।"

"मतलब कुछ भी हो सकता है।"

सुन्दर ने सिर हिलाया।

रतनचंद कालिया के चेहरे पर बेचैनी भरे भाव नज़र आने लगे।

"ये सब बातें समस्या वाली हैं।"

"अवश्य सर। आप कभी भी खुले में अकेले न रहें। दूसरों से घिरे रहें। कार में भी अकेले न बैठें। अकेले आदमी का निशाना लेना आसान होता है। हर तरफ से आपको सतर्कता बरतनी होगी। मैं आपके साथ रहूंगा। सब इन्तजामों पर नज़र रखूंगा।"

"गुड।"

"आपने कब बाहर जाना है?"

"एक घंटे बाद।"

"ठीक है, मैं सब गनमैनों को समझा देता हूं कि आपकी जान को खतरा है और आपको घेरे में रखें।" सुन्दर बोला—"केकड़े ने दोबारा फोन करने के लिये कोई वक्त बताया?"

"नहीं।"

"मुझे अभी भी उसकी बात पर विश्वास नहीं हो रहा।"

सुन्दर को देखता रतनचंद कालिया मुस्कराया।

"क्या हुआ सर?"

"अगर कोई तुम्हें फोन करके कहे कि तुम्हारी हत्या की साजिश रची जा रही है—तुम्हारे नाम की सुपाड़ी छोड़ दी गई है—तो तुम क्या करोगे? क्या तुम्हें उसकी बात का विश्वास नहीं आयेगा? भूल जाओगे उसे?"

"मैं समझ गया सर।"

"क्या?"

"अपनी जान की बात हो तो हर किसी बात का विश्वास करना पड़ता है। क्या पता कि कहने वाले ने ठीक ही कहा हो।"

"बेशक किसी ने मजाक ही किया हो, परन्तु मैं इस बात को मजाक में नहीं ले सकता। क्योंकि मेरी जान का सवाल है। मेरी सुरक्षा के लिए तुम बढ़िया-से-बढ़िया इन्तजाम करो। इस तरह कि कोई मेरा निशाना भी ले तो गोली मुझ तक न पहुंच सके।"

रतनचंद कालिया बेहद शांत परन्तु, तनाव में भरा लग रहा था।

❑❑❑

देवराज चौहान, जगमोहन, सोहनलाल, प्रताप कोली और दिनेश चुरू ने एक होटल के अगल-बगल के कमरे बुक कराये और वहां डेरा जमा लिया। चारों एक कमरे में आ गये और काफी [illegible] ली गई।

"रतनचंद कालिया के बारे में बताओ कि कहां पर उसका निशाना लिया जा सकता है?" देवराज चौहान बोला।

"कई जगहों पर उसे शूट किया जा सकता है।" प्रताप कोली ने कहा—"उसके कई जगह ऑफिस हैं। दिन भर वो एक से दूसरे ऑफिस में जाता रहता है, रास्ते में कहीं भी उसे शूट

किया जा सकता है। यूं वो अपने चार गनमैनों के बीच घिरा रहता है। उसके कई दुश्मन हैं, जो उसकी जान ले लेना चाहते हैं, इसलिए वो सतर्क रहता है।"

"पहले कभी उस पर हमला हुआ?" देवराज चौहान ने पूछा।

"कई बार। लेकिन हर बार वो बच निकला। खतरे में पाकर वो अपने को बचाने का तगड़ा इन्तजाम कर लेता है। ये सब हमें पहले नहीं पता था, परन्तु अब छानबीन करने पर पता चला। एक बार उसके दुश्मनों ने उसका घर से निकलना दुश्वार कर दिया था। एक के बाद एक उस पर जानलेवा हमले हो रहे थे, अपने को बचाना उसके लिए कठिन हो गया था। ये छः महीने पहले की बात है। तब रतनचंद कालिया ने आर-डी-एक्स (R.D.X.) को बुला लिया था।"

"आर-डी-एक्स?" जगमोहन के होठों से निकला—"तो इस बारूद का उसने क्या इस्तेमाल....।"

"मैंने कहा है आर-डी-एक्स को उसने बुला लिया था।" प्रताप कोली कह उठा—"तीन लोगों की तिगड़ी है ये और ये तीनों आर-डी-एक्स बारूद से कम नहीं। बहुत खतरनाक हैं तीनों।"

जगमोहन ने देवराज चौहान से पूछा।

"तुमने सुना है ये नाम?"

"नहीं।"

"तुमने?" जगमोहन ने सोहनलाल को देखा।

सोहनलाल ने इन्कार में सिर हिला दिया।

जगमोहन ने प्रताप कोली से कहा।

"ये आर-डी-एक्स के बारे में और बताओ।"

"बताया तो, तीन लोगों की तिगड़ी है। जो कर जायें, वो ही कम है। ये तीनों जब एक साथ होते हैं तो फौज़ से कम नहीं होते। जिस तरह आर-डी-एक्स बारूद होता है, उसी तरह ये तीनों भी इकट्ठे हो जाने पर बारूद जैसे ही हैं। इन तीनों को आर-डी-एक्स का नया संस्करण ही समझो।" प्रताप कोली ने गम्भीर स्वर में कहा—"तीनों एक साथ ही काम करते हैं। कोई अकेला काम नहीं करता। किसी भी काम को करने की ये भारी कीमत वसूलते हैं और काम भी पूरा करते हैं।"

"मतलब कि काबिल बन्दे हैं।"

"बहुत। आर-डी-एक्स का मुकाबला करना, मेरे ख्याल में तो किसी के लिये भी आसान नहीं। ये ऐसे-ऐसे काम कर जाते हैं कि सामने वाले को पलक झपकने का भी वक्त नहीं मिलता। ये तीनों जीते-जागते आर-डी-एक्स हैं।"

"जीता-जागता आर-डी-एक्स!" जगमोहन ने बड़बड़ा कर देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।

"तुम क्यों मुस्कुराये?"

"प्रताप कोली आर-डी-एक्स की तिगड़ी के बारे में इतना कह रहा है तो वो जरूर दम रखते होंगे।" देवराज चौहान ने कहा।

"रतनचंद कालिया ने अपनी सुरक्षा के लिये आर-डी-एक्स को बुला लिया, तो?"

"अभी तो ऐसा कुछ नजर नहीं आता। क्योंकि रतनचंद कालिया को पता नहीं है कि हम उसकी जान लेने वाले हैं। हो सकता है कि आने वाले वक्त में उसे मौका ही मिल पाये कुछ कर पाने का। हम पहली बार में ही सफल हो जायें।"

"मान लो—हम पहली बार में सफल न हो सके और उसने आर-डी-एक्स को बुला लिया तो इस रतनचंद की हत्या करेंगे या आर-डी-एक्स से निपटेंगे? प्रताप कोली जैसे उनके बारे में बता रहा है तो वो हकीकत में मुसीबत होंगे।"

"तुम उनसे डर रहे हो?"

"नहीं—सोच रहा हूं कि उनके बीच में आ जाने की वजह से कहीं मुसीबतें न बढ़ जायें।"

"आर-डी-एक्स के बारे में हमें सोचना नहीं चाहिये।" सोहनलाल बोला—"हम पहली बार में ही सफल होंगे और रतनचंद को किसी की सहायता लेने का मौका नहीं मिलेगा। एक गोली और काम खत्म।"

"कह देने से काम खत्म नहीं हुआ करते प्यारे सोहनलाल।" जगमोहन ने मुंह बनाकर कहा—"जूत रगड़ाई करनी पड़ती है।"

"मुझे पता है।" सोहनलाल ने बुरा सा मुंह बनाया।

जगमोहन ने प्रताप कोली से कहा—

"आर-डी-एक्स के बारे में और बताओ।"

प्रताप कोली ने दिनेश चुरू को देखकर कहा—

"तू बता, मेरे पास तो और कुछ है नहीं बताने को।"

"उनका ठिकाना किधर है?"

"नहीं पता।" दिनेश चुरू ने कहा—"इनके नाम मालूम हैं।"

"वो ही बता।"

"आर से राघव है। दूसरा डी से धर्मा और तीसरा एक्स से एक्स्ट्रा (X–TRA) हैं।"

"राघव-धर्मा और एक्स्ट्रा—ये एक्स्ट्रा क्या हुआ?"

"पता नहीं, लेकिन तीसरे को एक्स्ट्रा (X–TRA) ही कहा जाता है। इस तरह वे आर-डी-एक्स कहलाते हैं।"

"देखेंगे इस साले जीते-जागते आर-डी-एक्स को।" जगमोहन ने तीखे स्वर में कहा।

"हमें क्या जरूरत है देखने की!—" देवराज चौहान ने कहा—"उनके रास्ते अलग हैं और हमारे अलग। हमने रतनचंद का निशाना लेना है और अपने रास्ते पर चले जाना है, आर-डी-एक्स की तरफ से ध्यान पूरी तरह हटा लो।"

जगमोहन सिर हिलाकर रह गया।

"तुम दोनों।" देवराज चौहान ने कहा—"रतनचंद कालिया के आने-जाने के बारे में पता करो और नक्शा बनाकर बारीकी से मुझे समझाओ कि कल वो किधर-किधर जायेगा। कैसा-कैसा रास्ता होगा उसका?"

"यूं तो हमें पता है, लेकिन फिर भी पक्के तौर पर मालूम करके दो घंटों में बता देते हैं।" प्रताप कोली ने कहा।

"किससे पता करोगे?"

"हमारा आदमी है, रतनचंद कालिया के आदमियों के बीच।"

"तो उसी से ये काम क्यों न करवा लिया। वो आसानी से रतनचंद कालिया को...।"

"हर काम, हर किसी के बस का नहीं होता और रतनचंद कालिया बेहद शातिर है। यूं ही ड्रग्स किंग नहीं कहलाता। सामने होने पर भी उसकी जान लेना आसान नहीं।" प्रताप कोली बोला।

"चल।" दिनेश चुरू, प्रताप कोली से बोला—"रतनचंद के बारे में ताजा जानकारी ले आयें।"

प्रताप कोली उठने लगा तो जगमोहन बोला।

"यहीं बैठे रहो।"

"क्यों?"
"अभी हमें नोट नहीं मिले। पूरे तीन करोड़। नोट मिलेंगे तो काम की तरफ ध्यान देंगे। वक्त क्या हुआ है?"
"साढ़े सात।"
"नागेश शोरी ने कहा था कि शाम तक तुम दोनों में से किसी के फोन पर नोटों के बारे में खबर दे दी जायेगी। पहले खबर लो, नोट हमें दो, उनके बाद बाकी की बातें। कल से हम वक्त खराब कर रहे हैं और माया का एक टुकड़ा भी हाथ नहीं लगा।"
जगमोहन की बात सुनकर दोनों ने एक-दूसरे को देखा।
"शोरी साहब को फोन कर।" प्रताप कोली ने कहा।
दिनेश चुरू ने फोन निकाला और नम्बर मिलाने लगा। साथ ही कमरे के कोने में पहुंच गया। मिनट भर बात करने के पश्चात वो पास आकर कह उठा—
"शोरी साहब कह रहे हैं कि तीन करोड़ तैयार हैं। डिलीवरी कैसे लोगे?"
"इस होटल के बाहर नोट भिजवा दे। उसके बाद मैं नोट ठिकाने लगाने जाऊंगा और तुम दोनों जानकारी लेने जाना।"
"शोरी साहब।" दिनेश चुरू फोन पर बोला—"नोट यहीं भिजवा दीजिये। होटल के बाहर।"
"ठीक है। मेरे आदमी बाहर पहुंच कर फोन कर देंगे।" कहकर उधर से नागेश शोरी ने फोन बंद कर दिया।
दिनेश चुरू ने फोन जेब में रखा।
"कितनी देर तक नोट आयेंगे?" जगमोहन ने पूछा।
"एक घंटे तक।"
"सोहनलाल, तू मेरे साथ चलना। माल ठिकाने लगाना है।"
❑❑❑
जगमोहन और सोहनलाल रात साढ़े दस बजे नोटों को ठिकाने लगा कर लौटे।
देवराज चौहान होटल के कमरे में मौजूद था।
"दिनेश और प्रताप नहीं लौटे क्या?" जगमोहन ने पूछा।
"नहीं।"
"सोहनलाल, तू डिनर का आर्डर दे। भूख बहुत लगी है।"
सोहनलाल उस तरफ बढ़ गया, जिधर इन्टरकॉम पड़ा था।

"नोट संभालने का काम भी बहुत ज्यादा होता है।" जगमोहन ने कहा—"साले ने दो सूटकेसों में भरकर नोटों की गड्डियां भिजवा दीं। मैंने तो गिनती भी नहीं की। यूं ही सूटकेस रख आया हूं।"
देवराज चौहान मुसकराया।
"पूरे ही भिजवाये होंगे।" जगमोहन भी मुस्कुरा पड़ा—"दस-बीस लाख कम भी हुआ तो क्या फर्क पड़ता है!"
"नोटों की तरफ ज्यादा ध्यान होना भी ठीक नहीं।" देवराज चौहान ने कहा।
"हम नोटों के लिये ही काम करते हैं।"
"नहीं, हम कुछ करने के लिये काम करते हैं, वरना नोट तो इतने हैं कि खत्म नहीं होंगे।"
"धीरे बोलो, क्यों लोगों को सुना रहे हो।"
"मैंने कुछ नहीं सुना।" पास आता सोहनलाल कह उठा।
"पक्का?"
"पक्का कुछ नहीं सुना।" सोहनलाल पास बैठता कह उठा—"तूने मेरा ढाई लाख देना है, वो...।"
"चुप कर, बाद में बात करेंगे।"
"बाद में कब?"
"फुर्सत में, जब हम दोनों अकेले होंगे।" जगमोहन ने मुंह बनाकर कहा—"जब देखो, ढाई लाख ही मांगता रहता है।"
"तू देकर काम खत्म कर।" सोहनलाल मुस्कुराया।
"दे दूंगा।"
"कब?"
"जल्दी ही, मांगना मत, मैं खुद ही दूंगा।"
"दे दिए तूने और मैंने ले लिए!"
जगमोहन ने गहरी सांस ली और देवराज चौहान से कहा—
"उनको अब तक आ जाना चाहिए था।"
देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।
कुछ देर बाद डिनर आया तो वे खाने में व्यस्त हो गये।
❑❑❑
जब उनका खाना समाप्त हुआ तो प्रताप और दिनेश आ पहुंचे।

"बहुत देर लगा दी।" सोहनलाल उन्हें देखते ही बोला।
"जिससे काम था, वो बंदा नहीं मिल रहा था।"
दोनों बैठ गये।
"अब मिला वो?"
"हां।"
"बताओ क्या बात हुई?" जगमोहन ने कहा।
देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगा ली।
"थोड़ी-सी गड़बड़ लग रही है।"
"क्या?"
"आज दोपहर के बाद से रतनचंद कालिया अपनी सुरक्षा में खास ध्यान देने लगा था।"
"दोपहर बाद से?" देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं।
"हां।" प्रताप कोली ने सिर हिलाया।
"इस आदमी ने ये तो बताया होगा कि ऐसा क्यों करने लगा रतनचंद?" देवराज चौहान बोला।
"वो नहीं जानता।"
"अपनी सुरक्षा में क्या खास किया रतनचंद ने?"
"पहले सिक्योरिटी वाली कार उसकी कार के आगे या पीछे होती थी, वो अपनी कार में अकेला होता था। आज कार में उसके साथ तीन आदमी बैठे। दो पीछे उसके साथ, एक आगे। यूं उसकी कार काले शीशे वाली होती है। उसके भीतर नहीं झांका जा सकता और उसकी कार के साथ रहने वाले गनमैनों की कार भी साथ ही रही। आज कार को सुन्दर ड्राइव कर रहा था।"
"सुन्दर कौन है?"
"रतनचंद कालिया का सबसे खास आदमी। माना हुआ निशानेबाज है।"
"सुन्दर का हुलिया बताओ।"
दिनेश चुरू ने सुन्दर का हुलिया बताया।
"लेकिन...।" जगमोहन बोला—"आज ही रतनचद ने सुरक्षा क्यों बढ़ाई अपनी?"
"इस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता।"
"तुम लोगों के अलावा कौन जानता है कि हम उसे निशाना बनाने वाले हैं?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हम दोनों के अलावा अवतार सिंह और हरीश मोगा ही जानते हैं।"
"वो दोनों कैसे लोग हैं?"
"वहम में मत पड़ो, सालों से वो शोरी साहब के साथ हैं।" प्रताप कोली ने कहा।
"तुम दोनों का अपने बारे में क्या ख्याल है?"
"वक्त बरबाद मत करो, इस तरह की बात करके।"
"किसी ने तो ये बात रतनचंद तक पहुंचाई है कि उसे मारा जाने वाला है।" देवराज चौहान सख्त स्वर में बोला।
प्रताप और दिनेश की नज़रें मिलीं।
"तुम्हारा मतलब कि रतनचंद को पता चल गया है कि हम किसी कोशिश में हैं।" दिनेश चुरू के होठों से निकला।
"हां। तभी तो उसने अपनी सुरक्षा एकाएक बढ़ा दी।"
"नहीं, ये बात भला उसे कैसे मालूम हो सकती है।" प्रताप कोली ने तेज स्वर में कहा।
"तुम दोनों के और हरीश मोगा, अवतार सिंह के द्वारा।"
"हमें से कोई भी गद्दार नहीं है।"
"गद्दार के चेहरे पर नहीं लिखा होता कि वो गद्दार है।" देवराज चौहान ने तीखे स्वर में कहा।
"हम दोनों तो तुम लोगों के साथ यहां आ गये थे। हम कैसे गद्दारी कर सकते...।"
"सिर्फ एक छोटा सा फोन करके गद्दारी को अंजाम दिया जा सकता है।"
"हमने ये काम नहीं किया।"
"मैंने ये नहीं कहा कि तुम दोनों में से किसी ने ये काम किया है।" देवराज चौहान ने कश लिया—"हरीश मोगा या अवतार सिंह भी ये काम कर सकते हैं। सोचो, क्या उनका किसी तरह का वास्ता है रतनचंद कालिया से?"
दोनों ने एक-दूसरे को देखा।
"नहीं।" प्रताप कोली दृढ़ता भरे स्वर में कह उठा—"न तो वो दोनों गद्दार हैं और न ही हम।"
"तो, कैसे खबर पहुंची रतनचंद के पास कि उसे मारने की तैयारी की जा रही है।"

"तुम गलत भी हो सकते हो।"
"वो कैसे?"
"हो सकता है रतनचंद ने अपनी सुरक्षा में बढ़ोत्तरी यूं ही कर ली हो, या फिर उसे आज किसी खास जगह जाना हो, जहां उसके लिए खतरा हो सकता था। इसलिए उसने आदमी बढ़ा लिए हों।" दिनेश चुरू ने कहा।
"अगर ये बात है तो कल सुबह पता चल जायेगा।" जगमोहन बोला।
"वो कैसे?"
"कल वो अपनी क्या सुरक्षा रखता है, ये देखकर।"
कुछ पल उनके बीच चुप्पी रही।
"तुम लोग क्या पता लगाकर आये हो?"
"रतनचंद का कल का प्रोग्राम पता लगाया है कि वो कहां-कहां जायेगा। परन्तु इस प्रोग्राम में कुछ आगे पीछे भी हो सकता है। इसलिए हमारी बताई बातों पर पूरा यकीन न किया जाये।"
"तुम बताओ।" देवराज चौहान बोला।
दिनेश चुरू बताने लगा।
वे सब सुनते रहे।
इसके बाद देवराज चौहान अपनी जरूरत के मुताबिक बातें पूछने लगा।
एक घंटा उनकी बातें चलीं।
"कल सुबह आठ बजे तुम दोनों हमारे साथ, उसके कालबा देवी वाले ऑफिस पर चलना।" देवराज चौहान ने कहा।
"वहां क्या होगा?"
"जहां उसकी कार खड़ी होती है, उस जगह को देखना है, उसके आस-पास देखना है।"
प्रताप कोली और दिनेश चुरू की नजरें मिलीं।
"तो तुम कल उसका निशाना लोगे?"
"ऐसा हो सकता है, टैलिस्कोप गन भी चाहिये मुझे।"
"कब चाहिये?"
"सुबह नौ बजे।"
"मिल जायेगी।" प्रताप कोली ने सिर हिलाया—"रतनचंद कालिया, कालबा देवी वाले आफिस में सुबह दस-साढ़े दस

पहुंचेगा और वहां पर बारह बजे तक रहेगा। वहां उसका निशाना लेने में खतरा हो सकता है।"
"कैसा खतरा?"
"कालबा देवी वाले आफिस में हर वक्त पांच-सात खतरनाक लोग मौजूद रहते हैं। साथ में जो गनमैन होंगे, वो अलग। उधर उसे मारा गया तो वे तुम्हें ढूंढ भी सकते हैं।" प्रताप कोली ने गम्भीर स्वर में कहा।
"मैंने उसे पास जाकर नहीं मारना। टैलिस्कोप गन का इस्तेमाल करना है। दूर रहूंगा मैं, उन्हें पता भी नहीं चलेगा कि गोली किधर से आई, जब तक वो समझेंगे, मैं जा चुका होऊंगा। तुम सुबह आठ बजे मेरे साथ वहां चलोगे, मैंने वहां ऐसी जगह का चुनाव करना है कि जहां से उसका निशाना ले सकूं।"
"रतनचंद कालिया को पहचानते हो?"
"तुमने अखबारों की जो कटिंग्स दी थीं, उनमें छपी रतनचंद की तस्वीर देखी थी।"
"फिर ठीक है।"
"नौ बजे तक मुझे टैलिस्कोप गन मिल जानी चाहिये।" देवराज चौहान ने सोच भरे स्वर में कहा।
"उसके बाद हमारे यहां रहने की तो जरूरत नहीं?" दिनेश चुरू ने पूछा।
"नहीं। तुम दोनों इसी होटल में आ जाना। मैं यहीं आ जाऊंगा।"

❑❑❑

अगले दिन सुबह देवराज चौहान, जगमोहन, सोहनलाल और प्रताप कोली जब कालबा देवी रोड पर पहुंचे तो, सवा आठ बज रहे थे। लोगों की भीड़ अभी वो नहीं थी, जो घंटे बाद हो जानी थी।
बिजनेस काम्पलैक्स था ये। उसके आगे लम्बी-चौड़ी पार्किंग थी, फिर सड़क, जिस पर से वाहन आ-जा रहे थे। जगमोहन ने पार्किंग में कार ले जा कर रोकी थी।
"सोहनलाल!" देवराज चौहान ने कहा—"तुम इधर-उधर घूमते सतर्क रह कर हम पर नज़र रखोगे कि कोई हममें दिलचस्पी तो नहीं ले रहा। ऐसा कुछ लगे तो मुझे फौरन खबर करना।"
"ठीक है।" सोहनलाल ने कहा और बाहर निकल गया।

"जगमोहन, तुम कार की ड्राईविंग सीट पर रहो और आस-पास नज़रें रखो, जब मैं आकर कार में बैठूं तो कार को यहां से ले चलना तुम्हारा काम होगा।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

जगमोहन ने सिर हिला दिया।

फिर देवराज चौहान और प्रताप कोली कार से बाहर निकले।

देवराज चौहान ने सिग्रेट निकाल कर होठों में दबाई और धीमे स्वर में बोला—

"उस तरफ चलो, जिधर रतनचंद कालिया की गाड़ी पार्क होती है।"

दोनों एक तरफ चल पड़े।

पार्किंग के काफी बड़े हिस्से को पार करके प्रताप कोली ठिठका।

"वो सामने—दाईं तरफ रतनचंद की कार खड़ी होती है। वहां पर दूसरा कोई कार खड़ी नहीं करता।"

"उसी तरफ बढ़ो।" कश लेता देवराज चौहान कह उठा—"किसी को शक न हो कि हम खास तौर से उस जगह पर जा रहे हैं। वहां पर हमने एक मिनट बिताना है। इस दौरान हम में बराबर बातें होती रहें, ताकि कोई देखे तो यही सोचे कि हम अपनी ही किसी उलझन में फंसे पड़े हैं। सब कुछ सामान्य ढंग से होना चाहिये।"

"समझ गया।"

"चलो।"

दोनों आगे बढ़े और फिर एक जगह कोली ठिठका तो देवराज चौहान रुक गया।

"ठीक इसी जगह पर रतनचंद की कार खड़ी होती है, जहां हम इस वक्त खड़े हैं।"

दोनों बातें करने लगे।

इस तरह कि देखने वाले को लगे कि उनमें कोई बहस छिड़ रही है।

साथ ही साथ देवराज चौहान की नजरें आसपास की इमारतों पर फिर रही थीं।

"कार की डिग्गी किस तरफ होती है?" एकाएक देवराज चौहान ने पूछा।

"तुम्हारी तरफ। कार खड़ी करने के पश्चात् एक गनमैन हमेशा कार के पास ही रहता है।" प्रताप कोली ने बताया।

दोनों की बहस जैसी बातें चलती रहीं।

फिर देवराज चौहान बोला—

"चलो यहां से।"

दोनों आगे चल पड़े।

"क्या देखा वहां से?"

"उधर जो चार-मंजिला इमारत है, उसकी पहली मंजिल की वो खिड़की मुझे चाहिये, जिस पर ए.सी. लगा हुआ है।"

प्रताप कोली की नज़रें उस तरफ घूमीं।

सड़क के उस पार थी वो इमारत।

"देखना पड़ेगा कि वो जगह किसी का घर है या आफिस।"

"रतनचंद कालिया को निशाना लेने के लिये मुझे वो ही जगह चाहिये।"

"मैं समझता हूं। इन्तजाम हो जायेगा। दिनेश को आने दो। वो आता ही होगा।" कलाई पर बंधी घड़ी में वक्त देखा—"पौने नौ हो चुके हैं, नौ बजे तक वो हर हाल में....।"

तभी प्रताप कोली का फोन बजा।

"हैलो।" प्रताप कोली ने फोन निकालकर बात की।

"मैं गन ले आया हूं।"

"किधर हो?"

"जगमोहन की कार से पन्द्रह कदम दूर मैंने कार खड़ी की है, किधर पहुंचूं?"

"सड़क की तरफ आओ, जहां पीपल का पेड़ नज़र आ रहा है।"

"सब ठीक तो है?"

"हां।" प्रताप कोली ने फोन बंद करके जेब में रखा और देवराज चौहान से बोला—"आओ।"

दोनों आगे बढ़ गये।

कुछ दूर पीपल के पेड़ के पास जा पहुंचे।

अब लोगों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। सड़क पर भी ट्रेफिक बढ़ गया था। पार्किंग में कारें आकर लगने लगी थीं। हर पल जैसे शोर बढ़ता ही जा रहा था।

दिनेश चुरू उनके पास आ पहुंचा। उसने गिटार वाला लम्बा बक्सा-सा थाम रखा था। स्पष्ट था कि टैलिस्कोप और गन उसके भीतर थी। प्रताप कोली उसे देखकर कह उठा—

"देवराज चौहान को एक जगह चाहिये, जहां से निशाना लेना है।"

"दिक्कत क्या है?"

"उस जगह पर कब्जा करना है। सामने उस तरफ। अभी पता नहीं कि वो घर है या कोई आफिस।"

"यहां आफिस ही होंगे। घर होने की संभावना कम ही है। उधर चलते हैं, जो भी होगा, संभाल लेंगे।"

तभी देवराज चौहान बोला—

"किसी को डरा-धमका तो सकते हो, लेकिन चोट मत पहुंचाना। रिवॉल्वर है तुम दोनों के पास?"

"है। परन्तु चोट भी पहुंचानी पड़ सकती है। तुम्हें इससे क्या!"

"अपने मतलब के लिए मैं किसी को तकलीफ नहीं देता। ऐसी बातों से बचकर काम करता हूं। जब तक मेरे साथ हो, ये बात ध्यान में रखना। बाद में जो भी करो, मुझे कोई मतलब नहीं।" देवराज चौहान ने आदेश भरे स्वर में कहा—"मेरी बात से बाहर जाकर कोई काम करने की चेष्टा की तो मैं तुम्हें छोडूंगा नहीं।"

"तुम जैसा चाहोगे, वैसा ही होगा देवराज चौहान। हम चाहते हैं तुम शोरी साहब का काम पूरा कर दो।"

"आओ।"

फिर तीनों सड़क पार करने लगे उस तरफ जाने के लिये।

सड़क पार की। कुछ आगे बढ़े तो ऊपर जाती ढाई फीट चौड़ी सीढ़ियां दिखीं। जिनकी शुरूआत सड़क के किनारे पर से ही हो रही थी। आगे प्रताप कोली था, बीच में देवराज चौहान और पीछे गिटार का कवर थामे दिनेश चुरू।

वे ऊपर पहुंचे तो वहां दो फीट चौड़ी सीमेंट की बनी राहदारी दिखी।

"इधर, वो जगह इधर है।" देवराज चौहान कहते हुए एक तरफ बढ़ा।

यहां आफिस भी बने हुए थे और रहने को घर भी थे। सब कुछ मिला-जुला था।

देवराज चौहान एक बंद दरवाजे पर ठिठका। भीतर से रेडियो चलने की आवाज आ रही थी।

प्रताप कोली और दिनेश चुरू भी उसके पास आकर ठिठक गये।

वहां कॉलबेल नहीं थी। देवराज चौहान ने दरवाजा थपथपाया।

फौरन ही दरवाजा खुला।

दरवाजा खोलने वाली चौबीस बरस की नवविवाहिता युवती थी। हाथ में शादी का चूड़ा पहना हुआ था।

"नमस्कार।" देवराज ने हाथ जोड़कर कहा।

"नमस्कार....आप कौन....।" उसने पूछना चाहा।

"भीतर चलिये, बताते हैं।"

तभी युवती के पीछे एक युवक आ पहुंचा, जो कि उसका पति ही था।

"क्या बात है शालू, ये कौन हैं?"

तभी देवराज चौहान युवती को एक तरफ करके भीतर प्रवेश करता चला गया।

प्रताप कोली और दिनेश चुरू ने भी ऐसा ही किया।

"ये आप भीतर क्यों आ रहे हैं?" युवक ने कहना चाहा।

दिनेश चुरू ने फौरन दरवाजा बन्द किया।

कमरे में कुर्सियों पर साठ बरस का व्यक्ति और पचपन बरस की औरत बैठी थी। वो यकीनन युवक के मां-बाप थे।

"कौन हैं आप सब—और क्यों....?" युवक के पिता ने कहना चाहा।

देवराज चौहान बोल पड़ा—

"हम यहां थोड़ा सा वक्त बिताना चाहते हैं, कुछ ही देर में चले जायेंगे।"

"लेकिन...।" पिता ने कहना चाहा।

प्रताप कोली ने उसी पल रिवॉल्वर निकाल ली।

"जुबान बंद रखो। सुना नहीं तुम लोगों ने कि कुछ देर बाद हम चले जायेंगे।" कोली गुर्रा उठा।

रिवॉल्वर देखते ही उन चारों की जुबानें बंद हो गईं।

"थोड़ी देर की बात है। अपने पर काबू रखो और शांत रहो।" दिनेश चुरू ने कहा।

"म-मुझे आफिस जाना है।" वो युवक कह उठा।

"जरूर जाना।" प्रताप कोली कहर भरे स्वर में बोला।

"दस बजे बॉस के साथ मीटिंग है–वो....।"

"जिन्दगी से प्यार है या बॉस के साथ मीटिंग से?" प्रताप कोली ने रिवॉल्वर वाला हाथ सीधा किया।

युवक का चेहरा फक्क पड़ गया, उसका पिता घबराकर अपने बेटे से बोला–

"चुपचाप बैठ जा। कोई शब्द मुंह से मत निकालना।" फिर वो कोली से बोला–"ये अब चुप रहेगा।"

प्रताप कोली ने चारों पर खतरनाक निगाह मारी।

"हम नहीं चाहते कि आप लोगों को कोई तकलीफ दें। कुछ देर बाद हम चले जायेंगे। तब तक सब खामोश बैठे रहें।"

चारों चुप रहे।

देवराज चौहान तब तक दूसरे कमरे में जा चुका था।

प्रताप कोली ने दिनेश चुरू के हाथ से गिटार वाला केस लिया और बोला–

"इनका ध्यान रखना–और कोई चालाकी करने की कोशिश करे तो गोली मार देना।"

दिनेश चुरू ने रिवॉल्वर निकाल ली। बोला–

"किसी ने भी शरारत की तो मैं चारों को गोली मार दूंगा।"

"हम कुछ नहीं करेंगे।" युवक की मां कह उठी।

प्रताप कोली गिटार का केस थामे दूसरे कमरे में चला गया।

"तुम लोगों में से चाय कौन अच्छी बनाता है?" दिनेश चुरू ने कहा।

"मैं बना देता हूं।" युवक ने कहा।

"तुम नहीं। बैठे रहो।" दिनेश चुरू ने रिवॉल्वर वाला हाथ हिलाया–"तुम्हारी मां चाय बनायेगी, कोई शरारत नहीं करेगी।"

वो औरत तुरन्त उठ गई।

सामने ही किचन था। दिनेश चुरू किचन के भीतर काम करने वाले को देख सकता था।

"जाओ, चाय बनाओ। मुझे मेहमान समझो। तुम लोग शरारत नहीं करोगे तो, फिर मुझसे डरने की जरूरत नहीं है।"

❑❑❑

वो चार फीट चौड़ी और छः फीट लम्बी खिड़की थी। जिसमें प्लाई ठोक कर ए.सी. लगा रखा था। देवराज चौहान के कहने पर प्रताप कोली ने, किचन से चाकू लाकर, प्लाई को एक तरफ से छः इंच चौड़ाई और एक फीट लम्बाई में काटा तो वहां से बाहर का नजारा दिखने लगा।

प्रताप कोली कुछ पल बाहर देखता रहा, फिर पलट कर बोला–

"तुमने बढ़िया जगह चुनी। जहां रतनचंद की कार खड़ी होनी है, वो जगह यहां से स्पष्ट नजर आ रही है।"

ये बैडरूम था और देवराज चौहान गिटार केस में रखी गन निकाल कर बैड पर बैठा उस पर टैलिस्कोप सैट कर रहा था। कोली पुनः कह उठा–

"यहां से आसानी से रतनचंद का निशाना लिया जा सकता है।"

"तो अब तुम्हें एहसास हो गया होगा कि ये काम आसान था और तुम कर सकते थे।" देवराज चौहान मुस्कुराया।

"शायद।"

"गन लो और रतनचंद का निशाना लेना। तुम कामयाब रहे तो तीन करोड़ तुम्हें दे दूंगा।"

"मज़ाक कर रहे हो।"

"सच कह रहा हूं।"

"लेकिन तुम–तुम ऐसा क्यों करोगे?" प्रताप कोली उलझन भरे स्वर में कह उठा।

"तुम्हें यह समझाने के लिए कि कोई भी काम इतना आसान नहीं होता। खासतौर से निशाना लेना। इस बात को समझाने के लिए आज तुम्हारे पास बहुत अच्छा मौका है, गन हाथ में लो और–।"

"मैं जरूरत नहीं समझता। तुम काम खत्म करो और चलो...।"

"तुम क्यों नहीं निशाना ले लेते?"

"निशाना चूक गया तो शोरी साहब मेरी गर्दन तोड़ देंगे।" प्रताप कोली ने मुस्कुराकर गहरी सांस ली–"ये काम तुम्हारा है और तुम ही करोगे। मैं इस काम में सिर्फ तुम्हारे साथ हूं।"

गन तैयार थी।

टैलिस्कोप फिट हो चुका था।

देवराज चौहान उठा और गन का मुंह उसने कटी हुई प्लाई पर टिका दिया और टैलिस्कोप पर आंख लगाई। पार्किंग की वो जगह, जहां रतनचंद की कार खड़ी होनी थी, टैलिस्कोप की वजह से इतनी करीब महसूस होने लगी कि जैसे हाथ बढ़ाकर उस जगह को छुआ जा सकता हो।

"ठीक है?" प्रताप कोली ने पूछा।

"हां।"

"उड़ा दोगे रतनचंद को?"

"लगता तो है। वक्त क्या हुआ है?" टैलिस्कोप लगाये, देवराज चौहान ने पूछा।

"नौ चालीस।"

"रतनचंद कब आयेगा?"

"दस-सवा दस या फिर साढ़े दस बजे तक।"

❑❑❑

रतनचंद कालिया तैयार हो रहा था। साढ़े नौ हो रहे थे। तैयारी के अन्तिम चरण पर था। इसके बाद उसने नाश्ता करना था और निकल जाना था। ठीक तभी उसका मोबाइल फोन बज उठा। टाई को ठीक करते हुए आगे बढ़कर टेबल पर रखा मोबाइल उठाया और कॉलिंग स्विच दबाकर कान से लगाया।

"हैलो!"

"कैसे हो रतनचंद कालिया?"

"केकड़ा?"

रतनचंद कालिया की आंखें सिकुड़ती चली गईं।

"तुम—कैसे हो केकड़ा?"

"खूब पहचाना!" दूसरी तरफ से केकड़ा की मुस्कुराहट भरी आवाज, कानों में पड़ी—"यूं तो मैं सुबह-सुबह किसी को परेशान नहीं करता, लेकिन जब बात भले की हो तो परेशान कर भी देता हूं।"

"क्या कहना चाहते हो?"

"आज तुम्हारा निशाना लिया जायेगा।"

"निशाना?" रतनचंद कालिया के चेहरे पर सख्ती आ गई।

"हां। हो सकता है कि आज का दिन तुम्हारी जिन्दगी का आखिरी दिन बन जाये।"

"तुम सब जानते हो?"

"हां, सब जानता हूं।"

"कहीं तुम ही तो मेरी जान नहीं लेना चाहते?"

"बच्चों जैसे बातें कर रहे हो। समझदार बनो रतनचंद, क्या हो गया है तुम्हें?"

"सामने क्यों नहीं आते तुम?"

"क्या जरूरत है। मेरे को क्या पड़ी है सामने आने की। फोन पर ही मैं तुम्हारा भला कर रहा हूं।"

"तुम मुझे बताओ कि किसने मेरी सुपाड़ी दी है और कौन मेरी जान लेना चाहता है।"

"तब तो तुम्हें, मुझे मेरी रकम देनी पड़ेगी।

"मैं दूंगा।"

"कितनी?"

"क्या चाहते हो तुम?"

"ये तो सोचने वाली बात हो गई।"

"मैं तुम्हें मुंहमांगी दौलत दूंगा, तुम मुझे....।"

"सुन लिया...सुन लिया।" केकड़ा की आवाज आई—"लेकिन आज तो बच के दिखाओ।"

रतनचंद कालिया के दांत भिंच गये।

"ये पक्का है कि आज मुझ पर गोली चलाई जायेगी?"

"पक्का है रतनचंद। बच सको तो बच के दिखा दो। तुम जिन्दा रहे तो मैं तुम्हें फोन जरूर करूंगा।"

"तुम हो कौन?"

तब तक दूसरी तरफ से फोन बंद कर दिया गया।

रतनचंद कालिया के चेहरे पर गम्भीरता और परेशानी नज़र आ रही थी। उसने फोन रखा और कुर्सी पर जा बैठा। आंखों में सोच के गहरे भाव दिखाई दे रहे थे।

तभी सुन्दर ने भीतर प्रवेश किया।

"चलने की तैयारी हो चुकी है सर।" सुन्दर ने कहा।

रतनचंद कालिया ने सुन्दर को देखा।

"क्या हुआ सर?" रतनचंद के चेहरे के भावों को देखकर, सुन्दर कह उठा।

"मैंने तुम्हें कल समझाया था कि ऐसी बातों को गम्भीरता

से लेना जरूरी है मेरे लिए। क्योंकि पता नहीं कब कौन-सी बात सच हो और मारने वाला अपने इरादे में सफल हो जाये।"

"जी।"

"इस मसले पर गम्भीर रहो।"

"जी। उसने बताया कि गोली कहां पर चलाई जायेगी?" सुन्दर ने सोच भरे स्वर में पूछा।

"नहीं।"

"मुझे समझ नहीं आता कि आखिर केकड़ा है कौन! उसके पास जानकारी है, उसे सौदेबाजी करके जानकारी बेच देनी चाहिये। इस तरह ज़रा-ज़रा खबरें देकर उसे मिल क्या रहा है? वो आप में क्यों दिलचस्पी ले रहा है?"

"वो अब जल्दी ही सारी जानकारी बेचने का सौदा करेगा।"

"उसने ऐसा कहा?"

"हां। कहा तो है। बात ये है कि आज मुझे मारने के लिए मुझ पर गोली चलाई जायेगी।"

"सर। मेरी बात मानें तो आप बाहर ही न जायें।"

"आज तो मैं बाहर जरूर जाऊंगा।"

"क्यों?" सुन्दर की निगाह रतनचंद कालिया के चेहरे पर जा टिकी।

"ताकि मालूम हो कि केकड़ा की बात कितनी सच निकलती है।" रतनचंद ने सख्त स्वर में कहा।

"सर, अपनी बात को सच साबित करने के लिए केकड़ा खुद भी गोली चला सकता है। मुझे तो केकड़ा कोई फर्जी या चालबाज लगता है। वो शायद आपको डरा कर मोटी रकम ऐंठ लेना चाहता है।"

"जल्दी पता लग जायेगा कि वो कोई चालबाज है या सही कहने वाला व्यक्ति है।"

"मेरी मानें तो आज आप बाहर मत जाइये। बेकार में रिस्क लेने का कोई फायदा नहीं।"

रतनचंद कालिया के चेहरे पर गहरी सोच के भाव उभरे रहे।

कुछ पल उनके बीच चुप्पी रही।

"सुन्दर!" रतनचंद कालिया ने सिर उठाकर उसे देखा—"अब एक ही रास्ता बचा है।"

"क्या?"

"आर-डी-एक्स—।"

"आर-डी-एक्स?" सुन्दर चौंका—"आप...आप...।"

"आर-डी-एक्स को इस मामले में लेना जरूरी हो गया है। क्योंकि मेरी जिन्दगी का सवाल है।"

"वो तीनों खतरनाक हैं और—।"

"मेरे लिए नहीं--वो पहले भी मुझे बचा चुके हैं।"

"सर, आप भूल गये कि पिछली बार काम खत्म करके, उन्होंने काफी बड़ी रकम की मांग रखी थी और आपने वो रकम देने से मना कर दिया था तो उन्होंने आप पर ही रिवॉल्वर रख दी थी।"

"कोई बात नहीं।" रतनचंद मुस्कुरा पड़ा—"फिर भी वे मेरे काम के हैं।"

सुन्दर ने गहरी सांस लेकर कहा—

"मेरे ख्याल में तो इस मामले में अभी उनकी जरूरत नहीं।"

"मुझे आर-डी-एक्स की जरूरत महसूस हो रही है। वो ही इस मामले को देखेंगे। अगर किसी ने मेरी मौत की सुपाड़ी किसी को दी है और कोई मुझे मारना चाहता है तो उससे वो ही निपटेंगे।"

सुन्दर रतनचंद कालिया को देखता रहा।

"आर-डी-एक्स को फोन लगाओ।" रतनचंद कालिया ने कहा।

"सोच लीजिये सर—।"

रतनचंद कालिया ने कठोर नज़रों से सुन्दर को देखा।

सुन्दर सिर झटक कर आगे बढ़ा और मोबाईल फोन उठाकर नम्बर मिलाने लगा।

रतनचंद कालिया फोन पर थिरकती उसकी उंगलियों को देख रहा था।

दूसरी तरफ बेल हुई तो सुन्दर ने फोन उसकी तरफ बढ़ाया।

"बेल हो रही है सर।"

रतनचंद कालिया ने फोन कान से लगाया। चेहरा सख्त हुआ पड़ा था।

"हैलो।" दूसरी ओर से मर्द की आवाज कानों में पड़ी।

"राघव—।"

कुछ पल चुप्पी के पश्चात वो ही आवाज पुनः कानों में पड़ी—

"रतनचंद हो तुम?"

"हां।"

"कहो।"

"मैं मुसीबत में हूं।"

"हमें जो याद करता है वो मुसीबत में ही करता है। खुशी में हम किसी को याद नहीं रहते।"

"कोई मेरी जान लेना चाहता है।"

"कैसे पता?"

"'केकड़ा' नाम का आदमी मुझे फोन करके बताता है कि मेरे नाम की सुपाड़ी दी गई है। कल की बात है। और आज उसने मुझे फोन करके बताया कि आज मुझे शूट करने की चेष्टा की जायेगी।" रतनचंद ने स्थिर स्वर में कहा।

"केकड़ा कौन है?"

"मैं नहीं जानता। वो अपने बारे में नहीं बताता और जिसने मेरी सुपाड़ी दी है, उसके बारे में भी नहीं बताता। उसके बारे में भी नहीं बताता जो मुझे मारना चाहता है, लेकिन साथ ही वो ये भी कहता है कि वो उन दोनों को जानता है।"

"चाहता क्या है केकड़ा?"

"जानकारी के बदले मोटी रकम लेना चाहता है।"

"तो उसे रकम दे दो। तुम्हारे पास दौलत बहुत है।"

"अभी वो सौदा करने को तैयार नहीं है। टाल रहा है। कहता है, आज बच जाओ तो शाम को बात करेंगे।"

"हरामी लगता है ये केकड़ा!"

"मुझे तुम तीनों की जरूरत है।"

"आज तो हम नहीं आ सकते।"

"प्लीज राघव, मैं खतरे में हूं—तुम—।"

"आज नहीं आ सकते। मुफ्त की सलाह देता हूं कि आज घर पर ही रहो।"

"नहीं, मेरा जाना जरूरी है और मैं ये भी देखना चाहता हूं कि केकड़ा की बात कितनी सच निकलती है।"

"देखने-देखने में मर जाओगे।"

"तभी तो तुम तीनों को बुला रहा हूं।"

"कल से पहले हम नहीं आ सकते।"

"तो मुझे बताओ मैं क्या करूं? मैंने बाहर जाना है और मैं मरना भी नहीं चाहता।"

"इस बारे में तो तुम्हें एक्स्ट्रा ही सलाह दे सकता है, होल्ड करो।"

रतनचंद कान से फोन लगाए रहा।

करीब दो मिनट बाद एक्स्ट्रा की आवाज कानों में पड़ी।

"सुना है तुम मरने जा रहे हो।"

"तुम लोग न आये तो शायद मैं जिन्दा न रहूं।"

"आज हम बहुत व्यस्त हैं। देर रात बाद फुर्सत मिलेगी। कल आयेंगे। राघव ने बताया सारा मामला।"

"बताओ मैं क्या करूं?"

"तुम बाहर कैसे जाते हो, सुरक्षा के क्या इन्तजाम हैं, मुझे बताओ।"

रतनचंद कालिया सब इन्तजामों के बारे में बताने लगा।

सब कुछ बताकर रतनचंद चुप हुआ।

"तुम्हारा वो सुन्दर भी तो है।"

"सुन्दर क्या करेगा? ये मामला अभी तक पूरे अंधेरे में है।" रतनचंद कालिया ने कहा—"अगर आज किसी ने मुझ पर हमला न किया तो मैं समझूंगा कि केकड़ा बोगस व्यक्ति है। यूं ही डरा रहा है।"

"हूं। कार में तुम दो आदमियों के बीच फंस कर बैठते हो?" एक्स्ट्रा की आवाज आई।

"हां।"

"कार पर काले शीशे हैं और बाहर से भीतर नहीं देखा जा सकता?"

"नहीं देखा जा सकता।"

"ऐसे में अगर कोई तुम पर गोली चलाता है तो वो कार के बीचों-बीच में बैठ आदमी को मारना चाहेगा। तुम बीच में ना बैठकर दांये या बांये बैठना। कोशिश करना ड्राईवर के पीछे वाली जगह पर बैठना। वहां ज्यादा सुरक्षा मिलेगी, अगर बाहर से गोलियां चलाई जाती हैं।" एक्स्ट्रा की आवाज कानों में पड़ी।

"ठीक है। मैं ऐसा ही करूंगा।"

"मेरी बात सुरक्षा की गारण्टी नहीं है, सिर्फ एक चांस है बच निकलने का।"

"तुम तीनों कब आओगे।"

"हमें बुलाने की जल्दी मत करो। खर्चे का सौदा हैं हम। पहले अपनी तसल्ली कर लो कि वास्तव में हमारी जरूरत है। थोड़ा बहुत काम तो सुन्दर भी देख लेगा। जब बहुत ज्यादा जरूरत लगे तो फोन करना। अभी तो तुम्हारे सामने ये भी स्पष्ट नहीं है कि कोई तुम्हें मारना भी चाहता है या नहीं। तुम सिर्फ केकड़ा की बात सुने जा रहे हो।"

"ठीक है। मैं देखता हूं।"

उधर से एक्स्ट्रा ने फोन बंद कर दिया था।

"क्या बात हुई सर?"

"देखते हैं कि आज क्या होता है। कुछ हुआ तो तब आर-डी-एक्स को फाइनल फोन करूंगा।"

"मैं अब भी कहता हूं कि आप बाहर ही मत निकलें।"

रतनचंद कालिया ने सुन्दर को दखा और शांत स्वर में कहा—

"बार-बार ये बात मत कहो। मैं कार के भीतर उसी तरह बैठूंगा, जैसे रोज बैठता हूं, परन्तु दरवाजे बंद करते ही मैं ड्राईवर के पीछे वाली जगह में बैठूंगा। बीच में नहीं—।"

"ऐसा क्यों?"

"हर कोई जानता है कि मैं बीच में ही बैठूंगा। ऐसे में वे लोग बीच में बैठे आदमी का निशाना लेने की चेष्टा करेंगे।"

"ओह।"

"ये बात एक्स्ट्रा ने बताई मुझे।"

"जो भी हो, आर-डी-एक्स काबिल लोग हैं। यूं ही खतरनाक नहीं कहे जाते। इकट्ठे हो जायें तो सच में आर-डी-एक्स बारूद से कम नहीं। वक्त आने पर वो बारूद से भी ज्यादा खतरनाक हो जाते हैं।" सुन्दर मुस्कुराकर कह उठा।

❑❑❑

नौ पचास हुए थे।

देवराज चौहान ने गन खिड़की से हटाई और पलट कर प्रताप कोली से बोला—

"उन लोगों को पता चल जायेगा कि गोली यहां से चलाई गई है।"

"पक्का?"

"हां, गोली चलते ही वे सीधे इधर दौड़े चले आयेंगे।"

"लेकिन गन में तो साईलेंसर लगा है।"

"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता, वो गोली आने की दिशा को फौरन पकड़ लेंगे। उसके साथ कितने आदमी होते हैं?"

"चार तो होते ही हैं, ज्यादा हों तो पता नहीं।"

"गोली चलाने के बाद हमें यहां से निकलने का वक्त नहीं मिलेगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"ये तो गड़बड़ वाली बात है।"

देवराज चौहान ने आगे बढ़कर कटी प्लाई के बाहर झांका।

सड़क पार पार्किंग में अभी वो जगह खाली थी, जहां रतनचंद कालिया की कार आकर लगनी थी।

आस-पास की अधिकतर जगह कारों से भर गई थी।

वक्त आगे सरकता जा रहा था।

"वक्त हो रहा है।" प्रताप कोली ने कलाई पर बंधी घड़ी पर निगाह मारी—"कहीं तुम ये तो नहीं सोच रहे कि यहां को छोड़कर, किसी और जगह रतनचंद कालिया को घेरोगे?"

"अगर मैं ऐसा सोचूं तो तुम्हें क्या समस्या है?"

"कुछ नहीं, मैं तुम्हारे पीछे हूं, जो तुम कहोगे, वो ही मुझे मंजूर होगा। आखिर काम तो तुमने करना है।"

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई। कश लिया। चेहरे पर सोच के भाव थे।

"इस बारे में कुछ सोच रहे हो क्या?"

"हां। तुम दूसरे कमरे में जाओ और उन चारों लोगों के हाथ-पांव बांधकर, दिनेश के साथ यहां आओ।"

प्रताप कोली बिना कुछ कहे दूसरे कमरे में चला गया।

देवराज चौहान रह-रह कर बाहर देख रहा था।

पांच-छः मिनट बाद कोली, दिनेश के साथ वहां आया।

"उन चारों के हाथ बांध दिये हैं। पांव भी। मुंह खुला है और उन्हें समझा दिया है कि आवाज निकली तो गोली मिलेगी।" कोली बोला।

"तुम करना क्या चाहते हो?" दिनेश चुरू बोला।

"इस मंजिल पर आस-पास छोटे-छोटे ऑफिस हैं।" देवराज चौहान बोला।

"हां।" प्रताप कोली ने सिर हिलाया।

"किसी एक जगह पर कब्जा जमा लो, ताकि जो यहां हमें पकड़ने आयें, तो उनसे बचा जा सके।"

"गुड आईडिया।"

वो दोनों जाने लगे तो देवराज चौहान बोला—

"दरवाजा बाहर से बन्द करते जाना।"

दोनों तुरन्त कमरे से बाहर निकल गये।

देवराज चौहान को दरवाजा बंद होने की आवाज आई। उसके बाद उसने कटी प्लाई से सामने देखा। अभी तक वहां कार नहीं लगी थी। देवराज चौहान दूसरे कमरे में पहुंचा।

मियां-बीवी, बहू और बेटे, चारों के हाथ-पांव बंधे हुए थे। वो फर्श पर पड़े थे।

"ये कुछ ही देर की तकलीफ है।" देवराज चौहान बोला—"मजबूरी है वरना ये तकलीफ भी न दी जाती । मुझे पूरी आशा है कि आपमें से कोई मुंह से तेज आवाज निकाल कर मरना पसंद नहीं करेगा।"

"ह-हम कुछ नहीं करेंगे।" साठ वर्षीय व्यक्ति घबराहट से कह उठा।

"यही अच्छा है।" देवराज चौहान ने कहा और बैडरूम में वापस आ गया।

साढ़े दस बजने जा रहे थे।

रतनचंद कालिया की कार कभी भी आ सकती थी।

देवराज चौहान ने गन की नाल को कटी हुई प्लाई पर सैट किया और टैलिस्कोप पर आंख लगा दी।

❑❑❑

10.40

देवराज चौहान ने मैहरून कलर की कोरोला कार ठीक उसी जगह पर पार्क होती दिखी, जिसके शीशे स्याह काले थे। यहां तक कि ड्राईवर वाले, यानि कि सामने वाले शीशे पर भी काली स्याह फिल्म लगी हुई थी। ऐसे में कार के भीतर क्या हो रहा है, बाहर से नहीं देखा जा सकता था।

टैलिस्कोप पर आंख लगाये, देवराज चौहान सारा नजारा इस तरह स्पष्ट देख रहा था, जैसे वो कार के पास ही खड़ा हो। गन के ट्रिगर पर उसकी तर्जनी उंगली टिक चुकी थी।

तभी चार लोग और आये और उन्होंने कार को घेर लिया।

उसी पल ड्राईवर वाला दरवाजा खुला और सुन्दर बाहर निकला। जिसने कमीज-पेंट पहन रखी थी। टैलिस्कोप की वजह से देवराज चौहान ने जाना कि उसकी जेब में रिवाल्वर रखी हुई है। उसने फौरन आगे बढ़कर पीछे वाला दरवाजा खोला और जेब में हाथ डाले, यानि कि रिवॉल्वर पर हाथ रखे सावधानी से खड़ा हो गया।

कार से एक व्यक्ति निकला।

देवराज चौहान ने महसूस किया कि इस आदमी की तस्वीर उसने अखबार में नहीं देखी थी। बाहर निकलकर वो दरवाजे के पास ही खड़ा हो गया था। जो चार लोग कार के आस-पास आ खड़े हुए थे, वो भी अब खुले दरवाजे की तरफ बढ़ गये थे। सब काम खामोशी के साथ हो रहे थे।

आस-पास से सामान्य ढंग से लोग आ-जा रहे थे।

तभी दूसरा व्यक्ति कार से बाहर निकला।

वो रतनचंद कालिया था।

टैलिस्कोप के जरिये देवराज चौहान ने उसे आसानी से पहचान लिया कि वो ही उनका शिकार है। देवराज चौहान ने उसे निशाने पर रखने की चेष्टा की।

फिर तीसरा आदमी भी पीछे वाले खुले दरवाजे से बाहर निकला।

एकाएक देवराज चौहान को ऐसा लगा जैसे रतनचंद कालिया को भीड़ ने घेर लिया हो। उसके आस-पास छः आदमी थे, जिनके भीतर रतनचंद कालिया फंसा पड़ा था।

देवराज चौहान ने उसे निशाने पर लेने की चेष्टा की।

परन्तु वो इस तरह घिरा पड़ा था कि उसे निशाने पर नहीं लिया जा रहा था।

फिर वे सब सामने नज़र आ रहे दरवाजे की तरफ चल पड़े। पन्द्रह कदम का फासला था। लेकिन वो सब इतने सतर्क थे कि रतनचंद को घेरे में पूरी तरह आड़ दे रखी थी।

देवराज चौहान निशाना ढूंढता रह गया और वो सब उस दरवाजे से भीतर प्रवेश कर गये।

देवराज चौहान की निगाह कार के आस-पास जा टिकी।

सुन्दर अभी भी वहीं खड़ा आस-पास नज़रें घुमा रहा था। एक आदमी उसके पास पहुंचा। दोनों में कुछ बात हुई। वो आदमी कार के पास ही खड़ा रहा और सुन्दर उस दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

देवराज चौहान उसके बाद भी टैलिस्कोप पर नज़रें टिकाये रहा। फिर उसने वहां से आंख हटाई और गन को बैड पर रखा उसके बाद वो दूसरे कमरे में गया।

चारों उसी तरह बंधे हुए थे।

"आप लोगों को कोई तकलीफ तो नहीं है?"

"नहीं। हम ठीक हैं।" उसी बूढ़े व्यक्ति ने कहा।

"कुछ चाहिये तो बता दीजिये।"

उनके इन्कार के पश्चात् देवराज चौहान वापस बैडरूम में आ गया। कटी प्लाई से सामने देखा। मैहरून कलर की कोरोला कार के पास एक व्यक्ति टहल रहा था।

देवराज चौहान के होंठ सिकुड़ गये। वो बाहर ही देखता रहा।

उसी पल दूसरे कमरे का दरवाजा खोले जाने की आवाज उभरी। फिर बंद होने की आवाजें। उसके बाद कदमों की आवाजें, तब प्रताप कोली ने भीतर कदम रखा।

देवराज चौहान ने वहां से नजरें हटा कर कोली को देखा।

"किसी आफिस पर कब्जा किया?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हां, एडवरटाईजिंग का एक आफिस है। एक युवती और चपरासी था वहां। दिनेश चुरू ने उन्हें संभाल रखा है।" कहने के साथ ही उसने कटी प्लाई से बाहर झांका—"वो अभी तक नहीं आया क्या—वो—वो आ गया है। उसकी कार खड़ी है।"

प्रताप कोली ने पलट कर उसे देखा।

"तुमने बाहर ध्यान नहीं दिया।"

"बाहर ही देख रहा था मैं, रतनचंद को देखा मैंने।"

"फिर?"

"वो अपने आदमियों से घिरा हुआ था। छः आदमियों ने उसे इस तरह घेर रखा था कि उसके पास हवा के अलावा कोई दूसरा न पहुंच सके। ऐसी घेराबंदी तभी होती है जब उसे मालूम हो कि उसका निशाना लिया जाने वाला हो।"

"तुम्हारा मतलब कि उसे पता है कि तुम उसे गोली मारने वाले हो।"

"मैं नहीं, कोई भी। उसे ये पता है कि उस पर गोली चलेगी। तभी तो ऐसी घेराबंदी की गई।"

"मैं नहीं मानता।"

"मानोगे तो आगे सोच सकोगे। कोई उसे खबरें पहुंचा रहा है।"

"असम्भव।"

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगा ली।

"सीधी तरह क्यों नहीं कहते कि तुम उसका निशाना नहीं ले सके।" प्रताप कोली ने उसे घूरा।

"क्योंकि वो घेरे में था। लेकिन मौका अभी गया नहीं है।"

"वो कैसे?"

"वो वापस भी तो आयेगा।"

"तब भी घेरे में हुआ तो?"

"ऐसा हुआ तो फिर दूसरा मौका देखेंगे।" देवराज चौहान ने कश लिया।

"मेरे ख्याल से तुम्हें रतनचंद के घेरे में होने की परवाह नहीं करनी चाहिये।"

"यानि तुम चाहते हो कि एक को मारने के लिए मैं साथ में दो और को मार दूं?"

"क्या हर्ज है! हम उनकी परवाह क्यों करें?"

"मुझे परवाह है। मैंने सिर्फ रतन का निशाना लेना है।" देवराज चौहान शांत स्वर में बोला—"यह काम मेरा है, तुम इस बात की परवाह मत करो कि वो कब मरेगा ये सोचो कि उसे खबरें कौन दे रहा है?"

"कोई भी नहीं।"

"तुम, दिनेश चुरू, हरीश मोगा या अवतार सिंह?"

"हम चारों में से कोई गद्दार नहीं। इस तरह सोचना छोड़ दो।"

"रतनचंद कालिया क्या पहले भी घेरे में इसी तरह रहता था?"

"नहीं, ये मैंने अब ही तुम्हारे मुंह से सुना है। देखा नहीं।"

"देख लेना, जब वो बाहर निकले।"

प्रताप कोली के चेहरे पर गम्भीरता नजर आ रही थी। वो बोला—

"हो सकता है उसे किसी और दुश्मन के बारे में खबर मिली

हो कि वो उस पर हमला कर सकता है। ऐसे में वो सतर्क रहने लगा हो।"

"ऐसे इत्तेफाकों को मैं नहीं मानता।"

देवराज चौहान कश लेता बैड पर बैठ गया।

"बाहर नज़र रखो। रतनचंद एक-डेढ़ घंटे से पहले भी बाहर आ सकता है।" देवराज चौहान ने कहा।

प्रताप कोली कटी प्लाई के पास पहुंच कर बाहर देखने लगा।

तभी देवराज चौहान का फोन बजा।

"हैलो।"

"मेरे ख्याल में अभी रतनचंद आया था।" जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

"हां, लेकिन उसका निशाना लेना आसान नहीं था।"

"उसके आदमियों ने उसे घेर रखा था। क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि उसे शक है कि उसे गोली मारी जायेगी?"

"मुझे ऐसा ही लगता है। लेकिन प्रताप कोली नहीं मान रहा।"

"उसकी बात छोड़ो, काम हमने पूरा करना है, उसने नहीं। तीन करोड़ हमने लिए हैं, उसने नहीं।" जगमोहन ने तीखे स्वर में कहा—"सवाल ये पैदा होता है कि उसे कैसे शक हो गया कि वो खतरे में है? क्या किसी ने उसे बताया?"

"अवश्य बताया होगा।"

"रतनचंद सतर्क हो चुका है। ऐसे में उस पर हाथ डालना कठिन हो सकता है।"

"कहीं पर तो लापरवाह होगा ही। कब तक सतर्क रहेगा!"

"क्या मतलब?"

"अभी वो बाहर भी निकलेगा, शायद तब मौका मिले उसे उड़ाने का। बाकी सब ठीक है?"

"हां। इधर सब ठीक है। उसकी कार के पास फिर एक आदमी खड़ा है।"

"उसे देख रहा हूं।" देवराज चौहान ने कहा और फोन बंद कर दिया।

❑❑❑

12.20 हुए थे।

तब रतनचंद कालिया उसी तरह अपने आदमियों से घिरा

बाहर निकलता दिखा। उन्हीं छः आदमियों ने उसे घेरा हुआ था। और सुन्दर दो कदम आगे चल रहा था। परन्तु उसकी निगाह हर तरफ फिर रही थी। वो कार के पास पहुंच कर ठिठका और पीछे का दरवाजा खोला और खड़ा हो गया।

रतनचंद ने भीतर प्रवेश किया और सीट पर जा बैठा।

उसी तरफ से एक आदमी और भीतर प्रवेश करके बैठ गया। दूसरी तरफ का दरवाजा खोला गया और एक अन्य आदमी भीतर जा बैठा। यानि कि रतनचंद कालिया बीच में और एक-एक व्यक्ति दांये-बांये।

दरवाजे बंद कर दिये गये।

काले शीशों की वजह से भीतर का हाल ज़रा भी न दिख रहा था।

दरवाजे बंद होते ही रतनचंद ने दांई तरफ बैठे व्यक्ति से जगह बदल ली। थोड़ा सा ऊपर होता, सरक कर रतनचंद ड्राईविंग सीट के पीछे वाली सीट पर आ बैठा और वहां बैठा व्यक्ति बीच में खिसक गया।

सुन्दर ने वहां खड़े आदमियों से कहा—

"तुम लोग कार में पीछे आओ, खार चलना है।"

"लेकिन वहां का रास्ता तो खराब है। हमें रास्ता बदल कर जाना होगा।" एक आदमी बोला।

"क्या खराब है?"

"उधर सड़क की मरम्मत हो रही है....।"

सुन्दर को क्या पता था कि बातें करके इस वक्त वो अपना कीमती वक्त बर्बाद कर रहा है।

❑❑❑

गन के ऊपर लगे टैलिस्कोप पर देवराज चौहान की आंखें लगी थीं।

रतनचंद कालिया के बाहर आने से लेकर अब तक का, सब कुछ देखा था उसने। इस वक्त सुन्दर अपने आदमियों से बात कर रहा था। देवराज चौहान के ठीक पीछे खड़ा प्रताप कोली भी बची-खुची झिरी से बाहर देखने की चेष्टा कर रहा था। तभी देवराज चौहान कह उठा—

"मैं रतनचंद को शूट करने जा रहा हूं।"

"पागल हो क्या? वो नज़र तो आ नहीं रहा।
"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वो कार के भीतर बैठा है।"
"शीशे काले हैं। वो दिखाई कहां से दे रहा है, जो तुम उसका निशाना ले लोगे।"
"पीछे वाली सीट पर वो कहां बैठा है कोली?" देवराज चौहान गन की नाल को कटी प्लाई पर टिकाये, टैलिस्कोप पर आंख लगाए हुए था और ट्रेगर पर उंगली कस चुकी थी।
"बीच में। दांये-बांये उसके दो आदमी बैठे....।"
"और मैं बीच वाले का सिर उड़ाने जा रहा हूं।"
कार का पिछला हिस्सा इसी तरफ था।
प्रताप कोली ने सूखे होठों पर जीभ फेरी, कहा कुछ नहीं।
ठीक इसी पल ढिश की आवाज़ उभरी।
देवराज चौहान ने टैलिस्कोप से देखा, कार के पीछे वाले शीशे के ठीक बीचों-बीच छेद हो गया है।
"कर दिया काम!" प्रताप कोली के होठों से निकला।
❑❑❑
रतनचंद कालिया के चेहरे पर खून के गर्म-गर्म छींटे पड़े। उसने चौंक कर गर्दन घुमाई, तभी बगल में (बीच में बैठे) गनमैन को उसने आगे लुढ़कते देखा। आगे की दोनों सीटों के बीच उसका सिर जा फंसा। उसकी गर्दन के ऊपर, सिर के पीछे वाले हिस्से में गोली लगी थी और वहां से खून तेजी से बहने लगा था।
रतनचंद ने चौंक कर पीछे गर्दन घुमाई।
शीशे में छेद दिखा।
"सर गोली—।" तभी दूसरी तरफ बैठा गनमैन हड़बड़ा कर कह उठा—"प्रकाश को लगी है।"
रतनचंद का दिल जोरों से धड़क रहा था।
अगर एक्स्ट्रा (X-TRA) की बात न मानी होती तो इस वक्त उसकी लाश पड़ी होती।
सब कुछ सैकिण्डों में हो गया था।
गनमैन ने बाहर निकलना चाहा।
"बैठे रहो।" रतनचंद ने सख्त स्वर में कहा—"नीचे झुक जाओ। और गोलियां आ सकती हैं।"
तभी सुन्दर ने ड्राईविंग डोर खोला भीतर बैठने के लिये—

परन्तु भीतर बैठते-बैठते ठिठक गया।
निगाह पीछे के हालातों पर टिकी। उसकी आंखें फैल गईं।
"सर, आप ठीक तो हैं?" उसके होठों से निकला।
"हां, केकड़ा ने सही कहा था कि मुझ पर हमला होगा। गोली चलाई जायेगी। अगर मैं बीच में बैठा होता तो...।"
सुन्दर ने पूरी बात नहीं सुनी और बाहर निकल कर कार के पीछे वाले हिस्से में गया। शीशे में हुए गोली के छेद का पीछा करती उसकी निगाह, सामने—सड़क पार पहली मंजिल पर खिड़की पर स्थित ए.सी. पर जा टिकी। उसकी कटी प्लाई भी उसने देखी।
सुन्दर को समझते देर न लगी कि गोली वहीं से चलाई गई है।
कार के पास अभी भी उसके आदमी खड़े थे।
"वहां से गोली चलाई गई है। दो यहीं रहो और बाकी मेरे पीछे आओ।" कहने के साथ ही सुन्दर उस तरफ भागा और रिवॉल्वर निकाल कर हाथों में ले ली।
बाकी सब उसके पीछे दौड़े।
दो ने कार को घेर लिया।
❑❑❑
"वो इधर ही आ रहे हैं।" देवराज चौहान खिड़की से हटता कह उठा।
"इसका मतलब रतनचंद गया!"
"शायद। निकलो यहां से, ये गन हमें यहीं छोड़नी होगी।"
"परवाह नहीं।"
"जल्दी करो। वो पहुंचते ही होंगे।"
उसके बाद दोनों आनन-फानन बाहर निकले। परिवार के लोग भीतर ही बंधे पड़े थे। उन्होंने दरवाजा बाहर से बंद किया। वो दो फुट की गैलरी इस वक्त खाली पड़ी थी।
"इधर आओ।" प्रताप कोली धीमे से बोला और गैलरी में आगे बढ़ गया।
❑❑❑
तूफानी रफ्तार से सुन्दर सीढ़ियां चढ़ कर ऊपर पहुंचा। उसके पीछे पांच गनमैन थे और इस वक्त सब हथियारबन्द नज़र आ रहे थे। सुन्दर के चेहरे पर मौत के भाव नाच रहे थे।
सुन्दर दरवाजे पर ठिठका, जो कि बंद था।

पांचों गनमैन भी उसके पास आकर रुक गये।

सबकी निगाहें मिलीं। खूंखारता के भाव थे हर एक के चेहरे पर।

"वो यहीं है, जिसने गोली चलाई।" सुन्दर सरसराते स्वर में बोला—

"तुम्हें गलती तो नहीं लगी?"

"वो यहीं है कमीने, जो मैंने कहा है, सुन वो।" सुन्दर मौत भरे स्वर में गुर्रा उठा।

सुन्दर ने बाहर लगी कुंडी और दरवाजे को धक्का दे दिया।

दोनों पल्ले खुलते चले गये।

वे सब गोलियां बरसाने को तैयार थे।

परन्तु भीतर निगाह पड़ते ही ठिठक गये।

वे चारों बंधे पड़े थे।

"ये क्या कर रहे हो। हमें मत मारना।" बंधा युवक घबरा कर चीखा।

शान्ति छाई हुई थी वहां।

"गोली मत चलाना।" बूढ़ा कह उठा—"हमने कुछ नहीं किया।"

"वो कहां है?" सुन्दर ने वहीं खड़े, शब्दों को चबाकर सतर्क स्वर में पूछा।

"पीछे वाले कमरे में थे। आते ही हाथ-पांव बांध दिए। अभी-अभी वे बाहर गये हैं।"

"अब भीतर कोई नहीं है?"

"नहीं।"

"दो अन्दर जाओ।" सुन्दर ने खूंखारता भरे स्वर में कहा।

दो हथियारबंद आदमी भीतर गये।

उस बैडरूम का फेरा लगा आये।

"कमरे में टैलिस्कोप गन पड़ी है। साईलेंसर भी लगा है उस पर।"

"वो गन छोड़कर भाग गये।" दूसरा बोला।

"इतनी जल्दी वो जा नहीं सकते।" सुन्दर बोला।

"क्यों नहीं जा सकते।" दूसरा बोला—"गोली लगने के बाद उनके पास निकल जाने का पूरा वक्त था।"

सुन्दर की निगाह उस गैलरी में दोनों तरफ घूमी।

"वो यहां भी छिपे हो सकते हैं। यहां जितने आफिस हैं, सब चैक करो।" सुन्दर कह उठा और खुद आगे बढ़ गया।

सुन्दर ने एक आदमी के साथ एडवरटाईजिंग के आफिस में प्रवेश किया। चेहरे पर खूंखारता, हाथ में रिवॉल्वर। भीतर बाईं तरफ रिसैप्शन पर युवती बैठी थी। एक तरफ चपरासी बैठा था। विजिटर्स चेयर पर देवराज चौहान बैठा था। सामने एक केबिन का बंद दरवाजा नज़र आ रहा था।

उसके हाथ में रिवॉल्वर देखकर, रिसैप्शन पर बैठी युवती घबराकर कह उठी—

"हमें मत मारना। तुम जो चाहो ले जाओ।"

"खामोश रहो!" सुन्दर दांत भींच कर गुर्राया।

युवती सूखे होंठों पर जीभ फेर कर रह गई।

सुन्दर ने चपरासी और देवराज चौहान को देखा।

"यहां पर अभी-अभी कौन आया था?"

"कोई नहीं।" देवराज चौहान ने स्वर में घबराहट लाकर कहा— "बीस मिनट से मैं बैठा हूं।"

"भीतर कौन है?"

"सर हैं। एक कस्टमर है।" युवती घबराये स्वर में कह उठी।

सुन्दर ने आगे बढ़कर केबिन का दरवाजा खोला।

भीतर टेबल के पीछे प्रताप कोली और इस तरफ दिनेश चुरू बैठा था। कोली उसे कागज दिखा कर कुछ कह रहा था। परन्तु सुन्दर को दरवाजा खोलते पाया तो कोली फौरन बोला—

"पांच मिनट इन्तजार कर लीजिये। इनके बाद मैं आपसे ही बात करूंगा। इन्तजार के लिये मैं माफी चाहता हूं।"

सुन्दर वहां से हटा और अपने साथी के साथ वहां से बाहर निकल गया।

"मेरे ख्याल से वो जो भी लोग थे, यहां से निकल गये हैं।" सुन्दर दांत भींचकर बोला।

"शायद।"

सामने से आते बाकी आदमी दिखे।

"कोई संदिग्ध नहीं मिला।"
"निकल गये वो।"
"पकड़े जाते तो सब ठीक हो जाता।"
"सर को गोली लगी क्या?"
"गोली सर के लिये ही चली थी, परन्तु जगह बदल लेने की वजह से सर बच गये और प्रकाश मारा गया।"

❑❑❑

रतनचंद कालिया वहां से वापस अपने बंगले पर पहुंचा।
साफ बात तो यह थी कि प्रकाश की हालत देखकर वो कुछ डर गया था। मन ही मन यह भी सोच रहा था कि अगर एक्सट्रा (X-TRA) के कहने पर जगह न बदली होती तो इस वक्त वो जिन्दा न होता।
ये अच्छी बात थी कि वो बच गया था।
अपने कमरे में पहुंच कर टाई की नॉट ढीली की और पीठ पर हाथ बांधे कमरे में टहलने लगा।
कई मिनट इसी तरह बीत गये। गुस्सा-परेशानी-व्याकुलता उसके चेहरे पर रह-रहकर आ रही थी।
तभी सुन्दर ने भीतर प्रवेश किया।
रतनचंद कुर्सी पर जा बैठा।
दोनों की नज़रें मिलीं।
"तुम गोली चलाने वाले को नहीं पकड़ पाये?"
"हमारे वहां पहुंचने से पहले ही वो वहां से निकल गये।" सुन्दर ने अपना स्वर शांत रखने की चेष्टा की।
"यानि कि वो शातिर लोग हैं।"
"यकीनन।"
"केकड़ा ने मुझे बताया था कि जिसने मुझे मारने का ठेका तीन करोड़ में लिया है, वो अण्डवर्ल्ड का नामी बंदा है। ऐसे लोग कभी लापरवाह नहीं हो सकते। निकलने का रास्ता उन्होंने पहले ही सोच रखा होगा।"
"मुझे अफसोस है सर।"
"तुमने कोई लापरवाही नहीं की जिसका तुम्हें अफसोस हो।"
सुन्दर खामोश रहा।
"जिसने मुझे मारने की चेष्टा की, वो जबर्दस्त निशानेबाज़ है।"

"वो कैसे सर?"
"उसने काले शीशे होने के बावजूद भी सिर्फ एक ही गोली चलाई, वह भी अंदाज से कि मैं बीच वाली सीट पर बैठा हूं। दूसरी गोली नहीं चलाई। क्योंकि वो जानता था कि उसका निशाना नहीं चूकेगा।"
"हां सर, यही बात है।"
"ऐसे लोग खतरनाक होते हैं और अपना लक्ष्य हासिल कर लेते हैं। इन्हें हार पसन्द नहीं होती। जब वो जानेगा कि मैं बच गया हूं तो फिर से मुझे निशाना बनाने की कोशिश में जुट जायेगा।" रतनचंद का स्वर गम्भीर था।
सुन्दर ने कुछ नहीं कहा।
"प्रकाश की लाश का क्या किया?"
"उसके घर भेजी जा रही है।"
"साथ में पच्चीस लाख रुपये भी?"
"यस सर, वो भी।"
"अब तो तुम केकड़ा की बात को बकवास नहीं कह सकते।"
"केकड़ा ने आपसे जो कहा, ठीक कहा सर।" सुन्दर गम्भीर स्वर में बोला।
"अगर मैंने आर-डी-एक्स से बात न की होती तो शायद मैं इस वक्त तक जिन्दा न होता। जबकि तुम इस बात का विरोध कर रहे थे कि इस मामले में आर-डी-एक्स को लाने की क्या जरूरत है।"
"तब मैं मामले की गम्भीरता से नहीं समझा था।"
"एक्स्ट्रा की सलाह से मैं बच पाया। मैं उसे धन्यवाद देता हूं।"
"अब क्या करें सर, आपका क्या हुक्म है?"
"सुरक्षा मजबूत कर दो। मैं आर-डी-एक्स को बुला रहा हूं, जब तक वो नहीं आते, जिम्मेदारी तुम्हारी होगी। कोई गड़बड़ नहीं होनी चाहिये। मैं न तो बाहर जाऊंगा और न किसी से मिलूंगा। क्योंकि अब ये बात स्पष्ट हो चुकी है कि मेरी जान को खतरा है। मैं ऐसा कोई रिस्क नहीं लेना चाहता कि मेरी जान चली जाये।"
"जी सर।"
"जाओ, मुझे अकेला छोड़ दो।"
सुन्दर चला गया।
तभी फोन बजा।

दूसरी तरफ उसकी पत्नी सोनिया थी।

"कहो, आज तो तुमने आना है।"

"आना तो था, लेकिन मेरे मायके वाले मुझे और बच्चों को आने नहीं दे रहे, रुकने की जिद कर रहे हैं।"

"कोई बात नहीं। जब तक ठीक लगे, रुक जाओ।"

"ठीक है। मैंने इसी बात के लिये फोन किया था।"

रतनचंद ने फोन बंद किया और R.D.X. का नम्बर मिलाने लगा।

नम्बर लगा, फिर डी—यानि कि धर्मा की आवाज कानों में पड़ी।

"हैलो।"

"धर्मा।"

"रतनचंद बोल रहा है। जिन्दा हो अभी तक?"

"मुझ पर अभी बहुत ही अच्छे ढंग से हमला किया गया।" रतनचंद ने शांत स्वर में कहा।

"बचे कैसे?"

"एक्स्ट्रा (X-TRA) की सलाह से। मेरा गनमैन मारा गया।"

"तो कार में जगह बदल चुके थे जब गोलियां चलीं?"

"हां, लेकिन गोली एक ही चली, जो मेरा निशाना लेना चाहता है, वो आत्मविश्वास से भरा इन्सान है।"

"समझदार लोग गोलियां खराब नहीं करते।"

"मुझे तुम तीनों की जरूरत है। क्योंकि मैं अभी मरना नहीं चाहता।"

"पिछली बार तुमने रकम को लेकर झगड़ा किया था।"

"तुम लोगों ने ज्यादा रकम मांगी थी।"

"तुम्हें बचाने में हमने खतरा भी बहुत उठाया था। ये क्यों भूलते हो कि हम भी अपनी जान खतरे में डालते हैं। पैसा इस बार भी उतना ही लेंगे जितना पिछली बार लिया था। सोच कर फोन कर देना।"

"सोचने की क्या जरूरत है।" रतनचंद कालिया ने गहरी सांस ली—"आ जाओ।"

"ठीक है, हम कल आयेंगे।"

"आज आ जाते तो—"

"आज वक्त नहीं है।"

"तुम में से कोई एक ही आ जाये तो मुझे हौंसला मिलेगा।"

"हम तीनों ही व्यस्त हैं। एक बात को बार-बार क्यों कहते हो?"

"कल कब आओगे?"

"तुम्हारे मरने से पहले पहुंचेंगे। R.D.X. वक्त पर तुम्हारे पास पहुंचेगा। तब तक बाहर मत निकलना। बाहर हो तो वापस घर में पहुंच कर बंद हो जाओ। बहादुरी दिखाना छोड़ दो।" कहकर दूसरी तरफ से धर्मा ने फोन बंद कर दिया था। रतनचंद ने भी फोन बंद किया और उसे बैड की तरफ उछाल दिया।

❑❑❑

देवराज चौहान, जगमोहन, सोहनलाल, प्रताप कोली और दिनेश चुरू होटल में मौजूद थे।

"तुम्हारा काम हो गया।" जगमोहन बोला—"अब खिसकते नज़र आओ।"

"काम होने की खबर नहीं आई।" दिनेश चुरू बोला।

"कौन देगा खबर?"

"अवतार या हरीश मोगा।"

"उन्हें मालूम है कि हम क्या-क्या कर रहे हैं?"

"सब मालूम है।" प्रताप कोली बोला—"हम खबरें दे रहे हैं उन्हें। ताकि शोरी साहब को पता चलता रहे कि क्या हो रहा है?"

"किसी को बताने की क्या जरूरत है कि हम....।"

"शोरी साहब ने तीन करोड़ रुपया खर्च किया है।" प्रताप कोली मुस्कुराया—"उन्हें जानने का पूरा हक है कि क्या हो रहा है!"

"ऐसी कोई बात हममें तय नहीं हुई थी।"

"कहने की जरूरत नहीं होती, ये बात तय ही होती है।" दिनेश चुरू ने कहा।

"अब पता करो, अपनी तसल्ली करो और....।"

तभी दिनेश चुरू का मोबाइल बजा।

"कहो।" दिनेश चुरू ने फोन कान से लगाया। दूसरी तरफ हरीश मोगा था।

"बहत घटिया निशानेबाज़ है देवराज चौहान।"

"क्या हुआ?" दिनेश चुरू के माथे पर बल पड़े।

"देवराज चौहान ने गोली रतनचंद के साथ बैठे गनमैन को मारी है। उसका नाम प्रकाश है।"

"ये नहीं हो सकता।" उसके होंठों से निकला।

"ये ही हुआ है।" हरीश मोगा की आवाज कानों में पड़ी।

दिनेश चुरू ने होंठ भींच लिये।

सबकी निगाह उस पर थी।

"क्या बात है?" प्रताप कोली पूछ बैठा।

"रतनचंद कार में कहां बैठा था?"

"ड्राईवर के पीछे वाली सीट पर।"

"ओह, फिर ऐसा हो सकता है। क्योंकि गोली तो बीच वाले पर चलाई गई थी।"

"तुम....।"

"तेरे से बाद में बात करता हूं मोगा।" दिनेश चुरू ने कहकर फोन बंद किया और देवराज चौहान से बोला—"तुम्हारा निशाना चूक गया देवराज चौहान। रतनचंद नहीं, उसका गनमैन प्रकाश मारा गया है।"

"रतनचंद कहां बैठा था?" देवराज चौहान ने पूछा।

"ड्राईवर की पीछे वाली सीट पर।"

"बीच में नहीं?"

"नहीं। तभी तो वो बच गया।"

देवराज चौहान और प्रताप कोली की नज़रें मिलीं।

"वो कहां बैठा था?" देवराज चौहान के होंठ हिले।

"पीछे, बीच वाली जगह में।" प्रताप कोली हक्का-बक्का सा बोला—"उसके भीतर जाने के बाद एक गनमैन ने भीतर प्रवेश किया था।"

"तो फिर उनकी जगह कैसे बदल गई?"

प्रताप कोली, देवराज चौहान को देखता रहा।

"बोलो, रतनचंद के बैठने की जगह कैसे बदल गई, जब कि वो पीछे, बीच में बैठा था?"

"तुम ठीक कहते हो।" प्रताप कोली के होठों से निकला।

"उस तक हमारी खबरें पहुंच रही हैं। वो जानता है कि हम या कोई उसे मारना चाहता है।"

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाकर कश लिया।

"बाहरी लोगों को दिखाने के लिए वो कार के भीतर इस तरह बैठा कि देखने वाले को लगे कि वो बीच में ही बैठेगा। हम भी यही समझे, जबकि कार के दरवाजे बंद होने के पश्चात उसने अपनी जगह बदल ली कि अगर उसे कोई मारना चाहे तो वो धोखा खा जाये और यही हुआ।" प्रताप कोली ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी—"कोई हमारी खबरें उसे दे रहा था।"

"पहले तुमने बात नहीं मानी।"

"तब....तब मैंने सोचा तुम यूं ही कह रहे हो।" प्रताप कोली ने गहरी सांस ली।

"हमारी बातें बाहर जा रही हैं, ये तो बहुत गलत बात है।" दिनेश चुरू बोला।

देवराज चौहान ने कश लेकर प्रताप कोली और दिनेश को देखा।

"तुम्हें कुछ तो अन्दाजा होगा कि कैसे खबरें बाहर जा रही हैं?"

दोनों ने एक-दूसरे को देखा।

"हमारे द्वारा तो बाहर नहीं जा रही बातें।"

"तो किसके द्वारा हो रहा है ये सब?" देवराज चौहान बोला।

"हम।" प्रताप कोली को देखते हुए दिनेश चुरू ने कहा—"हरीश मोगा-अवतार सिंह या फिर शोरी साहब को बताते हैं कि यहां क्या होने जा रहा है। इसके अलावा और किसी को कुछ नहीं बताते।"

"तुम्हारा मतलब कि उन तीनों से ही बातें बाहर जा रही हैं और फिर रतनचंद को सब कुछ मालूम हो जाता है।"

दिनेश चुरू ने बेचैनी से प्रताप कोली को देखा।

"पर जो भी हो, गड़बड़ तो है ही।" प्रताप कोली ने कहा।

"मैं तुम्हें सलाह देता हूं।" दिनेश चुरू बोला।

"जरूर दो।"

"तुम हमें इस मामले से अलग कर दो, उसके बाद तुम ये काम करो। मेरे ख्याल में ये ठीक रहेगा।"

"ये ठीक नहीं रहेगा।"

"क्यों?"

"जो भी रतनचंद तक हमारी खबरें पहुंचा रहा है, उसका पता चल जायेगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"कैसे?"
"वो कभी तो कोई गलती करेगा।"
प्रताप कोली देवराज चौहान को देखने लगा।
देवराज चौहान ने कश लिया।
"उसका पता जाने कब मिले! उसकी वजह से हमें नुकसान भी पहुंच सकता है।"
"वो हमें ऐसा ही नुकसान पहुंचा सकता है, जैसा आज हुआ है, यानि कि रतनचंद बच गया।"
"मेरे ख्याल में।" जगमोहन ने पूछा—"कोली ठीक कह रहा है, हमें इन्हें अपने से अलग कर देना चाहिये।"
"मैं सहमत हूं जगमोहन की बात से।" सोहनलाल बोला।
"जो जैसा चल रहा है, वैसा ही चलेगा, कोई बदलाव नहीं होगा।" देवराज चौहान ने सपाट स्वर में कहा।
कोई कुछ नहीं बोला।
"रतनचंद कालिया इस वक्त कहां है?"
"क्या पता!" कोली ने दिनेश चुरू से कहा—"तुम पता करो।"
दिनेश चुरू ने फोन निकाला और नम्बर मिलाने लगा।
नम्बर लगा, फिर उधर से आवाज कानों में पड़ी—
"हैलो।"
"मैं बोल रहा हूं।"
"तुम फंसवाओगे मुझे। कितनी बार कहा है कि जब ड्यूटी पर होऊं तो फोन मत किया करो।"
"रतनचंद कहां है?"
"अपने बंगले पर। यहां पर सुन्दर ने तगड़ा पहरा लगवा दिया है।"
"वहां से वो सीधा बंगले पर आया?"
"हां।"
"वो बचा कैसे?"
"तुम्हें पता ही है।"
"वो तो बीच में बैठा था। फिर वो साईड में कैसे हो गया?" दिनेश चुरू ने पूछा।
आवाज नहीं आई उसकी।
"बोलो।"

"तुमने बहुत दिनों से नोट नहीं दिए।" दिनेश चुरू के कानों में आवाज पड़ी।
"आज ले लेना। सतीश के पास जाना, वो तुम्हें दस हजार दे देगा। मैं उसे फोन कर देता हूं।"
"सिर्फ दस हजार?"
"और क्या चाहते हो?"
"बीस तो हो।"
"ठीक है, बीस ले लेना। ये बताओ कि रतनचंद ने जगह कैसे बदली?" दिनेश चुरू ने पूछा।
"R.D.X." की वजह से।"
"R.D.X.?" दिनेश चुरू के माथे पर बल पड़े।
"रतनचंद R.D.X. की सहायता लेने जा रहा है। आज सुबह उसकी R.D.X. से बात भी हुई थी। उन्होंने ही कहा कि कार में बैठने के पश्चात् वो जगह बदल लिया करे।" उधर से आते शब्द दिनेश के कानों में पड़े।
"ओह, R.D.X. के बारे में नई खबर?"
"वो कल यहां पहुंच रहे हैं।"
"रतनचंद को बचाने?"
"हां।"
"हूं—ठीक है। मैं तुम्हें फिर फोन करूंगा। सतीश से बीस हजार ले लेना।" दिनेश चुरू ने कहा और फोन बंद करके देवराज चौहान से कह उठा—"R.D.X. से रतनचंद बात करता है। R.D.X. ने उसे कहा था कि कार में बैठने के पश्चात जगह बदल लिया करो।"
"खूब!" देवराज चौहान अजीब से अंदाज में कह उठा।
"अब ये मामला गम्भीर होने जा रहा है।" दिनेश चुरू ने कहा।
"क्यों?" प्रताप कोली ने पूछा।
"कल सुबह R.D.X. की तिगड़ी रतनचंद कालिया के पास पहुंच रही है।"
"ओह, तो रतनचंद ने उन्हें बुलवा लिया?" प्रताप कोली कह उठा।
"सालों को देख लेंगे, वो तीनों तोप हैं क्या?" जगमोहन मुंह बनाकर बोला।

"तोप नहीं, बारूद हैं वे तीनों। R.D.X. यूं ही नहीं कहते उन्हें।" दिनेश चुरू ने गम्भीर स्वर में कहा।

"देखेंगे।" जगमोहन का स्वर भी जिद् से भर गया।

देवराज चौहान के होंठ सिकुड़े पड़े थे। गालों पर मुस्कान के भाव थे।

"पहले कभी सुना नहीं इस R.D.X. की तिगड़ी के बारे में।" सोहनलाल ने कहा।

"बेकार की हेंकड़ी बना रखी होगी—।"

"वो तीनों बहुत खतरनाक हैं। किसी वहम में मत रहना।" प्रताप कोली ने चेताया।

जगमोहन ने उसे घूरा, फिर कह उठा—

"R से राघव, D से धर्मा और X से एक्स्ट्रा। मुझे तो ये नमूने महसूस हो रहे हैं।"

"अगर तुम्हारे यही ख्याल रहे तो जल्दी मरोगे।" दिनेश चुरू ने कहा।

"तुमने उन्हें देखा है?" सोहनलाल ने पूछा।

"एक बार।"

देवराज चौहान ने टांगें फैलाईं और सोफा चेयर पर पसरते कह उठा—

"रतनचंद के बारे में हमें हर खबर मिलती रहे और R.D.X. के बारे में भी।"

"ये बात हम वहां स्थित अपने आदमी से कह देंगे। दिनेश, चल हम अपने कमरे में थोड़ा आराम कर लें।"

वो दोनों बाहर निकल गये।

"आज रतनचंद निपट गया होता, अगर उसने जगह न बदली होती।" जगमोहन तीखे स्वर में बोला।

"और ये सलाह उसे R.D.X. ने दी थी।" देवराज चौहान बोला।

जगमोहन और सोहनलाल ने उसे देखा।

"साधारण आदमी फोन पर सतर्कता भरी सलाह नहीं दे सकता।" देवराज चौहान ने कहा।

"तुम कहना क्या चाहते हो?"

"R.D.X को कम मत समझो। मेरे ख्याल से वे तीनों परले

दर्जे के खतरनाक लोग हैं। इतनी दूर रहकर, बातें सुनकर, ऐसी ठोस सलाह देने का मतलब है कि वो तीनों खेले खाये हैं।" देवराज चौहान ने सपाट स्वर में कहा—"मैं उन्हें गम्भीरता से ले रहा हूं और तुम दोनों भी उन्हें सतर्कता से लो। यूं भी दुश्मन कभी कमजोर नहीं होता—वो सिर्फ दुश्मन होता है।"

"अगर वो सच में खतरनाक हैं तो फिर ये मामला लम्बा खिंच जायेगा।" जगमोहन के होठों से निकला।

"तो तुमने कैसे सोच लिया कि तीन करोड़ के काम को तीन घंटों में कर लोगे? तीन करोड़ एक मर्डर के लिये देने वाला बेवकूफ नहीं है। मेरे ख्याल से ये उसने पहले ही सोच लिया होगा कि इस काम को करने में परेशानियां आ सकती हैं।"

"मैंने तो सोचा था कि एक मर्डर ही करना है, एक-दो दिन में सब निपट जायेगा।"

सोहनलाल ने गोली वाली सिग्रेट सुलगाई और कश लिया, फिर जगमोहन से बोला—

"कल R.D.X. रतनचंद कालिया के पास पहुंच रहे हैं, उसे बचाने के मकसद से।"

"यह तो नया पंगा ही खड़ा हो गया।" जगमोहन बड़बड़ा उठा।

❑❑❑

रतनचंद कालिया अपने कमरे में ही था। शाम के सात बज रहे थे।

फोन बजा। रतनचंद ने बात की। दूसरी तरफ उसकी पत्नी सोनिया थी।

"मैंने आपको खुशखबरी देने के लिए फोन किया है।" सोनिया ने कहा।

"क्या?"

"मेरे भाई की शादी भी तय हो गई है। सप्ताह बाद का दिन निकला है। आपको हर हाल में आना है।"

"जरूर आऊंगा।"

"मैं सोचती हूं कि अब शादी में कुछ ही दिन बचे हैं। इधर तैयारियां भी बहुत करनी हैं। बच्चों की छुट्टियां चल रही हैं तो क्यों ना मैं शादी तक यहीं रह लूं, कामों में इनका हाथ भी बंटा दूंगी। ये भी यहीं रहने को कह रहे हैं।"

"तो रह लो।"

"ठीक है, आपको शादी पर वक्त से पहुंचना है, मैं आपको बीच-बीच में याद दिलाती रहूंगी।"

रतनचंद कालिया ने फोन बंद किया और कमरे के कोने में जा पहुंचा। जहां छोटा सा बाररूम बना हुआ था।

जिसमें पन्द्रह-बीस बोतलें विदेशी ब्रांडों की सजी हुई थीं। उसने गिलास उठाया और एक बोतल में पैग बना कर घूंट भरा और वापस कुर्सी पर आ बैठा। चेहरे पर शांत भाव थे। परन्तु आंखों में बेचैनी भरी थी। दिल-दिमाग में सिर्फ एक ही बात बार-बार आ रही थी कि उसकी समस्या का हल केकड़ा के पास है। सिर्फ केकड़ा ही बता सकता है कि कौन उसे मारना चाहता है और कौन उसका निशाना लेने की चेष्टा में है।

आज वो मर ही गया होता अगर एक्स्ट्रा (X-TRA) की बात मानकर जगह न बदली होती।

फिर भी रतनचंद के लिये यह राहत की बात थी कि कल R.D.X. उसके पास पहुंच रहे हैं।

उसी पल कदमों की आहट गूंजी और सुन्दर ने भीतर प्रवेश किया।

"सब ठीक है सर?"

रतनचंद ने सिर हिलाया। घूंट भरा। फिर कहा—

"कल R.D.X. के आ जाने से मैं कुछ निश्चिंत हो सकूंगा।"

"जी। मेरा तो ख्याल था कि अभी दो-चार दिन देख लेते हालातों को, तभी उन्हें बुलाते।"

"मैं मौत के कगार पर खड़ा हूं और तुम अभी भी देख लेने को कह रहे हो सुन्दर?"

"सर, मैं भी तो हूं आपको बचाने वाला।"

"हर काम हर किसी के बस का नहीं होता। मेरे ख्याल में इस बार मामला ज्यादा खराब है।" रतनचंद ने पुनः घूंट भरा— "जिस तरह मेरी जान लेने की कोशिश की गई, वो किन्हीं मंजे हुए हाथों का कमाल था।"

"मेरा भी यही ख्याल है।"

"काले शीशों में से कुछ भी भीतर नहीं दिखता, परन्तु गोली चलाने वाले ने, फिर भी सही निशाना ले लिया। सिर्फ एक ही

गोली चलाई, दोबारा उसने फायर भी नहीं किया, क्योंकि उसे अपने पर भरोसा था कि गोली निशाने पर लगी है।" रतनचंद कालिया ने एक-एक शब्द पर जोर देकर कहा—"मेरा दावा है कि मेरे पीछे खतरनाक लोग पड़े हैं।"

"वो जो भी है, बच नहीं सकेगा।"

"अभी कुछ भी कहना कठिन है।" रतनचंद के चेहरे पर मुस्कान आ ठहरी—"क्योंकि हमारे सामने खतरनाक लोग हैं।"

"डिनर कब लेंगे आप?"

"तुम क्यों पूछ रहे हो?"

"डिनर मैं ही आप तक पहुंचाऊंगा। मैं नहीं चाहता कि कोई आप तक आ सके।"

"मेरे नौकर सब वफादार हैं— तुम जानते हो सुन्दर।"

"जी, लेकिन मैं कोई लापरवाही न बरत कर अपनी ड्यूटी पूरी करना चाहता हूं।" सुन्दर ने कहा।

"जो मन में आये, करो। आठ बजे खाना ले आना। मैं जल्दी सो जाना चाहता हूं।"

सुन्दर चला गया।

रतनचंद ने पैग समाप्त किया और दूसरा बना लाया।

तभी पुनः फोन बजा।

रतनचंद ने मोबाईल उठा कर स्क्रीन पर देखा तो वहां कोई नम्बर न आ रहा था, सिर्फ टेलीफोन का चिन्ह बना हुआ था।

वो समझ गया कि फोन किसी पब्लिक बूथ से या प्राइवेट फोन से किया जा रहा है।

"हैलो।" रतनचंद ने कालिंग स्विच दबा कर फोन कान से लगाकर कहा।

"कैसे हो रतनचंद?" केकड़ा की आवाज कानों में पड़ी।

"तुम—।" रतनचंद ने खुद को संभाला।

"किस्मत वाले हो, आज अपनी मौत दूसरे के गले में डाल दी।" केकड़ा की आवाज में गम्भीरता थी।

"तुमने—तुमने ही मुझे बताया था कि आज मुझ पर गोली चलाई जा सकती है। तभी तो बच पाया।"

"ये तुम्हारी समझदारी रही कि तुम खुद को बचा गये।"

"तुम सामने क्यों नहीं आते?"

"क्या करूंगा सामने आकर? बात करनी है तो फोन पर ही हो जाती है। खुद को बचाकर आज कैसा महसूस कर रहे हो?"

"तुम जानकारी का इकट्ठा सौदा क्यों नहीं कर लेते? मुझे बताओ, कौन लोग मेरे पीछे हैं?"

"जब वक्त आयेगा तो सौदा भी करूंगा।"

"मैं तुम्हें दौलत देना चाहता हूं केकड़ा, दौलत के लिए कोई वक्त नहीं होता। जब आ जाये तभी बेहतर।"

"मैं ऐसा नहीं सोचता। फिर अभी मुझे सोचना भी है।"

"क्या?"

"तुम्हें जानकारी दूं या उससे सौदा करूं जो तुम्हारी जान की सुपाड़ी दे चुका है।"

"उससे क्या सौदा करोगे?"

"मुंह बंद रखने का।"

रतनचंद ने बेचैनी से पहलू बदला। घूंट भरा।

"मैं तुम्हें उससे ज्यादा दौलत दूंगा।"

"तुम्हें क्या पता कि वो मुझे क्या देगा?"

"तुम जो कहोगे, मैं मान लूंगा।"

"छोड़ो इन बातों को, इस बारे में फिर बात करेंगे। सुना है तुम R.D.X. को अपनी सुरक्षा के लिए बुला रहे हो। मैंने तो ये नाम ही पहली बार सुना, फिर पता किया कि ये R.D.X. है कौन। पता चला कि खतरनाक तिगड़ी है।" केकड़ा की आवाज में हंसी के भाव आ गये—"लेकिन जो तुम्हारा निशाना लेना चाहता है वो भी धुरंधर है। खेल में मजा आयेगा रतनचंद।"

"तुम उसका नाम क्यों नहीं बता देते?"

"उससे क्या होगा?"

"R.D.X उसे खत्म करेंगे या उससे सौदा कर लेंगे कि वो मेरा निशाना न ले।"

"वो नहीं लेगा तो कोई दूसरा आ जायेगा। क्योंकि तुम्हें मरवाने वाला तो कोई और है।"

"ठीक है, एक बात का जवाब तो दे सकते हो।" रतनचंद ने घूंट भर कर पूछा।

"पूछो।"

"वो क्यों मुझे मरवाना चाहता है?"

एक्स्ट्रा कपड़े बदल रहा था।

"छोड़ दिया। यहां से निकलते समय तेरी जरूरत पड़ी तो तेरे को फोन किया जायेगा।"

"तुम लोगों ने जहाज पर पहुंचाने को कहा था—वो मैंने पहुंचा दिया।"

"तो हमें निकालोगे नहीं? अगर पकड़े गये तो तेरा नाम ले देंगे।"

"ऐसा मत करना।" वो हड़बड़ा कर कह उठा—"तुमने कहा था कि पकड़े जाने पर मेरा नाम नहीं लोगे।"

"ठीक है, ठीक है।" धर्मा बोला—"ये मज़ाक कर रहा था। इस रस्से को इसी तरह लटकते रहने देना।"

"मैं तो लटकते रहने दूंगा। किसी और ने देखा और रस्सा ऊपर खींच लिया तो?"

"ठीक है, तू जा।" एक्स्ट्रा कमीज के बटन बंद करता बोला—"अपने रास्ते लग। हमारा वो पैकिट दे दे, जो तेरे को शाम को दिया था।"

वो उसी पल वहां से एक तरफ गया और फौरन लौट आया। हाथ में पैकिट था।

"ये लो। इसमें क्या है?" देते हुए बोला।

"हमारे खाने-पीने का सामान है।" धर्मा पैकिट लेते बोला—"अब तू खिसक ले।"

वो सच में खिसक गया।

धर्मा ने पैकिट खोला।

भीतर तीन रिवॉल्वर और फालतू मैग्जीन थीं।

तीनों ने एक-एक रिवॉल्वर और मैग्जीन जेब में रख ली।

"जहाज पर गोली न चलाई जाये तो बेहतर होगा।" धर्मा बोला—"हर जहाज का अपना सिक्योरिटी सिस्टम होता है और तगड़ा होता है। हमें किसी की निगाहों में नहीं आना है। अपना काम करके, जैसे खामोशी से आये हैं, वैसे ही निकल चलना है।"

"हमें उस लड़की को वापस ले जाना है और साथ में उस दौलत को जो वो घर से ले भागी है।" राघव ने कहा।

"मैं उसके हरामी आशिक को सबक सिखाऊंगा। वो आठ बार जेल जा चुका है। हत्या, बलात्कार और जबरन वसूली के

उस पर पैंतीस मुकदमे चल रहे हैं। इस वक्त जमानत पर है और लड़की को भगाकर देश से खिसक रहा है।"

"उसके बारे में खबर कर दें तो वो यूं ही पकड़ा जायेगा।" धर्मा ने कहा।

"तो हमारा काम क्या बचा? तब तो सब कुछ पुलिस ही कर लेगी। लड़की के बाप से हमने मोटी रकम का सौदा किया है, लड़की को उस तक वापस पहुंचाने के लिए। इसलिए उस तक लड़की को हम ही पहुंचायेंगे और दौलत के हकदार बनेंगे।"

"राघव, उससे यह नहीं पूछा कि दोनों किस केबिन में ठहरे हुए हैं?" धर्मा बोला।

"अभी लो।" राघव ने जेब से फोन निकाला और नम्बर मिलाने लगा।

बात हो गई।

"हैलो।"

"वो दोनों किस केबिन में ठहरे हैं?" राघव ने पूछा।

"पहली मंजिल के सात नम्बर केबिन में।"

राघव फोन बंद करके जेब में रखता कह उठा—

"पहली मंजिल, सात नम्बर केबिन। और इस वक्त दोनों दूसरी मंजिल पर डाइनिंग हॉल में हैं।"

"चलो।"

वे उस तरफ बढ़ गये, जिधर नीचे जाने को सीढ़ियां थीं।

"पहले मैं किसी केबिन में जाकर दूसरे कपड़े हासिल करूंगा, उन्हें पहन कर ही वहां पहुंचूंगा। तुम चलो, मैं आता हूं।" एक्स्ट्रा ने कहा।

❑❑❑

तीन-मंजिला जहाज था।

राघव और धर्मा, जहाज के स्टाफ की वर्दी पहने उस तरफ बनी सीढ़ियां उतरने लगे। एक्स्ट्रा भी उनके पीछे था, परन्तु तीसरी मंजिल आते ही वो सीढ़ियां छोड़कर गैलरी में आगे बढ़ गया। जब कि वो दोनों दूसरी मंजिल की गैलरी में आगे बढ़ने लगे। वहां लोग आ-जा रहे थे, परन्तु सब अपने काम में मस्त थे।

चलते-चलते राघव ने जेब से युवती की तस्वीर निकाली।

वो एक खूबसूरत युवती की तस्वीर थी जिसकी उम्र बाइस-तेईस बरस के करीब रही होगी।

"पहचान ले।" राघव ने कहा।

धर्मा ने तस्वीर पर निगाह मारी।

"ठीक है।" धर्मा बोला।

राघव ने तस्वीर जेब में रख ली।

गैलरी अभी सीधी जा रही थी। बीच में मोड़ आया तो वे ठिठके। दो पल सोचने में लगाये कि इधर जाये या उधर जाये। तभी सामने से एक जोड़ा आता दिखा।

"गुड ईवनिंग सर।" उनके पास पहुंचने पर राघव ने मुस्करा कर कहा।

"गुड ईवनिंग।" दोनों ने मुस्कुरा कर सिर हिलाया।

"आपने डिनर ले लिया?"

"अभी जल्दी क्या है!" उस व्यक्ति ने हंस कर कहा—"बारह बजे तक डिनर मिलता है नियम के मुताबिक।"

"डायनिंग हॉल किस तरफ है?"

"कमाल है!" औरत ने दोनों के कपड़ों पर नज़र मारी—"आप तो शिप के स्टाफ हैं और आपको पता नहीं कि डायनिंग हाल किधर है।"

"हम नये भर्ती हुए हैं।" बोला धर्मा।

"ओह! गैलरी में सीधे आगे चले जाइये। आगे भी ऐसा मोड़ आयेगा। उसी मोड़ पर डायनिंग हाल है।" आदमी बोला।

"मैं इससे कह रहा था कि आगे है डायनिंग हाल, लेकिन ये माना नहीं।" धर्मा ने कहा और राघव के साथ आगे बढ़ गया।

कुछ ही देर में दोनों डायनिंग हाल के दरवाजे पर खड़े थे।

तभी दरवाजा खुला और एक युवक बाहर निकला। इससे पहले कि दरवाजा बंद होता, राघव और धर्मा भीतर प्रवेश कर गये। ये पांच सौ गज में फैला, विशाल, शानदार डायनिंग हाल था, जिसकी सजावट देखते ही बनती थी। एक तरफ बार भी था कि जो डिनर के साथ ड्रिंक का मजा लेना चाहते हों, वो ले सकें।

पूरे हाल में टेबल-कुर्सियां सजावट से लगा रखी थीं। कोई टेबल आठ चेयर वाली थी, कोई छः, चार और दो वाली थी। छत पर फानूस लगा था। एक इधर, एक कुछ हट कर।

इस समय आधे से ज्यादा टेबलें भरी हुई थीं।

मौजूदा लोगों का शोर, भिनभिनाहट जैसा लग रहा था।

"तू देख वो किधर है!" धर्मा ने कहा और उस तरफ बढ़ गया, जिधर बार था।

राघव वहां बैठे लोगों पर नज़रें दौड़ाता आगे बढ़ा।

धर्मा बार काऊंटर पर पहुंचा। वहां चार लोग मौजूद थे। एक साठ बरस का व्यक्ति जो कि रैक में लगी बोतलों पर निगाह दौड़ा रहा था और बाकी के तीन युवक कस्टमर के लिए ड्रिंक तैयार करने में लगे थे। धर्मा के वहां पहुंचने तक, पहले से ही दो लोग वहां खड़े थे।

"गुड ईवनिंग सर।" युवक धर्मा को देखते ही बोला।

"ठीक है यार। एक बढ़िया सा पैग बना। थोड़ा मोटा पैग बनाना। पूरा भीग गया।"

"भीग गये, वो कैसे सर?"

"समन्दर में तैरा था।"

"अच्छा—कब?"

धर्मा ने मुस्कुरा कर उसे देखा, फिर बोला—

"सप्ताह पहले।"

"ओह, तो तब की सर्दी को एक सप्ताह बाद मिटा रहे हैं?" युवक मुस्कुरा पड़ा।

"वो बात नहीं। जब भी भीगने की बात याद आती है, सर्दी महसूस होने लगती है।"

"आप मजाक अच्छा कर लेते हैं।" युवक ने कहा और धर्मा के लिये पैग बनाने लगा।

धर्मा की निगाह पूरे हाल में दौड़ रही थी।

उसे राघव दिखा जो कि कुर्सियों पर बैठे लोगों के बीच टहल रहा था।

"सर—आपका गिलास।"

धर्मा ने गिलास उठाया और घूंट भरने लगा, नज़रें हाल में थीं।

तभी म्यूजिक का धमाका हुआ और सामने का स्टेज रोशन हुआ। धर्मा ने वहां नजर मारी। स्टेज पर चार म्यूजिशियन दिखे, देखते-ही-देखते जिन्होंने मधुर धुन बजानी शुरू कर दी थी। तभी

पीछे से, स्टेज पर एक युवती प्रकट हुई और धुन की लहर पर डांस करने लगी। समां और भी रंगीन होने लगा।

❑❑❑

डायनिंग हाल के एक तरफ बड़ा सा दरवाजा था, जो कि खुला हुआ था। उस दरवाजे से निकलते ही तीस फीट लम्बी और पांच फीट चौड़ी बालकॉनी थी, जहां से खुले समन्दर का नजारा स्पष्ट नजर आ रहा था। अंधेरे में डूबा समन्दर, किसी काली चादर की तरह लग रहा था। कभी-कभी समन्दर में आसमान में निकला चांद चमक उठता था। जहाज की रोशनियां पास ही के पानी में पड़ रही थीं। तेजी से पानी को चीरता जहाज भागा जा रहा था।

इस तीस फीट लम्बी गैलरी में पांच-छः लोग मौजूद थे।

एक तरफ एकान्त में एक युवती और एक व्यक्ति कुर्सियों पर आमने-सामने बैठे थे। अंधेरे की वजह से उनके चेहरे स्पष्ट नज़र नहीं आ रहे थे। वो आदमी हाथ में पकड़े गिलास को युवती की तरफ बढ़ाता बोला—

"लो, खत्म करो।"

"नहीं, पहले ही बहुत हो गई है। मेरा सिर चकरा रहा है।" युवती कह उठी।

"ओह, रोमा, मुझ पर भरोसा रखो। इतनी सी और पी लेने से कुछ नहीं होगा। अभी पूरी रात बितानी है।"

"नहीं, मेरा सिर चकरा रहा है।"

"क्या तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं?"

"तुम लगते ही क्या हो मेरे, जो तुम पर भरोसा करूं?"

"मैं तुम्हें प्यार करता हूं। दिलो-जान से चाहता हूं।"

"बकवास मत करो। तुम ब्लैकमेलर हो और मुझे ब्लैकमेल करके, साथ चलने को मजबूर किया।" युवती का नशे से भरा स्वर तीखा हो गया—"तुमने पहले मुझसे दोस्ती की। मुझे फंसाया। फिर मेरे साथ हमबिस्तर हो गये और फिल्म बनायी। तब मैं नहीं जानती थी कि बिस्तर पर होने वाली हर हरकत को वहां लगा कैमरा अपने में कैद कर रहा है।"

"पुरानी बातें तुम भूल क्यों नहीं जातीं रोमा।" उस आदमी ने प्यार से कहा।

"पुरानी—कितनी पुरानी हैं ये?" रोमा ने गहरी सांस लेकर

कहा—"महीना भर पहले की तो बात है, जब ये सब हुआ! उसके बाद तुमने बिस्तर पर हुई हरकतों की सी.डी. बनाकर मुझे दी और कहा कि ऐसी ही सी.डी. मेरे पापा को दोगे, अगर मैं तुम्हारे साथ नहीं गई तो। मेरे पापा शहर के इज्जतदार लोगों में गिने जाते हैं, उनका नाम है, और मैं पापा से प्यार करती हूं। मेरी इस कमजोरी को तुम जानते थे और इसी का फायदा उठाया तुमने। मुझे मजबूर कर दिया तुमने कि मैं तुम्हारे साथ भाग चलूं। तब तुम्हारी ये भी शर्त थी कि घर से आते समय पापा की करोड़ों की दौलत भी साथ लेती आऊं। मैं पापा को सी.डी. की वजह से बदनाम होते नहीं देखना चाहती थी। इसलिए मैंने तुम्हारी बात मानी। घर से करोड़ों की दौलत लेकर भाग आई। ज्यादा-से-ज्यादा पापा यही सोचेंगे कि मैं बेकार लड़की थी जो इस तरह घर से भाग गई। इस तरह उनकी खास बदनामी भी नहीं होगी, लेकिन सारी उम्र उनका दिल दुखता रहेगा कि उनकी बेटी ने गलत किया और इधर मेरा दिल रोता रहेगा।"

"ऐसी बातें करके मुझे क्यों तड़पाती हो, मैं तुमसे रंगून पहुंचते ही शादी कर लूंगा।"

"शादी?"

"हां, मैं तुमसे शादी करना चाहता हूं। तभी ये सब किया। मैं तुम्हें चाहता हूं। मेरे दिल में झांक कर तो देखो। काश! मैं तुम्हें अपना दिल दिखा सकता। परन्तु मैं जानता था कि दूसरी तरह मैं तुम्हें हासिल नहीं कर पाऊंगा। तुमसे शादी नहीं कर पाऊंगा। एक रात के लिये तो तुम मेरे साथ सो गईं, परन्तु जिन्दगी नहीं बितातीं मेरे साथ। शादी को कभी तैयार नहीं होतीं। इसी तरह तुम्हारे पापा भी मुझे अपना दामाद न बनाते। ये सब तुम्हें पाने के लिए किया है, वरना मैं बंदा बुरा नहीं हूं। लो, ये पी लो। कुछ दिन और बीतने दो। रंगून पहुंच कर तुम सब भूल जाओगी, लो पी लो।"

रोमा ने गिलास थामा और एक ही सांस में खाली कर दिया।

"गुड गर्ल।" उससे गिलास थामता वह कह उठा—"नशा बहुत कुछ ठीक कर देता है।"

"मुझे तुमसे शादी करनी होगी?" रोमा की आवाज में नशा था।

"हां, हम शादी करेंगे रंगून में। घर बसायेंगे। तुम देखोगी कि मैं तुम्हारा कितना अच्छा पति बनता हूं।"

रोमा ने गहरी सांस ली और समन्दर की तरफ मुंह कर लिया।

वो उठते हुए बोला—

"मैं अपने लिए गिलास बनवा कर लाता हूं।" कहकर वो खुले दरवाजे से भीतर चला गया।

रोमा रेलिंग से ठोढ़ी लगाए, काले समन्दर को देखने लगी। तेज रफ्तार से जहाज आगे बढ़ने के कारण उसके बाल उड़ रहे थे। जिन्हें संभालने का उसका ज़रा भी मन नहीं हो रहा था।

वो जल्दी ही गिलास थामे वापस आ गया।

"संजीव!"

"कहो डार्लिंग।"

"तुम मुझे बहुत प्यार करते हो?"

"बहुत, तुम सोच भी नहीं सकतीं।"

"इम्तहान दोगे?" वो समन्दर को देखते कह उठी।

"क्यों नहीं!"

"मेरी खातिर समन्दर में कूद जाओ।"

"क्या?" वो अचकचाया—"ये क्या कह रही हो?"

"तुमने मुझे बहुत तंग कर लिया। अब मैं और तंग नहीं होना चाहती। मैं पापा के पास जाना चाहती हूं।" उसका नशे भरा स्वर भर्रा उठा।

"मैं जानता हूं, तुम्हें पापा से अलग होने का दुःख हो रहा होगा।" संजीव ने कहा—"एक दिन हर लड़की को इस दौर से निकलना पड़ता है, लेकिन फिर सब ठीक हो जाता है। मैं तुम्हारे दिल की हालत समझ रहा हूं। रंगून पहुंच कर तुम अपने पापा से बात कर लेना। साल, दो साल की बात है। एक-दो बच्चे हो जाने के बाद हम वापस इण्डिया आयेंगे। तब तुम अपने पापा से मिल सकोगी। लो, ये पैग भी चढ़ा लो। नशा सिर पर सवार होगा तो, सोचें दब जायेंगी। मैं तुम्हें खुश देखना चाहता हूं।"

"तुम कुत्ते हो।"

"क्या बकवास कर रही हो?" संजीव गुर्रा उठा।

"तुमने मुझे बर्बाद कर दिया। मेरी जिन्दगी को तुमने मुसीबत बना दिया...मैं...।"

"ये रोना-धोना बंद करो।" संजीव धीमे स्वर में गुर्राया—"जो मैं कहूं—तुझे मानना होगा। वरना मैं वो सी.डी. जहाज पर मौजूद

लोगों में बांट दूंगा--और तुम यहां भी किसी को मुंह दिखाने के काबिल नहीं रहोगी। समझीं कि नहीं।"

"सच में तुम बहुत बड़े कुत्ते हो।"

संजीव ने हाथ में थमा गिलास एक ही सांस में खाली कर किया, फिर कड़वे स्वर में कह उठा—

"अगर मैं कुत्ता हूं तो ध्यान रखना, कुत्तों के मुंह नहीं लगते। अपना मुंह बंद रख और मेरे इशारे पर चल। तेरे बाप के पास इतनी ज्यादा दौलत है और तू उस दौलत की इकलौती वारिस। जब तू मेरे दो-चार बच्चे पैदा कर देगी तो तेरा बाप अपनी सारी दौलत मेरे नाम कर देगा। तब मैं भी तेरे बाप की तरह नामी बंदा बन जाऊंगा।"

रोमा सुबक उठी।

"चल, डिनर ले लें, उसके बाद केबिन में चलते हैं। आज मजे से रात बितायेंगे। उठ।"

❑❑❑

धर्मा ने गिलास खाली करके बार काउंटर पर रखा, वहां से जाने लगा तो उसे एकटक देखता साठ बरस का वो व्यक्ति फौरन आगे आया और बोला—

"पेमेंट सर।"

धर्मा ने उसे देखा और मुस्कुरा कर कह उठा—

"स्टाफ।"

"यहां स्टाफ नहीं चलता, ये कस्टमर के लिए बार है। स्टाफ की बार अलग से है।"

"अजीब आदमी हो, कब से भरती हुए हो यहां?" धर्मा ने टेढ़े स्वर में कहा।

"जनाब, जब इस जहाज ने पहली बार सफर शुरू किया था, मैं तब से ही बारमैन का काम कर रहा हूं और अब बूढ़ा हो गया हूं। जहाज के सारे स्टॉफ को जानता हूं, परन्तु आपको पहले कभी नहीं देखा।"

"तुम्हारी नज़रें कमजोर हो गई हैं।"

"ये खबर मुझे अभी-अभी मिली है।" उसने व्यंग से कहा—"चैक करवाऊंगा आंखों को।"

धर्मा ने उसे देखा।

"कब से जहाज पर काम कर रहे हो?" बूढ़े ने पूछा।

"ये बता दिया तो शायद तुम उसे पहचान जाओ। इसलिए नहीं बताऊंगा।" केकड़ा की आवाज कानों में पड़ी।

"आखिर तुम चाहते क्या हो?"

"तुम्हारा भला कर रहा हूं कि तुम अपनी जान बचाओ। जैसे कि तुमने आज बचाई, वैसे ही आगे भी बचाना।"

"मेरे मरने या न मरने में तुम्हारी क्या दिलचस्पी है?"

"न लूं दिलचस्पी—खबर न दूं तुम्हें?"

"मैंने ये तो नहीं कहा।"

"फिर बेकार के सवाल न पूछो।"

"अब मुझ पर कब हमला होगा?"

"बताऊंगा—जरूर बताऊंगा। लेकिन मेरे भरोसे मत रहना। क्या पता मुझे भी खबर न लगे और तुम पर हमला हो जाये। बेहतर होगा कि तुम अपनी नींदें हराम करो और खुद को बचाओ। मौत का कोई पता नहीं चलता कि कौन से रास्ते से आ धमके।"

रतनचंद का चेहरा कठोर हो गया।

"तुम मुझसे मिलो। मैं तुम्हें खुश कर दूंगा, ढेर सारी दौलत देकर।"

"जरूर मिलूंगा। अभी तुम कम दौलत दोगे, जब ज्यादा फंस जाओगे तो तब मिलूंगा, तब तुम मुंहमांगी दौलत दोगे।"

"मैं अभी भी—।" रतनचंद ने कहना चाहा।

परन्तु दूसरी तरफ से केकड़ा ने फोन बंद कर दिया था।

रतनचंद ने गहरी सांस लेकर फोन बंद किया और एक ही सांस में गिलास खाली कर दिया।

"पता नहीं कौन हरामजादा है केकड़ा!" बड़बड़ाता उठा रतनचंद कालिया—"सबकुछ जानता है लेकिन सामने नहीं आता। यहां मेरी जान पर बनी हुई है और ये हरामी अपनी नोटों की रोटियां सेकने में लगा है।"

❑❑❑

R.D.X. क्या है, आइये हम भी उन्हें देखें।

इसी शाम R.D.X. की तिगड़ी समदर तट पर मौजूद थी। अंधेरा हो चुका था। समन्दर से टकरा कर आती ठण्डी हवा, दिन भर की गर्मी

समन्दर में मोटरबोटों की हैडलाईट चमक रही थी। एक बोट अभी-अभी यहीं से गई थी, उसकी आवाज अभी भी कानों में पड़ रही थी। ये बीच का सुनसान किनारा था।

R — राघव।

D — धर्मा।

X — एक्स्ट्रा (X-TRA)।

तीनों खड़े समन्दर पर नज़रें टिकाये हुए थे।

एक्स्ट्रा ने कलाई पर बंधी घड़ी में नज़र मारी, शाम के 7.45 हो रहे थे।

अंधेरे में वे स्पष्ट नज़र आ रहे थे।

तभी मोबाईल फोन की बेल बजने लगी।

राघव का फोन था ये।

"हैलो।" उसने बात की।

"काम हो रहा है?" उधर से आवाज आई।

"हां।"

"कब तक हो जायेगा?"

"रात के भीतर ही होगा। तेरे को अब हमें फोन नहीं करना चाहिये, हमारे फोन का इन्तजार कर।"

"जब तक काम नहीं होगा, मुझे नींद नहीं आयेगी।"

"तो सोने को किसने कहा है, जागता रह।"

"फोन इधर दे।" एक्स्ट्रा ने कहा।

राघव ने फोन एक्स्ट्रा की तरफ बढ़ा दिया।

"जब तक तू जागता रहेगा, हम काम नहीं करेंगे।" एक्स्ट्रा ने कहा।

"ये तू क्या कह रहा है एक्स्ट्रा...मैं....।"

"सो जा। तेरे को नींद आ रही है, अगर तू हमें जागता मिला तो तेरा काम खराब हो जायेगा।"

"नहीं, काम खराब नहीं होना चाहिये, वरना मैं बर्बाद हो जाऊंगा।"

"तो सो जा।"

"ठीक है, मैं....मैं....।"

एक्स्ट्रा ने फोन बंद करके राघव की तरफ उछाल दिया।

राघव ने फोन थामा और जेब में रख लिया।

तीनों के बीच खामोशी रही। नज़रें समन्दर पर दौड़ रही थीं, जो अंधेरे में डूबा था।

राघव का फोन पुनः बजा।

"बोल।" राघव ने बात की।

"जहाज का लंगर उठ रहा है। अगले पन्द्रह मिनट में तट छोड़ देगा।"

"बढ़िया। तेरे को अपना काम याद है न?"

"हां।"

"दस लाख दिया है तेरे को इस काम का। अगर काम नहीं हुआ तो तेरी लाश समन्दर में पड़ी मिलेगी।"

"मैंने रस्सा तैयार कर रखा है, ठीक वक्त पर नीचे लटका दूंगा।"

"वर्दियां?"

"वो भी तैयार हैं।"

"हमारा शिकार कहां है?"

"जहाज में चढ़ चुका है वो। उसके साथ एक खूबसूरत लड़की भी...।"

"तू लड़की को देखता रहा, या शिकार को?"

"मेरे लिये दोनों ही महत्वहीन हैं। तुम कब तक आ रहे हो?"

"जो वक्त तय हुआ है हम तभी पहुंचेंगे, तब जहाज की रफ्तार कुछ पलों के लिए शून्य हो जानी चाहिये। ताकि हम जहाज से लटकता रस्सा थाम सकें।" राघव ने सामान्य स्वर में कहा।

"मैंने सब इन्तजाम कर दिया है।"

"मिलते हैं।" राघव ने कहा और फोन बंद करके जेब में रखा।

धर्मा ने जेब से फोन निकाला। नम्बर मिलाया।

"हैलो।"

"बोट ले आ।" धर्मा ने कहा और फोन बंद करके बोला—"ये काम खतरनाक है। हमें हर कदम सावधानी से उठाना होगा। जरा सी लापरवाही हमें फंसा सकती है या हमारी जानें भी जा सकती हैं।"

"हमारा हर काम ही खतरनाक होता है।" एक्स्ट्रा बोला।

"लेकिन इस बार काम ज्यादा खतरनाक है।"

"जहाज के भीतर कैसे हालात हमारे सामने आते हैं, सब कुछ इसी बात पर निर्भर है।" राघव ने कहा।

तभी उनके कानों में बोट की आवाज पड़ने लगी।

तीनों आगे बढ़े और बोट के भीतर जा पहुंचे।

बोट के स्टेयरिंग पर बैठे व्यक्ति ने बोट आगे बढ़ा दी।

"तू रात भर हमारे साथ रहेगा डिसूजा।" एक्स्ट्रा ने कहा।

"चौगुने पैसे लिए हैं तो क्यों न रहूंगा!" बोट चलाने वाला डिसूजा मुस्कुराकर ऊंचे स्वर में कह उठा।

"क्या काम कैसे करना है, तेरे को बतायेंगे। अभी तो सीधा ले तू बोट को। तट से रंगून के लिए जहाज चल रहा है वो....।"

"7.55 वाला जहाज?" डिसूजा बोला।

"जानता है तू?"

"समन्दर की हर हलचल को जानता हूं।" डिसूजा का स्वर ऊंचा था। क्योंकि बोट के इंजन की तेज आवाज गूंज रही थी।

"उस जहाज के समन्दरी रूट का पता है तुझे?"

"पता है, वो किस रास्ते से जायेगा!"

"उधर ही चल, उसे ही पकड़ना है।"

❑❑❑

8.35 का वक्त हो रहा था।

डिसूजा को समन्दर की सतह पर बोट रोके पांच मिनट ही हुए थे कि दूर जहाज की सर्चलाईट जैसी तीव्र रोशनी, समन्दर की छाती पर पड़ती दिखाई दी। पीछे जहाज के भीतर जलने वाली लाईटें भी स्पष्ट दिखाई दे रही थीं। वो जहाज इसी तरफ बढ़ रहा था, करीब पांच-सात मिनट के बाद वो सामने से निकलने वाला था।

"वो ही है?" धर्मा बोला।

"हां।" डिसूजा ऊंचे स्वर में बोला—"वो ही है। लेकिन तुम लोग करना क्या चाहते हो?"

"दिमाग को कम इस्तेमाल कर। जो हमने कहा है, वो याद है?"

"याद है। खतरे वाला काम है मेरे लिये। समन्दर में पुलिस भी गश्त लगाती है, वो मुझे देख भी सकते हैं।"

"तेरे को मुंहमांगे पैसे दिये हैं।"

"तभी तो साथ हूं।"

"बोट में तेल फुल है?"

"टनाटन है। तेल आसानी से खत्म नहीं होगा।" डिसूजा ने कहा।

"मेरे ख्याल में वक्त हो चुका है धर्मा।" एक्स्ट्रा ने कहा।

"मैं बात करता हूं।" राघव ने कहा और फोन निकाल कर नम्बर मिलाया। बात हो गई।

"तेरा जहाज आ रहा है।"

"मेरा नहीं, कम्पनी का है। मैं रस्सा लटका चुका हूं।" उधर से आवाज आई।

"मुझे जहाज की रफ्तार तेज लग रही है।" राघव ने कहा।

"कब कम करनी है?"

"हम तीन मिनट में जहाज के पास पहुंच जायेंगे। तू रफ्तार कैसे कम करेगा? इंजन रूम में तेरी पहुंच है?"

"नहीं, लेकिन चालक दल के सदस्य को पचास हजार देकर पटा लिया था। वो दो मिनट के लिए रफ्तार कम कर देगा।"

"तो कम करवा, हम पहुंच रहे हैं।"

"जहाज पर ज्यादा गड़बड़ तो नहीं होगी? कहीं मैं फंस न जाऊं?" उधर से आवाज आई।

"क्या बच्चों जैसी बातें करता है। किसी को पता भी नहीं चलेगा कि बाहर से कोई जहाज में आया और चला गया। फिर तेरे बारे में तो किसी को भी पता नहीं चलेगा कि तूने कोई गड़बड़ की है, मस्त रह।" राघव ने मीठे स्वर में कहा।

"ठीक है। फोन बंद कर। मैं इंजन रूम में अपने आदमी को फोन करके स्पीड कम करने को कहूं।"

"याद रख, रस्सा पश्चिम दिशा की तरफ लटकाना है। हम उधर ही हैं।"

"पता है मुझे।"

राघव ने फोन बंद किया और बोला—

"डिसूजा, बोट जहाज की तरफ ले। स्पीड कम होने वाली है जहाज की।"

डिसूजा ने बोट स्टार्ट की।

"लाईट मत जलाना।" एक्स्ट्रा कह उठा।

डिसूजा ने बोट आगे बढ़ा दी।

सब की निगाहें जहाज पर ही टिकी थीं, जो इसी तरफ आ रहा था।
दो मिनट बाद डिसूजा ने बोट की रफ्तार कम की और कह उठा—
"इससे आगे नहीं पहुंचेगा। जहाज के निकलने का रास्ता सामने ही है।"
जहाज अब करीब आ चुका था और काफी विशाल लग रहा था।
एकाएक उसे लगा जैसे जहाज की रफ्तार कम हो रही है—और पहाड़ जैसा जहाज उसके करीब आ पहुंचा था।
"डिसूजा!" एक्स्ट्रा बोला—"बोट को आगे ले।"
"बोट आगे लेने में खतरा है।"
"आगे ले।"
डिसूजा ने बोट को आगे बढ़ाया।
जहाज अब करीब आ चुका था। वो तीन सौ फीट की दूरी पर ही था। ये रास्ता भी बोट धीरे-धीरे तय करने लगी।
"वो उधर!" राघव बोला—"वहां शायद रस्सा लटक रहा है।"
"चल डिसूजा उधर।"
"जहाज चल रहा है। ज़रा सा भी बोट को लगा कि बोट गई।" डिसूजा बड़बड़ा उठा।
बोट पास पहुंची।
इस समय उन्हें ऐसा लग रहा था कि जैसे कोई पहाड़ पानी में धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा हो।
अब रस्सा उन्हें स्पष्ट नज़र आने लगा था, जो कि समन्दर की सतह तक को छू रहा था।
सब कुछ सामने था।
अब हरकत में आ जाने का वक्त था।
जहाज धीरे-धीरे आगे बढ़ता जा रहा था।
"राघव...चल।" एक्स्ट्रा का स्वर एकाएक सख्त हो गया।
राघव ने फोन निकाला और डिसूजा को देते बोला—
"इसे अपने पास रख। कोई फोन बजे तो सुनना मत।" कहने के साथ ही राघव ने पानी में छलांग लगा दी।
धर्मा और एक्स्ट्रा ने भी फोन डिसूजा को थमाए।

"अब तेरी बारी धर्मा।"
एक्स्ट्रा के शब्द पूरे हुए ही थे कि धर्मा फौरन पानी में कूद गया।
एक्स्ट्रा ने देखा, राघव ने रस्सा थाम लिया है और तेजी से ऊपर चढ़ने लगा है। धर्मा भी अब पास जा पहुंचा था। उसके देखते ही देखते धर्मा ने भी नीचे लटकता रस्से का सिरा थाम लिया। तभी धर्मा चौंका।
जहाज की रफ्तार एकाएक तेज होनी शुरू हो गई थी।
"डिसूजा, बोट को आगे बढ़ा, जल्दी।" एक्स्ट्रा ने सख्त स्वर में कहा।
डिसूजा ने ऐसा ही किया और बोला—
"खतरा है, तू मत जा—जहाज की बॉडी तेरे से टकरा सकती है। रस्सा पकड़ में नहीं आयेगा।"
एक्स्ट्रा की नज़रें रस्से पर लटकते राघव और धर्मा पर थीं, जो हर पल ऊपर भी चढ़ते जा रहे थे।
"तेरे को पता है मुझे एक्स्ट्रा क्यों कहते हैं?"
"क्यों?" डिसूजा बोट को फुल स्पीड पर जहाज के समान्तर दौड़ाये जा रहा था।
"मैं एक्स्ट्रा ही हूं। मेरा बाप मुझे एक्स्ट्रा कहते-कहते मर गया, लेकिन मेरी सेहत पर कोई फर्क नहीं पड़ा। बाकी बात तेरे को आकर बताऊंगा। तेरे को जो समझाया है, वो याद रखना, वरना तेरी खैर नहीं।" इसके साथ ही एक्स्ट्रा समुन्द्र में कूदा और गोली की-सी रफ्तार से, सीधे जाते जहाज की तरफ बढ़ा।
जहाज की जरा सी टक्कर उसके शरीर के, पलक झपकते ही चीथड़े उड़ा सकती थी।
परन्तु एक्स्ट्रा की निगाह तो जहाज की साईड से लटकते मोटे रस्से पर थी, जो कि जहाज की बढ़ती रफ्तार की वजह से हवा में झूलना आरम्भ हो गया था।
तभी जहाज का वो हिस्सा, जहां से रस्सा लटक रहा था, उसके सामने से निकला।
एक्स्ट्रा तैयार था।
वो किसी डॉलफिन की भांति उछला और रस्से का हवा में लहराता किनारा थाम लिया। इसके साथ ही वो रस्से के साथ

गोल-गोल घूमता चला गया। जहाज की बॉडी से, रस्से पर झूलता उसका शरीर टकराने लगा तो दोनों टांगें जहाज की तरफ करके उसने खुद को बचाया और ऊपर देखा।

राघव रस्से पर नहीं था।

यानि कि वो जहाज पर पहुंच चुका था।

धर्मा आधे से ज्यादा रस्सा तय कर चुका था।

एक्स्ट्रा ने डिसूजा की बोट की तरफ देखा।

वो कहीं भी नजर न आई और अंधेरे का हिस्सा बनकर, पीछे छूट चुकी थी।

अगले ही पल एक्स्ट्रा, बन्दरों की सी फुर्ती के साथ रस्से के सहारे ऊपर चढ़ता चला गया।

❑❑❑

9.05 हुए थे, जब एक्स्ट्रा ने जहाज में कदम रखा।

राघव कपड़े बदल चुका था और जहाज के स्टाफ की वर्दी में खड़ा धर्मा कपड़े पहन रहा था। पास ही में एक पैंतीस बरस का व्यक्ति खड़ा था, जिसके शरीर पर जहाज के कर्मचारियों की वर्दी थी। वो एक्स्ट्रा से बोला—

"लो।" उसने हाथ में पकड़े कपड़े उसकी तरफ बढ़ाये—"जल्दी से पहन लो।"

एक्स्ट्रा ने कपड़े थामते हुए कहा—

"बहुत घबरा रहा है।"

"किसी ने मुझे तुम लोगों के साथ देख लिया तो नौकरी गई और जेल भी होगी।"

"वो लड़का और लड़की कहां पर हैं?"

"इस वक्त डाइनिंग हाल नम्बर दो में हैं, दूसरी मंजिल पर। कुछ देर पहले ही उन्हें वहां देख कर आया था। अगर अब वे वहां नहीं हैं तो मैं कुछ नहीं कर सकता।" उसने बेचैनी से कहा।

"तेरे को एक फालतू का फोन रखने को कहा था।" राघव बोला।

उसने तुरन्त फोन निकालकर राघव की तरफ बढ़ाया।

"गुड।" राघव ने उससे फोन लेकर जेब में डाला—"ये फोन तेरे से बात करने के लिए है।"

"अब तो मेरा पीछा छोड़ दो।"

"नया भरती हुआ हूं।"

"नाम बतायेंगे?"

"धर्मा।"

"कौन से सैक्शन में हो?"

"सैक्शन से क्या होता है?" धर्मा मुंह बनाकर बोला—"मेरा काम जहाज पर घूमते रहना है।"

"क्यों?"

"यूं ही।"

"ये ड्यूटी तो मेरे लिये नई है। पहले ये पोस्ट नहीं होती थी जहाज पर।" उसने व्यंग से कहा—"तुम....।"

तभी राघव वहां आ पहुंचा।

बूढ़े ने राघव को देखा और आंखें सिकोड़ कर बोला—

"ये भी नया ही भर्ती हुआ होगा और इसकी ड्यूटी भी तुम्हारी तरह जहाज पर यूं ही घूमने की होगी।"

"ठीक समझे।"

"क्या हुआ?" राघव ने पूछा।

"ये पागल सा है। एक पैग क्या पी लिया, पीछे पड़ गया। पैसे मांगता है और हमारी वर्दी पर शक कर रहा है।"

"ओह, तुमने इसे बताया नहीं?" राघव ने फौरन कहा।

धर्मा ने गहरी सांस लेकर मुंह फेर लिया।

"तुम्हें बता देना चाहिये कि हम कौन हैं।" राघव ने कहा, फिर बूढ़े से बोला—"तुम ज़रा बाहर जाओ।"

"बाहर क्यों?"

"हमारे बारे में जानना चाहते हो कि नहीं?"

"इसके लिए बाहर आने की क्या जरूरत है—तुम यहीं....।"

"यहां कोई भी वो बात सुन सकता है, जो हमने किसी को नहीं बताई। ये सरकारी राज़ है।"

"सरकारी राज़?"

"जल्दी करो। हमें और भी काम है।"

बूढ़े ने सोचभरे ढंग से सिर हिलाया और बार के पीछे से छोटा दरवाजा खोल कर बाहर निकल गया और पास आ पहुंचा। उसके चेहरे पर उलझन के भाव नज़र आ रहे थे।

"क्या है, सरकारी राज़?"

राघव, बूढ़े को कोने में ले गया। ये जगह ऐसी ओट थी कि यहां से हाल में बैठे लोग नज़र नहीं आ रहे थे। बूढ़ा बार-बार राघव को देख रहा था।

तभी राघव ने अपना दांया हाथ उठाया और खास अन्दाज में बूढ़े के सिर पर रखा और अंगूठे से कनपटी दबाने लगा। बूढ़ा छटपटाया और अगले ही पल उसके घुटने मुड़ते चले गये। वो बेहोश होकर नीचे गिर गया।

राघव पलटा और तेज-तेज कदम उठाता धर्मा के पास पहुंचा।

"वो युवक और युवती हाल में नहीं हैं?" धर्मा ने राघव को देखते ही पूछा। उसकी निगाह भी वहां फिर रही थी।

"नहीं। मैंने सब चेहरों को अच्छी तरह देख लिया है।" राघव बोला—"मेरे ख्याल में वे अपने केबिन में होंगे।"

"बो तो साला कह रहा था कि डायनिंग हाल में बैठे हैं।"

"बैठे होंगे, परन्तु बाद में यहां से चले गये होंगे। आओ, उनके केबिन में....।"

"वो देख।" धर्मा बोला—"वो लड़की तो, फोटो वाली ही लग रही है।"

राघव ने उधर देखा।

"वही है।" राघव के होठों से निकला।

"उधर डायनिंग हाल की बालकानी है, वो दोनों उधर से आये हैं।" धर्मा की निगाह उन पर टिक चुकी थी।

रोमा और संजीव डायनिंग हाल में आ पहुंचे थे।

संजीव चालीस बरस का सांवले रंग का, परन्तु आकर्षक व्यक्ति था।

"जोड़ी तो देख!" धर्मा ने कहा—"वो खिलती कली है और वो हरामी सूर्यमुखी का लुढ़कता फूल है!"

"लड़की नशे में है।" राघव बोला।

"थोड़ी गुस्से में भी लग रही है, उसके चेहरे के भाव उखड़े हुए हैं। लगती तो समझदार है, फिर इसने बूढ़े सूर्यमुखी की टांग क्यों पकड़ ली, जबकि दौलतमंद बाप की इकलौती औलाद है।" धर्मा ने मुंह बनाया।

"तूने लड़की का चेहरा देख कर समझ लिया कि वो समझदार है?" राघव शांत स्वर में बोला।

धर्मा ने गहरी सांस लेकर मुंह फेर लिया।

स्टेज पर तेज म्यूजिक बज रहा था और दो लड़कियां धुन पर नाचने में मस्त थीं।

"एक्स्ट्रा नहीं आया अभी।" धर्मा बोला।

"वो आ रहा है।" राघव ने एक तरफ देखते हुए कहा।

धर्मा ने उधर देखा, एक्स्ट्रा इधर ही आ रहा था। उसने काला कोट, काली पेंट और सफेद कमीज पर काली टाई लगा रखी थी। सूट उसे पूरी तरह फिट नज़र आ रहा था।

वो पास पहुंचा।

"हैलो दोस्तों! मैं देरी से तो नहीं पहुंचा?" एक्स्ट्रा मुस्करा कर बोला।

"ठीक है।"

"वो मिले?"

"उधर हैं। वो देख, लड़की ने जीन की पेंट और नीली स्कीवी पहन रखी है। साथ में उसके सूर्यमुखी का लटकता फूल है। वो उस टेबल की तरफ बढ़ रहे हैं। बैठने का इरादा लगता है उनका—लो बैठ गये।"

रोमा और संजीव कुर्सियों पर जा बैठे थे।

"तुमने अभी तक पकड़ा नहीं उन्हें?" एक्स्ट्रा ने पूछा।

"अभी तो दिखे हैं।"

"मैं उनसे मिलकर आता हूं।" एक्स्ट्रा ने राघव से कहा—"लड़की की फोटो दे।"

राघव ने तस्वीर दी जिसे जेब में डालता एक्स्ट्रा आगे बढ़ता चला गया।

"बीस मिनट में हमें जहाज से बाहर होना है।" राघव ने कहा।

"लड़की के साथ—।"

"हां—वो—।"

"तुम दोनों अभी तक यहीं हो?"

राघव और धर्मा पलटे और सकपका उठे।

दो कदमों की दूरी पर वो ही बूढ़ा खड़ा उन्हें खा जाने वाली नज़रों से देख रहा था।

"तूने इसे लम्बा बेहोश नहीं किया था?" धर्मा ने राघव को देखा।

"शायद दबाव कम रह गया हो। उसकी उम्र को देखते हुए मैंने कम दबाव डाला था।" राघव ने शांत स्वर में कहा।

"तुम दोनों जहाज के स्टाफ के नहीं हो सकते।" बूढ़ा गुस्से में ऊंचे स्वर में बोला—"तुमने मुझे बेहोश किया। मैं अभी सिक्योरिटी को बुलाता हूं। तुम लोग चोर हो और जहाज में घुस आये हो।"

उसकी ऊंची आवाज के कारण कइयों की निगाह इस तरफ उठी।

"मामला लम्बा होने जा रहा है।" धर्मा ने कहा।

राघव फौरन बूढ़े के पास पहुंचा।

"तुम होश में आ गये।"

"हां, तुमने तो मेरा काम कर...।"

"लेकिन तुम्हें अभी होश में नहीं आना चाहिये था। एक घंटा तुम्हारे लिय आराम करना जरूरी है। जहाज में R.D.X. है। वो फट गया तो तुम अपनी मौत देख कर, पहले ही मर जाओगे। इसलिए तुम्हें बेहोश किया गया था कि तुम बेहोशी में ही—।"

"क्या?" उसकी आंखें फैल गईं—"R.D.X...जहाज में...।"

"हां, यही वो सरकारी राज था, जो तुम्हें बताने जा रहा था परन्तु तुम...।"

"सरकारी राज—R.D.X.—।"

"तुम हमें नहीं जानते, हम C.B.I. हैं।"

"C.B.I.?"

"इधर आओ, मैं तुम्हें सारी कहानी बताता हूं...।" राघव उसकी बांह पकड़ कर कोने की तरफ बढ़ा।

"यहां कहां ले जा रहे हो मुझे?" साथ घिसटता बूढ़ा कह उठा।

"R.D.X के बारे में बताने के लिए।"

"लेकिन वो सरकारी राज़...।"

"वो भी बताऊंगा।"

"तुम सी.बी.आई. हो?"

"नहीं।"

"तो...तुम।"

"R.D.X हैं हम।"

"R.D.X तुम लोग—ये क्या कह रहे हो—तुम कोई फ्रॉड हो और—।"

राघव, बूढ़े को लेकर फिर उसी कोने में पहुंच गया।

"इस जगह को जानते हो?"

"ये...।" बूढ़ा घबरा कर कह उठा—"इस जगह पर तुमने मुझे बेहोश किया.....।"

"लेकिन तुम्हें होश आ गया। अब की बार तुम्हें घंटा भर से पहले होश नहीं आयेगा।" कहने के साथ ही राघव ने उसके माथे के किनारे पर नपा-तुला घूंसा मारा तो बूढ़ा कराह के साथ नीचे गिरता चला गया।

राघव पलटा कि उसी पल ठिठक गया।

वर्दी में वहां एक आदमी खड़ा उसे देख रहा था।

"हैलो।" राघव फौरन मुस्कुाया।

"वहीं खड़े रहो।" वो व्यक्ति सख्त स्वर में बोला—"तुम जहाज के स्टाफ नहीं लगते, जबकि वर्दी स्टाफ की पहन रखी है।"

"क्या बात करते हो?" राघव हंस कर बोला।

"तुमने इसे बेहोश क्यों किया?"

"बार काऊंटर के पीछे खड़ा ये शराब के नशे में धुत हो चुका था और स्टेज पर पहुंच कर डांस करने की जिद कर रहा था। यहां मौजूद यात्री इसकी हरकत को अच्छा न समझते। जब इसे होश आयेगा तो नशा उतर चुका होगा।"

वो व्यक्ति कठोर अंदाज में मुस्कुराया।

"मुझे जानते हो?"

"तुम्हें—क्यों तुम्हें जानना जरूरी है क्या?"

"हां, क्योंकि मैं जहाज का चीफ ऑफ सिक्योरिटी मंगल सिंह हूं और जहाज के हर कर्मचारी को अच्छी तरह जानता हूं। लेकिन तुम्हें नहीं जानता, क्योंकि तुम स्टाफ के हो ही नहीं। मुझे हैरानी है कि तुम कैसे वर्दी पहन कर यहां घूम रहे हो और बारमैन को बेहोश कर दिया।"

राघव ने गहरी निगाहों से उसे देखा।

वो दृढ़ इरादे वाला सख्तजान व्यक्ति लगता था।

मंगल सिंह ने अपनी रिवॉल्वर निकाल कर राघव की तरफ तान दी।

"कोई शरारत मत करना। चलो, बांई तरफ वाला दरवाजा खोलो।"

"क्यों–मैं तो शरीफ....।"

"मेरी आंखों के सामने तुमने बॉरमैन को बेहोश न किया होता तो मैं यही समझता कि तुम कोई यात्री हो और मजाक में वर्दी पहन कर जहाज पर घूम रहे हो। तब पहले पहल मैं यही सोचता और इस बात की तफतीश करता कि तुम्हारा केबिन कौन-सा है, तुम्हारे साथ कौन-कौन लोग ठहरे हैं और तुम्हारा पासपोर्ट...।"

"पासपोर्ट मैं अब भी दिखा सकता....।" कहते हुए राघव ने जल्दी से जेब की तरफ हाथ बढ़ाया।

"खबरदार!" मंगल सिंह गुर्रा उठा–"गोली मार दूंगा।"

राघव का हाथ रुक गया।

"अपने हाथ जेब से दूर रखो।"

"यार, तुम तो इस तरह बात कर रहे हो, जैसे मैं चोर होऊं!" राघव गहरी सांस लेकर बोला।

"तुम चोर से भी ज्यादा खतरनाक लग रहे हो, क्या निकालने वाले थे जेब से, रिवॉल्वर?" मंगल सिंह कठोर स्वर में बोला।

राघव मुस्कराया।

"तुम कोई बड़े हरामी लगते हो, बाईं तरफ का दरवाजा खोलो।" मंगल सिंह ने रिवॉल्वर वाला हाथ हिलाया।

"बाद में तुम्हें पछताना पड़ेगा।"

"क्यों?"

"मैं जहाज के कप्तान का साला हूं।"

"तुमने मेरे सामने बारमैन को बेहोश किया है, वैसे तुम्हें जहाज के कप्तान का नाम तो पता होगा।"

"मैं जीजे का नाम नहीं लेता।"

"चिन्ता मत कर, तेरे जीजे को ही तेरे पास बुला लूंगा, खोल दरवाजा।"

राघव ने दरवाजा खोला।

"अन्दर चल।"

राघव आगे बढ़ा।

ये गैलरी थी, परन्तु छोटी थी। सामने ही गैलरी का सिरा नज़र आ रहा था।

तभी रिवॉल्वर की नाल राघव की पीठ पर आ लगी।

"आगे चल और दाईं तरफ वाला एक दरवाजा छोड़कर, दूसरा दरवाजा खोलकर उसमें चल।"

राघव आगे बढ़ा।

मंगल सिंह उसकी पीठ से रिवॉल्वर लगाये उसके पीछे था।

उसी पल राघव धड़ाक से छाती के बल नीचे जा गिरा और उसका शरीर वहीं थम गया।

"तुम्हारी कोई चालाकी नहीं चलेगी। खड़े हो जाओ।"

परन्तु राघव के शरीर में कोई हरकत न हुई।

"मैं गोली चलाने जा रहा हूं।" मंगल सिंह ने कठोर स्वर में कहा।

मंगल सिंह कुछ पल वहीं खड़ा उसे नीचे पड़े देखता रहा। दांत भिंच गए थे उसके।

"मैं जानता हूं कि तुम तमाशा कर रहे हो। सीधी तरह खड़े हो जाओ।"

कोई फायदा न हुआ।

राघव का शरीर सीने के बल वैसे ही पड़ा रहा।

तभी वो ही वाला दरवाजा खुला और एक आदमी बाहर निकला। गैलरी के हालात देखते ही चौंका वो।

"सर।" वो फौरन एक तरफ लपका–"आपने इसे गोली क्यों मार दी?"

"तुमने गोली की आवाज सुनी?"

"नो सर।"

"तो फिर कैसे कह दिया कि मैंने गोली मार दी।"

"आपके हाथ में रिवॉल्वर और ये नीचे पड़ा हुआ.....।"

"शटअप! ये कोई हरामी बंदा है, जो जहाज के स्टाफ की वर्दी में जहाज पर घूम रहा है। मेरे सामने उसने रंजीत शर्मा को बेहोश किया और जब मैं इसे पकड़ कर ला रहा था तो ये नीचे गिर गया।" मंगल सिंह ने कठोर स्वर में कहा।

"हार्ट-अटैक आ गया होगा।"

"बकवास मत करो, और इसे सावधानी से सीधा करो। चैक करो।"

"जी।" वो व्यक्ति तुरन्त आगे बढ़ा। उसने नीचे पड़े राघव को सीधा किया और चैक किया।

हाथ-पैर-सीना। सब चैक किया।
"सर, धड़कन ही गायब है। सांसें भी गायब।"
"क्या कह रहे हो?" मंगल सिंह के होठों से निकला।
"सच कह रहा हूं सर। ये तो मरा पड़ा है।"
मंगल सिंह एकाएक परेशान हो गया। उसने रिवॉल्वर जेब में डाली और आगे बढ़कर राघव को चैक किया।
"तुम ठीक कह रहे हो, ये तो मर गया।" मंगल सिंह बोला।
"ये कौन था सर, जहाज के स्टॉफ का तो नहीं लगता।"
"मालूम नहीं कौन था, इसे स्ट्रेचर पर डालो और डाक्टर के पास ले चलो।"
"मैं अभी स्ट्रेचर लेकर आया।" कहने के साथ ही वो दूसरी दिशा में चला गया।
मंगल सिंह कुछ पलों तक राघव को देखता रहा। फिर आगे बढ़ा और दरवाजे से भीतर प्रवेश कर गया, जहां से व्यक्ति बाहर निकला था। उस छोटे से केबिन में एक तरफ सिंगल बैड पड़ा था और बैठने के लिये तीन कुर्सियां थीं।
उसने टेबल पर मौजूद पैकिट में से सिग्रेट निकाल कर सुलगाई और पुनः बाहर आ गया।
बाहर आते ही उसके कदम जड़ हो गये।
राघव वहां नहीं था।
"कहां गया?" मंगल सिंह ने परेशानी से गैलरी के दोनों तरफ देखा।
परन्तु वहां तो राघव की हवा भी नहीं थी।
"तो वो हरामी मरने का नाटक कर रहा था...भाग गया!" मंगल सिंह दांत भींचे कह उठा—"लेकिन जहाज से जायेगा कहां! मैं उसे ढूंढ कर ही रहूंगा। साला, मुझे बेवकूफ बना गया।"
❑❑❑
रोमा उखड़ी पड़ी थी। नशे में उसका चेहरा तमतमा रहा था।
"अब नाराजगी छोड़ दो।" संजीव बोला—"हमें अब पति-पत्नी बन कर रहना है।"
"तुमने मुझे बुरी तरह से कैद कर लिया है।" रोमा की आंखों में आंसू चमक उठे।
"ये क्या कह रही हो।" संजीव ने उसका हाथ थाम लिया—

"मैं तुमसे प्यार करता हूं। तुमसे शादी करना चाहता हूं। प्यार करना गुनाह है क्या, तुम्हारे लिये मैं जान भी दे सकता हूं।"
"पता नहीं, वो कौन-सा मनहूस वक्त था, जब मैंने तुम्हें देखा था।"
"तुम फिर सड़ी हुई बातें करने लगीं।" संजीव ने नाराजगी से कहा—"तुम्हें मेरे साथ प्यार से पेश आना चाहिये। मैं तुम्हें रंगून ले जा रहा हूं। वहां मेरे दोस्त ने हमारे लिये अपना घर तैयार रखा हुआ है। वहां... ।"
"तुम्हें मेरे पापा की दौलत चाहिये ना?"
"क्यों नहीं!"
"मैं पापा से कह देती हूं, वो तुम्हें सारी दौलत... ।"
"बच्चों वाली बातें मत करो। अब तुम बड़ी हो गई हो। मुझे दौलत के साथ तुम भी चाहिये। तुम मुझे अच्छी लगती हो। फिर तुम्हारा बाप मुझे क्यों अपनी दौलत देगा, वो तो फंसा देगा मेरे को।"
रोमा ने आंखों में आये आंसुओं को साफ किया।
"अब हम दोनों का साथ अटूट है। हम एक-दूसरे के लिये ही बने हैं। ये सत्य तुम्हें स्वीकार कर लेना चाहिये।"
"तुम मुझे अच्छे नहीं लगते।"
"कोई बात नहीं, धीरे-धीरे अच्छा लगने लगूंगा। कुत्ता भी रखो तो उससे प्यार हो जाता है, मैं तो इन्सान हूं।" संजीव ने बेहद प्यार से कहा—"धीरे-धीरे तुम मुझे प्यार करने लगोगी। मेरे जैसा प्यार करने वाला तुम्हें कहीं नहीं मिलेगा। पैग लाऊं, एक और पी लो।"
"नहीं।"
"ले लो, हम दोनों ने अभी रात एक साथ बितानी है, पी लोगी तो— ।"
तभी एक्स्ट्रा वहां पहुंचा।
"नमस्कार—गुड ईवनिंग। वक्त रात के 11.30 हुए हैं।"
दोनों ने उसे देखा।
"क्या चाहिए?" संजीव ने उखड़े स्वर में पूछा।
"बड़ी परेशानी में हूं।" एक्स्ट्रा कुर्सी खींच कर बैठता हुआ कह उठा—"मुझे एक्स्ट्रा कहते हैं।"

"क्या?"
"एक्स्ट्रा अजीब नाम है, मैं जानता हूं। लेकिन ये सब मेरे बाप की गलती से हुआ। वो ही मुझे एक्स्ट्रा-एक्स्ट्रा कहकर बुलाया करता है। जब छोटा था तो कुछ समझ में नहीं आया कि एक्स्ट्रा क्या बला है, लेकिन जब बड़ा हो गया तो सब समझ में आ गया कि एक्स्ट्रा क्यों कहता था बापू?"
"क्यों कहता था?"
"तीन बच्चे उसके पहले थे। और बच्चा तो चाहिये नहीं था। फौजी था मेरा बाप। छुट्टियों में घर आया था और जब ड्यूटी ज्वाइन करने जाना था तो मेरी मां को, मतलब कि अपनी बीवी से विदाई प्यार किया रात भर। वो तो चला गया, लेकिन मैं मां के पेट में आ गया। दस महीने बाद जब मेरा बाप फिर छुट्टी पर आया तो मां की गोद में मुझे देखकर बिगड़ गया कि तीन पहले ही थे, चौथे की क्या जरूरत थी। उसके बाद बाप ने मुझे बेटे का दर्जा कम और एक्स्ट्रा का दर्जा ज्यादा दे दिया। सारी उम्र मुझे एक्स्ट्रा-एक्स्ट्रा ही कहता रहा, कोई नाम न रखा मेरा।"
"यहां से उठो, हमें किसी एक्स्ट्रा की जरूरत नहीं है।" संजीव ने उखड़े स्वर में कहा।
"एक समस्या है।"
"तो मुझे क्या?"
"मेरे दोस्त की बहन है ये।" कहते हुए एक्स्ट्रा ने जेब से, राघव की दी रोमा की तस्वीर निकाली—"पक्की खबर है कि ये इसी जहाज पर है, क्या आपने इसे देखा है?"
तस्वीर पर निगाह पड़ते ही संजीव चिहुंक पड़ा।
"क्या हुआ?"
"ये....ये....।"
"हां-हां कहो।" एक्स्ट्रा ने शांत भाव से तस्वीर रोमा को दिखाई—"आपने इसे कहीं देखा है?"
रोमा भी चिहुंक उठी। क्योंकि तस्वीर उसकी थी।
"ये तस्वीर तुम्हें कहां से मिली?" रोमा के होठों से निकला।
संजीव कह उठा—
"यहां से चले जाओ। ये मेरी बीवी है, क्यों रोमा।"

"तस्वीर वाली लड़की का नाम भी रोमा ही है।" एक्स्ट्रा ने कहा। मुस्कुराया, रोमा को देखा।
"जाते हो या नहीं?" संजीव दांत भींचे गुर्रा उठा।
एक्स्ट्रा ने मुस्करा कर संजीव को देखा और बोला—
"नहीं।"
संजीव दांत पीस कर उसे देखने लगा।
एक्स्ट्रा ने तस्वीर वापस जेब में डाली।
"कौन हो तुम और क्या चाहते हो?" संजीव खा जाने वाले स्वर में कह उठा।
"एक्स्ट्रा कहते हैं मुझे।" एक्स्ट्रा ने शांत स्वर में कहा—"मैं तुम्हारा पूरा कच्चा चिट्ठा जानता हूं। तुम पर हत्या, जबरन वसूली और बलात्कार के पन्द्रह-बीस केस से ज्यादा ही चल रहे हैं। इस वक्त तुम जमानत पर छूटे हुए हो और देश से फरार हो रहे हो। तुमने दो शादियां भी कर रखी हैं। एक बीवी मुम्बई में, दूसरी भोपाल में रहती है....।"
"क्या?" रोमा हड़बड़ा कर कह उठी—"ये शादीशुदा है?"
"एक नहीं, दो शादियां कर रखी हैं इसने।" एक्स्ट्रा ने मुस्कुरा कर कहा—"तुम क्या समझीं कि—।"
"क्यों मेरे हाथों मरना चाहते हो?" संजीव ने दांत किटकिटाये।
उसकी बात पर ध्यान न देकर एक्स्ट्रा रोमा से कह उठा—
"मुझे तो समझ नहीं आता कि तुमने इस जड़ से उखड़ते पेड़ में क्या देखा कि इसकी डाल पर बैठ गई।"
"मैं...मैं इसे नहीं चाहती।"
"तभी इसके साथ देश छोड़ कर भाग रही हो?"
"वो...वो इसने मुझे मजबूर किया। ये मुझे ब्लैकमेल करके ले जा रहा है...।"
तभी संजीव ने छिपे-ढके अन्दाज में रिवॉल्वर निकाली और एक्स्ट्रा को दिखाई।
"मैं तुम्हें मार दूंगा।"
"पक्का?"
"चलाऊं गोली?" संजीव का चेहरा दरिन्दगी से भर उठा।
"नहीं, मुझे मत मारना।" एक्स्ट्रा ने गम्भीरता से कहा।
"कौन हो तुम?"

"एक्स्ट्रा (X-TRA)। कितनी बार बताऊं?"

"ये तस्वीर लिए किधर घूम रहे हो?"

"इसके बाप ने भेजा है कि लड़की को वापस ले आऊं, साथ में वे हीरे भी, जो ये ले भागी है।"

संजीव चौंका।

रोमा खुशी से कह उठी—

"पापा ने भेजा है तुम्हें!"

"चुप कर साली।" संजीव गुर्राया, फिर एक्स्ट्रा से बोला— "इसके बाप को कैसे मालूम हुआ कि ये इस जहाज में है?"

"इसके बाप के कहने पर प्राईवेट जासूस इस पर नजर रख रहा था और सारी रिपोर्ट दे रहा था। इसके बाप को शक था कि रोमा किसी गलत रास्ते पर जा रही है, तभी उसने प्राईवेट जासूस की सेवाएं लीं।"

"ओह! तो ये बात है।"

"हां, ये ही बात है।" एक्स्ट्रा ने सिर हिलाया।

"अब तुम क्या चाहते हो?" संजीव ने एक-एक शब्द चबा कर पूछा।

"बताया तो, लड़की और करोड़ों के हीरों को वापस ले जाना है।" एक्स्ट्रा ने कहा।

"मैं तुम्हें गोली मार दूं तो?"

"फंस जाओगे, वैसे भी मैं अकेला नहीं हूं।"

संजीव ने फौरन आस-पास देखा। कोई इधर देखता न दिखा।

"कितने हो?" संजीव ने कठोर स्वर में पूछा।

"तीन।"

"बेवकूफी से भरी कोई हरकत मत करना। मैं तुम्हें कुछ हीरे दे सकता हूं कि तुम मुंह बंद रखो।"

"कुछ हीरे?"

"पचास लाख की कीमत के। इस काम का तो तुम्हें सेठ ने पांच-दस लाख रुपया दिया होगा।"

"करोड़ों के हीरों में से सिर्फ पचास लाख के हीरे?" एक्स्ट्रा मुस्कराया।

"ज्यादा मुंह मत फाड़ो। हराम का माल नहीं है जो सारे दे दूंगा।"

"हराम का माल ही है तुम्हारे लिये। लड़की कहती है कि तुम इसे ब्लैकमेल कर रहे हो।" एक्स्ट्रा बोला।

"अपने काम से मतलब रखो और हीरों के बारे में सोचो जो मैं तुम्हें दूंगा।"

"मुझे लड़की और हीरे, दोनों चीजों की जरूरत है, इसका बाप मेरी वापसी का इन्तजार कर रहा होगा।"

"लगता है तुम मरना ही चाहते हो।"

एक्स्ट्रा ने रिवॉल्वर निकाल कर उसे दिखाई।

"मेरे पास भी है।"

संजीव अचकचाया।

एक्स्ट्रा ने रिवॉल्वर जेब में रखी।

"तुम भी रिवॉल्वर जेब में रख लो। कभी-कभी ये बिना ट्रेगर दबाये ही चल जाती है। यहां गोली चल गई तो जहाज वाले तुम्हें पकड़ कर बंद कर देंगे और आगे जाकर पुलिस के हवाले कर देंगे।"

संजीव ने बेचैनी भरी निगाहों से एक्स्ट्रा को देखा।

तभी एक्स्ट्रा ने अपनी कुर्सी पीछे की कि लड़खड़ा कर कुर्सी सहित पीछे जा गिरा।

"क्या हुआ तुम्हें?" रोमा के होठों से निकला।

"चुपचाप बैठी रह साली!" संजीव गुर्राया, हाथ में दबी रिवॉल्वर उसने जेब में डाल ली।

एक्स्ट्रा उठने की चेष्टा करने लगा।

तभी धर्मा उसके पास आ पहुंचा।

"ओह, आप तो गिर गये, कोई परेशानी है सर।" धर्मा, एक्स्ट्रा को उठाता हुआ कह उठा।

"सब ठीक है। लेकिन ये आदमी मुझे और मेरी पत्नी को परेशान कर रहा है।" एक्स्ट्रा ने संजीव की तरफ इशारा किया।

"तुम्हारी पत्नी?" संजीव चौंका।

"ऑफिसर, ये मेरी पत्नी है।" एक्स्ट्रा ने रोमा की तरफ इशारा किया—"हम डिनर करने वाले थे कि असभ्य लोगों की तरह ये हमारे साथ की कुर्सी पर आ बैठा और अब हमें परेशान कर रहा है।"

"ये झूठ बोलता है।" संजीव कह उठा—"ये मेरी पत्नी है।"

"ये कोई समस्या नहीं।" धर्मा अपने शरीर पर पड़े, जहाज

के कर्मचारियों के कपड़ों की लाज़ रखता कह उठा—"अभी सब कुछ स्पष्ट हो जायेगा।" फिर वो रोमा से कह उठा—"क्यों मैडम, इनमें से कौन आपका पति है?"

रोमा के होंठ हिले, परन्तु शब्द कुछ न निकला।

"इसके पास रिवॉल्वर है।" एक्स्ट्रा बोला—"इसने रिवॉल्वर से मुझे और मेरी पत्नी को डराया है। तभी ये बोल नहीं रही।"

"बकवास करता है ये—।" संजीव भड़का—"रिवॉल्वर इसकी जेब में है।"

"ये देखो।" एक्स्ट्रा जेब से रोमा की तस्वीर निकालता कह उठा—"देखो आफिसर, मैं अपनी पत्नी की तस्वीर हमेशा अपनी जेब में रखता हूं। मिला लो सूरत, ये मेरी पत्नी है कि नहीं।"

धर्मा ने तस्वीर देखी। रोमा का चेहरा देखा। फिर बोला—

"आप ठीक कह रहे हैं, ये आप ही की पत्नी है।"

"ये क्या तमाशा है?" संजीव भड़का—"मेरी पत्नी की तस्वीर इस आदमी ने रखी हुई है और आप कह रहे हैं ये इसकी पत्नी है। आप ज़रा होश में रहकर बात कीजिये। आपके कहने से ये इसकी पत्नी नहीं बन जायेगी।"

"आप भी ठीक कहते हैं।" धर्मा ने सिर हिलाया—"मामला गम्भीर होता जा रहा है। मैडम, आप मेरे साथ चलिये।"

"कहां?" रोमा के होठों से निकला।

"आपके केबिन में वहीं चल कर बात करते हैं।" धर्मा ने शिष्ट स्वर में कहा।

रोमा उठ खड़ी हुई।

"कौन से केबिन में ठहरी हैं आप?"

रोमा ने बताया।

"आइये।"

रोमा और धर्मा आगे बढ़ गये।

संजीव और एक्स्ट्रा भी उठे।

"मैं तुम्हें छोड़ूंगा नहीं।" संजीव गुर्रा उठा।

"अपने बारे में सोचो। तुम जमानत पर हो और देश छोड़ कर भाग रहे हो। कैसे बच पाओगे?" एक्स्ट्रा ने कहा।

संजीव गुर्रा कर रह गया।

फिर दोनों एक तरफ बढ़ गये।

"क्यों झगड़ा कर रहे हो?" संजीव बोला—"मुझसे दोस्ती कर लो।"

"मैं यही तो कह रहा हूं। दोस्ती कर लो। लड़की और हीरे मेरे हवाले करके छुट्टी पा लो।"

"मैं तुम्हें गोली मार कर समन्दर में फैंक दूंगा।"

"रिवॉल्वर मेरे पास भी है।"

"पचास लाख के हीरे कम नहीं होते।"

"रोमा के बाप ने मुझे लड़की के साथ हीरे.....।"

"लड़की मेरे साथ अपनी मर्जी से जा रही है, तुम जो करना चाहो कर लो।" संजीव भिन्नाया।

"उसने मेरे सामने अभी कहा है कि तुमने उसे ब्लैकमेल करके मजबूर किया है।"

"वो उसने यूं ही कह दिया था। अब नहीं कहेगी।" संजीव ने दांत भींचकर कहा।

"देख लेना, वो फिर यही बात कहेगी। जहाज वालों को नहीं पता कि तुम जमानत पर हो और देश से फरार हो रहे हो।"

"तो तुम उन्हें बता दोगे?" संजीव ठिठका। उसका हाथ जेब में गया।

एक्स्ट्रा भी ठिठका।

दोनों की नज़रें मिलीं।

"तुम बात-बात पर गर्म हो जाते हो। मेरे ख्याल में कई लोग अब तक तुम्हारी ठुकाई कर चुके होंगे।"

"मैंने पूछा है कि तुम ये बात जहाज वालों को बताओगे कि मैं देश से फरार हो रहा हूं?" उसने दांत भींचकर पूछा।

"चिन्ता मत करो, ये बात नहीं बताऊंगा।"

"बताया तो मां कसम, तुम्हें उसी वक्त गोली मार दूंगा।" संजीव ने गुस्से से स्पष्ट शब्दों में धमकाया।

दोनों पुनः आगे बढ़ गये।

"तुम इतने गुस्से वाले हो कि समझ में नहीं आता कि तुमने लड़की कैसे पटा ली!" एक्स्ट्रा ने गहरी सांस ली।

"जब मैं लड़की पटाता हूं, तब गुस्से वाला नहीं होता।"

"क्या खूबी है। रोमा को पहली बार कैसे पटाया था?"

"तुम क्यों जानना चाहते हो?"

"तुम्हारा आईडिया मैं भी आजमाऊंगा, इसीलिए पूछ रहा हूं।"
"लगता है तुमने आज तक कोई लड़की नहीं पटाई?"
"फालतू बातों के लिये वक्त नहीं है। काम करो, नोट बनाओ और आगे बढ़ो। अपनी मेहनत के नोट। तेरी तरह नहीं कि लड़की पटा ली और उसके बाप के माल को अपना समझने लगे।"
"तुम औरतों की तरह बोलते बहुत हो।"
"एक्स्ट्रा (X-TRA) हूं। फालतू के सब काम करता हूं। तेरे जैसों को उंगली पर बिठाकर नचाता हूं।"
"किस पर?"
"उंगली पर।"
"उंगली पर कैसे बिठा लेते हो?"
"जब बैठेगा तो पता चल जायेगा। और वो वक्त अब ज्यादा दूर भी नहीं।" एक्स्ट्रा ने गहरी सांस लेकर कहा।
"पागलों की तरह पता नहीं क्या-क्या बोलता रहता है।" संजीव गुस्से भरे स्वर में बड़बड़ा उठा।
❑❑❑
धर्मा, रोमा की कलाई पकड़े आगे बढ़ा तो कह उठा—
"अब बोलो।"
"क्या?"
"उनमें से कौन तुम्हारा पति है?"
रोमा ने कुछ नहीं कहा। चलते-चलते होंठ भींच लिए।
"घबराओ मत। इस वक्त तुम सुरक्षित हाथों में हो। तुम्हें कुछ नहीं होगा।" धर्मा ने कहा।
"म-मैंने मुंह खोला तो मैं बर्बाद हो जाऊंगी। वो मुझे कहीं का नहीं छोड़ेगा।"
"तुम किसी बात की फिक्र मत करो। जो कहना है कह दो, मैं सब सम्भाल लूंगा।"
"दोनों में से कोई मेरा पति नहीं है।" रोमा ने हिम्मत करके कहा।
"मैं जानता हूं।"
"तुम जानते हो?" रोमा अचकचा कर बोली।
"हां, हमें तुम्हारे पापा ने भेजा है, तुम्हें ले आने के लिए।"
"पापा ने ओह, तुम लोग तीन हो?"

"हां। R.D.X.। X से तुम मिल चुकी हो। D से मिल रही हो, R इधर-उधर होगा।"
"हां, वो भी कह रहा था कि हम तीन हैं, लेकिन तुम जहाज के स्टाफ की वर्दी में...।"
"इस चक्कर में न पड़ो। तुम जहाज पर क्या कर रही हो, सच-सच मुझे बताओ।"
दोनों तेजी से आगे बढ़ते जा रहे थे।
"महीना भर पहले।" रोमा थर्राये स्वर में कह उठी—"मैंने संजीव के साथ बैड पर कुछ वक्त बिताया है। उस वक्त की उसने सी.डी. बना ली और मुझे ब्लैकमेल करने लगा। मैं नहीं चाहती थी कि पापा को इस बारे में पता चले, इसलिए उसकी बात मानती रही। अब वो मुझे लेकर रंगून जा रहा है। मैं उसकी बात नहीं मानूंगी तो वो मुझे बदनाम कर देगा।"
"तुम खामख्वाह ही परेशान हो रही हो, तुम्हें सारी बात अपने पापा को बता देनी चाहिये थी।"
"शर्म और डर की वजह से मेरे मुंह से कुछ न निकला।"
"तुम अपने साथ अपने पापा के आठ-दस करोड़ के हीरे भी लाई हो?"
"हां। उसने मुझे धमकी दी थी कि घर से आते वक्त करोड़ों की दौलत लेकर आऊं। और तो मुझे कुछ सूझा नहीं, घबराहट में मैं उन हीरों का ब्रीफकेस ले आई, जो उसी दिन पापा कहीं से लाये थे।"
"वो सी.डी. अभी उसके पास है जिसमें तुम्हारी तस्वीरें हैं?"
"हां।"
"जानती हो वो कहां है?"
"हां।"
"चिन्ता मत करो, मैं सब ठीक कर दूंगा। R.D.X. तुम्हारे साथ है तो तुम्हें अब किसी से भी नहीं डरना है।"
रीता कुछ कह नहीं सकी।
कुछ ही देर में वे दोनों एक केबिन में पहुंचे। जहां डबल बैड बिछा हुआ था, दो कुर्सियां थीं बैठने के लिए और अटैच बाथरूम था। चलने के लिए जरूरत के मुताबिक जगह थी।
"वो हीरों का ब्रीफकेस कहां है?"
"वो हीरे तो संजीव ने एक बड़ी सी थैली...।"

"थैली निकालो।"

"क्यों?" रोमा ने धर्मा से पूछा।

"तुम्हारे साथ-साथ हीरों को भी तो चलना है। R.D.X. कभी आधा काम नहीं करते। साथ ही वो सी.डी. निकालो, जिसमें तुम्हारी हरकतें दर्ज हैं। तुम्हें, संजीव नाम की मुसीबत से अब हमेशा के लिय मुक्ति मिलने वाली है।"

"लेकिन हम जायेंगे कैसे? जहाज तो पानी में दौड़...।"

"उसकी तुम फिक्र न करो।" धर्मा बोला, "जो कहा है, वो जल्दी से करो।"

रोमा जल्दी से आगे बढ़ी और एक तरफ पड़े सूटकेसों को खोलने लगी। वे बंद थे तो गद्दे के नीचे से चाबियां निकाल कर उन्हें खोला और सबसे पहले सूटकेस के भीतर, नीचे से, एक थैली निकाली। काले रंग की उस थैली में हीरे भरे हुए थे। धर्मा ने थैली नहीं खोली, बाहर से ही उन्हें टटोल कर देखा और सन्तुष्ट हो गया।

रोमा पुनः खुले सूटकेसों में व्यस्त हो गई थी।

तभी दरवाजा खुला और संजीव के साथ एक्स्ट्रा ने भीतर प्रवेश किया।

एक्स्ट्रा के हाथों में हीरों की थैली देखकर संजीव चौंका।

रोमा को सूटकेस खोले पाकर वो चीखा।

"ए....ये क्या हो रहा है?"

रोमा घबरा कर फौरन पलटी।

एक्स्ट्रा ने उसी पल रिवॉल्वर निकालकर उस पर तान दी।

"हिलना मत।" एक्स्ट्रा ने कठोर स्वर में कहा—"धर्मा, इसकी रिवॉल्वर निकालो।"

धर्मा ने तुरन्त उसकी तलाशी लेनी शुरू कर दी।

"ये क्या कर रहे हो? क्यों मेरी रिवॉल्वर निकाल रहे हो? मैं...मैं तुम्हें करोड़ों के हीरे दूंगा।"

धर्मा ने संजीव की रिवॉल्वर निकाल कर हाथ में ले ली।

"तुम अपना काम करो।" एक्स्ट्रा ने रोमा से कहा।

"यहां नहीं है सी.डी.।" रोमा कह उठी—"इसने कहीं छिपा रखी है।"

एक्स्ट्रा आगे बढ़ा और संजीव के सिर पर रिवॉल्वर की नाल लगा दी।

"ग-गोली मत मारना।" संजीव चीखा।

"वो सी.डी. किधर है, जिसके दम पर तुम इस लड़की को ब्लैकमेल कर रहे हो?"

"क्यों मेरे पीछे पड़े हो?" संजीव गुस्से से तड़प उठा।

"गोली मारूं?"

"तुम—तुम जहाज के कर्मचारी होकर, इससे मिल गये.... मेरा साथ दो, मैं तुम्हें हीरे...।"

"उल्लू के पट्ठे! ये कपड़े मेरे नहीं हैं।" एक्स्ट्रा ने होंठ भींच कर कहा—"हम तेरे लिए ही जहाज पर आये हैं।"

"मेरे लिये?"

"इस लड़की को इसके बाप के पास ले जाना है।"

"तुम...।" संजीव ने कुछ कहना चाहा।

"गोली मार दे इसे।" बोला धर्मा।

"ठीक है।"

"नहीं, मैं अभी वो सी.डी. देता हूं।" संजीव घबरा कर चीखा।

"निकाल।"

"मुझे गोली तो नहीं मारोगे?"

"नहीं मारेंगे, सी.डी. निकाल।"

संजीव ने छिपा रखी सी.डी. निकाल कर तुरन्त एक्स्ट्रा को थमा दी।

"पक्का यही है?"

"ह-हां।"

"ये न भी हो तो तब भी कोई फर्क नहीं पड़ता।" धर्मा ने कड़वे स्वर में कहा।

"क्या मतलब?" संजीव ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"कुछ नहीं, तू अब ठण्डा रह।"

"तुम—तुम लोग रोमा को लेने आये हो?"

"हां।"

"तो ले जाओ, ये हीरे क्यों ले जा रहे हो। ये मुझे दे दो। पचास लाख के हीरे तुम रख लो...।"

उसी पल पास खड़े धर्मा ने उसके पेट में जोरों का घूंसा मारा।

संजीव, पेट थामे कराह कर दोहरा हो गया।

धर्मा ने उसकी पीठ पर जोरदार ठोकर मारी तो, वो नीचे जा गिरा।

"अब बोलना मत।"

"तुम दो-दो मिलकर मुझे मार रहे हो, अकेले-अकेले आओ तो...।"

धर्मा ने उसकी पीठ पर जूता रखा और उस पर खड़ा हो गया।

"क्यों मार रहे हो?" वो चीखा।

धर्मा ने एक्स्ट्रा को देखा।

"राघव कहां है?"

"तेरे साथ था।"

"पता नहीं कहां चला गया।"

"इस तरह वो कहीं नहीं जा सकता। किसी पंगे में फंस गया होगा।"

"यहां पर कैसा पंगा हो सकता है?"

"क्या पता!" एक्स्ट्रा ने उसकी तरफ हीरों की थैली बढ़ाई, बोला—"ये सम्भाल, मैं काम खत्म करके आता हूं।" फिर वो नीचे पड़े संजीव से बोला—"उठ, चल मेरे साथ।"

"अब कहां चलना है? सारा काम तो तुम लोगों ने खराब कर दिया।" वो गुस्से से बोला।

"तेरा काम तो खत्म हो गया, मेरा नहीं हुआ।" एक्स्ट्रा उसकी कमीज का कॉलर पकड़ कर उसे खड़ा करता कह उठा—"तू ज़हर का पौधा है और ज़हर के पौधे की मैं ऐसी हालत कर देता हूं कि वो दोबारा न पनप सके।"

एक्स्ट्रा, संजीव के साथ बाहर निकल गया।

रोमा ने धर्मा को देखा।

"आराम से बैठो। अब तुम्हें कोई डर नहीं।" धर्मा मुस्कुराया—"कुछ ही देर में हम वापस चलेंगे।"

"वापस—कैसे, जहाज तो रंगून की तरफ बढ़ रहा है।" रोमा कह उठी।

"उससे हमें कोई फर्क नहीं पड़ता।"

❑❑❑

एक्स्ट्रा, संजीव के साथ सबसे नीचे की मंजिल पर पहुंचा।

"तुम मुझे कहां ले जा रहे हो?" परेशान संजीव कह उठा।

"बस पहुंच गये।"

वे दोनों वहां के सुनसान हिस्से पर पहुंच कर रुके।

एक्स्ट्रा ने रिवॉल्वर निकाली और संजीव पर तान दी।

"मुझे गोली मत मारना। गोली से मुझे बहुत डर लगता है।" संजीव घबरा कर चीखा।

"मौत से डर नहीं लगता?" एक्स्ट्रा ने कड़वे स्वर में कहा।

"वो ही तो—मरने से डर लगता है।"

"ठीक है, मैं गोली नहीं मारता, ऊपर चढ़ो और जहाज से नीचे कूद जाओ।"

"तुम्हारा मतलब है कि मैं समन्दर में कूद जाऊं?"

"हां।"

"नहीं। यहां से किनारा मीलों दूर है। मुझे ठीक से तैरना भी नहीं आता। मैं मर जाऊंगा।"

"तो फिर गोली से मर।"

"नहीं—गोली मत मारना—मैं कूदता हूं।" घबराहट में संजीव पसीने-पसीने हो रहा था। वो जहाज की मुंडेर पर चढ़ा और पीछे खड़े एक्स्ट्रा को देख कर कह उठा—"मेरी जान बख्श दो...मैं...।"

एक्स्ट्रा ने रिवॉल्वर वाला हाथ उसकी तरफ किया तो उसी पल संजीव ने छलांग लगा दी।

"गये रंगून बाबा!" एक्स्ट्रा बड़बड़ाया और रिवॉल्वर जेब में डालते हुए वापस चल पड़ा।

❑❑❑

राघव जहाज की एक गैलरी में तेजी से दौड़ रहा था। उसके पीछे मंगल सिंह और दो अन्य व्यक्ति थे।

राघव देर तक मंगल सिंह की नजरों से बचा रहा था। इस वक्त राघव अंधेरे में खड़ा था कि तभी मंगल सिंह उसे ढूंढता हुआ उस तरफ आ निकला और उस पर नज़र पड़ गई तो राघव पुनः भागा।

"पकड़ो इसे...छोड़ना नहीं।" मंगल सिंह चीखा।

उसके बाद से राघव जहाज में दौड़ता ही जा रहा था, ज़िधर जगह मिली। रास्ते में कई लोग मिले जो कि हैरानी से उनकी भाग-दौड़ देख रहे थे। एकाएक अंधेरे से भरी जगह आई तो राघव वहीं दुबक गया।

पीछे से भागते मंगल सिंह और उसके दोनों साथी पास ही में आ रुके। वो हांफ रहे थे।

"कहां गया?" मंगल सिंह होंठ भींच कर बोला।

"यहां तक आते तो मैंने देखा था।" दूसरे कहा।

"तो अचानक किधर गायब हो सकता है?"

"उधर गया होगा।"

तभी सामने से कोई आता दिखा।

जबकि राघव पास ही अंधेरे में सांसें रोके दुबका पड़ा था।

"सुनिये।" मंगल सिंह ने पूछा—"आपने किसी को भागकर उस तरफ जाते देखा है?"

"नहीं।"

राघव चौंका, क्योंकि ये आवाज एक्स्ट्रा की थी।

"आप किसे ढूंढ रहे हैं?" पास पहुंचकर एक्स्ट्रा ठिठकता हुआ बोला।

"बदमाश है वो।" मंगल सिंह नज़रें दौड़ाता कह उठा—"स्टॉफ की यूनिफार्म में जहाज पर घूम रहा है।"

"यूनीफार्म में?" एक्स्ट्रा चौंका।

"हां।"

"वो तो इधर ही गया है, जिधर से मैं आ रहा हूं।"

"अभी तो तुमने कहा कि उधर कोई नहीं...।"

"यूनिफार्म पहने एक आदमी उधर दौड़ता गया है। मुझे क्या पता कि तुम स्टॉफ के बंदे को पूछ रहे हो।"

"जल्दी आओ।" मंगल सिंह उधर दौड़ा।

बाकी दोनों भी दौड़ लिए।

एक्स्ट्रा ने आस-पास देखा और ऊंचे स्वर में बोला—

"राघव।"

"धीरे बोल, तेरे पास ही हूं मैं।" कहते हुए राघव अंधेरे से बाहर निकल आया।

"क्या हुआ?" एक्स्ट्रा ने पूछा।

"खामखाह ही साला पीछे पड़ गया। जहाज का सिक्योरिटी चीफ था ये। काम का क्या हुआ?"

"हो गया। उस साले हरामी को समन्दर में फैंक कर आ रहा हूं।"

"लड़की?"

"धर्मा के पास है।"

"हीरे?"

"वो भी।"

"तो अब हमें निकल चलना चाहिये।" राघव ने कहा—"दोनों किधर हैं?"

"केबिन में—आ।"

दोनों तेजी से आगे बढ़ गये।

वे चारों नीचे की मंजिल पर, जहाज की मुंडेर के पास खड़े थे।

जहाज तेजी से दौड़ा जा रहा था।

धर्मा ने हीरों की थैली अपनी कमर से बांध ली थी।

"आखिर तुम लोग कर क्या रहे हो?" रोमा परेशान सी कह उठी।

"समन्दर में कूदना है।"

"समन्दर में?" रोमा चौंकी—"मुझे तैरना नहीं आता।"

"कोई बात नहीं, तुम्हें मैं संभाल लूंगा।" एक्स्ट्रा ने कहा।

"नहीं, मैं समन्दर में नहीं छलांग लगाऊंगी।" रोमा पीछे हटती कह उठी।

"जल्दी करो, हमारे पास वक्त नहीं है।" राघव बोला।

"नहीं....मैं....।" रोमा ने कहना चाहा।

तभी एक्स्ट्रा ने रोमा को थामा और बांहों में, ऊपर उठाते हुए, समन्दर में उछाल दिया।

चीख गूंजी रोमा की और लुप्त हो गई।

इसी पल एक्स्ट्रा रेलिंग पर चढ़ा और समन्दर में छलांग लगा दी।

"चल धर्मा।"

दो पलों के पश्चात धर्मा भी समन्दर में छलांग लगा चुका था।

राघव रेलिंग पर चढ़ने लगा कि तभी पीछे से आवाज आई—

"वो रहा, पकड़ो!"

ये मंगल सिंह की आवाज थी।

राघव सकपकाया और फुर्ती से रेलिंग पर चढ़ते हुए समन्दर में छलांग लगा दी।

पीछे से उनके चिल्लाने की आवाजें पड़ीं जो कि तुरन्त ही सुनाई देनी बंद हो गईं।

❑❑❑

चारों तरफ अंधेरे में डूबा समन्दर ही नज़र आ रहा था। तट यहां से कई मीलों दूर था। दूर कहीं एक जहाज समन्दर की छाती पर जाता दिखा और उसके भोंपू की आवाज सुनाई दी।

एक्स्ट्रा ने रोमा को पीठ पर लाद रखा था और धीरे-धीरे आगे तैर रहा था।

"मैं समन्दर में डूब जाऊंगी।" रोमा रोते हुए कह उठी।

"डरो मत, मैं तुम्हें कुछ न होने दूंगा।"

"मैं गिर जाऊंगी।" वो रो रही थी।

"मुझे कस के पकड़े रहो। तुम नहीं गिरोगी। खामखाह डरो मत।"

"नहीं, मैं मर जाऊंगी।" रोमा सच में डरी हुई थी।

जहाज से छलांग मारे उन्हें बीस-पच्चीस मिनट हो चुके थे।

तभी पीछे से तैर कर आता राघव पास पहुंचा।

"सब ठीक है?" वो चिल्लाया।

"हां।" एक्स्ट्रा ने जवाब दिया—"धर्मा कहां है?"

"पीछे।"

"डिसूजा कहां मर गया।" एक्स्ट्रा ने ऊंची आवाज में कहा— "उसे आ जाना चाहिये था।"

"वो रास्ता भटक गया होगा।"

"साले को मैं गोली मार दूंगा।" एक्स्ट्रा ने गुस्से से कहा।

"आं—मैं गिर जाऊंगी।" रोमा एकाएक चीख कर बोली।

"नहीं गिरोगी। मुझे पकड़े रहो और बार-बार चिल्ला कर मुझे परेशान मत करो।"

"इसे मैं अपनी पीठ पर डाल लेता हूं।" राघव बोला।

"क्यों—ये तेरी पीठ पर नहीं चीखेगी? पागल है, खामखाह चीखे जा रही है। डर रही है।"

तभी उनके कानों में हल्की सी पट-पट की आवाज पड़ी।

"डिसूजा—वो आ गया!"

"शायद!" एक्स्ट्रा बोला—"मुझे लगा कि मैंने बोट की आवाज सुनी है।"

दोनों ने नज़रें दौड़ाईं।

अंधेरे के सिवाय कुछ भी नज़र नहीं आया।

अब आवाज भी नहीं आ रही थी।

"शायद हमें भ्रम हुआ था।" एक्स्ट्रा बोला।

"मुझे भ्रम नहीं हुआ। डिसूजा इधर ही आ रहा है। तेज हवा बोट के इंजन की आवाज को अपने साथ इधर ले आई होगी।"

कुछ पल उनके बीच चुप्पी रही।

उन्हें फिर से बोट के इंजन की मध्यम सी आवाज सुनाई देने लगी। इस बार आवाज बराबर आ रही थी।

"डिसूजा ही है।" एक्स्ट्रा बोला।

"बंदा ठीक है। ठीक काम किया हरामी ने।"

मिनट भर बाद ही बोट उनके पास आ पहुंची।

"डिसूजा—इधर!" राघव चिल्लाया।

बोट पास आ पहुंची।

"कैसे हो दोस्तो?" डिसूजा खुशी से चिल्लाया।

"दोस्तो के बुरे हाल हो रहे हैं।" एक्स्ट्रा बोट का किनारा थामते हुए बोला—"इस लड़की को बोट में ले।"

फौरन ही रोमा बोट पर थी।

फिर राघव और एक्स्ट्रा।

तब तक धर्मा भी पास आ पहुंचा था। वो भी बोट में आ पहुंचा।

"ये कौन है?" राघव की निगाह बोट में सिकुड़े से पड़े किसी व्यक्ति पर पड़ी।

"ये भी इस जहाज से गिरा था, इसे मैंने बोट में ले लिया।"

"क्या?" एक्स्ट्रा चीखा—"ये उल्लू का पट्ठा वो ही कमीना होगा!"

राघव ने तुरन्त आगे बढ़कर उसे उठाया।

"प्लीज, मुझे मत समन्दर में फैंकना।" वो संजीव ही था—"मुझे माफ कर दो—मैं—।"

"राघव—फैंक साले को।" धर्मा चीखा।

अगले ही पल राघव ने संजीव को जोरों का धक्का दिया।
'छपाक'। वो समन्दर में जा गिरा।
डिसूजा ने बोट घुमाई और वापस दौड़ा दी।
"कौन था ये?" डिसूजा ने पूछा।
"हरामी था। तू बोट चलाने पे ध्यान लगा।" धर्मा ने कहा।
"उतरना कहां है?"
"जिधर से सफर शुरू किया था, वहीं पर उतरना है।"
रोमा एक तरफ पड़ी, गहरी-गहरी सांसें ले रही थी।
"निपट गया काम।"
"तुम!" रोमा गहरी-गहरी सांसें लेते कह उठी—"आखिर हो कौन?"
"R.D.X.। तुम्हें बता चुके हैं।" धर्मा बोला—"जो हमसे पंगा लेता है, उसके लिये बारूद हैं।"
बोट तेजी से वापसी का रास्ता तय कर रही थी।

❑❑❑

रात के साढ़े तीन बज रहे थे।
तट के उसी हिस्से पर R.D.X. रोमा के साथ मौजूद थे। सामने चन्द्रमा की रोशनी में समन्दर चमक रहा था। ठण्डी हवा उनके शरीरों से टकरा रही थी। अभी-अभी वो सब वहां पहुंचे थे। उनके उतरने के बाद, डिसूजा बोला—
"मेरा काम खत्म।"
"तू जा—मजे कर।" राघव ने कहा।
"फिर मेरी जरूरत पड़े तो बताना।" डिसूजा ने कहा और बोट स्टार्ट करके वहां से चला गया।
"इसके बाप को फोन लगा।" बोला धर्मा।
राघव ने जेब से फोन निकाला और नम्बर मिलाने लगा।
डिसूजा से अपने फोन वापस ले लिए थे तीनों ने।
"हैलो!" नम्बर मिलते ही उधर से आवाज आई। आवाज में नशा भरा हुआ था।
धर्मा समझ गया कि वो बैठ कर पीने में लगा हुआ है।
"तू सोया नहीं अभी तक।"
"मैं नींद में था, तुम्हारा फोन बजा तो मैं उठा।" वो जल्दी से बोला।

धर्मा मुस्कराया। समझ गया कि वो झूठ बोल रहा है।
"तेरा काम हो गया है। रोमा हमारे पास है और हम तट पर मौजूद हैं।"
"ओह, भगवान तुम तीनों का भला करे।"
"तेरी लड़की का कोई कसूर नहीं, वो हरामजादा इसे ब्लैकमेल कर रहा था।"
"मुझे मेरी बेटी मिल गई, और कुछ नहीं चाहिये मुझे।"
"हीरे नहीं चाहिये, जो रोमा घर से ले भागी थी?" धर्मा हंसा।
"हीरे, वो भी ले आये हो?"
"हां। वो तुम्हारे हैं। हम अपनी कीमत, वो ही लेंगे जो तय हुई थी। नोटों में हम बेईमानी नहीं करते। बाकी सब चलता है।"
"तुम्हारे पैसे तैयार रखे हैं मैंने। अभी आ रहे हो ना रोमा को लेकर?"
"एक घंटे में पहुंचते हैं।"
"तुम तीनों ने मेरी इज्जत बचा ली, वरना मैं कहीं का न रहता। भगवान तुम्हें सुखी रखे और—"
"तेरे से नोट मिलते ही हम सुखी हो जायेंगे।" धर्मा ने कहा और फोन बंद कर दिया—"यहां से चलो, कार किस तरफ खड़ी की थी हमने?"
"उधर।"

❑❑❑

लगातार बजने वाली फोन की बेल से तीनों की आंख खुली।
दोपहर के दो बज रहे थे।
"साला रतनचंद होगा।" धर्मा बोला।
राघव ने फोन को हाथ मारकर ढूंढा। आंखें बन्द ही थीं।
"हैलो!" उसने फोन कान से लगाया।
"तुम तीनों अभी तक आये नहीं?" रतनचंद कालिया की आवाज कानों में पड़ी।
"सुबह हो गई?" राघव बंद आंखों से ही बोला।
"सुबह! अब तो दोपहर भी जा रही है। सो रहे हो अभी तक?" रतनचंद का नाराजगी भरा स्वर कानों में पड़ा।
"हां।"

"तुम्हें मेरी कोई चिन्ता नहीं, तुमने सुबह आ जाने का वादा किया था।"

"सुबह नहीं—आज।"

"एक ही बात है।"

"फर्क है रतनचंद। घर पर ही है ना तू?"

"हां।"

"बाहर निकलने की गलती मत करना। कुछ हुआ तो नहीं अभी तक?"

"तो क्या तुम कुछ होने का इंतजार कर रहे हो? ये बताओ कि कब तक आ रहे हो?"

"दो घंटे तक।" राघव ने कहा और फोन बंद कर दिया—"उठो दोस्तो। चलना है।"

"नींद आ रही है।" धर्मा बंद आंखों में ही बोला।

"एक्स्ट्रा को भी उठा।"

एक्स्ट्रा पुनः गहरी नींद में डूब गया था।

धर्मा ने उसे हिलाया।

"रतनचंद से कह दे, कल आयेंगे।" एक्स्ट्रा कह उठा।

"तब तक वो मर गया तो?"

"कंधा दे देंगे।"

"ऐसा मत कह एक्स्ट्रा।" धर्मा ने शांत स्वर में कहा—"रतनचंद अब हमारी पार्टी है और हमारी पार्टी का कोई बाल भी बांका कर दे तो लानत है हम पर! देखते हैं साला कौन रतनचंद को मारना चाहता है। पेड़ पर उलटा लटका कर ठोकूंगा।"

"उसने तेरे को लटका दिया तो?" एक्स्ट्रा आंखें खोलते कह उठा।

"आज तक तो ऐसा हुआ नहीं—और आगे भी नहीं होगा।"

"क्यों नहीं होगा?"

"तुम दोनों साथ हो मेरे। कोई हमारी तरफ टेढ़ी नज़र करके तो देखे....। मरेगा।"

राघव उठते हुए कह उठा—

"नहा-धोकर जल्दी से चल। पहले पता तो करें कि मामला क्या है!"

❑❑❑

रतनचंद कालिया ने सुन्दर से पूछा—

"बंगले के बाहर कोई संदिग्ध नज़र आ रहा है?"

"नहीं सर!"

"हमारे आदमी ठीक तरह से खड़े हैं।"

"निश्चित रहिये सर। मेरे होते हुए आपको कोई खतरा नहीं है।" सुन्दर ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

"कल जिस तरह से मेरा निशाना लिया गया था, उससे ये स्पष्ट हो चुका है कि दुश्मन चालाक है।" रतनचंद ने कहा।

"एक बार वो ऐसा करने में कामयाब हो गये, अब नहीं हो सकेंगे।" सुन्दर ने कहा।

"मौत के खेल में, कभी भी, कुछ भी हो सकता है। R.D.X. से बात हुई अभी।"

"वे आ रहे हैं?"

"हां, दो घंटे तक।"

"आपने सोचा नहीं कि कौन इस तरह अचानक आपकी जान के पीछे पड़ सकता है?"

"उसके बारे में सोचकर पता नहीं लगाया जा सकता। वो कोई भी हो सकता है।" रतनचंद कालिया ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मेरे ख्याल में R.D.X. ये मामला संभाल लेंगे।"

"हां, जगह बदलने को कहकर उन्होंने ही मेरी जान बचाई है। वो सच में समझदार हैं और तीनों में तालमेल बहुत अच्छा है। मुझे इस बात का पूरा भरोसा है कि, वे मुझे कुछ न होने देंगे।"

❑❑❑

"दोपहर हो चुकी है और अभी तक सोहनलाल ने कोई खबर नहीं दी।" जगमोहन ने कहा।

"खबर नहीं होगी।"

"उससे बात करके देखता हूं।" जगमोहन ने कहा और मोबाईल फोन से, सोहनलाल का नम्बर मिलाने लगा। कुछ बार बेल होने के पश्चात, सोहनलाल की आवाज कानों में पड़ी।

"बोल!"

"खबर क्या है?"

"रतनचंद के बंगले पर सन्नाटा पसरा पड़ा है। वहां हथियारबंद आदमी पहरा दे रहे हैं। दो-तीन को देखा मैंने। एक तो छत पर है। वो बाहर नहीं निकला और निकलने का कोई इरादा लगता भी नहीं।"

"कोई आया?"

"कोई नहीं आया। सुबह से अब तक, कोई पोजिशन नहीं बदली।" जगमोहन ने फोन बंद करके, देवराज चौहान से कहा—

"रतनचंद का तो बाहर निकलने का कोई इरादा नहीं लगता।"

"वो R.D.X. का इंतजार कर रहा होगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"शायद ऐसा ही हो, लेकिन हम यहां बैठे किस का इंतजार कर रहे हैं?" जगमोहन बोला—"मैंने तो सोचा था कि मामूली सा मामला है। एक मर्डर करना है। एक-आध दिन में सब निपट जायेगा।"

"निपट जाता, अगर उसे कोई खबरें न दे रहा होता। वो सतर्क हो चुका है। प्रताप और दिनेश कहां हैं?"

"साथ वाले अपने कमरे में।"

"उनसे कह कि साइलेंसर लगी, टैलिस्कोप वाली गन चाहिये।"

"क्यों—कुछ करने जा रहे हो?"

"हां, लेकिन सोचा नहीं कि क्या, कैसे करना है। तुम उन्हें गन लाने को कहो।"

"ठीक है।" जगमोहन बाहर निकल गया। पांच मिनट बाद लौटा।

"गन के लिये उन्होंने फोन कर दिया है। तीस-चालीस मिनट में पहुंच जायेगी।" देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगा ली।

"क्या है तुम्हारे दिमाग में?" जगमोहन ने पूछा।

"मुझे नहीं लगता कि आसानी से रतनचंद बाहर निकलेगा। मेरे ख्याल में वो R.D.X. के कहने पर चल रहा है।"

"तो?"

"उसके घर पर निशाना बांध कर रखना होगा, कभी तो वो निकलेगा। दिखेगा। हमें कोई ऐसी जगह तलाश करनी होगी, जहां गन के साथ बैठकर, उसके दिखने का इंतजार किया जा सके।" देवराज चौहान बोला।

"ऐसी जगह तलाश करना आसान नहीं।"

"देखते हैं।"

तभी फोन बजा।

"हैलो।" जगमोहन ने बात की।

"मैं नागेश शोरी, देवराज चौहान हो तुम?" शोरी की आवाज कानों में पड़ी।

"रुको।" जगमोहन ने कहा और फोन देवराज चौहान की तरफ बढ़ाता कह उठा—"शोरी है।"

"कहो।" देवराज चौहान ने फोन कान से लगाया।

"कब तक काम हो जायेगा?"

"काम तो हो गया होता—अगर तुम्हारी तरफ से गड़बड़ न हो रही होती।"

"दिनेश ने बताया मुझे—और मैं सच में हैरान हूं कि कौन गद्दार है जो खबरें रतनचंद तक पहुंचा रहा है।"

"ये सोचना तुम्हारा काम है।"

"दिनेश-प्रताप-अवतार-हरीश चारों ही मेरे पुराने वफादार हैं, इन पर शक नहीं किया जा सकता।"

"इनके अलावा फिर तुम ही बचते हो।"

"मैं!"

"सोचना तुम्हारा काम है कि कौन खबरें 'लीक' कर रहा है।"

"मैं सोच चुका हूं, कम से कम मेरे चारों आदमी धोखेबाज़ नहीं हैं।"

"इन्होंने किसी को इस मामले के बारे में बताया हो—।"

"पूछा था मैंने, परन्तु ऐसा कुछ नहीं है।"

"खबरें बाहर तो जा ही रही हैं। तभी रतनचंद सतर्क हुआ बैठा है, अपनी सहायता के लिए R.D.X. को बुला रहा है।"

कुछ चुप्पी के पश्चात नागेश शोरी की आवाज आई—

"R.D.X. के बारे में दिनेश ने बताया था। मैंने इनका नाम पहले नहीं सुना।"

"दिनेश और प्रताप ने सुन रखा है। वे कहते हैं तीनों खतरनाक हैं।"

"ऐसी बात है तो तुम्हारी समस्या बढ़ सकती है।"

"मेरी समस्या की तुम फिक्र मत करो। मुझे अपना काम करना आता है।" देवराज चौहान ने कहा।

"मैंने तो सोचा था कि तुम एक दो दिन में काम निपटा दोगे। परन्तु किसी की गद्दारी की वजह से, रतनचंद सतर्क हो गया है। समझ में नहीं आता कि वो कमीना कौन है! क्या रतनचंद आज बाहर नहीं निकला?"

"नहीं, ये मेरा काम है और इस बारे में तुम मत सोचो।"

"मैं कोशिश करूंगा कि उस धोखेबाज को ढूंढ सकूं, जो रतनचंद से मिला हुआ है।"

"तुम्हारा आदमी, रतनचंद के आदमियों के बीच है?"

"हां। खरीदा हुआ है। वो पैसे लेता है और वहां की खबरें देता है।"

"इसी तरह रतनचंद ने भी, तुम्हारा कोई आदमी खरीदा हो सकता है?"

"विश्वास नहीं होता कि मेरा कोई आदमी बिकेगा।"

"नोट मजबूर कर देते हैं।"

नागेश शोरी की तरफ से आवाज न आई।

"जो आदमी तुम्हें खबरें देता है, उसे कहो कि ये जानने की चेष्टा करे कि कौन रतनचंद को खबरें दे रहा है।"

"हां, ये करना ठीक रहेगा। मैं अभी उससे बात करता हूं।"

देवराज चौहान ने फोन बंद कर दिया।

"मेरे ख्याल में" जगमोहन बोला—"प्रताप और दिनेश को हमें, अपने से दूर कर देना चाहिये।"

"अगर वे दोनों रतनचंद को खबर दे रहे हैं तो पता चल जायेगा।"

"कैसे चलेगा पता?"

"कोई गलती तो करेंगे।" देवराज चौहान मुस्कराया।

जगमोहन देवराज चौहान को देखता रहा, फिर बोला—

"क्या तुम्हें लगता है कि गद्दार इन दोनों में से कोई है?"

"कुछ कहा नहीं जा सकता।"

तभी प्रताप कोली ने भीतर कदम रखते हुए कहा—

"मेरे ख्याल में न तो मैं गद्दार हूं और न ही दिनेश।"

"तुम हमारी बातें सुन रहे थे?"

"नहीं। इधर आया तो जगमोहन के शब्द कानों में पड़ गये। हम पर शक मत करो। मैं तो ये पूछने आया हूं कि तुमने गन

क्यों मंगवाई। क्या कुछ करने जा रहे हो अभी?" पूछा प्रताप कोली ने।

"हम क्या करना चाहते हैं, ये जानकर तुम, रतनचंद को बताना चाहते होगे।" जगमोहन ने भोलेपन से कहा।

"भाड़ में जाओ!" प्रताप कोली ने कहा और पलटकर बाहर निकल गया।

"तुम्हें गाली दे गया है।" देवराज चौहान बोला।

"प्यार से दी है।" जगमोहन दांत फाड़कर, देवराज चौहान को देखने लगा—"तीन करोड़ भी दिया है। एक-आध गाली से क्या फर्क पड़ता है!"

❑❑❑

शाम के पांच बज रहे थे जब R.D.X. रतनचंद के बंगले पर पहुंचे।

सुन्दर को उनके आने की खबर मिली तो वो सीधा रतनचंद कालिया के पास जा पहुंचा।

"सर, R.D.X. आ गये हैं।"

"शुक्र है।" रतनचंद ने गहरी सांस ली—"ले आओ उन्हें।"

सुन्दर चला गया।

रतनचंद का चेहरा एकाएक तनावरहित दिखने लगा था। वो उठा और चहलकदमी करने लगा। कुछ ही मिनटों में सुन्दर, R.D.X. के साथ वहां पहुंचा।

"क्यों रतनचंद!" राघव कह उठा—"हमारी जरूरत तेरे को फिर पड़ गई?"

रतनचंद ठिठका। मुस्कराया।

"पिछली बार तूने नोट देने में आना-कानी बहुत की थी।"

"दे तो दिए थे। तुम लोग भी ज्यादा मांग रहे थे।" रतनचंद ने कहा।

"हमने तेरे लिए खतरा भी बहुत उठाया। एक्स्ट्रा मरते-मरते बचा था।"

"ये तुम्हारा काम है।"

"अब के काम की क्या रकम तय हुई?" राघव बोला।

"जो पहले दी थी वही दूंगा, धर्मा से बात तय हो चुकी है।"

"पहले देगा या बाद में?"

"बाद में। मेरी जान बचाओ और रकम ले लो।"

"सयाना हो गया है अब तू।"

धर्मा पास खड़े सुन्दर से कह उठा—

"नाश्ता-वाश्ता नहीं किया है, कुछ खिला तो दे।"

"शाम हो रही है और नाश्ते की बात कर रहे....।"

"आज यही हाल है हमारा। रात भर काम पर रहे।"

सुन्दर बाहर निकल गया।

तीनों ने वहां पड़ी कुर्सियां संभालीं।

"तू इतने दुश्मन क्यों पैदा करता है कि कोई-न-कोई तुझे मार देना चाहता है।" एक्स्ट्रा बोला।

"धंधे में दुश्मन खुद ही पैदा हो जाते हैं। मेरा बस नहीं चलता कि वो न पैदा हों।"

"इस तरह कब तक बचता रहेगा? कभी तो मरेगा।"

"तेरी वजह से मैं मरते-मरते, बचा हूं।"

"कार में जगह बदल कर?"

"हां।"

"बता तो क्या मामला है—पता तो चले—खुल के बता—बहुत वक्त है हमारे पास।" एक्स्ट्रा बोला—"सबसे पहले तेरे को कैसे पता चला कि कोई तेरी जान लेना चाहता है? बताते हुए कोई बात भी न छूटे।"

"मुझे किसी का फोन आया।" रतनचंद कालिया ने गम्भीर स्वर में कहा—"फोन पर उस आदमी ने मुझे बताया कि मेरे किसी दुश्मन ने तीन करोड़ की, मेरे नाम की सुपाड़ी, अण्डरवर्ल्ड के किसी खतरनाक बंदे को दी है।"

"तेरे को फोन करने वाला कौन था?"

"उसने अपना नाम नहीं बताया, परन्तु निशानी के तौर पर वो खुद को केकड़ा बोला।"

"केकड़ा?"

रतनचंद कालिया ने सिर हिलाया।

"तूने उससे पूछा कि ये बात तेरे को कैसे पता चली?" धर्मा बोला।

"पूछा—लेकिन इस बारे में उसने कोई जवाब नहीं दिया।"

"तूने उनके नाम पूछे होंगे जो तेरे को मरवाना चाहता है और जो तेरा निशाना लेने की फिराक में है।"

"पूछे, जानना चाहा, लेकिन उसने नहीं बताया।"

"क्यों?"

"मैं नहीं जानता।"

"तो उसने तेरे को फोन करके क्यों बताया कि तेरे को कोई मारना चाहता है?"

"स्पष्ट नहीं है उसका इरादा। जोर देने पर कहता है कि इस खबर के बदले वो मेरे से मोटी रकम का सौदा करेगा तो मैंने कहा कि वो अभी सौदा कर सकता है, तो उसका जवाब था कि जब वक्त आयेगा, तब सौदा करेगा।"

"वक्त कब आयेगा?"

"जब मैं इस मामले में बुरी तरह फंसा होऊंगा, वो कहता है कि तब मैं उसे मुंहमांगी रकम देने को तैयार हो जाऊंगा।"

राघव ने मुंह बिगाड़ कर कहा—

"इस साले केकड़े को सीधा करना पड़ेगा।"

"सब सीधे होंगे।" धर्मा बोला—"अपने पर हमले के बारे में बता।"

रतनचंद कालिया ने सारी बातें बताईं।

वे तीनों सुनते रहे।

सुन्दर भी वहां आ पहुंचा था।

रतनचंद खामोश हुआ तो, चंद पलों के लिये वहां चुप्पी छा गई।

एक्स्ट्रा ने सुन्दर को देखकर कहा—

"तू मुफ्त का माल झटकता है रतनचंद से, मुसीबत आने पर अपने मालिक को बचा नहीं सकता?"

"मैंने कब मना किया है।" सुन्दर बोला।

"क्या किया है तूने अब तक?"

"मैं तो मना कर रहा हूं कि तुम तीनों को बुलाने की जरूरत नहीं, मैं सब संभाल लूंगा।"

"और अगर रतनचंद लद गया ऊपर को—तो?"

"तब तो तू अपना बिस्तरा-बोरिया गोल करके दूसरी नौकरी तलाश कर लेगा, इसकी जान तो गई ना!"

"तभी तो तुम लोगों को बुलाया है।"

"ये क्या बात हुई? कभी इधर हो जाता है और कभी उधर हो जाता है।"

"मेरी नौकरी, सर को सुरक्षा देने की है।" सुन्दर गम्भीर स्वर में कह उठा—"बंगले पर, या राह चलते कुछ होता है तो सर को बचाना मेरा काम है। यही मैं कर सकता हूं। कोई अनदेखे दुश्मन से मैं मुकाबला नहीं कर सकता। जो सामने आयेगा, उसी से मैं निपट सकता हूं। हमला करने वाले को रोक तो सकता हूं, परन्तु छिपे दुश्मन के बारे में कैसे जान लूं कि वो कहां छिपा है?"

"अब सही बोला तू।"

"उस छिपे दुश्मन से निपटने के लिये ही तुम तीनों को बुलाया गया है।"

"वो कौन है, तूने जानने की चेष्टा नहीं की?"

"मैं कैसे जान सकता हूं। जासूस तो हूं नहीं। मिलिट्री में था। निशानेबाज हूं। दुश्मन को एक ही जगह पर घंटों अटकाए रख सकता हूं। दुश्मन कहां है, ये पता हो तो मैं उसका निपटारा कर सकता हूं।"

"सबकी अपनी-अपनी काबिलियत होती है।"

धर्मा ने पूछा, रतनचंद से—

"आखिरी बार केकड़ा का फोन कब आया?"

"कल शाम को।"

"केकड़ा के बारे में हमें जानना चाहिये। ये मिल जाये तो ताश के सारे पत्ते खुल सकते हैं हमारे सामने।"

"केकड़ा का मिलना आसान नहीं। उसने खुद को सारे पत्तों के पीछे छिपा रखा होगा।"

"बात तो सही है।"

"गहरा मामला है ये। आसान नहीं।" एक्स्ट्रा बोला—"हमें सबसे पहले उस पर ध्यान लगाना चाहिये, जो रतनचंद को मारना चाहता है।"

"मैं उसके बारे में ही सोच रहा हूं एक्स्ट्रा।" राघव बोला।

"क्या सोच रहा है?"

"अभी पता नहीं, लेकिन आने वाला खतरा मुझे नज़र आ रहा है।" राघव ने कहा।

"कैसा खतरा?"

"रतनचंद सुबह से बाहर नहीं निकला। कल भी नहीं निकलेगा तो क्या इसे मारने वाला आराम से बैठ जायेगा?"

तीनों की नज़रें मिलीं।

"नहीं बैठेगा।" एक्स्ट्रा ने कहा—"वो घात लगायेगा।"

"यही मेरा ख्याल है। वो घात कहां लगायेगा?"

"इस बंगले के आस-पास।" धर्मा ने कहा।

"अब समझे कुछ कि मैं क्या कहना चाहता हूं।" राघव ने कहा—"वो जो भी है, खतरनाक इन्सान है। उसने सिर्फ एक गोली ही चलाई, रतनचंद को मारने के लिये। वो आत्मविश्वास से भरा हुआ है। सामने काला शीशा और बीच वाले का निशाना लेकर सिर्फ एक गोली और निशाना सटीक रहा। कोई बेवकूफ होता तो कार पर गोलियों की बरसात कर देता कि बेशक कितने भी मरें, लेकिन रतनचंद अवश्य मर जाये और उसका काम पूरा हो, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। ऐसे लोग बहुत खतरनाक होते हैं और अपनी मंजिल को पाने के लिए, बेशक महीनों लगा दें, लेकिन मंजिल पा ही लेते हैं।"

"तुम कहना चाहते हो कि वो रतनचंद को मार कर ही दम लेगा।"

"अगर हमने समझदारी न दिखाई तो।"

"यानि कि वो जो भी है, अब बंगले के पास ही कहीं घात लगायेगा।"

"पक्का।"

"हम रतनचंद के साथ बंगले से बाहर भी निकल सकते हैं कि—"

"रतनचंद को बकरा बनाने की कोशिश मत करो। ऐसा करना खतरे से खाली नहीं होगा। सोचो कि अगर तब वो कामयाब हो गया और उसने रतनचंद का निशाना ले लिया तो—ऐसा करना ठीक नहीं होगा।"

"तो हमें कोई ऐसी जगह तलाश करनी चाहिये, जहां वो घात लगा सकता हो।"

"बंगले के आस-पास ऐसी कोई जगह है क्या?"

"क्यों नहीं है, सामने ही सड़क पार डिस्ट्रिक्ट सेन्टर है।

डिस्ट्रिक्ट सेन्टर की कई ऊंची-ऊंची इमारतें हैं। किसी भी आफिस की खिड़की पर वो जम सकता है गन के साथ।"

तभी दो नौकर चाय और खाने-पीने के सामान की ट्रे उठाये वहां आ पहुंचे।

R.D.X. खाने में व्यस्त हो गये।

रतनचंद व्याकुल सा दिखाई दे रहा था।

सुन्दर तीनों से कह उठा—

"जो भी हो, सर को हर हाल में बचाना है और उसे खत्म करना है जो मारना चाहता है।"

"गोली चलाने वाला ही नहीं, उसे भी खत्म करना पड़ेगा, जिसने रतनचंद की सुपाड़ी दी है। वो जिन्दा रहा तो दोबारा फिर किसी को सुपाड़ी दे देगा और अंत रतनचंद की मौत पर आकर ही होगा।" धर्मा ने कहा।

"तुम ठीक कहते हो।" बोला रतनचंद—"मामले की जड़ खत्म करना जरूरी है।"

"हमें उन दोनों के बारे में जानना है जो मारना चाहता है और जिसने सुपाड़ी दी है।"

"और उनके बारे में हमें केकड़ा बता सकता है।"

"केकड़ा आसानी से हमारे हाथ नहीं आयेगा।"

"कुछ तो ऐसा करना पड़ेगा कि वो हाथ आये। वरना हम रतनचंद को बचाने में ही लगे रहेंगे और वक्त बरबाद करते रहेंगे।"

उन्होंने खाना-पीना समाप्त किया।

"मैं देखकर आता हूं कि बंगले पर सुरक्षा के क्या इंतजाम हैं।" राघव ने कहा। वो बाहर निकल गया।

"केकड़ा का फोन आये तो उससे हमारी बात कराना।"

"जरूर।" रतनचंद ने सिर हिलाया।

"हमारा कमरा किधर है?" एक्स्ट्रा बोला।

"सुन्दर, ये जो कमरा चाहें, इन्हें दे दो। सब खाली पड़े हैं।"

"जी।"

"रतनचंद!" एक्स्ट्रा उठते हुए बोला—"तुम्हें बंगले में खुले में नहीं जाना है और ना ही किसी खिड़की को खोलकर खड़े होना है। बेहतर होगा कि अपने को कमरे में बंद रखो, इसी में तुम्हारी सुरक्षा है।"

❑❑❑

R.D.X. कमरे में बैठे थे।

राघव अपने हिसाब से बंगले पर पहरा लगवा आया था। ग्यारह आदमी बंगले पर पहरा दे रहे थे और सुन्दर उनकी पोजीशन पर नज़र रखे हुए था।

"मुझे नहीं लगता कि बंगले के भीतर, रतनचंद को कोई खतरा है।" धर्मा ने कहा।

"बंगले के भीतर कोई खतरा नहीं है, लेकिन सतर्कता जरूरी है।" एक्स्ट्रा ने धर्मा को देखा।

"खतरा हो भी सकता है। किसी के दिमाग को हम नहीं जानते कि उसके भीतर क्या है।" राघव बोला।

"कुछ भी हो सकता है।" धर्मा ने गहरी सांस ली।

"मैं कुछ सोच रहा हूं।" राघव बोला।

"क्या?"

"जो रतनचंद पर गोली चलाना चाहता है, मैं उसे परेशान कर देना चाहता हूं कि उसे लगे कोई नई मुसीबत खड़ी हो गई है। ऐसा होने पर वो गुस्से में भरा सामने आयेगा। अपने 'बिल' से बाहर निकलेगा।"

"उसे गुस्सा दिलाना आसान नहीं होगा।"

"हां, परन्तु हमें ऐसा कुछ करने की चेष्टा करनी चाहिये कि वो गुस्से से भर उठे।"

"ऐसा कैसे होगा?"

"यही तो सोचना है।"

R.D.X. की आपस में नज़रें मिलीं।

चुप्पी रही उनके बीच।

"जब तक वो गुस्से में नहीं आयेगा, तब तक वो सामने नहीं आयेगा और हम उसे पहचान नहीं सकेंगे।"

"इसके लिये क्या किया जाये?" धर्मा ने राघव को देखा।

"जिसने अपने शिकार की जान लेने के लिये सिर्फ एक गोली चलाई है, वो सब्र वाला इन्सान लगता है।" एक्स्ट्रा ने सोचभरे स्वर में कहा—"ऐसे इन्सान को गुस्सा दिलाना आसान काम नहीं होगा। इस काम में हम तभी सफल हो सकते हैं, जब हम कोई खास चुभने वाली हरकत करें उसके साथ।"

"मुझे एक आईडिया आया है।" राघव बोला।
"क्या?"
"उसे सामने लाने के लिये हम रतनचंद को बकरा नहीं बना सकते, क्योंकि वो हमारी पार्टी है। उसे खतरे में डालना ठीक नहीं। परन्तु बकरा हम तो बन सकते हैं।" राघव कह उठा।
"बकरा—हम—वो कैसे?" एक्स्ट्रा के माथे पर बल पड़े।
"धर्मा की कद-काठी, बहुत हद तक रतनचंद जैसी ही है।"
"तो?" एक्स्ट्रा एकटक राघव को देख रहा था।
"हमें जगजीत से काम लेना चाहिये।"
"जगजीत?"
"तुम्हारा मतलब कि—।" धर्मा गहरी सांस लेकर बोला—"मुझे रतनचंद का डुप्लीकेट बनाओगे?"
"हां।"
"वो साला मेरा निशाना ले लेगा।"
"इसका तोड़ भी मैंने सोच लिया है।" राघव ने होंठ भींच कर कहा।
"क्या?"
"वो आगे चलकर बताऊंगा। पहले जगजीत से बात तो कर लूं।" राघव ने कहा और फोन निकालकर नम्बर मिलाने लगा। धर्मा ने एक्स्ट्रा से कहा—
"ये मुझे मुसीबत में डालने की सोच रहा है। मैं रतनचंद का डुप्लीकेट बन जाऊंगा तो, वो मुझे रतनचंद समझ कर मार देगा।"
"यही तो हम चाहते हैं।"
"कि मैं मर जाऊं?" धर्मा ने उसे घूरा।
"तुमने सुना नहीं—राघव ने कहा है कि बचने का तोड़ भी है उसके पास।"
"ये साला मुझे मरवायेगा।"
राघव का फोन लग गया था। जगजीत की आवाज कानों में पड़ी—
"हैलो।"
"कैसा है तू?" राघव बोला।
"ओह, राघव। आज कैसे याद किया।"
"एक काम है—अर्जेन्ट—हां बोल तो सामान भिजवाऊं।"

"दो लाख मेरी फीस है। तेरे लिये अर्जेन्ट काम भी हो जायेगा।"
"कल सुबह मेरा काम तैयार मिलेगा?"
"अगर एक घंटे में तू सामान भिजवा दे।"
"भिजवाता हूं, साथ में तेरी फीस भी होगी।"
"मेहरबानी।"
राघव ने फोन बंद किया और कमरे से निकल कर उस कमरे में पहुंचा, जहां रतनचंद था।
"मुझे तुम्हारी तस्वीर चाहिये रतनचंद।"
"तस्वीर?"
"हां, ऐसी तस्वीर जो बिल्कुल स्पष्ट हो। अपनी तस्वीरें दिखा मुझे।"
रतनचंद उठकर टेबल की तरफ बढ़ता बोला—
"मेरा तस्वीर का इस मामले में क्या काम?"
"फेस-मास्क बनवाया जायेगा तेरे चेहरे का। धर्मा को बकरा बनाकर, गोली मारने वाले के सामने पेश करना है।"
"ओह!" टेबल का ड्राज खोलता रतनचंद कह उठा—"इस तरह धर्मा की जान को खतरा...."
"उसकी तू फिक्र मत कर। ये चिन्ता हमारी है।"
रतनचंद ने कुछ तस्वीरें निकालकर, राघव को दीं।
राघव ने उनमें से दो तस्वीरें पसन्द कीं और बाकी लौटाते हुए कहा—
"दो लाख रुपया भी निकाल और सुन्दर को बुला।"
रतनचंद ने दो लाख रुपया निकाला और सुन्दर को फोन करके बुलाया।
सुन्दर आया।
"ये दो लाख रुपया और दोनों तस्वीरें तुझे जगजीत नाम के आदमी को देनी हैं। उसका पता रट ले।" कहकर राघव ने जगजीत का पता बताया—"अभी, इसी वक्त, ये काम करके लौटना है।"
सुन्दर चला गया।
"रतनचंद!" राघव ने मुस्करा कर कहा—"हम फालतू के नोट नहीं लेते। काम करते हैं। मेहनत करते हैं।"
रतनचंद मुस्कराया।

"खुद को जितना खतरे में डालोगे, फीस उतनी ही बढ़ जायेगी।"

"हमारी फीस तय हो चुकी है।"

"पतला न हो। हम फीस बढ़ाने नहीं जा रहे।" कहकर राघव बाहर निकल गया।

राघव वापस पहुंचा।

"सामान भिजवा दिया है जगजीत को।" राघव बैठता हुआ बोला।

"लेकिन तू करना क्या चाहता है।" धर्मा बोला।

"बता तो दिया है कि तेरे को बकरा बनाना है।" राघव मुस्कराया—"वो तेरा निशाना लेगा।"

"इस खतरे से निकलने का रास्ता बता—क्या तोड़ है तेरे पास?"

"वो भी बताऊंगा। पहले मॉस्क तो बन आने दे।" राघव गम्भीर हो गया—"अब हमें बंगले की वो खिड़की देखनी है, जहां पर खड़े आदमी का निशाना, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर की बिल्डिंगों में से किसी खिड़की में खड़ा आदमी ले सके।"

"वहां छः सात इमारतें बनी हुई हैं। क्या पता निशाना लेने वाला कहां जमता है!"

"वो किसी ऐसी खिड़की पर जमेगा, जहां से बंगले के हर हिस्से का, खिड़कियों का निशाना लिया जा सके। रतनचंद को बाहर न निकलता पाकर वो पक्का, उन बिल्डिंगों में से किसी ऑफिस की खिड़की पर ही अपना ठिकाना बनायेगा।"

"ताकि रतनचंद दिखे और उसका निशाना ले ले—।"

"ठीक कहा।"

"और किसी खिड़की पर या खुले पर रतनचंद मुझे बनाकर खड़ा कर दोगे।" धर्मा बोला—"सारी मुसीबत तो मेरे सिर पर हुई!"

"यार की जान बहुत कीमती है। आसानी से जाने नहीं देंगे।" राघव मुस्करा कर कह उठा।

"उल्लू का पट्ठा! बकरा भी बना रहा है और सेहत की चिन्ता में दूध पिलाने की कोशिश भी कर रहा है। तेल की मालिश भी कर दे कि एकदम चौकस हो जाऊं, मरने के लिये।" धर्मा ने मुंह बनाकर कहा।

❑❑❑

5.45 पर, देवराज चौहान और जगमोहन, सोहनलाल के पास पहुंचे।

"क्या हालात हैं?" देवराज चौहान ने पूछा।

"कोई बाहर नहीं गया।" सोहनलाल बोला—"एक कार बंगले में गई थी, दो घंटे पहले।"

"कौन था कार में?"

"दो लोग भीतर बैठे दिखे। वे दूर थे। उनकी संख्या ज्यादा भी हो सकती है।" सोहनलाल ने कहा।

"वो कार वाले R.D.X. हो सकते हैं?" जगमोहन बोला।

"अवश्य हो सकते हैं।"

देवराज चौहान ने सड़क पार बंगले पर निगाह मारी।

देवराज चौहान के पीछे डिस्ट्रिक्ट सेंटर की इमारतें थीं।

"अब क्या इरादा है?" सोहनलाल बोला—"मेरे ख्याल में तो रतनचंद बंगले के भीतर बंद हो गया है।"

"समझदार है।" जगमोहन ने कहा।

"अब वो आर.डी.एक्स के कहने पर चल रहा है।" देवराज चौहान कह उठा।

"देखेंगे आर.डी.एक्स को भी।" जगमोहन ने मुंह बनाया।

देवराज चौहान पलटा और डिस्ट्रिक्ट सेंटर की इमारतों को देखने लगा।

फिर एक इमारत पर नज़र जा टिकी।

उस इमारत की साईड इस तरफ पड़ रही थी, यानि कि खिड़कियां थीं इस तरफ। और ऐसी ही किसी खिड़की की जरूरत थी देवराज चौहान को। पांच मिनट बीत गये, देवराज चौहान को खिड़कियों पर नज़र दौड़ाते।

चार कदम की दूरी पर सोहनलाल और जगमोहन खड़े थे।

तभी बंगले का गेट खुलता पाकर, सोहनलाल कह उठा—"कोई बाहर आ रहा है।"

जगमोहन की निगाह भी उधर जा टिकी।

तभी एक कार निकली और आगे बढ़ गई।

"एक ही आदमी है कार में—सिर्फ कार चलाने वाला।" जगमोहन बोला।

"तू बंगले पर नज़र रख, मैं उसके पीछे जाता हूं।" सोहनलाल ने कहा और तेज-तेज कदमों से सामने खड़ी कार की तरफ बढ़ गया।

जगमोहन की निगाह बंगले पर जा टिकी। बंगले का गेट कार निकलने के पश्चात् बंद हो गया था।

शाम का वक्त होने की वजह से डिस्ट्रिक्ट सेंटर पर गहमा-गहमी बढ़ गई थी।

देवराज चौहान पलटा और जगमोहन की तरफ आया।

"सोहनलाल किधर गया?" देवराज चौहान ने पूछा।

"कोई बंगले से बाहर निकला है, उसके पीछे गया है। तुम्हारा क्या इरादा है?"

"मुझे इस इमारत की पहली या दूसरी मंजिल की कोई खिड़की चाहिये।" देवराज चौहान ने इमारत को देखा—"कोई-न-कोई आफिस तो किराये के लिए अवश्य खाली होगा। मैं पता करके आता हूं।"

❑❑❑

देवराज चौहान उस इमारत के पास जा पहुंचा। ग्राउंड फ्लोर पर दुकानें-ही-दुकानें नज़र आ रही थीं।

दुकानों के रंग-बिरंगे बोर्ड नज़र आ रहे थे। पहली मंजिल पर भी दुकानें ही थीं।

देवराज चौहान की निगाह बोर्डों पर घूमने लगी।

कुछ ही मिनटों में वो रावत प्रापर्टी डीलर के मालिक, रावत के सामने बैठा हुआ था।

"कहिये साहब, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं।" रावत ने मुस्कुरा कर कहा।

"पहली मंजिल पर दुकान या दूसरी मंजिल पर आफिस किराये के लिये चाहिये। कुछ भी हो जाये—।"

"ये क्या बात हुई जनाब कि कुछ भी हो जाये—मैं समझा नहीं।"

"मैंने ऑफिस खोलना है और भाई ने दुकान...।"

"ओह, समझा समझा—तो यूं कहिये ना। सब समझ गया...।"

"लेकिन दुकान या आफिस की खिड़की उस तरफ की सड़क की तरफ खुलनी चाहिये।"

"उधर सड़क पर—ठीक है, ऑफिस का तो समझो इन्तजाम हो गया। दूसरी मंजिल पर बढ़िया ऑफिस है। बाईस बाई अठारा का—किराया भी कम है। चाबी भी मेरे पास है, ऑफिस दिखा दूं क्या?"

"जरूर।"

रावत ने टेबल के ड्रॉज़ से चाबी निकाली और उठता हुआ बोला—

"चलिये—क्या नाम बताया आपने?"

"सुरेन्द्र पाल।"

दोनों बाहर निकले और आगे बढ़ गये।

"किस चीज का ऑफिस खोलना चाहेंगे आप?"

"मेरी कम्पनी ने कपड़े धोने का नया पाउडर लांच किया है, उसकी मार्किटिंग के सम्बन्ध में ऑफिस खोलना है।"

"लो जी, चकाचक ऑफिस है सुरेन्द्र पाल जी।" रावत दरवाजा खोलकर भीतर प्रवेश करता हुआ बोला—"ऐसा ऑफिस कभी-कभार ही हाथ आता है। महीना पहले ही खाली हुआ है। इस बन्दे का अमेरिका में काम बन गया। यहां पर जो आता है, बनके ही निकलता है। उससे पहले भी इस ऑफिस वाला, नेपाल चला गया था। किस्मत वाला ऑफिस है ये...।"

भीतर प्रवेश करते ही देवराज चौहान ठिठका।

पहले से ही वहां पुराना फर्नीचर पड़ा था। कुछ कुर्सियां। एक-दो काउंटर और अन्य तरह का सामान।

"इसकी आप फिक्र मत करो। ये सामान है तो नया, पर कबाड़ ही समझो। पहले वाला छोड़ गया था। जो आपके इस्तेमाल में आये ले लेना, बाकी का मैं बाहर फिंकवा दूंगा। चिन्ता मत कीजिये, मैं सर्विस पूरी दूंगा। ये देखिये, इधर आइये, आप खिड़की की बात कर रहे थे कि सड़क की तरफ खुले, तो यहां एक नहीं दो-दो खिड़कियां हैं।" रावत कहते हुए आगे बढ़ा और दोनों खिड़कियों के पल्ले खोल दिए।

खिड़कियों के शीशों पर काली फिल्म चढ़ी थी।

खोलते ही ऑफिस में बाहरी रोशनी भर आई।

देवराज चौहान ने आगे बढ़े बिना खुली खिड़की पर निगाह मारी तो सड़क पार, कुछ दूर रतनचंद का बंगला दिखा। बीच में पेड़ आ रहे थे, परन्तु बंगला बहुत हद तक यहां से स्पष्ट था।

"खुली हवा आती है जी खिड़कियों से। बाहरी रोशनी भी चकाचक है, यूं तो यहां लाईट कम ही जाती है, फिर भी चली जाये तो काम नहीं रुकेगा। हवा-रोशनी पूरी आती है, घबराहट नहीं होगी। काम न हो तो खिड़कियों से बाहर देखकर वक्त बीत जायेगा। वाह जी, बनाने वाले ने खिड़कियां भी क्या बनाई हैं। बंद कर लो तो बंद। खोल लो तो खिड़कियां।"

देवराज चौहान मुस्कुराया। रावत को देखा।

"पसन्द आया सुरेन्द्र पाल जी?"

"बहुत।"

"लो बन गई बात, पहली बार में ही। एग्रीमेंट तैयार करूं, रोकड़ा लाये हैं या कल...।"

"किराया क्या है?"

किराया बताकर रावत बोला—

"इससे कम किराये पर आपको यहां दूसरी कोई जगह नहीं मिलेगी। लेकिन तीन महीने का एडवांस देना होगा आपको। जो इस जगह का मालिक है, वो एडवांस के बिना नहीं मानता। वैसे भी क्या हर्ज है एडवांस देने में!"

"आप एग्रीमेंट तैयार कीजिये।"

"यानि आपको एडवांस देने में कोई एतराज नहीं है। ठीक है, चलिये।"

वो दोनों बाहर निकले। रावत ने ताला लगाया और आगे बढ़ गया।

"चाबी मैं आज ही ले लूंगा।" देवराज चौहान बोला।

"जरूर जी। जब नोट दे दिए तो चाबी मिलनी ही चाहिये। खरा सौदा है। आधे घंटे में एग्रीमेंट तैयार हो जाता है। ये तो बहुत बढ़िया हो गया कि आपने देखते ही पसन्द कर लिया। सिरदर्दी नहीं उठानी पड़ी। कई बार तो ऐसे-ऐसे ग्राहक आते हैं कि सारा दिन ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर घुमाते हैं, कुछ पसन्द नहीं आता और शाम को जाते हुए नमस्ते भी नहीं करते। तो कल ही काम शुरू कर देंगे आप?"

"कल मेरा भाई देखेगा ऑफिस को।"

"जरूर जी जरूर देखे—।"

"मेरे मिस्त्री कहीं काम कर रहे हैं। सप्ताह तक वो फुर्सत में आयेंगे। तब यहां काम शुरू होगा।"

"मालिक हो जी, जब भी काम शुरू करो।"

"उससे पहले मेरा आर्किटैक्ट आयेगा और फैसला करेगा कि आफिस को क्या रूप देना है।"

"हां जी—हां जी। आर्किटैक की दाल-रोटी भी तो चलनी चाहिये। सबको मिल-मिलाकर खाना चाहिये।" फिर एकाएक ही वो सामने जाते आदमी को देखकर चिल्लाया—"नमस्कार चौपड़ा साहब...।"

दूर नज़र आ रहे व्यक्ति ने उसे देखकर हाथ हिला दिया।

"इस बिल्डिंग में बोत शरीफ लोग हैं जी। अपने चौपड़ा साहब को लो, विदेश भेजने के नाम पर लोगों को ठग-ठग कर करोड़पति बन गये। तीन महीने जेल में बिताये और जमानत पर बाहर आ गये। अब ऐश ही ऐश है। चलता रहेगा केस। करोड़पति तो बन गये। लोग तो ऐसे ही स्टार प्लस वाले प्रोग्राम के.बी.सी. की तरफ दौड़े जाते हैं—करोड़पति बनने के लिये। तैं तो कहता हूं कि चौपड़ा साहब से गुर सीख लेने चाहिये करोड़पति बनने के लिये...।"

❑❑❑

7 बज रहे थे, जब देवराज चौहान जगमोहन के पास पहुंचा।

सोहनलाल भी वहां मौजूद था।

"तुम कहां गये थे?" देवराज चौहान ने पूछा।

"जो बंगले से निकला था, उसके पीछे। वो आदमी गोरेगांव में किसी फ्लैट पर गया। मेरे देखते-ही-देखते उसने कॉल बेल बजाई। दरवाजा खुला तो उसने हाथ में पकड़ा लिफाफा, दरवाजा खोलने वाले को दे दिया। उस व्यक्ति ने लिफाफा खोलकर देखा और दरवाजा बंद कर लिया। अब वो व्यक्ति वापस बंगले पर आ गया।"

"ये नहीं मालूम हो सका कि उस लिफाफे में क्या था?" देवराज चौहान ने पूछा।

"नहीं।"
"तुम दोनों बारी-बारी बंगले पर नज़र रखोगे। कोई बाहर जाये तो ये अवश्य देखना है कि वो किधर गया है।" देवराज चौहान ने कहा—"क्योंकि ऐसे वक्त में जो भी बाहर निकलेगा, बेहद खास काम के लिये निकलेगा।"
"मेरे ख्याल में हम दोनों एक साथ यहां मौजूद रहने चाहिये।" जगमोहन बोला—"ताकि एक किसी के पीछे जाये तो दूसरा बंगले पर नज़र रखता रहे। काम न हो तो, पास ही कार में नींद मार ले।"
"ठीक है। ये भी बुरा नहीं।"
"तुम क्या करके आये?" जगमोहन ने पूछा।
"मैंने सामने वाली इमारत में, दूसरी मंजिल पर ऑफिस किराये पर ले लिया है। जिसकी खिड़की इस तरफ खुलती है।"
"ओह!" जगमोहन ने गहरी सांस ली—"वहां कब टिकोगे?"
"कल सुबह से।"
"कल रतनचंद बंगले से बाहर भी निकल सकता है।"
"बाहर निकला तो उसके पीछे चलेंगे, नहीं निकला तो टैलिस्कोप पर लगी आंख उसे बंगले में ढूंढेगी।"
"खैर नहीं साले रतनचंद की!" जगमोहन मुंह बनाकर कह उठा।
"R.D.X. को नहीं भूलना चाहिये।" देवराज चौहान बोला—"रतनचंद को बचाने के लिये वो बंगले में हो सकते हैं।"

❑❑❑

देवराज चौहान होटल पहुंचा तो [illegible]ाप कोली और दिनेश चुरू को अपना इन्तजार करते पाया।
"तुम गन लेकर कहां चले गये थे?" दिनेश चुरू ने पूछा।
"गन कार की डिग्गी में पड़ी है।" देवराज चौहान बैठते हुए बोला।
"कुछ करने जा रहे हो क्या?"
"कल से काम होगा।"
"कैसे?"
देवराज चौहान ने दोनों को देखा।
दोनों उसे देख रहे थे।

"अगर वो बंगले से निकला तो ठीक है—नहीं तो बंगले में ही उसे निशाने [illegible] की जायेगी।"
"बंगले में ही उसे निशाने पर?"
"इसके लिये तो किसी ऐसी [illegible] जहां से निशाना बांधा जा [illegible]"
[illegible]
"कहां?" दिनेश चुरू ने पूछा।
"मेरे ख्याल में, उसके बंगले के [illegible] सेन्टर में कहीं होगी [illegible]
[illegible]
दोनों ने एक-दूसरे को देखा। [illegible] देवराज [illegible]
[illegible] रही है।"
[illegible] बोला।
[illegible] से तो खबर [illegible]
"लेकिन मैं ये काम नहीं करता।" [illegible]
"तो ये खबर हरीश और अवतार [illegible] होगी।"
[illegible] एक-दूसरे [illegible]।
[illegible] उठा—

"देवराज चौहान, मेरे ख्याल में ये खबरें हमारी नहीं, तुम्हारी तरफ़ से लीक हो रही हैं।"

देवराज चौहान मुस्कुराया।

"जगमोहन और सोहनलाल कहां हैं?"

"जब तक ये मालूम नहीं होता कि खबरें कहां से लीक हो रही हैं, तब तक ज्यादा सवाल न पूछो।" देवराज चौहान ने कहा।

❑❑❑

अंधेरा होने को था।

धर्मा ने खिड़की खोली और बाहर देखने लगा।

सामने सड़क पर से ट्रैफिक जा रहा था। वाहनों की लाईटें ऑन होनी शुरू हो गई थीं।

धर्मा की नज़रें हर तरफ फिरने लगीं। कुछ देर बाद उसकी निगाह सड़क पार, डिस्ट्रिक्ट सेंटर की इमारतों पर जा टिकी। काफी देर तक वो उन्हीं इमारतों को देखता रहा, फिर अंधेरा हो गया। ऑफिसों में रोशनी ऑन थी। चंद ऑफिसों में अवश्य अंधेरा था। तभी कदमों की आहटें गूंजीं और राघव पास में आ खड़ा हुआ।

"क्या देख रहे हो?"

"सोच रहा हूं कि अगर हमने रतनचंद का शिकार करना होता और रतनचंद बाहर न निकल रहा हो तो हम कौन सी इमारत चुनकर निशाने के लिए घात लगाते।" धर्मा बोला।

राघव कुछ पल बाहर देखता रहा, फिर बोला—

"ठीक सामने वाली।"

"मैं भी यही सोच रहा हूं कि सामने वाली इमारत की पहली या दूसरी मंजिल ही चुनते।"

"पहली-दूसरी क्यों?"

"ज्यादा ऊंचाई पर जाने में ये खिड़की नज़र नहीं आती और ठीक से निशाना लगा पाना आसान नहीं होता। इसलिए पहली या दूसरी मंजिल ही ठीक रहती। तेरा क्या ख्याल है, जो रतनचंद को निशाना बनाना चाहता है, वो वहां डेरा जमायेगा?"

"इसके सिवाय उनके पास कोई दूसरा रास्ता ही नहीं होगा। क्योंकि हमने रतनचंद को बाहर नहीं निकलने देना है।"

"यानि कि हमारा शिकार हमारे करीब आ जायेगा।" धर्मा ने राघव को देखा।

"क्या कहना चाहते हो तुम?"

"अगर हम तेजी दिखायें तो उस आदमी को जिन्दा पकड़ सकते हैं।"

"परन्तु ये काम आसान नहीं। उस इमारत पर हमें कड़ी नजर रखनी होगी, जबकि हमें यहां भी सब संभालना है।"

"अगर वो जिन्दा हमारे हाथ लग जाये तो, इससे उसके बारे में भी जान सकते हैं कि जिसने उसे सुपाड़ी दी है।"

"देखते हैं। कल इस बारे में कुछ करेंगे। मेरे ख्याल में आज का दिन उसने रतनचंद का इन्तजार किया होगा कि वो बाहर निकले। रतनचंद को बाहर न निकलते देख उसने तय कर लिया होगा कि कल इसी इमारत में कहीं ठिकाना बनायेगा। इसके लिये वो इमारत में इस वक्त जगह तलाश कर रहा होगा या कल करेगा।"

"ये भी हो सकता है कि जगह उसने तलाश कर ली हो।"

"हां, ये भी हो सकता है। तुम्हारे लिये ये ही खिड़की ठीक रहेगी। कल सुबह जगजीत रतनचंद का मास्क बनाकर दे देगा। तुम रतनचंद की शक्ल में कल इस खिड़की पर आओगे।"

"वो आसानी से मेरा निशाना ले लेगा।"

"यही तो मैं चाहता हूं, परन्तु वो निशाना नहीं लेगा, अगर समझदार हुआ। मैं उसे परेशान कर दूंगा।"

"कैसे?"

"कल बताऊंगा।" राघव के चेहरे पर रहस्यमय मुस्कान नाच उठी।

"अभी क्यों नहीं?"

कुछ कहने की अपेक्षा मुस्कराता हुआ राघव उस इमारत को देखने लगा।

❑❑❑

उस वक्त सोहनलाल जाग रहा था और बंगले पर नज़र रख रहा था। जगमोहन कुछ दूर खड़ी कार की पीछे वाली सीट पर नींद में डूबा हुआ था। दो घंटे पहले ही वो सोया था।

सुबह के नौ बज रहे थे।

तभी सोहनलाल ने बंगले का गेट खुलता देखा।

वो समझ गया कि कोई बाहर आ रहा है। सोहनलाल तेजी

से कार के पास जा पहुंचा। नज़रें बंगले पर थीं। जगमोहन को हिलाते कह उठा—

"उठ जा। कोई बंगले से बाहर आ रहा है।"

जगमोहन फौरन उठ बैठा।

कल शाम वाली कार ही बंगले से बाहर निकली और आगे बढ़ गई।

"मैं उस कार के पीछे जा रहा हूं।" सोहनलाल ड्राईविंग सीट पर बैठता कह उठा।

जगमोहन कार से बाहर आ गया।

तब तक सोहनलाल कार स्टार्ट कर चुका था और फिर कार आगे बढ़ा दी।

जगमोहन ने उसकी कार को जाते देखा, फिर बंगले पर नज़र मारी, जिसका फाटक बंद हो चुका था। उसके बाद आंखें मलता हुआ मुनासिब जगह पर जा खड़ा हुआ। कल शाम से ही वो और सोहनलाल दो-दो घंटे की ड्यूटी दे रहे थे। एक, दो घंटे बंगले पर नज़र रखता तो दूसरा नींद ले लेता।

अभी दस मिनट ही हुए थे कि एक कार पास आकर रुकी। देवराज चौहान, प्रताप कोली और दिनेश चुरू था भीतर।

देवराज चौहान कार से निकलकर जगमोहन के पास पहुंचा।

"सोहनलाल कहां है?"

"कोई बंगले से निकला है। उसके पीछे गया है।" जगमोहन ने बताया।

"कब की बात है?"

"दस-पन्द्रह मिनट हुए हैं।"

"कल शाम से और कोई अन्दर-बाहर नहीं हुआ?"

"नहीं।"

"कोई नई खबर?"

"नहीं।"

"ठीक है, मैं पीछे की इमारत में अपने ठिकाने पर बैठने जा रहा हूं। इस बीच अगर रतनचंद बाहर निकला तो मैं आ जाऊंगा। तुम फोन पर भी मुझे बता सकते हो। सोहनलाल जब आये तो उससे मेरी बात करा देना।"

"करा दूंगा—यहां चाय-पानी, कुछ खाने को भिजवा दो।"

"भिजवाता हूं।"

"इन दोनों को तुम अपने साथ रखे हुए हो, कहीं ये ही रतनचंद को सारी खबरें न दे रहे हों? अगर ऐसा है, तो तुम खतरे में पड़ सकते हो।"

"इस बात का ध्यान है मुझे।" देवराज चौहान ने कहा और कार में जा बैठा।

कार आगे बढ़ाई और पीछे की इमारत की पार्किंग में जा खड़ी की।

"तुम में से एक डिग्गी में पड़ी गन लेकर मेरे साथ चले, दूसरा जगमोहन के पास जाये और खाने का सामान पहुंचा दे।"

"तुमने बताया नहीं कि जगमोहन और सोहनलाल रतनचंद के बंगले पर निगाह रखे हैं।"

"बताने की जरूरत नहीं समझी।" देवराज चौहान कार से बाहर निकलता कह उठा।

प्रताप कोली ने दिनेश चुरू से कहा—

"जगमोहन को खाना-पीना पहुंचा। मैं देवराज चौहान के साथ जा रहा हूं। बाद में वहीं आ जाना। पता तेरे को बता दिया है।"

"हां।"

❑❑❑

देवराज चौहान और प्रताप कोली दूसरी मंजिल पर स्थित ऑफिस में पहुंचे। देवराज चौहान से चाबी लेकर प्रताप कोली ने ही ऑफिस खोला और दोनों भीतर प्रवेश कर गये।

"दरवाजा बंद कर दो।" देवराज चौहान बोला।

प्रताप कोली ने दरवाजा बंद किया।

देवराज चौहान ने आगे बढ़ कर थोड़ी सी खिड़की खोली और बाहर देखा।

सामने सड़क पर ट्रैफिक दौड़ता दिखा। नज़रों ने जगमोहन को भी ढूंढा जो एक तरफ खड़ा था। फिर निगाह सामने सड़क पर बंगले पर जा टिकी, जो सड़क के दोनों ओर लगे पेड़ों के बीच में से आधा-अधूरा नज़र आ रहा था। परन्तु फिर भी बंगले का काफी बड़ा हिस्सा स्पष्ट नज़र आ रहा था।

कुछ देर देवराज चौहान बंगले को देखता रहा, फिर पीछे हटकर, सिग्रेट सुलगाई।

प्रताप कोली खिड़की के पास पहुंचा और बाहर देखने लगा।
"खिड़की पूरी मत खोलना।" देवराज चौहान बोला।
प्रताप कोली खिड़की छोड़ता कह उठा—
"जगह तुमने बढ़िया ढूंढी है, परन्तु पेड़ों की वजह से बंगला पूरा नहीं दिख रहा।"
"बंगले में काम की जगह दिखनी चाहिये।" देवराज चौहान ने कश लिया।
"क्या है काम की जगह?"
"बंगले की इस तरफ पड़ने वाली दो खिड़कियां हमें स्पष्ट नज़र आ रही हैं—और एक तो खुली हुई है।"
प्रताप कोली पुनः खिड़की से बाहर देखने लगा।
कुछ देर बाद हटता हुआ बोला—
"हां, सच में एक खिड़की खुली हुई है।"
"हमारा शिकार उस खिड़की पर आ सकता है।"
"R.D.X., रतनचंद को खिड़की पर नहीं आने देंगे।" कोली ने इन्कार में सिर हिलाया।
"वक्त का कुछ पता नहीं चलता। समझदार लोग भी गलतियां कर देते हैं।"
प्रताप कोरी ने कुछ नहीं कहा।
"बंगले में आगे का खाली हिस्सा भी नज़र आ रहा है। हमें इन्हीं जगहों पर से अपना शिकार ढूंढना है।"
"हां।"
"क्या पता वो दिखे ही नहीं। ऐसे में तुम कब तक डटे रहोगे?"
"ये सब्र का खेल है। मुझे एक जगह टिक कर बैठना होगा। रतनचंद भी कब तक सतर्क रहेगा। कुछ न होते पाकर, बंगले में बैठा वो बोरियत महसूस करेगा। उठेगा, चहलकदमी करेगा और खुले में आने की गलती करेगा। वो खिड़की पर भी दिख सकता है और बंगले में नज़र आने वाली खाली जगह पर भी।"
"ये काम एक दिन में भी होगा और कई दिन भी लग सकते हैं। यानि कि कुछ पता नहीं।" प्रताप कोली मुस्कराया।
"मैंने पहले ही कहा है कि ये सब्र का खेल है। अगर हमारी खबरें रतनचंद तक न पहुंच रही होतीं तो काम हो चुका होता।"
"पता नहीं कौन हरामजादा उसे हमारी बातें बता रहा है।"

"वो तुम भी हो सकते हो।"
प्रताप कोली ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला, फिर चुप ही रहा।
"गन लेकर आओ। कार की डिग्गी में पड़ी है और आने-जाने के दौरान तुम्हारे पास पूरा मौका होगा कि तुम फोन करके रतनचंद को यहां की सारी खबर दे सको।" कहते हुए देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।
"हां, मौका तो होगा, लेकिन मैं ये काम नहीं कर रहा।" कह कर प्रताप कोली बाहर निकल गया।
देवराज चौहान ने वहां पड़े पुराने फर्नीचर पर नज़र दौड़ाई, फिर अपनी पसन्द की चीजें धकेल कर खिड़की की तरफ ले जाने लगा। इस काम में तब तक लगा रहा, जब तक प्रताप कोली वापस न आ गया।
प्रताप कोली के हाथ में छोटा सा एयर बैग था।
उसने खिड़की पर नज़र मारी जो कि मात्र तीन इंच खुली हुई थी। खिड़की के पास ही छोटा सा टेबल और उस पर छोटी सी तिपाई रखी थी और पास ही में कुर्सी।
देवराज चौहान ने उससे बैग लिया और फोल्डिंग गन के टुकड़ों को निकालने लगा।
पांच मिनट में ही उसने गन तैयार कर ली। साईलेंसर लगा लिया गया। ऊपर टैलिस्कोप फिट कर दिया। फिर गन को टेबल पर रखी तिपाई पर रखा और टैलिस्कोप में देखता एंगल सैट करने लगा।
अगले पन्द्रह मिनटों में देवराज चौहान अपनी जगह सैट कर चुका था।
तीन इंच झिरी में गन का मुंह सैट था। टैलिस्कोप पर आंख लगाये बंगले का नज़ारा कर रहा था।
टैलिस्कोप के जरिये, बंगला इतना करीब लग रहा था, जैसे कि वो खुद ही बंगले में खड़ा नज़रें घुमा रहा हो।
दो खिड़कियां बंद थीं।
एक खुली पड़ी थी। टैलिस्कोप के जरिये, खुली खिड़की के भीतर कमरे की चीजें भी साफ नज़र आ रही थीं।
"ठीक है?" प्रताप कोली ने पूछा।

"तुम ऐसा क्यों पूछ रहे हो सुन्दर?"

"सुबह से आराम से बैठे हैं और कॉफी मंगाये जा रहे हैं।" कहते हुए सुन्दर मुस्करा पड़ा।

"देखते रहो। वो आराम से बैठने वाले नहीं। R.D.X. डिब्बे में बंद ही क्यों न रहे, वो R.D.X. ही होता है। फिलहाल वो मेरा हमशक्ल तैयार कर रहे हैं, इसके पीछे उनका क्या इरादा है, मैं नहीं जानता।"

"ओह! मुझे नहीं मालूम था।"

❑❑❑

धर्मा ने लिफाफे में से डिब्बा निकाला और डिब्बे में से रबड़ का मास्क निकाला। वो रतनचंद के चेहरे का मॉस्क था और स्किन की तरह लग रहा था। मास्क पर भौंहें तक बनी हुई थीं।

राघव मुस्कराया और बोला—

"तुम रतनचंद के कपड़े पहन कर आओ। कुछ ही देर में तुम रतनचंद बन जाओगे।"

"बकरा बना रहे हो मुझे।" धर्मा ने मास्क डिब्बे में रखा और उठते हुए बाहर निकल गया।

"एक्स्ट्रा!" राघव बोला—"बैग से बुलेटप्रूफ शीट लाओ।"

एक्स्ट्रा उठा और सामने पड़े बैग की तरफ पहुंचा। बैग खोला और बैग में एक तरफ रखी स्टील की बुलेटप्रूफ शीट निकाली। वो इस तरह बनी हुई थी कि उसे छाती पर रखा जाये तो आगे का पूरा हिस्सा ढक जाता था।

एक्स्ट्रा ने शीट राघव के पास रख दी।

"क्या है तेरे दिमाग में?" एक्स्ट्रा कह उठा।

"अभी बताता हूं, पहले एक रतनचंद तो तैयार कर लूं।" राघव ने सोच भरे स्वर में कहा।

कुछ ही देर बाद धर्मा आ पहुंचा। उसके शरीर पर रतनचंद की कमीज़-पेंट थी।

राघव ने लिफाफे में हाथ डाला और बालों की विग निकाली।

"ये अपने सिर पर लगा।"

धर्मा ने सिर पर विग फिट की। उसके बाल छिप गये थे। विग की वजह से बालों का स्टाईल बदल कर, रतनचंद के सिर

के बालों की तरह हो गया। एक्स्ट्रा ने विग को एक बार फिर ठीक से सैट किया।

"ले, मास्क लगा।" राघव ने डिब्बे में से मास्क निकालकर उसकी तरफ बढ़ाया।

"शीशा—?" धर्मा मास्क थामता बोला।

"बाथरूम में चला जा।"

धर्मा मास्क थामे बाथरूम में चला गया।

करीब पांच मिनट बाद लौटा।

उसे देखते ही राघव और एक्स्ट्रा ने गहरी सांस ली।

वो पूरी तरह रतनचंद लग रहा था। कोई नहीं कह सकता था कि वो रतनचंद नहीं है।

"जगजीत कमाल का काम करता है।" एक्स्ट्रा मुस्कुराया।

"नोट ज्यादा लेने लगा है।" राघव, धर्मा को देखते कह उठा।

"काम बढ़िया होना चाहिये। जो कि जगजीत कर देता है।"

तभी नौकर ट्रे में कॉफी के तीन प्याले रखे कमरे में आया। धर्मा को रतनचंद समझ कर फौरन संभला।

"नमस्कार सेठ जी।"

धर्मा ने सिर हिलाया।

नौकर ने टेबल पर कॉफी के प्याले रखते हुए कहा—

"आपके लिये भी काफी लाऊं सेठ जी?"

"नहीं।" धर्मा ने गुड़मुड़ सी आवाज में कहा।

नौकर चला गया।

"नौकर को जरा भी शक नहीं हुआ कि तुम रतनचंद नहीं हो।" एक्स्ट्रा बोला—"ये अच्छी बात रही।"

राघव ने बुलेटप्रूफ शीट, धर्मा के सामने रखी।

"कॉफी पी लो। उसके बाद ये शीट तुमने कमीज के भीतर, सीने से लगा लेनी है।"

"गोली मारने वाले ने मेरे माथे पर निशाना लिया तो ये बुलेटप्रूफ शीट क्या करेगी?" धर्मा ने गहरी सांस ली।

"मुझे नहीं लगता कि उसके गोली चलाने की नौबत आयेगी।" राघव मुस्कुराया।

"तुम करना क्या चाहते हो?" धर्मा ने आंखें सिकोड़ कर पूछा।

"जो रतनचंद का निशाना लेना चाहता है, उसे परेशान कर देना चाहता हूं।"

"क्या प्लान है तुम्हारा?"

"कॉफी उठाओ। घूंट भरो। साथ में बताता हूं कि तुमने क्या करना है?"

तीनों कॉफी पीने लगे।

राघव अपनी योजना बताने लगा।

पांच मिनट में धर्मा और एक्स्ट्रा उसकी बात समझ चुके थे।

"ऐसा होते ही गोली चलाने वाला अपने सिर के बाल नोंच लेगा कि ये क्या हो रहा है।" राघव ने कहा।

"तुम्हारी योजना की सबसे कमजोर कड़ी कौन-सी है, जानते हो?" बोला एक्स्ट्रा।

"कमजोर कड़ी—बता क्या है?"

"क्या पता कि सामने वाली इमारत में, रतनचंद का निशाना लेने के लिये कोई मौजूद है भी या नहीं? कोई धर्मा को देखता भी है या नहीं। ये बात स्पष्ट नहीं और तू अपनी योजना...।"

"एक्स्ट्रा!" राघव ने टोका।

"बोल।"

"जिस तरह से रतनचंद का पहले निशाना लिया गया, उससे मुझे पूरा यकीन है कि रतनचंद को बंगले से बाहर न निकलते देखकर, वो अब तक सामने वाली इमारत में गन के साथ मौजूद होगा कि रतनचंद दिखे और उसे गोली मारे।"

"हो सकता है कि वो अभी जगह की तलाश कर रहा हो?" एक्स्ट्रा ने कहा।

"अगर अब तक उसने जगह की तलाश न की तो मैं कहूंगा कि वो महा बेवकूफ है जो वक्त बर्बाद कर रहा है। इस तरह वो रतनचंद को नहीं मार सकेगा। लेकिन वो जगह तलाश कर चुका है। ऐसा मेरा दावा है। क्योंकि जिस तरह कार में काले शीशे होने के बावजूद भी उसने सिर्फ एक गोली चला कर बस कर दी और सही निशाना ले लिया बीच वाले का—उससे मैं कह सकता हूं कि वो परले दर्जे का शातिर, चालाक और खेला-खाया इन्सान है।"

"फिर भी।" बोला धर्मा—"है तो ये तेरी खामखाई की सोच ही। दावे की पुष्टि के लिये तो कुछ नहीं है।"

"वक्त के साथ सामने आ जायेगा।" राघव ने कहा और कॉफी का घूंट भरा।

एक्स्ट्रा ने आंखें बंद कीं और कह उठा—

"मैं गोली चलाने वाले को जिन्दा पकड़ना चाहता हूं।"

"उन पर हाथ डालना क्या आसान होगा?" धर्मा ने एक्स्ट्रा पर नज़र मारी।

"आसान नहीं होगा, तभी तो मैं ये काम करना चाहता हूं।" एक्स्ट्रा ने आंखें खोलीं और मुस्कुरा पड़ा।

❑❑❑

फोन बजते ही रतनचंद ने पास रखा मोबाइल उठाया और स्क्रीन पर नज़र मारी।

स्क्रीन पर फोन बना नज़र आ रहा था।

वो समझ गया कि ये केकड़ा का ही फोन है। उसका फ़ोन आने पर नम्बर नहीं आता था। फोन थामे वो उसी पल उठा और कमरे से बाहर निकलकर, उस तरफ बढ़ गया जिधर R.D.X. मौजूद थे।

हाथ में थमा फोन बजे जा रहा था।

चलते-चलते रतनचंद कालिया ने बात की।

"हैलो!"

"कैसे हो रतनचंद?" उसके कानों में केकड़ा की आवाज पड़ी।

"ओह तुम।"

"हां—मैं, गलत वक्त पर तो फोन नहीं कर दिया?" केकड़ा के हंसने की आवाज आई।

रतनचंद खामोश रहा। वो उस कमरे तक आ पहुंचा था।

"R.D.X. कैसे हैं?"

"एकदम ठीक।"

"क्या कर रहे हैं वो तेरी सुरक्षा में?"

रतनचंद कमरे में प्रवेश कर गया।

परन्तु वहां धर्मा को हू-ब-हू अपने चेहरे में पाकर चौंका। उसकी आंखें फैल गईं।

"मत बता।" रतनचंद के कानों में केकड़ा की आवाज पड़ी—"वैसे बंगले से बाहर निकलने का तो तेरा इरादा होगा नहीं।"

अपने हमशक्ल को देखते हुए रतनचंद ने खुद को संभाला।

"बाहर निकलने का मेरा कोई इरादा नहीं है।"
"समझदार है। लेकिन बंगले में रहकर भी कब तक बचेगा। वो तेरे को छोड़ने वाले नहीं।"
"वो कौन?"
"जिन्होंने तेरी मौत की सुपाड़ी ली है।"
"कौन हैं वो?"
"बता दिया तो फिर बात करने का मजा ही नहीं आयेगा।"
"केकड़ा, मैं तेरे को मुंहमांगा पैसा दूंगा, उनके बारे में बताने पर, जो मेरी जान लेना चाहते हैं।"
"पैसा भी लूंगा, जल्दी क्या है। अभी तो मैं तेरे को मुफ्त में जानकारी दे रहा हूं। मुफ्त के मजे ले।"
तभी राघव आगे बढ़ा और रतनचंद के हाथ से फोन ले लिया।
"केकड़ा।"
"कौन जनाब बोल रहे हैं?" राघव के कानों में शब्द पड़े।
"राघव।"
"खूब! तुमसे मिलकर खुशी हुई, लेकिन रतनचंद को बचा पाना आसान नहीं।"
"क्यों?"
"क्योंकि उसे मारने वाला तुम तीनों का बाप है।"
"क्या मालूम हम उसके बाप निकलें।"
"हां, होने को तो कुछ भी हो सकता है। तुम तो— ।"
"मुंह खोलने का क्या लेता है?"
"अभी मुंह खोलने का मेरा कोई इरादा नहीं।"
"क्यों बेकार के चक्कर में पड़ा है, नोट गिन। हमारा दोस्त बन जा।" राघव ने शांत स्वर में कहा।
"मुझे तुम लोगों से न तो दोस्ती करनी है और न ही दुश्मनी।"
"तो फिर फोन क्यों करता है?"
"मुफ्त की खबरें दे रहा हूं। लेने में एतराज हो तो, नहीं देता।"
"नाराज मत हो, खबरें दे—मैं— ।"
तभी उधर से फोन बंद हो गया।
राघव ने मुंह बनाया और फोन कान से हटाते हुए बोला—
"फोन काट दिया गया, बात अधूरी रह गई।"

रतनचंद बार-बार धर्मा को देख रहा था, जो कि उसके चेहरे में था।
"इस तरह क्या देखता है रतनचंद?" धर्मा कह उठा—"मैं धर्मा हूं।"
"जानता हूं।" रतनचंद ने गहरी सांस ली—"कोई नहीं कह सकता कि ये मैं नहीं हूं।"
तभी राघव, धर्मा और एक्स्ट्रा से कह उठा—
"ये केकड़ा, मुझे ठीक आदमी नहीं लगता। मेरे ख्याल में कोई वजह है जो ये रतनचंद को फोन करता है।"
"कैसी वजह?"
"मालूम नहीं, लेकिन वो बिना वजह फोन नहीं करता। क्यों करता है, ये पता नहीं।" राघव ने गम्भीर स्वर में कहा।
"ये बात, किस दम पर कह रहे हो?"
"अगर उसे पैसे का लालच होता तो वो जरूर लेता। उसके बारे में बता देता जो रतनचंद के पीछे हैं। लेकिन उसकी दिलचस्पी पैसे लेने में ज़रा भी नहीं है। तभी तो सोचना पड़ रहा है कि उसकी दिलचस्पी किसी और ही बात में है।"
एक्स्ट्रा की निगाह रतनचंद पर जा टिकी।
"केकड़ा की आवाज क्या तेरे को सुनी लगती है?" एक्स्ट्रा ने पूछा।
"नहीं।"
"किसी से तगड़ा पंगा लिया है क्या तूने?"
"तगड़ा तो नहीं लिया, लेकिन काम-धंधे में नाराजगियां तो पैदा होती ही रहती हैं।"
"रतनचंद, ये मामला नाराजगी का नहीं, तगड़े पंगे का है। तो को कुछ समझ नहीं आ रहा तो हम समझने की कोशिश करेंगे।"
कुछ पलों के लिये उनके बीच चुप्पी रही।
"चल धर्मा—खड़ा हो।"
धर्मा खड़ा हुआ। उसने कमीज के बटन खोले।
राघव ने बुलेटप्रूफ शीट उसकी कमीज के भीतर छाती के साथ लगाकर रख दी और बटन बंद कर दिये। धर्मा अपने चेहरे पर लगे मास्क पर हाथ फेरता कह उठा—
"मुझे बचाने के लिये बुलेटप्रूफ नाकाफी है।"

"तेरे को समझा चुका हूं कि गोली नहीं चलेगी।"

"उस साले ने अगर चला दी तो?" धर्मा ने राघव को घूरा।

"पता नहीं, कोई सामने है भी या नहीं!" एक्स्ट्रा [illegible] बोला।

राघव, एक्स्ट्रा और धर्मा को देखकर कह उठा—

"सामने की तरफ चार खिड़कियां पड़ती हैं, जिनमें तीन मैंने बंद कर रखी हैं। अगर कोई सामने होगा तो उसकी नज़र खुली खिड़की पर होगी और—।"

"मान ले, तेरे मुताबिक उसे परेशान कर भी दिया तो क्या होगा?"

"तब वो!" राघव जहरीले स्वर में मुस्कुरा पड़ा—"कोई गलती करेगा, और हमारे हाथों में फंस जायेगा।"

"अगर वो कोई बड़ा हरामी है तो गलती नहीं करेगा। समझ जायेगा कि ये हमारी ही कोई चाल है।"

"देखते हैं।"

❑❑❑

12.30 हो रहे थे दिन के।

देवराज चौहान टैलिस्कोप पर आंखें टिकाए शांत अंदाज में कुर्सी पर बैठा था। खिड़की मात्र ढाई इंच खुली हुई थी। वहीं पर गन की नाल टिकी थी। टैलिस्कोप के सहारे देवराज चौहान को खुली खिड़की और उसके भीतर का नजारा स्पष्ट दिखाई दे रहा था। अभी तक खिड़की पर या भीतर कमरे में कोई न दिखा था।

एक तरफ प्रताप कोली कुर्सी पर आंखें बंद किए बैठा था।

कमरे में सन्नाटा छाया हुआ था।

ऑफिस का दरवाजा भीतर से बंद था।

प्रताप कोली ने एकाएक आंखें खोलीं और देवराज चौहान से कह उठा—

"सारा दिन इसी तरह बैठे-बैठे निकल जायेगा। कोई फायदा नहीं होगा।"

देवराज चौहान की मुद्रा में कोई फर्क न आया।

"तुमने कैसे सोच लिया कि रतनचंद इन हालातों में खिड़की पर आयेगा।" कोली पुनः बोला।

"क्यों नहीं आ सकता?" बोला देवराज चौहान।

"R.D.X. रतनचंद को खिड़की पर नहीं आने देंगे। तुम्हें कोई दूसरा जुगाड़ देखना चाहिये। चार दिन इस तरह बरबाद करने के बाद दूसरा जुगाड़ जो देखोगे, बेहतर है, पहले ही देख लो और वक्त बचाओ।"

"तुम अपनी जुबान बंद रखो और अगर तुम्हें कोई समस्या है तो बाहर चले जाओ।"

"मैं तो तुम्हारे भले के लिए ही कह रहा था।" प्रताप कोली ने गहरी सांस ली।

उसके बाद उन दोनों में कोई बात नहीं हुई।

देवराज चौहान टैलिस्कोप पर आंख टिकाये सब्र के साथ बैठा था।

वक्त आगे सरकता जा रहा था।

तब 12.50 बजे थे।

टैलिस्कोप के जरिये नज़र आती खिड़की पर किसी की झलक मिली।

देवराज चौहान सतर्क हो गया।

अगले ही पल खिड़की पर देवराज चौहान को रतनचंद दिखा। वो खिड़की पर आ खड़ा हुआ था। कुछ पल उसने यूं ही बाहर देखा कि उसका हाथ अपने चेहरे पर पहुंच गया।

देवराज चौहान की उंगली ट्रेगर पर कस चुकी थी।

किसी भी पल दब सकता था ट्रेगर।

आंख टैलिस्कोप पर।

तभी देखा देवराज चौहान ने, रतनचंद के हाथ की उंगलियां कान के पास से मास्क उतार रही थीं। देखते-ही-देखते रतनचंद के चेहरे पर से मास्क उतरता चला गया।

अब देवराज चौहान को धर्मा का चेहरा दिखा।

ट्रेगर पर उंगली ढीली हो गई। आंख टैलिस्कोप पर लगी रही।

फिर देवराज चौहान ने धर्मा को सिर पर पड़ी विग उतारते देखा। उसके बाद धर्मा खिड़की से हट गया। अब खिड़की पहले की तरह खाली थी।

देवराज चौहान ने टैलिस्कोप पर से आंख हटा ली। माथे पर बल आ गये थे। चेहरा परेशानी में नज़र आने लगा था। क्या हो रहा है, ये सब?

रतनचंद के चेहरे के पीछे कोई और था।

ये इसलिए कि मरे तो रतनचंद के चेहरे वाला कोई दूसरा मरे, रतनचंद नहीं।

ऐसे में उसे कैसे पता चलेगा कि जिसे वो मारने जा रहा है, वो रतनचंद है या नहीं?

ये सब R.D.X. का किया-धरा है।

अगले ही पल देवराज चौहान ने अपने चेहरे पर हाथ फेरा।

वो जो भी था, उसे खिड़की पर आकर, चेहरे पर रखा रतनचंद वाला मास्क उतारने की क्या जरूरत थी? देवराज चौहान चौंका। ये सब उसे दिखाने के लिए किया गया?

तो क्या वे लोग जानते हैं कि यहां कहीं से वो निशाना बांधे हुए है?

सामने नज़र आने वाली चार खिड़कियों में से तीन बंद और एक खुली थी। क्यों खुली रखी गई चौथी खिड़की? क्या इसी काम के लिये?

देवराज चौहान ने पुनः टैलिस्कोप पर आंख लगाई।

खिड़की खाली थी और खुली हुई थी।

ओह, इसका मतलब वे लोग जानते हैं कि सामने कोई है। खबर मिल चुकी है उन्हें और ये सब करके उन लोगों ने उसे समझाया कि उसका असली रतनचंद तक पहुंचना आसान काम नहीं। परन्तु आनन-फानन उन लोगों ने रतनचंद के चेहरे का मास्क कहां से हांसिल कर लिया—वो तो—।

देवराज चौहान की सोचें रुकीं।

कल शाम को एक आदमी कार पर गया। लिफाफे में किसी को कुछ देकर आया और आज सुबह वो फिर उसी के पास पहुंचा और लिफाफे में कुछ लेकर आया। क्या लिफाफे में रतनचंद के चेहरे का मास्क था? जिसके पास वो गया, क्या वो मास्क बनाने वाला था? देवराज चौहान के चेहरे पर विचार दौड़ लगा रहे थे।

जो भी हो, ये बात तो पक्की थी कि उन्हें मालूम है कि निशाना लेने के लिए सामने कोई है। और चेहरे पर से मास्क का उतारना, उसे दिखाने के लिए ही किया गया था कि वो ये सोचकर परेशान हो जाये कि जिसे वो गोली मारने जा रहा है,

क्या वो ही असली रतनचंद है, किसी गलत आदमी को तो गोली नहीं मार रहा?

देवराज चौहान के दांत भिंच गये।

तभी प्रताप क्रोली ने आंखें खोलीं तो देवराज चौहान को गन से हटा पाकर बोला—

"क्या हुआ?"

देवराज चौहान ने उसे देखा, फिर सिग्रेट सुलगा ली।

❑❑❑

रतनचंद का फोन बजा।

"हैलो।"

"केकड़ा।"

"तुम?" रतनचंद चौंका—"अभी तो तुमने फोन किया?"

"मैं तुम्हें बहुत अच्छी खबर देने जा रहा हूं।" केकड़ा का सरसराता स्वर कानों में पड़ा।

रतनचंद ने सामने मौजूद एक्स्ट्रा को देखा, फिर बोला—

"कैसी खबर?"

"क्या तुम ये जानना पसन्द करोगे कि इस वक्त तुम्हें निशाना लेने वाला कहां है?"

"कहां है—बताओ।" रतनचंद का चेहरा सख्त हो गया।

"जो खिड़की खुली हुई है—जहां से तुम लोगों ने चेहरे से मास्क उतारने का ड्रामा किया, उसके ठीक सामने सड़क पार, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर की इमारत पड़ती है, उसकी दूसरी मंजिल पर दायें ऑफ़िस में है वो, जिसकी खिड़की इस तरफ खुलती है।"

"पक्का?"

"सौ प्रतिशत—वहां वो गन रखे खिड़की पर देख रहा है, परन्तु तुम्हारे चेहरे वाले मास्क की मौजूदगी का एहसास पाकर वो कुछ उलझन में पड़ गया है।" केकड़ा का धीमा स्वर आया—"ये R.D.X. की ही चाल होगी कोई?"

"लगे हाथ उसका नाम भी बता दो।" रतनचंद गुर्रा उठा।

"इतनी भी जल्दी मत करो। एक-एक करके खबरें दूंगा।"

"आखिर तुम चाहते क्या हो?"

"ये भी बताऊंगा, परन्तु जब-जब वक्त आयेगा।" इसके साथ ही केकड़ा ने फोन काट दिया था।

रतनचंद, केकड़ा की सारी बात एक्स्ट्रा को बताने लगा।

❑❑❑

"थक गये हो तो तुम्हारी जगह मैं ले लेता हूं।" प्रताप कोली की निगाह देवराज चौहान पर थी।

देवराज चौहान ने कश लिया और बोला—

"मेरे ख्याल में उन लोगों को पता है कि सामने से उनका निशाना बांधा जा रहा है।"

"क्या?" प्रताप कोली चौंका—"ये—ये कैसे हो सकता है?"

"वैसे ही हो सकता है, जैसे पहले हुआ है। जैसे पहले हमारी खबरें उन तक गई हैं।" देवराज चौहान कठोर स्वर में बोला।

"ओह, कहीं दिनेश तो भेदिया नहीं है?"

"तुम भी हो सकते हो।"

"लेकिन हुआ क्या?"

देवराज चौहान ने खिड़की पर हुई सारी हरकत बताई।

सुनकर कुछ कहते न बना प्रताप कोली से।

"रतनचंद की तरफ से ये हरकत R.D.X ने की है। ये बताने के लिए कि हम जिसका निशाना लेने जा रहे हैं, क्या पता वो रतनचंद न हो! रतनचंद के धोखे में हम किसी और को तो गोली नहीं मार रहे हैं!"

प्रताप कोली का चेहरा सख्त हो उठा।

"तुमने ये बात किसे बताई कि हम यहां से निशाना बांधने जा रहे हैं?" देवराज चौहान ने पूछा।

"शोरी साहब को बताई। उनसे ये बात हरीश और अवतार को पता चली होगी।" प्रताप कोली ने व्याकुलता से कहा—"पता नहीं ये क्या हो रहा है? मुझे तो अब अपने पर भी शक होने लगा है। भला ये बात R.D.X. को कैसे पता चल गई कि हम यहां हैं?"

"तुम में से ही ये बात बाहर निकली है।" देवराज चौहान ने सख्त स्वर में कहा।

प्रताप कोली से कुछ कहते न बना।

"मैं सोहनलाल-जगमोहन के पास जा रहा हूं, अभी आया।" कहकर देवराज चौहान बाहर निकल गया।

प्रताप कोली परेशान सा खड़ा रहा। वो समझ नहीं पा रहा

था कि गड़बड़ कहां हो रही है। वो आगे बढ़ा और देवराज चौहान वाली कुर्सी पर जा बैठा। सामने सैट कर रखी गन के टैलिस्कोप पर आंख टिका दी। उसे स्पष्ट तौर पर खिड़की नज़र आने लगी, जो कि इस वक्त खाली थी।

❑❑❑

देवराज चौहान, जगमोहन और सोहनलाल के पास पहुंचा।

"तुम यहां?" उसे देखते ही जगमोहन अजीब से स्वर में कह उठा।

"उन लोगों को हमारी सारी खबरें मिल रही हैं।" देवराज चौहान ने कहा!

"कितनी अजीब बात है?" जगमोहन के होंठों से निकला।

"मेरे ख्याल में हमें नागेश शोरी के आदमियों को दूर रखना चाहिये।" सोहनलाल बोला।

"अब ऐसा ही होगा।"

"क्या हुआ?"

देवराज चौहान ने सारी बात बताई।

सुनकर जगमोहन और सोहनलाल, देवराज चौहान को देखने लगे।

"जब तक उन्हें हमारी हरकतों की जानकारी रहेगी, हम सफल नहीं हो सकते।" देवराज चौहान ने कहा।

"उन लोगों को साथ में चिपकाए रखने की जरूरत क्या है?"

"अब वो हमारे साथ नहीं हैं।"

सोहनलाल गोली वाली सिग्रेट सुलगाते कह उठा—

"इतनी जल्दी R.D.X. ने रतनचंद का मास्क कहां से हासिल कर लिया?"

"वहां से, जहां कल शाम को बंगले से निकलकर, गोरेगांव तक आदमी गया था और आज सुबह भी गया।"

"वहां से?" सोहनलाल ने अजीब से स्वर में कहा।

"मेरे ख्याल से गोरेगांव वाला आदमी फेस-मास्क बनाता होगा।"

"मुझे विश्वास नहीं आता।"

"R.D.X. के आने के बाद, बंगले से निकला आदमी वहीं आया गया। इसलिए मुझे पूरा विश्वास है कि पहले वो आदमी

रतनचंद की तस्वीर उसे देने गया होगा और सुबह मास्क लेने गया होगा। ये भी हो सकता है कि मेरा ख्याल गलत हो। तुम मेरे साथ चलो, उस आदमी को टटोलना है।"

"ठीक है।"

"तुम बंगले की निगरानी करोगे।" देवराज चौहान ने जगमोहन से कहा।

जगमोहन ने सिर हिलाकर कहा–

"प्रताप कोली कहां है?"

"ऊपर ऑफिस में ही। अब वो जगह हमारे लिये बेकार हो चुकी है। उसे खाली करना होगा, क्योंकि R.D.X. जानते हैं कि हम वहां पर हैं। मैं अभी प्रताप कोली को वापस भेज कर आता हूं।"

"तो काम किसी दूसरे ढंग से करना होगा?" जगमोहन ने पूछा।

"हां, मुझे काम से ज्यादा इस बात को जानने में दिलचस्पी है कि कौन, रतनचंद तक हमारी खबरें पहुंचा रहा है।"

"ये कैसे जाना जायेगा?"

"सोचते हैं, कोई रास्ता तो निकलेगा। सिर्फ इसी वजह से हमें नाकामी मिल रही है, वरना ये काम कुछ भी नहीं था। आज खिड़की पर जो भी हुआ, उससे R.D.X. के बारे में ये साफ हो जाता है कि उनका मुकाबला करना आसान नहीं। उन्होंने खिड़की पर हमें मास्क दिखा कर ये समझाने की चेष्टा की है कि रतनचंद तक पहुंचने के लिए, पहले हमें उनका मुकाबला करना होगा। इस हरकत से हम परेशान तो हो ही गये हैं। अगर रतनचंद का निशाना ले भी लिया जाये तो क्या पता वो नकली हो!" कहने के साथ ही देवराज चौहान इमारत की तरफ बढ़ा चला गया।

❑❑❑

प्रताप कोली गन के टैलिस्कोप पर आंख लगाये, खिड़की का स्पष्ट नजारा कर रहा था। जब से देवराज चौहान गया था, कोली इसी मुद्रा में था। उसके मन में आ रहा था कि रतनचंद अगर नज़र आ जाये तो वो उड़ा देगा उसे।

परन्तु खिड़की खाली ही रही है।

कोई न दिखा।

लेकिन प्रताप कोली टिके रहने का इरादा कर चुका था।

तभी उसके कानों में कदमों की आहट पड़ी। कोई भीतर आया था।

प्रताप कोली की आंख टैलिस्कोप पर ही रही।

कदमों की आहटें उसके पास आकर रुक गईं।

"अभी तक खिड़की पर कोई नज़र नहीं आया।" टैलिस्कोप पर आंख टिकाये प्रताप कोली बोला–"तुम आराम करो। ये ड्यूटी मैं संभाल लेता हूं। रतनचंद तो क्या R.D.X. में भी कोई खिड़की पर दिखा तो मैं आज उसे ही उड़ा दूंगा।"

"थक तो नहीं जाओगे?"

"नहीं, मैं तो रात तक....।" एकाएक कोली कहते-कहते ठिठका।

मस्तिष्क में बिजली कौंधी।

ये आवाज देवराज चौहान की नहीं थी।

उसके लिये नई आवाज थी ये।

प्रताप कोली ने गन छोड़ी और फुर्ती से सिर घुमाया।

एक्स्ट्रा खड़ा था उसके पीछे।

"तुम–तुम–?" अगले ही पल प्रताप कोली की आंखें फैल गईं–"एक्स्ट्रा?"

"जानते हो मुझे?" एक्स्ट्रा जहरीले स्वर में बोला।

"हां।" प्रताप कोली की हालत देखने लायक थी।

"फिर भी मुझसे पंगा लिया।"

प्रताप कोली को जैसे होश आया–उसने फुर्ती से अपनी जेब की तरफ हाथ बढ़ाया।

परन्तु रिवॉल्वर न निकाल पाया वो।

एक्स्ट्रा के हाथ में पलक झपकते ही आठ इंच के पतले, लम्बे फल का चाकू चमका और देखते-ही-देखते प्रताप कोली की छाती में धंसता चला गया।

प्रताप कोली की आंखें फैलती चली गईं।

"लोग जानते भी हैं!" एक्स्ट्रा सर्द स्वर में बोला–"फिर भी R.D.X. से पंगा लेते हैं।" कहने के साथ ही एक्स्ट्रा ने उसकी छाती में धंसा चाकू बाहर खींचा और अगले ही पल कोली का गला रेत दिया।

प्रताप कोली के शरीर को जोरदार झटका लगा और कुर्सी

पर बैठे-ही-बैठे गर्दन उसकी एक तरफ लुढ़क गई। छाती से भी खून निकल रहा था और गले से बहते खून ने, उसका सारा शरीर रंगना शुरू कर दिया था।

एक्स्ट्रा ने पतले, लम्बे फल वाले चाकू को आराम से प्रताप कोली की कमीज से साफ किया और उसे वापस अपने कपड़ों में छिपा लिया। उसके बाद उसने कमरे में नज़र दौड़ाई।

यहां एक्स्ट्रा के काम का कुछ नहीं था।

एक्स्ट्रा आगे बढ़ा और गन को उठाकर उसके जोड़ खोलते हुए उसके हिस्सों को अलग करने लगा। दो मिनट में ही गन कई हिस्सों में सामने पड़ी थी। एक्स्ट्रा ने एक तरफ रखा एयर बैग उठाया और गन के सारे टुकड़े समेट कर बैग में डाले, फिर बैग कंधे पर लटकाए बाहर निकलता चला गया।

एक्स्ट्रा सामने राहदारी में शांत अंदाज से आगे बढ़ता चला गया। कुछ आगे जाकर वो नीचे जाने वाली सीढ़ियां उतरने लगा। आधी सीढ़ियां ही उतरा होगा कि नीचे से आते देवराज चौहान से उसका कंधा टकराया।

"माफ करना भाई जी।" एक्स्ट्रा ने फौरन मुस्कुरा कर कहा।

देवराज चौहान ने उसे देखा और सिर हिला दिया।

एक्स्ट्रा नीचे उतरता चला गया।

परन्तु देवराज चौहान वहीं खड़ा उसे जाता देखता रहा। क्योंकि उसके कंधे पर जो बैग लटका था, वैसे ही बैग में प्रताप कोली गन डालकर लाया था। अगले ही पल देवराज चौहान ने सिर को झटका दिया कि ऐसे तो कितने ही बैग होंगे—फिर देवराज चौहान सीढ़ियों द्वारा पुनः ऊपर चढ़ने लगा।

❑❑❑

ऑफिस के भीतर कदम रखते ही, देवराज चौहान के कदम ठिठक गये। दवाजा खुला हुआ था। सामने ही खिड़की थी—जहां रखी गन गायब थी। कुर्सी पर प्रताप कोली बैठा हुआ था, परन्तु उसकी गर्दन आगे झुकी हुई थी। कुर्सी के नीचे खून-ही-खून पड़ा था। रह-रह कर एक-एक बूंद और टपक उठता था वहां।

देवराज चौहान फौरन आगे बढ़ा और प्रताप कोली का हाल देखा।

अगले ही पल देवराज चौहान के चेहरे पर भूचाल के भाव

नाच उठे। आंखों के सामने सीढ़ियों से उतरते एक्स्ट्रा का चेहरा चमका और उसकी निगाह वहां गई जहां बैग पड़ा था।

बैग वहां नहीं था।

स्पष्ट था कि उस वक्त जो सीढ़ियों से उतर कर जा रहा था, जिसके कंधे पर बैग लटका था, वो तब प्रताप कोली की हत्या करके जा रहा था। वो जो कोई भी था, बंगले से ही निकला था—तो जगमोहन, सोहनलाल ने उसे खबर क्यों न दी?

यहां अब देवराज चौहान के रुकने की कोई वजह नहीं रही थी।

देवराज चौहान बाहर निकला और सीधा जगमोहन-सोहनलाल के पास पहुंचा।

"कोई बंगले से निकला?" देवराज चौहान ने पूछा।

"निकला तो नहीं।" जगमोहन बोला—"अभी-अभी बंगले में गया है।"

"और उसके कंधे पर बैग था।"

जगमोहन चौंका।

"तुम्हें कैसे मालूम?"

"तुम दोनों चूक गये। वो आदमी बंगले से ही निकला था, परन्तु उसे निकलते देख न सके।" देवराज चौहान ने कठोर स्वर में कहा—"मैं यहां आया और तब वो वहां पहुंचा, जहां से निशाना लिया जाना था। वहां प्रताप कोली था। उसने प्रताप कोली की बेरहमी से हत्या की और गन को बैग में लेकर निकल गया।"

"ओह!"

"सीढ़ियां उतरते समय उसका कंधा मेरे से टकराया। तब मैं नहीं जानता था कि वो कोली की हत्या करके आ रहा है।"

"बुरा हुआ।" जगमोहन कह उठा—"R.D.X. वास्तव में खतरनाक लोग हैं।"

"उनके पास हमारी हर हरकत की खबर है।" सोहनलाल बोला।

"लेकिन अब नहीं होगी।" देवराज चौहान शब्दों को चबाकर कह उठा—"क्योंकि अब उन लोगों का मेरे पास कोई काम नहीं होगा। मैं सोहनलाल के साथ जा रहा हूं, तुम यहीं रहकर बंगले पर नज़र रखो। सावधान रहना, हो सकता है कि

वो तुम लोगों के बारे में भी जान चुके हों कि यहां रहकर बंगले पर नज़र रख रहे हो।"

जगमोहन ने सिर हिलाया।

"दिनेश चुरू जहां पर बैठा है, उसे प्रताप कोली की हत्या के बारे में बता दो। शायद वो कोली की लाश ले आये।" देवराज चौहान ने कहा और सोहनलाल के साथ सामने खड़ी कार की तरफ बढ़ गया।

❑❑❑

एक्स्ट्रा ने कमरे में प्रवेश किया और धर्मा-राघव को देखा।

"तुम कहां थे?" धर्मा उसके कंधे पर लटके बैग को देखता कह उठा।

"काम निपट गया।" एक्स्ट्रा ने कहा और कंधे से बैग उतारकर टेबल पर रखा।

"ये क्या है?" राघव ने पूछा।

"किस काम के बारे में तुम कह रहे हो?" धर्मा के माथे पर बल पड़े।

"जिस काम के लिए हम यहां हैं।" बैठता हुआ एक्स्ट्रा कह उठा—"जो रतनचंद को मारना चाहता था, वो सामने वाली इमारत के, एक ऑफिस में खिड़की पर था। इस तरफ गन लगा रखी थी। पता चलते ही मैंने वहां जाकर उसे ढूंढा और उसे खत्म करके, उनकी गन निशानी के तौर पर ले आया।"

धर्मा एक्स्ट्रा को देखने लगा।

राघव ने तुरन्त बैग खोला और गन के टुकड़े बाहर निकालने लगा।

"तुम्हें कैसे पता कि वो सामने वाली इमारत में था?"

"केकड़ा का फोन आया था, रतनचंद को उसने बताया था। तब मैं पास ही था।" एक्स्ट्रा मुस्कुराया।

राघव गन के लाये टुकड़े निकाल कर बाहर रख चुका था।

"मैं तुम्हारी बात पर अविश्वास नहीं कर रहा—लेकिन एकदम यकीन करना भी कठिन है कि रतनचंद को मारने वाला नहीं रहा।"

"चिन्ता मत करो—धीरे-धीरे यकीन आ जायेगा।" एक्स्ट्रा मुस्कुराया।

राघव ने गन के टुकड़ों से नज़र हटाकर एक्स्ट्रा से कहा—"तुम्हें वहां अकेले नहीं जाना चाहिये था।"

"जल्दबाजी करना मेरी पुरानी आदत है।"

"कभी फंसोगे।"

"तेरे को क्या लगता है राघव कि रतनचंद को मारने वाला नहीं रहा—मर गया होगा क्या?"

"अपना एक्स्ट्रा गलत तो नहीं बोलेगा, कह रहा है तो मर ही गया होगा।"

"लेकिन, खतरा अभी गया तो नहीं।" धर्मा बोला।

"वो कैसे?"

"जिसने उसे रतनचंद को मारने पर लगाया होगा, वो अब किसी और को रतनचंद पर लगायेगा।"

"ये बात ठीक कही, रतनचंद की मुसीबत अपनी जगह पर है।"

"रतनचंद से बात करते हैं—देखते हैं कि वो क्या कहता है?"

R.D.X. रतनचंद के पास उसके कमरे में पहुंचे।

"रतनचंद!" राघव बोला—"एक्स्ट्रा ने उसे साफ कर दिया है, जो तेरे को गोली मारना चाहता था।"

"क्या?" रतनचंद के चेहरे पर अजीब से भाव उभरे।

"एक्स्ट्रा से पूछ ले रतनचंद।"

रतनचंद ने एक्स्ट्रा को देखा तो एक्स्ट्रा मुस्कुराया बोला—"केकड़ा ने सही खबर दी थी। वो मिला और मार दिया उसे मैंने।"

"तुम्हें कैसे मालूम कि वो, वो ही था?"

"उसके पास जबर्दस्त गन थी और वो उधर वाली खिड़की को निशाने पर रखे था। पीछे से साले की गर्दन पकड़ ली मैंने।"

रतनचंद अविश्वास भरी निगाहों से एक्स्ट्रा को देखता रहा।

"क्या देखता है?"

"मैं यकीन नहीं कर सकता कि तुम गये और उसे मार कर आ गये।"

"क्यों नहीं होता यकीन?"

"नहीं होता।"

"एक मिनट के लिए मान लो कि वो मर गया है, तब....?" धर्मा बोला।

"वो–वो जो मुझे मरा देखना चाहता है, वो किसी और को मेरे पीछे लगा देगा।"

"अब रतनचंद, तेरे को जिन्दगी भर बचाने का ठेका तो लिया नहीं हमने।"

"जिन्दगी भर छोड़ो, कम-से-कम ये मामला तो निपटा दो।" रतनचंद ने कहा–"उसे ढूंढो, जो मुझे मरा देखना चाहता है, तुम्हें उसको मारना नहीं चाहिये था। उससे पूछते कि किसने उसे मेरे पीछे लगाया है?"

"रतनचंद ठीक कहता है। तुमने जल्दी कर दी एक्स्ट्रा।"

"शायद। तब जाने क्यों, मुझे गुस्सा आ गया था।" एक्स्ट्रा मुस्कुरा पड़ा।

"तो अब क्या किया जाये?" राघव कह उठा।

"रतनचंद की समस्या तो अपनी जगह है।"

"वो ही तो–मैं....।"

तभी रतनचंद का फोन बजा।

"हैलो!" रतनचंद कालिया ने फोन कान से लगाया।

"मार दिया उसे।" शब्दों के साथ ही केकड़ा हौले से हंसा।

"केकड़ा!" रतनचंद के होठों से निकला–"तुम–तुम किसके मरने की बात कर रहे हो?"

"जो सामने इमारत में ऑफिस की खिड़की पर गन लिए बैठा था।"

"सुना तो है कि उसे मार दिया।"

"यानि कि अब तुम खतरे से मुक्त हो–।"

"इस वक्त तो मुक्त ही हूं, परन्तु आगे....।"

"तुम भारी खतरे में हो रतनचंद। मैंने तुम्हें पहले ही कहा था कि अन्डरवर्ल्ड की तगड़ी हस्ती ने तुम्हारी सुपाड़ी ली है। वो वो तुम्हें मार के ही रहेगा। तुमने कैसे सोच लिया कि वो मर गया?"

रतनचंद को झटका लगा। उससे कुछ कहते न बना।

R.D.X. की निगाह उस पर थी।

"कौन गया था वहां?"

"एक्स्ट्रा।"

"बहुत किस्मत वाला निकला एक्स्ट्रा!" केकड़ा का व्यंग भरा स्वर सुनाई दिया।

"क्यों?"

"वो वहां से पांच मिनट के लिए ही बाहर गया था और तभी एक्स्ट्रा वहां आ पहुंचा और उसके बेकार से साथी को मार कर वापस आ गया। सोचा कि उसे मार दिया। अगर उससे वहां एक्स्ट्रा टकरा जाता तो एक्स्ट्रा तो गया था।"

रतनचंद ने गहरी सांस ली और फोन एक्स्ट्रा की तरफ बढ़ाता कह उठा–

"लो, अपनी तारीफ सुन लो–।"

एक्स्ट्रा ने फोन कान से लगाकर कहा–

"क्या कह रहे हो केकड़ा? मैं एक्स्ट्रा हूं।"

"किस्मत वाले हो जो बच गये। उसके बेवकूफ से आदमी को मार कर तुमने सोच लिया कि जंग जीत ली?"

"तो क्या वो–वो नहीं था?" एक्स्ट्रा चौंका।

"तुम्हारा बाप है वो। अगर वो तुम्हें वहां मिल जाता तो इस वक्त तुम जिन्दा न होते।"

एक्स्ट्रा के दांत भिंच गये। आंखों में भयानक चमक उभरी।

"मैं अपने बाप से मिलना चाहता हूं, बताओ वो किधर मिलेगा?" एक्स्ट्रा के होठों से फुंफकार निकली।

"इसी तरह बेवकूफी करते रहे तो तुम्हारा बाप खुद ही तुम्हारे गले आ मिलेगा।" केकड़ा कहने के साथ ही हंसा।

"तुम मुझे–।"

उधर से केकड़ा ने फोन बंद कर दिया था।

एक्स्ट्रा दांत भींच कर राघव-धर्मा से बोला–

"वो जिन्दा है। केकड़ा कहता है कि मैं उसके आदमी को मार आया हूं।"

"तो तब वो कहां था?" राघव के होठों से निकला।

"केकड़ा कहता है कि।" रतनचंद बोला–"वो उन्हीं पांच मिनट के लिए बाहर गया था, जब एक्स्ट्रा वहां पहुंचा।"

"मुझे समझ नहीं आता कि केकड़ा आखिर है कौन, उसे फौरन ये सब खबरें कैसे मिल जाती हैं....?" धर्मा ने कहना चाहा।

"मेरे साथ आ धर्मा–।"

"किधर?"

"वापस वहीं, उस आदमी की लाश से पता चल सकता है कि वो किसके लिये काम करता था।"

"लाश से कैसे पता....?"

"मेरा मतलब है कि उसकी हत्या की खबर पुलिस को पहुंचेगी। पुलिस उसके बारे में तफतीश करेगी कि वो कौन था। हमें उसके बारे में पता चल गया कि वो कौन था—तो हम पता कर लेंगे कि वो किसके लिए काम करता था।"

"गुड आईडिया!" धर्मा कह उठा—"उसके लिए वापस, वहां जाने की क्या जरूरत है?"

"ये देखने कि उसकी हत्या की खबर फैली कि नहीं?"

"वहां, वो भी मिल सकता है।"

"हम दो हैं, मिला तो मरेगा—।" एक्स्ट्रा ने दरिन्दगी भरे स्वर में कहा—

"मैं साथ चलूं?" बोला राघव।

"नहीं, तेरा रतनचंद के साथ रहना जरूरी है।"

❑❑❑

एक्स्ट्रा और धर्मा वापस उसी इमारत के उसी ऑफिस में पहुंचे।

वहां कोई शोर-शराबा नहीं था। सब ठीक नजर आ रहा था। वो आफिस खाली पड़ा था। वो कुर्सी भी खाली थी, जिस पर प्रताप कोली की लाश पड़ी थी। कुर्सी के नीचे अवश्य खून का छोटा सा तालाब दिख रहा था।

"वो लोग सतर्क मालूम होते हैं।" धर्मा बोला—"लाश गायब हो जाने से ये पहचान नहीं हो सकेगी कि यहां पर कौन लोग थे?"

"निकल ले यहां से—।"

एक्स्ट्रा कह उठा।

एक्स्ट्रा और धर्मा पलट कर बाहर निकल गये।

इस बात से वे अंजान थे कि जगमोहन उनके पीछे है और उन पर नज़र रख रहा है।

दोनों नीचे जाने वाली सीढ़ियों के पास पहुंचे—वहां जगमोहन मिला।

"भाई साहब, यहां वर्मा साहब का आफिस किधर है?"

"क्या पता, हम तो सचदेवा साहब से मिलकर आ रहे हैं।" धर्मा ने लापरवाही से कहा।

दोनों सीढ़ियां उतरते चले गये।

जगमोहन भी वापस सीढ़ियां उतरने लगा—निगाह दोनों की पीठ पर थी।

❑❑❑

"वो वाला फ्लैट है, पीला दरवाजा।" सोहनलाल ने देवराज चौहान से कहा।

दोनों फ्लैट के सामने की सड़क पर, कार में मौजूद थे।

"आओ...।" देवराज चौहान दरवाजा खोलकर बाहर निकलता हुआ बोला।

"कुछ करना है क्या?" सोहनलाल भी बाहर निकला।

"हां।" देवराज चौहान ने स्थिर लहजे में कहा—"मेरा ख्याल है कि यहां रहने वाला आदमी, चेहरे के मास्क बनाता है। रतनचंद के बंगले से निकल कर जो आदमी कल शाम और आज सुबह यहां आया, वो इसी सिलसिले में आया हो सकता है।"

"तो करना क्या है उसका?"

"दुश्मन को उसी चाल पर, उसे झटका देना है।" कहते हुए देवराज चौहान आगे बढ़ गया।

सोहनलाल नहीं समझा कि देवराज चौहान क्या करना चाहता है। वो भी उसके पीछे हो गया।

दरवाजे पर पहुंचकर देवराज चौहान ने कॉलबेल बजाई।

भीतर से कदमों की आहटें उठीं, फिर दरवाजा खोला गया।

दरवाजा खोलने वाला पैंतालिस बरस का आदमी था।

"कहिये?"

देवराज चौहान ने सोहनलाल की तरफ देखा।

यही है, वाले अन्दाज में सोहनलाल ने गर्दन हिला दी।

देवराज चौहान की निगाह उस आदमी पर जा टिकी।

"भीतर चलो, तुमसे बात करनी है।" देवराज चौहान ने कहा।

"मैं आप दोनों को नहीं जानता।" वो बोला।

"जान जाओगे, पहले भीतर—।"

"नहीं, पहले मुझे मालूम हो कि आप लोग कौन हैं और क्या चाहते हैं।" वो कह उठा।

"R.D.X. ने भेजा है।" कहते हुए देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा।
"ओह, पहले क्यों नहीं बताया।" उसके होंठों से निकला और पीछे हटा—"आओ।"
देवराज चौहान और सोहनलाल भीतर आ गये।
ये कमरा साधारण सा ड्राईंगरूम था।
"बैठो।" वो बोला।
"तुम्हारा नाम क्या है?" देवराज चौहान ने पूछा।
सोहनलाल आगे बढ़कर, सोफा चेयर पर जा बैठा था।
"R.D.X. ने नहीं बताया क्या—क्या यूं ही मुझ तक आ गये?" वो बोला।
"R.D.X. ने बताया है, तभी तो पूछ रहा हूं, ताकि मुझे तसल्ली हो कि मैं ठीक आदमी से बात कर रहा हूं।"
"जगजीत।"
"ठीक है।" देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई—"वो काम फिर करना है, जो अभी R.D.X. के लिये किया है।"
"मॉस्क।" जगजीत के होठों से निकला।
"हां।" देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।
"पहले वाले का क्या हुआ?" जगजीत ने अजीब से स्वर में पूछा।
"खो गया वो।"
"क्या बेवकूफी है!" जगजीत मुंह बनाकर बोला और दूसरे कमरे में चला गया। तुरन्त ही वापस आया। हाथ में दो छोटी तस्वीरें थीं।
"इसी के चेहरे का मॉस्क बनवाना है?"
देवराज चौहान ने पहचाना कि वो रतनचंद की तस्वीरें थीं।
"हां।"
"कल सुबह आ जाना। तैयार मिलेगा। R.D.X. से कहना कि रुपये दो लाख ही लूंगा।" जगजीत ने कहा।
"जब मर्जी हो बनाओ—लेकिन मैं लेकर ही जाऊंगा। दो लाख रुपये तुम्हें मिल जायेंगे।"
"मुझे इसके लिए कम से कम बारह घंटे चाहिये। मॉस्क के लिए सामान तैयार करना....।"
"कोई बात नहीं। मैं यहीं रहूंगा।"

"तुम्हारे यहां रहने से मुझे परेशानी होगी।"
"परेशानी तुम्हें उठानी होगी। मैं जाने वाला नहीं।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।
"ये क्या बात हुई?" जगजीत का स्वर उखड़ गया—"मुझे काम के लिय एकांत चाहिये—मैं—।"
"मैं तुमसे बात नहीं करूंगा।"
"लेकिन मेरे सिर पर तो सवार रहोगे।" जगजीत सिंह तीखे स्वर में बोला।
दोनों कुछ पल एक-दूसरे को देखते रहे।
सोहनलाल आराम से सोफे पर बैठा था।
"क्या बात है?" जगजीत सिंह ने होंठ सिकोड़ कर कहा—"तुम मेरे से चिपके क्यों रहना चाहते हो?"
"अगर मुझे R.D.X. ने ऐसा करने को कहा हो?"
"वो ऐसा नहीं कह सकते।"
"क्यों?"
"क्योंकि वो अच्छी तरह जानते हैं कि मुझे अकेले रहकर काम करने की आदत है।" जगजीत ने कहा।
देवराज चौहान ने जेब से रिवॉल्वर निकाली और उसकी तरफ कर दी।
"ये क्या?" जगजीत के होठों से निकला।
"रिवॉल्वर।"
जगजीत की आंखें सिकुड़ीं और वो अजीब से स्वर गें कह उठा—
"तुम्हें R.D.X. ने नहीं भेजा?"
"नहीं।" देवराज चौहान ने इन्कार में सिर हिलाया।
जगजीत के होंठ भिंच गये।
"क्या चाहते हो?"
"वो ही मॉस्क बनवाना, जो R.D.X. ने बनवाया है।"
"क्यों?"
"R.D.X. मेरे और मेरे शिकार के बीच आ खड़े हुए हैं। उन्हें समझाना है कुछ—।"
"वो तीनों बहुत खतरनाक हैं।" जगजीत ने कहा—"उनके चक्कर में ना ही पड़ो तो बेहतर है।"

देवराज चौहान मुस्कुराया।
"तुम्हारा काम हो जायेगा। कल सुबह मॉस्क—।"
"मैं यहीं रहूंगा।"
"तुम मेरे साथ चिपके क्यों रहना चाहते हो?"
"ताकि ये बात R.D.X. तक न पहुंचे कि मैंने रतनचंद के चेहरे का मॉस्क बनवा लिया है। तुम उन्हें बता सकते हो।"
"मैं उन्हें नहीं बताऊंगा।"
"मैं तुम पर भरोसा नहीं कर सकता।"
"तुम हो कौन?" जगजीत ने निगाह देवराज चौहान के चेहरे पर टिक गई थी।
"देवराज चौहान।"
"कौन देवराज चौहान?"
"डकैती मास्टर देवराज चौहान?"
"ओह, वो तुम हो।" जगजीत चौंका।
"हां, मैं ही हूं।"
"विश्वास नहीं आता। तुम डकैती मास्टर—शायद तुम ही देवराज चौहान हो। एक बार मैंने तुम्हारी तस्वीर देखी थी।"
"अखबार में छपी तस्वीर।"
"हां—परन्तु वो ज्यादा स्पष्ट नहीं थी।"
देवराज चौहान रिवॉल्वर उसकी तरफ किए खड़ा रहा।
"रिवॉल्वर जेब में रख लो। मैं तुम्हारा काम कर दूंगा। लेकिन दो लाख लूंगा।"
"दो लाख हाथों-हाथ मिलेंगे। परन्तु तुमने कोई चालाकी की तो—।"
"मैं ईमानदारी से चलूंगा।"
देवराज चौहान ने रिवॉल्वर वापस जेब में रखी।
"R.D.X. को पता है कि उन्होंने तुमसे पंगा लिया है?" जगजीत ने पूछा।
"शायद नहीं।"
"वो तीनों बहुत खतरनाक हैं। सावधान रहना।"
"ये कहकर तुम साबित करना चाहते हो कि तुम मेरी तरफ हो?"

"नहीं, ऐसा मेरा इरादा कोई नहीं। उन्हें पुराना जानता हूं, ये जुदा बात है, और तुमसे मेरी कोई दुश्मनी नहीं।"
"मेरा काम शुरू करो।"
"मामला क्या है?"
"मैं किसी का निशाना लेना चाहता हूं और R.D.X. उसे बचाने आ गये।" देवराज चौहान ने कहा।
"वे तुम्हारा नाम जान जायेंगे तो, इससे तुम्हें क्या डर लगता है?"
"मेरा नाम जानते ही वे जरूरत से ज्यादा ही सतर्क हो जायेंगे और मेरे लिये दिक्कत बढ़ सकती है और मैं नहीं चाहता कि ऐसा हो।"
जगजीत चुप रहा।
"कुछ और पूछना है तुमने?"
"नहीं।"
"मेरा काम कब शुरू कर रहे हो?"
"अभी।"
❑❑❑
"लाश गायब है वहां से?" राघव दोनों को वापस आया देखकर कह उठा।
"हां।" धर्मा मुंह बनाकर बोला।
"इसका मतलब केकड़ा ठीक कह रहा था कि असल को नहीं, उसके प्यादे को मारा गया है।" राघव बोला—"उनकी इस हरकत से समझा जा सकता है कि हमारे सामने जो भी है, वो कम नहीं।"
"केकड़ा तो इस बात को शुरू से ही कह रहा है।" एक्स्ट्रा ने कहा।
"मुझे नहीं लगता कि अब रतनचंद को मारने वाला वहां दोबारा आयेगा।" राघव कह उठा।
"कुछ नहीं कहा जा सकता।"
"ये साला केकड़ा हमें उसके बारे में बता क्यों नहीं रहा। हरामी हमसे खेल खेल रहा है। जिसने रतनचंद की हत्या की सुपाड़ी दी है, और जिसने ली है, दोनों के बारे में ही हमें नहीं बता रहा। सिर्फ बीच की खबरें बताता रहता है।"
"केकड़ा चाहता क्या है?"

"ये ही तो अभी तक हमें समझ नहीं आ रहा।"
कुछ पल उनके बीच चुप्पी रही।
"अब वो जो भी है, क्या करेगा?" राघव ने दोनों को देखा।
"रतनचंद को मारेगा और क्या करेगा!"
"परन्तु कैसे—रतनचंद तो हमारी आड़ में मौजूद है।" राघव बोला।
"मेरे ख्याल में अब वो कुछ नया करेगा।" एक्स्ट्रा कह उठा।
"नया—वो कैसे?"
एक्स्ट्रा सोच भरे स्वर में कह उठा—
"मैंने उसके आदमी की हत्या की है—वो पहले से ही हमारे बारे जानता होगा या जान गया होगा कि हम रतनचंद को सुरक्षा दे रहे हैं।"
"शायद उसे इस बारे में एहसास हो गया हो कि हमारी वजह से उसकी राह कठिन हो गई है।"
"तुम्हारा मतलब है कि वो हम पर भी वार कर सकता है?"
"क्यों नहीं कर सकता? मैंने उसके आदमी को मारा है। सही बात तो ये है कि एक-दूसरे की हत्या का रास्ता तो मैंने ही खोला है, अब बात रतनचंद की नहीं रही, मामला उसका और हमारा हो गया है।"
"ये तुम कह रहे हो, क्या पता वो ऐसा सोचता है या नहीं!"
"वो ऐसा क्यों नहीं सोचेगा?"
तीनों एक-दूसरे को देखने लगे। धर्मा बोला—
"हमें सतर्क रहना होगा। वो हम पर भी वार कर सकता है।"
"लेकिन हम रतनचंद को लिए कब तक इस तरह बंगले में बैठे रहेंगे? सामने जो कोई भी है, उसे खत्म करना ही होगा।"
"ये तभी हो सकता है, जब उसके बारे में पता चले कि वो कौन....।"
तभी रतनचंद कालिया ने भीतर कदम रखा।
"क्या हो रहा है?" रतनचंद बोला।
"रतनचंद!" धर्मा कह उठा—"अब की बार केकड़ा का फोन आये तो उसे बड़ी रकम ऑफर करो। हमारे लिये ये जानना बहुत जरूरी है कि कौन तुम्हारी जान के पीछे पड़ा है, जब तक उसके बारे में नहीं जानेंगे, तब तक हम कुछ नहीं कर सकते।"

"कोशिश करूंगा।" रतनचंद ने गम्भीर स्वर में कहा।
"कोशिश नहीं, ये जरूरी है।"
रतनचंद सिर हिलाकर रह गया। फिर बोला—
"कल मेरे साले की शादी है।"
"साले की शादी?" एक्स्ट्रा के होंठों से निकला।
"मुझे शादी में जाना होगा।"
"जरूरी है?"
"जरूरी ही समझो।" रतनचंद ने कहा—"अब ये बात तुमने देखनी है कि कोई मुझे गोली न मार दे।"
"चिन्ता मत करो, ये ही तो देख रहे हैं। बता देना हमें, कि कल कब जाना है?"
रतनचंद वहां से चला गया।
"हमें सतर्क रहना होगा। कल रतनचंद पर हमला हो सकता है।" राघव ने गम्भीर स्वर में कहा।

❑❑❑

देवराज चौहान ने जगमोहन को फोन किया।
"वहां क्या हो रहा है?" पूछा देवराज चौहान ने।
"सब ठीक है, तुम्हारे जाने के बाद, बंगले से दो आदमी निकले और, वहीं पर उस ऑफिस में गये, जहां तुम और कोली टिके थे।"
"फिर?" देवराज चौहान के होंठ गोल हो गये।
"वहां किसी को ना पाकर वापस आये और बंगले में चले गये। मेरे ख्याल में वो R.D.X. में से दो होंगे।"
"हो सकता है।" देवराज ने सोच भरे स्वर में कहा।
कुछ पल ठहरकर जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी—
"तुम कहां हो?"
"जगजीत नाम के उस आदमी के पास, जिससे R.D.X. ने रतनचंद का फेसमॉस्क बनवाया था।"
"ओह! तो उसने रतनचंद का मॉस्क बनाया, वो माना?"
"हां।"
"अब क्या कर रहे हो?"
"उससे रतनचंद का अपने लिये फेसमॉस्क बनवा रहा हूं।"
"वो बनाने के लिये तैयार हो गया?"
"तैयार कर लिया।"

"लेकिन तुम उस मॉस्क का क्या करोगे?"
"मेरी कद-काठी रतनचंद जैसी है।" देवराज चौहान ने कहा।
"क्या मतलब?" जगमोहन का उलझन से भरा स्वर कानों में पड़ा।
"मिलने पर बताऊंगा।"
"कुछ तो बताओ।"
"R.D.X. इस हद तक सतर्क हैं कि मुझे रतनचंद तक नहीं पहुंचने देंगे—और रतनचंद का शिकार करने से पहले मैं जानना चाहता हूं कि कौन रतनचंद को हमारी खबरें दे रहा है। कम-से-कम वो प्रताप कोली नहीं था, वरना उसकी हत्या नहीं होती।"
"तुम कैसे जानोगे?"
"मुझे रतनचंद बनकर, रतनचंद की जगह लेनी होगी, तभी इस बात का खुलासा हो सकता है।" देवराज चौहान बोला।
"रतनचंद की जगह?" जगमोहन के स्वर में चौंकने के भाव थे—"ये कैसे सम्भव है? R.D.X. हमें उसका निशाना नहीं लेने दे रहे और तुम उसकी जगह लेने को कह रहे हो? ये असम्भव है।"
"इस असम्भव को सम्भव बनाना बहुत जरूरी है हमारे लिये।"
"ये नहीं हो पायेगा।" इधर से जगमोहन ने दृढ़ता भरे स्वर में कहा—"एक पल के लिये मान लें, कि ये हो भी गया और तुम रतनचंद बनकर बंगले पर पहुंच गये तो क्या R.D.X. पहचान नहीं जायेंगे कि उनके सामने रतनचंद नहीं, कोई और है?"
"इन बातों का जवाब पहले नहीं दिया जा सकता।"
"वो पहचान जायेंगे और तुम्हें किसी हालत में नहीं छोड़ेंगे। ये काम असम्भव है। इस तरफ सोचना छोड़ दो। सबसे बड़ी बात तो ये है कि वो हमें किसी भी हाल में रतनचंद तक नहीं पहुंचने देंगे। वो खतरनाक ही नहीं, हरामी भी लग रहे हैं।"
देवराज चौहान ने फोन कान से लगाये सिग्रेट सुलगाई।
"फालतू के चक्कर में मत पड़ो।" जगमोहन की आवाज पुनः कानों में पड़ी—"रतनचंद को शूट करो, काम खत्म।"
"उससे पहले मैं जानूंगा कि उसे हमारे बारे में कौन बता रहा है।"
"क्या जरूरी है?"
"बहुत जरूरी है, क्योंकि मुझे इस बात का पूरा विश्वास

है कि हमसे वास्ता रखता ही कोई उस तक सारी खबरें पहुंचा रहा है।"
"हमने नागेश शोरी के आदमियों को अपने से दूर कर दिया, अब हमें क्या—जो—"
"मुझे है। मुझे लग रहा है कि कहीं कोई गड़बड़ है जो अभी हमारी समझ में नहीं आ रही है।"
"गड़बड़?"
"हां।"
जगमोहन की गहरी सांस लेने का स्वर कानों में पड़ा।
"ठीक है, तुम जो समझो, करो।"
"तुम बंगले पर नज़र रखो और आने-जाने वाले के बारे में जानने की चेष्टा करो।"
"सोहनलाल भी तुम्हारे साथ है?"
"हां। तुम्हें ये काम अब अकेले ही करना होगा।"
"ठीक है।"
देवराज चौहान ने फोन बंद किया और कश लिया।
सामने काम में लगा जगजीत कह उठा—
"जब R.D.X. को पता लगेगा कि मैंने तुम्हें रतनचंद का मॉस्क बना कर दिया है तो वे सख्त नाराज होंगे।"
"तुम्हें दो लाख मिलेगा।" देवराज चौहान बोला।
"तो?"
"चुपचाप अपना काम करो। तुम नोट लेकर काम कर रहे हो, बात खत्म।"
"लेकिन रतनचंद की तस्वीरें तो R.D.X. ने ही भेजी हैं, ऐसे में उन्हें नाराज होने का हक है।"
उसी पल सोहनलाल कह उठा—
"देवराज चौहान को फालतू बातें सुनने की आदत नहीं, चुपचाप अपने काम में लगे रहो।"
"तुम लोग मेरे घर में बैठ कर ही मुझे धमका रहे हो?" जगजीत ने नाराजगी से कहा।
"क्या ऐसा तेरे साथ पहले कभी नहीं हुआ?" सोहनलाल ने उसे घूरा।
जगजीत ने जवाब में कुछ नहीं कहा।

"तू जिस धंधे में है, वहां लोग घर में घुसते हैं और गोली मार कर चले जाते हैं। दस दिन बाद बदबू आने पर गली-मोहल्ले के लोगों को पता चलता है कि इधर कोई लाश पड़ी सड़ रही है।"

जगजीत ने सोहनलाल को देखा और बिना कुछ कहे अपने काम में व्यस्त हो गया।

जब तक देवराज चौहान, दिनेश चुरू के नम्बर मिलाने लगा था।

दूसरी बार मिलाने पर नम्बर लगा और दिनेश चुरू की आवाज कानों में पड़ी।

"हैलो।"

"नागेश शोरी का फोन नम्बर दो। उससे बात करनी है।" देवराज चौहान ने कहा।

"प्रताप कोली...।"

"उसकी लाश तुम वहां से ले जा चुके हो।" देवराज चौहान ने कहा।

"तुम्हारे होते हुए कोई उसे मार गया और तुम—।"

"मैं वहां नहीं था। शोरी का नम्बर दो।"

"मैं अभी शोरी साहब से फोन करने को कहता हूं।"

"ठीक है।"

"तुम कहां हो, मुझे बताओ, मैं आ जाता हूं।" दिनेश चुरू की आवाज कानों में पड़ी।

"जरूरत पड़ने पर मैं तुम्हें फोन करके बुला लूंगा।" देवराज चौहान ने कहा और फोन बंद कर दिया।

पांच मिनट ही बीते होंगे कि बेल बजी फोन की।

"हैलो।" देवराज चौहान ने बात की।

"प्रताप कोली की मौत के बारे में सुनकर मुझे दुःख हुआ। वो मेरा पुराना आदमी था।" नागेश शोरी की आवाज कानों में पड़ी।

"उसकी मौत का मुझे भी दुःख है।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा—"उसने मर कर ये साबित कर दिया कि कम-से-कम वो मेरी खबरें बाहर नहीं निकाल रहा था।"

"तुम्हारी खबरें कहीं से भी बाहर नहीं जा रहीं। वहम है तुम्हारा।"

"मुझे समझाने की कोशिश मत करो शोरी—मेरे विचारों को हिलाने की कोशिश मत करो।"

"ठीक है। बताओ, मुझसे क्या चाहते हो?" नागेश शोरी की आवाज कानों में पड़ी।

"तुम्हारा आदमी रतनचंद के आदमियों में है?"

"हां।"

"उससे जानने की कोशिश करो कि बंगले पर क्या हो रहा है और मुझे हर बात की खबर करो।"

"ठीक है। मैं पता करता हूं।" नागेश शोरी की आवाज कानों में पड़ी—"तुम कहां हो और क्या कर रहे हो?"

"मेरे बारे में कुछ भी मत पूछो। मैं बताऊंगा नहीं। तुम्हें रतनचंद के बारे में खबर मिल जायेगी।" देवराज चौहान ने कहा और फोन बंद कर दिया।

जगजीत फेस मॉस्क बनाने में व्यस्त था।

सोहनलाल और देवराज चौहान उसके पास मौजूद थे।

❑❑❑

"कल के लिये हमें कुछ खास सोचना चाहिये।" धर्मा ने कहा।

"कैसा खास?" सोफे पर अधलेटा राघव बोला।

शाम के सात बज रहे थे। बाहर अंधेरा घिरने की तैयारी में था।

एक्स्ट्रा टी.वी. के सामने बैठा, चैनल बदलने में व्यस्त था।

"रतनचंद ने शादी पर जाना है। रास्ते में या वहां कुछ भी हो सकता है।" धर्मा बोला।

"गोली मारने वाले को शायद पता ही न चले कि रतनचंद का शादी पर जाने का प्रोग्राम है।"

"क्या बेवकूफी वाली बातें कर रहे हो!"

"क्यों?"

"वो हर हाल में हम पर नज़र रख रहा होगा। जब हम यहां से चलेंगे और शादी वाले घर पहुंचेंगे तो वो समझ जायेगा कि शादी में आया है रतनचंद। रतनचंद ने घंटों वहां रहना है। इतने में वो वहां सोच-समझ कर रतनचंद को नुकसान पहुंचा सकता है।"

"नहीं पहुंचा सकेगा, हम भी तो वहां होंगे।"

धर्मा ने राघव को घूरा।

"जरूरत पड़ी तो हम रतनचंद के सिक्योरिटी वाले साथ ले चलेंगे ताकि–।"

"तो क्या गोली चलाने वाला हमारे इन्तजाम देखकर, अपना इरादा छोड़ देगा?" धर्मा ने तीखे स्वर में कहा।

राघव ने धर्मा को देखा।

"ये बात है तो वहां रतनचंद को गोली लगने का खतरा हर वक्त लगा रहेगा।" राघव कह उठा।

"मैं भी यही कह रहा हूं कि हमारी मौजूदगी में भी रतनचंद को गोली मारी जा सकती है।"

तभी एक्स्ट्रा ने टी.वी. ऑफ किया और उनकी तरफ गर्दन घुमा कर बोला–

"और अब की बार गोली चलाने वाला गुस्से में होगा, क्योंकि उसके साथी की हत्या की है हमने।"

"यानि कि अब हमें और भी संभल कर रहना होगा।" राघव ने होंठ सिकोड़कर कहा।

"बहुत देर बाद मेरी बात तेरी समझ में आई।"

"हो सकता है, इस बार रतनचंद को शूट करने वाले ने भी सोच लिया हो कि मामला आर या पार करना है।" बोला एक्स्ट्रा।

"क्या रतनचंद को शादी में जाना जरूरी है?" राघव होंठ सिकोड़ कर कह उठा।

"रतनचंद को बाहर निकलने दो। आखिर कब तक हम उसे बंगले में लिए बैठे रहेंगे।" एक्स्ट्रा सोचभरे स्वर में बोला।

धर्मा और राघव की नज़रें एक्स्ट्रा पर थीं। राघव बोला–

"रतनचंद का बाहर निकलना खतरनाक हो सकता है। क्योंकि उस पर गोली चलाने वाले को हम जानते नहीं हैं। क्या पता वो हमारे पास ही मंडराये और हम उसे पहचान न पायें। वो गोली चलाकर चलता बने..."

"उसे न पहचानना, बड़ी समस्या है हमारे लिए।" धर्मा बोला–"कोई तोड़ तो निकालना होगा।"

चंद लम्हों के लिए उनके बीच चुप्पी छा गई।

"धर्मा, कल रतनचंद नहीं, रतनचंद के चेहरे में तू शादी में जायेगा।"

"मैं?"

"हां और–।"

"तू–मेरी जान के पीछे क्यों पड़ा हुआ है?"

"राघव ठीक कह रहा है।" एक्स्ट्रा ने कहा।

"क्या मुसीबत है!" धर्मा बड़बड़ा उठा–"वो मुझे मार देगा तो तुम दोनों को शान्ति मिल जायेगी।"

"एक्स्ट्रा!" राघव सोच भरे स्वर में बोला–"ये बात किसी को भी मालूम नहीं होगी कि हमारे साथ रतनचंद नहीं, धर्मा है।"

"किसी को न मालूम हो?"

"हां।"

"सुन्दर को भी नहीं?"

"नहीं।"

"ऐसा क्यों?"

"मैं सावधानी बरतना चाहता हूं। सब यही सोचें कि हम रतनचंद को लेकर चल रहे हैं।" राघव ने कहा।

"ठीक है।" एक्स्ट्रा ने सिर हिलाया–"तब रतनचंद कहां रहेगा?"

"यहीं पर। जब तक हम वापस नहीं आते, वो चुपचाप बंगले के किसी कमरे में बंद रहेगा। सुन्दर या बाकी गनमैनों को ये पता चल गया कि हमारे साथ असली रतनचंद नहीं है तो वे इन्तजामों के सिलसिले में लापरवाह हो सकते हैं।"

"ये ठीक कहा तुमने।"

"रतनचंद मानेगा कि वो बंगले पर ही रहे? शादी में न जाये।" धर्मा बोला।

"उसका बाप भी मानेगा।"

"और तुम कल रतनचंद के चेहरे में पूरी तरह बुलेटप्रूफ में रहोगे।" एक्स्ट्रा बोला–"अगर शादी के बीच कोई रतनचंद रूपी धर्मा को गोली मारता है तो उसे, हमने हर हाल में पकड़ लेना है।"

धर्मा ने दोनों को देखकर कहा।

"कैसे?"

"रतनचंद को मारनेवाला, कल जब जानेगा कि रतनचंद बाहर गया है तो वो पीछे लग जायेगा और हर हाल में रतनचंद को मौका मिलने पर शूट करना चाहेगा। अगर वो गोली चलाता है, तो हम समझ सकते हैं कि–।"

"एक बात।" धर्मा ने फौरन टोका—"मेरे ख्याल में वो जानता होगा कि हम रतनचंद का हमशक्ल भी इस्तेमाल कर सकते हैं। ये बात हमने ही खिड़की के द्वारा उसे समझाई थी।"

"तो?"

"तब क्या वो ये नहीं सोचेगा कि जो रतनचंद शादी में आया है, वो नकली हो सकता है? असली रतनचंद बंगले पर ही हो?"

एक्स्ट्रा और राघव की नज़रें मिलीं।

"वो ऐसा सोच सकता है।"

"फिर तो बंगले में रतनचंद को खतरा हो सकता है। वो धावा बोल सकता है बंगले पर।"

"यानि कि रतनचंद को बंगले पर छोड़ना ठीक नहीं होगा।"

"यही मेरा ख्याल है। वो जो भी है, हमें उसे कम नहीं समझना चाहिये।"

उनके बीच पुनः चुप्पी आ ठहरी।

"तो ये तय है कि कल हमें रतनचंद का कोई इन्तजाम करके चलना होगा कि पीछे से वो रतनचंद को बंगले में शूट न कर दे।"

"क्या इन्तजाम करेंगे रतनचंद का?"

"इस बारे में रतनचंद से बात करते हैं, वो शायद इस बारे में कोई सुझाव दे दे।"

❑❑❑

रतनचंद R.D.X. की बात सुनकर बोला—

"जो तुम चाहोगे, मैं वैसा करने को तैयार हूं। लेकिन बंगले में ऐसी कोई जगह नहीं है जहां मैं खुद को छिपा सकूं। यहां के कमरे तुम्हारे सामने हैं और जो भी जगह है, वो भी तुम लोग देख सकते हो।"

"यानी कि ऐसी कोई गुप्त जगह नहीं, जहां तुम किसी की नज़रों में आये बिना छिपे रह सको।" धर्मा ने पूछा।

"नहीं, ऐसी कोई जगह नहीं।"

धर्मा, राघव और एक्स्ट्रा (X-TRA) को देखकर बोला—

"फिर तो इसे बंगले में छोड़ना भी ठीक नहीं होगा।"

"मेरे ख्याल में तो बंगले में मेरा रहना ठीक होगा।" रतनचंद बोला—"यहां गनमैन भी तो रहेंगे।"

"दो गनमैन छोड़कर, बाकी को हम ले जायेंगे।" राघव ने कहा— "शादी-ब्याह का मौका होगा। वहां कोई अन्जान व्यक्ति करीब आ सकता है, गनमैनों की वहां जरूरत पड़ सकती है।"

"रतनचंद भी कल हमारे साथ चलेगा।" एक्स्ट्रा ने कहा।

"साथ?" दोनों ने एक्स्ट्रा को देखा।

"प्लान वही रहेगा।" एक्स्ट्रा कह उठा—"लेकिन रतनचंद हमारे साथ गनमैन के रूप में होगा। इसे मूंछें लगा देंगे। इसकी दाढ़ी और सिर पर टोपी डाल देंगे। इस तरह ये हमारे साथ चल सकता है।"

"खूब!" रतनचंद के होठों पर मुस्कान आ ठहरी—"तुम्हारा ये आईडिया मुझे जंचा।"

"ठीक है।" राघव ने धर्मा को देखा।

"हां—मूंछ हमारे पास हैं?" राघव ने एक्स्ट्रा को देखा।

"नहीं।" एक्स्ट्रा ने इन्कार में सिर हिला दिया।

"मैं कहीं से लेकर आता हूं।" राघव बोला।

"ये काम सुन्दर कर देगा।" रतनचंद ने कहा।

"सुन्दर को बुलाओ।" धर्मा ने कहा।

❑❑❑

सुन्दर कार से बंगले से निकला तो शाम के आठ बज रहे थे। अंधेरा हो चुका था।

इस बात का ज़रा भी एहसास न हो सका कि जगमोहन कार में उसके पीछे लग चुका है।

भीड़ भरी सड़कों पर दोनों कारें आगे-पीछे रहीं।

बीस मिनट बाद सुन्दर ने एक मार्केट की पार्किंग में कार रोकी और उतरकर दुकानों की तरफ बढ़ गया।

जगमोहन ने भी फौरन कार पार्क की और उसके पीछे हो गया।

सुन्दर दुकानों की कतार में दुकानों को देखता आगे बढ़ रहा था, फिर वो एक दुकान में प्रवेश कर गया। उसके पीछे ही जगमोहन भी भीतर प्रवेश कर गया।

जगमोहन दुकान में रूमाल पसन्द करने लगा। जबकि नज़रें उसकी सुन्दर पर थीं। ये जानकर उसे कुछ हैरानी हुई कि सुन्दर ने दुकान से दाढ़ी-मूंछ खरीदी और बाहर निकल गया।

जगमोहन ने रूमालों के पैसे दिए और उसके पीछे-पीछे बाहर आ गया।

वहां से सुन्दर सीधा वापस बंगले पर ही गया।

जगमोहन वापस अपनी जगह पर आ डटा और देवराज चौहान को फोन किया।

"कहो।" देवराज चौहान की आवाज कानों में पड़ी।

"रतनचंद का वो ही आदमी कार के बाहर निकला और दो-तीन तरह की दाढ़ी-मूंछें खरीद कर वापस लौटा।"

"दाढ़ी-मूंछें?"

"हां।"

"तो अब R.D.X. किसी नये फेर में हैं।" देवराज चौहान की आवाज जगमोहन के कानों में पड़ी।

"ऐसा ही लगता है कि वो कुछ नया करने की सोच रहे हैं, वरना इस तरह दाढ़ी-मूंछों की खरीददारी नहीं की जाती।" जगमोहन बोला।

"तुम अपने काम में लगे रहो।"

"तुम वहां क्या कर रहे हो?"

"काम चल रहा है। सुबह तक रतनचंद के चेहरे जैसा फेस मास्क तैयार हो जायेगा।"

"तो उसके बाद उस आदमी का भी कोई इन्तजाम करना होगा, वरना, वो R.D.X. को बता देगा कि तुमने उससे रतनचंद के चेहरे का मास्क बनवाया है। R.D.X. सतर्क हो सकते हैं।"

"काम निपटने तक वो सोहनलाल की देख-रेख में रहेगा।"

"ठीक है।" जगमोहन ने बात खत्म करके फोन बंद किया।

❑❑❑

सुबह छः बजे सोहनलाल ने देवराज चौहान को नींद से उठाया।

"जगजीत ने मॉस्क तैयार कर दिया है।" सोहनलाल बोला।

देवराज चौहान उठा।

जगजीत से मॉस्क लेकर देखा।

रात भर काम करने की वजह से जगजीत की आंखें नींद से भरी पड़ी थीं।

सोहनलाल का भी यही हाल था।

देवराज चौहान ने मॉस्क शीशे के सामने पहुंच कर चेहरे पर लगाया। जगजीत ने विग दी सिर पर लगाने को। इसके बाद तो ऐसा लगा जैसे देवराज चौहान कहीं गायब हो गया और रतनचंद प्रकट हो गया हो।

"काम बढ़िया करता है ये।" सोहनलाल कह उठा।

"नोट भी तो बढ़िया लेता हूं।" जगजीत कह उठा—"दो लाख दो मुझे।"

देवराज चौहान ने मॉस्क और विग उतारी।

"इसे किसी चीज में पैक करो।"

जगजीत ने दोनों चीजें छोटे से डिब्बे में पैक कर दीं।

देवराज चौहान ने जेब से हजार-हजार के नोटों की दो गड्डियां निकालकर दीं।

"शुक्रिया!" जगजीत नोटों को लेकर कह उठा।

"तुम दोनों रात भर के जागे हुए हो, नींद ले लो।" देवराज चौहान बोला।

"और तुम?"

"अभी मेरे पास कोई काम नहीं। नौ बजे तक तो मैं यहीं रहूंगा। उसके बाद तुम जगजीत को अपने फ्लैट पर ले जाओगे और तब तक इसे अपने पास रखोगे, जब तक ये काम नहीं निपट जाता।"

सोहनलाल ने सिर हिलाया।

"और तुम?" देवराज चौहान ने जगजीत से कहा—"कोई शरारत मत करना। ज़रा भी चालाकी की तो सोहललाल तुम्हें गोली मार देगा। ये बात हमेशा अपने दिमाग में रखना।"

"मेरी तरफ से कुछ नहीं होगा।" जगजीत सिंह ने शांत स्वर में कहा।

"नींद ले लो अभी।"

दोनों पीछे वाले कमरे में सोने चले गये

देवराज चौहान ने इस बात की तसल्ली कर ली कि उस कमरे में फोन जैसी कोई चीज नहीं है। दोनों जल्दी ही गहरी नींद में जा डूबे। देवराज चौहान किचन में चाय बनाने लगा।

❑❑❑

तब सुबह के नौ बजे थे।

देवराज चौहान उन दोनों को नींद से उठाने की सोच रहा था कि फोन बजा—

"हैलो।" देवराज चौहान ने बात की।

"सब कुछ वैसा ही है या कुछ नया हुआ?" नागेश शोरी की आवाज कानों में पड़ी।

"वैसा ही है।"

"इस काम में तुम धीमे नहीं चल रहे क्या?"

"मेरी बातें उनको मालूम होती रही हैं, इसलिए तुम्हें सबकुछ धीमा ही लगेगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"शायद इसी वजह से तुमने दिनेश चुरू को अपने से अलग कर दिया।"

"गलत किया है क्या?"

"नहीं, ये काम तुम्हें पहले कर देना चाहिये था।" नागेश शोरी ने उधर से कहा—"तुम्हारे लिये खबर है।"

"क्या?"

"रतनचंद आज अपने साले की शादी में जायेगा।"

"आज?"

"हां।"

"ये खबर तुम्हें किसने दी?"

"उसी आदमी ने, जो रतनचंद का गनमैन है। इस बार उसने इस खबर की मोटी कीमत ली है। जानते हो क्यों?"

"क्यों?"

"क्योंकि उसने ये भी बताया है कि हकीकत में रतनचंद की जगह पर, धर्मा नाम का आदमी होगा, जो R.D.X. का ही हिस्सा है। और असली रतनचंद गनमैन के रूप में साथ होगा।"

"ऐसा?" देवराज चौहान के होठों से निकला।

"शत-प्रतिशत।" उधर से नागेश शोरी ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

देवराज चौहान के चेहरे पर अजीब से भाव आ गये।

"R.D.X. के बीच में आ जाने से, तुम्हारा काम कठिन हो गया है।" नागेश शोरी ने कहा।

"मुझे फर्क नहीं पड़ता।"

"R.D.X. ने तुम्हारे हाथों रतनचंद को बचाने की जबर्दस्त

चाल चली है। अगर तुम शादी पर रतनचंद पर हमला करते हो तो वो असली रतनचंद नहीं होगा—और असली रतनचंद गनमैन के रूप में सुरक्षित रहेगा।"

"चाल अच्छी है।"

"बेशक। लेकिन मुझे समझ नहीं आता कि तुम गनमैनों में से असली रतनचंद को कैसे ढूंढोगे? मेरे ख्याल से वो असली शक्ल में तो होगा नहीं, यकीनन उसने अपने चेहरे पर बदलाव कर रखा होगा।"

देवराज चौहान को जगमोहन की बात याद आई, जिसमें उसने दाढ़ी-मूंछ खरीदे जाने के बारे में बताया था।

"अभी इस बारे में मैंने सोचा नहीं। कोई और भी खबर है?"

"अभी तो इतनी ही खबर है।"

"हो तो बताना।" देवराज ने फोन बंद कर दिया।

नागेश शोरी से, बहुत काम की बात मालूम हुई थी।

देवराज चौहान कुछ पलों तक सोच में रहा, फिर जगमोहन को फोन किया।

"कैसे हो?"

"बुरे हाल हूं। न जाग पा रहा हूं, ना नींद ले पा रहा हूं।"

"वहीं हो?"

"हां।"

"मैं घंटे तक तुम्हारे पास पहुंच रहा हूं।" कहकर देवराज चौहान ने फोन बंद किया और दूसरे कमरे में पहुंचकर दोनों को उठाया। वे उठे। दोनों की आंखें लाल हो रही थीं।

"नौ बज गये?" सोहनलाल ने पूछा।

"हां। जगजीत को अपने फ्लैट पर ले जाओ और इस पर कड़ी नजर रखना।" देवराज चौहान ने कहा।

आधे घंटे बाद तीनों फ्लैट से बाहर निकले। फेस-मॉस्क का डिब्बा देवराज चौहान ने थाम रखा था।

"तुम, जगजीत को ले जाओ। कार मैं ले जा रहा हूं।"

"तुम्हारे लिए मॉस्क बना कर मैंने R.D.X. के खिलाफ काम किया है। वो मुझसे बहुत नाराज होंगे।" जगजीत बोला।

"तुम्हें अभी गोली मार दी जाये तो उन्हें नाराज होने का मौका नहीं मिलेगा।" देवराज चौहान ने सख्त स्वर में कहा—"ये

हमारी शराफत है कि तुम्हें जिन्दा रखा जा रहा है। कल उन लोगों ने मेरे एक साथी को मारा था।"

"ओह! ये बात तुमने पहले क्यों नहीं बताई?"

"अब तो मालूम हो गई।" कठोर था देवराज चौहान का स्वर।

जगजीत कुछ न बोला।

देवराज चौहान ने सोहनलाल से कहा—

"ये कोई गड़बड़ी करने की कोशिश करे तो इसे उसी वक्त शूट कर देना। सोचना भी मत कि क्या करने जा रहे हो।"

"सुना।" सोहनलाल ने खतरनाक स्वर में जगजीत से कहा—"ग्रीन सिग्नल की आवाज सुनी कि तेरे को कभी भी मार दूं।"

"मैं कोई गड़बड़ी नहीं....।"

"टैक्सी स्टैण्ड किधर है?"

"उधर।"

"चल।"

दोनों आगे बढ़ गये।

देवराज चौहान के कदम सामने खड़ी कार की तरफ उठ गये।

❑❑❑

देवराज चौहान वहां पहुंच कर जगमोहन से मिला।

नींद न लेने की वजह से जगमोहन का चेहरा उतरा पड़ा था।

"आज हमें काम करना पड़ सकता है।" देवराज चौहान ने कहा।

"क्या?"

"नागेश शोरी ने...।" देवराज चौहान ने सारी बात बताई।

बात पूरी होते ही जगमोहन कह उठा—

"इसका मतलब जब वे शादी के लिये यहां से रवाना होंगे तो जिस गनमैन ने दाढ़ी-मूंछ लगा रखी हो, वो रतनचंद है।"

"हां। नतीजा तो ये ही निकलता है।"

दोनों की नज़रें मिलीं—

"क्या करोगे तुम?"

"हम।" देवराज चौहान सोच भरे स्वर में बोला—"रतनचंद को कैद करेंगे और उसकी जगह मैं पहुंच पाऊंगा।"

"इन सब की क्या जरूरत है! रतनचंद को खत्म करो और...।"

"रतनचंद हमारे हाथों में आ जायेगा तो खत्म हो ही जायेगा, परन्तु मुझे उसके बारे में भी जानना है जो रतनचंद को हमारे बारे में खबरें दे रहा है। इसके लिये मुझे रतनचंद की जगह लेनी होगी।"

"ये बात तो रतनचंद के मुंह से भी निकलवाई जा सकती है।" जगमोहन कह उठा।

"तुम ये काम करते रहना। अगर रतनचंद से मालूम हो गई तो बढ़िया है।"

"मालूम हो जायेगी। तुम्हें रतनचंद की जगह लेने की जरूरत नहीं, क्योंकि खामखां का खतरा....।"

"R.D.X. को क्यों भूल जाते हो?"

"R.D.X.?" जगमोहन के माथे पर बल पड़े।

"उन्होंने प्रताप कोली को मारा है।"

"वो हमें अभी जानते नहीं कि वे किसके खिलाफ लड़ रहे हैं, वो रतनचंद को—।"

"तुम ठीक कहते हो, फिर भी उन्हें समझाना जरूरी है। क्या पता वे हमारे बारे में जान चुके हों। उन्हें खबरें देने वाले ने क्या ये नहीं बताया होगा उन्हें कि वे हमारे खिलाफ लड़ रहे हैं।" देवराज चौहान बोला।

"क्या पता!"

"इस बात का पता तो, रतनचंद की जगह लेने के बाद ही चलेगा।"

"लेकिन तुम ये बहुत खतरे वाला काम कर रहे हो।" जगमोहन व्याकुल हो उठा।

"ये काम करना ही है।"

जगमोहन देवराज चौहान का चेहरा देखने लगा, फिर बोला—

"क्या तुमने रतनचंद का मॉस्क इसीलिये बनाया?"

"मेरे दिमाग में तब ये प्लानिंग चल रही थी कि अगर मैं रतनचंद की जगह लूं तो पूरे मामले पर काबू पाया जा सकता है और R.D.X. से भी निपटा जा सकता है। शादी वाली बात तो अचानक ही सामने आ...।"

"जो तुम सोच रहे हो, वो इतना आसान नहीं है।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"तुम रतनचंद बनकर R.D.X. के बीच में मौजूद रहोगे तो क्या वे तुम्हें पहचानेंगे नहीं?"

"मुझे पूरा विश्वास है कि वे मुझे रतनचंद ही समझेंगे। मेरी कद-काठी रतनचंद से मेल खाती है। वो तो कभी सोच भी नहीं सकेंगे कि मैं रतनचंद नहीं हो सकता। तुम्हारा क्या ख्याल है, ये बात वे सोचेंगे?"

"शायद नहीं।"

देवराज चौहान ने सोच भरे अंदाज में सिगरेट सुलगाई।

"सबसे बड़ी बात है कि शादी में रतनचंद गनमैन के रूप में होगा तो वो R.D.X. की नज़रों में रहेगा। उस वक्त उस पर कैसे हाथ डाला जा सकता है? रतनचंद के ज़रा भी इधर-उधर होते R.D.X. के बीच भगदड़ मच जायेगी।"

"उनमें से एक तो तब रतनचंद के रूप में होगा। बाकी दो बचे।"

"गनमैन भी तो होंगे।"

"मेरे ख्याल में हमें यहां से चलना चाहिये।" देवराज चौहान फोन निकालता कह उठा—"हमें कुछ ऐसा करना चाहिये कि जब वो वहां पहुंचे तो हम शादी वाले घर में पहले से ही टिके हों।"

"ऐसा कैसे हो सकता है?" जगमोहन कह उठा।

"कुछ करना होगा, जिससे कि ऐसा हो जाये।" देवराज चौहान फोन के नम्बर दबाने लगा।

"किसे फोन कर रहे हो?"

"नागेश शोरी को।"

"क्यों—उसे ये मत बताना कि हम क्या कर रहे हैं।" जगमोहन ने जल्दी से कहा।

नागेश शोरी से बात हुई।

"कहो।" शोरी की आवाज कानों में पड़ी।

"रतनचंद कहां पर शादी में जा रहा है? उसके साले की शादी कहां हो रही है?"

नागेश शोरी ने पता बताया।

"शादी के प्रोग्राम क्या-क्या हैं?" देवराज चौहान ने पूछा—"मालूम हो तो बताओ—।"

नागेश शोरी बताने लगा।

बात करने के बाद देवराज चौहान ने फोन बंद किया और सिगरेट सुलगा ली, चेहरे पर सोच के भाव थे।

चुप्पी जब लम्बी हुई तो बोला जगमोहन—

"क्या सोच रहे हो?"

"रतनचंद का अपहरण कराने की चेष्टा की जाये तो, उन लोगों का ध्यान बंट सकता है।"

"क्या मतलब?"

"मतलब भी समझ जाओगे। यहां से चलो।"

❑❑❑

काशीनाथ नम्बरी बदमाश था।

कई छोटे-बड़े केस उस पर चल रहे थे। कभी जमानत पर छूटा होता तो कभी अन्दर। चालीस बरस की उम्र में पन्द्रह बरस तो उसने जेल में ही बिताये थे। अभी वो चार दिन पहले छूटा था जमानत पर और उसका हाथ तंग चल रहा था। तभी उसका चेला-चपाटा, उसके पास पहुंचा और बोला—

"उस्ताद, मुर्गा आया है।"

"मुर्गा?"

"पक्का उस्ताद। कोई काम कराना चाहता है।"

"सोचता क्या है, ले आ।"

"बाहर ही आ जाओ। वो कार से उतरने को तैयार नहीं। सेठ लगता है कोई।"

काशीनाथ, चेले के साथ बाहर कार तक पहुंचा।

कार की ड्राईविंग सीट पर जगमोहन बैठा था और पीछे वाली सीट पर रतनचंद।

"कहो सेठ।"

"छोटा सा काम कराना है।" रतनचंद बोला—"किसी ने तुम्हारा नाम लिया कि तुम बढ़िया काम करोगे।"

"पैसे की जरूरत है। चिन्ता मत करो। काम बढ़िया ही करूंगा। बोलो, क्या काम है?" काशीनाथ ने पूछा।

"शाम को मैंने एक शादी में जाना है। वहां तुम अपने आदमियों के साथ पहुंचोगे और मेरा अपहरण करने की कोशिश करोगे।"

"तुम्हारा अपहरण?" काशीनाथ के चेहरे के भाव बिगड़े।

"हां। सिर्फ नाटक करना है। अपहरण करना नहीं। लेकिन देखने वालों को लगे कि सच्ची कोशिश है।"

"लफड़ा क्या है सेठ?"

"तुम अपने काम से मतलब रखो। उस वक्त मैं अपने गनमैनों से घिरा होऊंगा।"

"वो हमें गोली भी मार सकते हैं।" काशीनाथ बोला।

"तुमने उन्हें गोली चलाने का मौका ही नहीं देना। अपहरण का नाटक करके और ये दिखाकर कि तुम सफल नहीं हो सके, वहां से खिसक जाना है। इस सारे ड्रामे में पांच से सात मिनट का वक्त लगना चाहिये।"

"ठीक है, पता बोल और इस काम का एक लाख लगेगा, वो भी पहले देना होगा।" काशीनाथ ने कहा।

रतनचंद ने हज़ार के नोटों की गड्डी निकाली और उसकी तरफ बढ़ा दी।

"वाह!" काशीनाथ गड्डी थामता कह उठा—"दो लाख भी मांगता तो शायद तू वो भी देता।"

"सत्तर हजार के काम के लाख तो दे सकता हूं, परन्तु दो लाख नहीं।"

"ठीक है, ठीक है। तेरा काम हो जायेगा, पता-टेम, सब कुछ बता।"

-रतनचंद ने बताया।

वक्त पर काम करने का वादा करके काशीनाथ चला गया।

जगमोहन ने कार आगे बढ़ा दी।

पीछे बैठा रतनचंद अपने चेहरे का मॉस्क उतारने लगा।

मॉस्क उतारा तो, नीचे से देवराज चौहान का असली चेहरा निकला। वो बोला—

"काशीनाथ जब रतनचंद के अपहरण का नाटक करेगा तो वहां घबराहट फैलेगी। सब का ध्यान काशीनाथ और उसके आदमियों पर होगा—तो ऐसे में हम दाढ़ी-मूंछ वाले असली रतनचंद पर हाथ डाल सकेंगे।"

❑❑❑

शाम के साढ़े पांच हो रहे थे।

रतनचंद के बंगले से एक क़ार बाहर निकली। जिसमें रतनचंद बना धर्मा बैठा था। पास में थे एक्स्ट्रा और राघव। पीछे दूसरी कार में चार गनमैन थे और तीसरी कार में तीन गनमैन थे।

एक के पीछे एक तीनों कारें सड़क पर उतर आईं।

चार गनमैन वाली कार में आज एक नया गनमैन नज़र आ रहा था। जिसके चेहरे पर हल्की दाढ़ी-मूंछ और सिर पर ले रखी कैप की वजह से उसका आधा चेहरा ढका सा लग रहा था। दरअसल वो ही असली रतनचंद था। गनमैन ये बात जानते थे।

R.D.X. वाली कार एक गनमैन ड्राईव कर रहा था।

पीछे वाली सीट पर रतनचंद बना, धर्मा और एक एक्स्ट्रा बैठे थे। आगे राघव बैठा था।

"मेरे ख्याल में हम सही चल रहे हैं।" राघव बोला—"कोई सोच भी नहीं सकता कि रतनचंद गनमैन के रूप में साथ है।"

"हां, किसी के लिये ये बात जान पाना असम्भव ही है।" एक्स्ट्रा ने कहा।

"अगर गोली चलाने वाले ने मेरे सिर का निशाना ले लिया तो?"

"झंझट खत्म हो जायेगा।" एक्स्ट्रा मुस्कराया।

"यार, ऐसा मजाक मत करो।" धर्मा भी मुस्कराया।

"हमें।" राघव कह उठा—"उसकी पहचान करनी है, जो रतनचंद को मारना चाहता है, उसकी पहचान किए बिना मामला खत्म नहीं होगा।"

"जरूरत पड़ी तो उसे गोली भी मारी जा सकती है।" धर्मा ने कहा।

"जरूरत पड़ी तो—।" राघव ने सिर हिलाया।

"हमें हर वक्त, हर तरफ के हालात के लिये तैयार रहना होगा।"

"क्या पता!" एक्स्ट्रा ने कहा—"कुछ हो ही नहीं!"

"ये भी हो सकता है।" राघव ने आस-पास से निकलते वाहनों पर निगाह दौड़ाई—"ये पता लगाना कठिन है कि कोई हमारे पीछे आ रहा है या नहीं।" एक्स्ट्रा और धर्मा की नज़रें घूमीं। बाहर हर तरफ देखा। सच में वाहनों की भीड़ में पता लगाना कठिन था कि कौन उन पर नज़र रख रहा है।

"अगर आज कुछ न हुआ तो कल से रतनचंद को बंगले से बाहर ले जायेंगे। बंगले में ही रखना वक्त बरबाद करना होगा।"

"मेरी मानो तो केकड़ा को किसी तरह पटाओ। उसने मुंह खोल दिया तो सारा मामला निपट जायेगा।"

"मुझे तो लगता है कि केकड़ा भी कोई चालबाजी कर रहा है रतनचंद को खबरें देकर। बिना किसी मकसद के केकड़ा क्यों रतनचंद को खबरें देगा—और वो भी आधी-अधूरी खबरें? मुझे पूरा विश्वास है कि केकड़ा कोई खेल खेल रहा है।"

❑❑❑

आती तीनों कारों के बीच वाली कार में रतनचंद मौजूद था।

रतनचंद पीछे वाली सीट पर अन्य गनमैन के साथ बैठा हुआ था। गन पास ही रखी थी। सिर पर कुछ झुकी कैप और चेहरे पर दाढ़ी-मूंछ। जिस्म पर वर्दी। इस वक्त उसे पहचान पाना आसान नहीं था कि वो ही रतनचंद है।

तभी उसका फोन बजा।

"हैलो।" रतनचंद ने फोन निकाल कर बात की।

"आज तो साले की शादी में भरपेट खाओगे रतनचंद।" केकड़ा का मुस्कराता स्वर कानों में पड़ा।

"केकड़ा?"

"हां, अब तो मैं तुम्हारा खास बनता जा रहा हूं। दिन-रात तुम मेरा नाम जपते होगे।"

"तुम सच में बेवकूफ हो।"

"वो कैसे?"

"तुम्हें मुझसे सौदा कर लेना चाहिये। मैं तुम्हें सारी जानकारी के बदले अच्छी रकम दे सकता हूं। सोचो, अगर मुझे मारने वाला ही मर गया तो फिर तुम्हें रकम नहीं मिलेगी।" रतनचंद ने शांत स्वर में कहा।

"तुम तब भी सौदा करोगे रतनचंद।" केकड़ा के हंसने की आवाज आई।

"तब क्यों?"

"क्योंकि तब तुम ये जानना चाहोगे कि तुम्हारी हत्या की सुपाड़ी देने वाला कौन है—वो फिर से किसी को तुम्हारे पीछे लगा देगा। कब तक बचोगे?"

रतनचंद के होंठ भिंच गये।

"ये खेल तो लम्बा चलेगा रतनचंद।" केकड़ा की आवाज कानों में पड़ी।

"जो भी हो, तुम मुझे बेवकूफ लगते हो।"

"मैं तुम्हें खबरें दे रहा हूं, तो क्या मैं बेवकूफ हुआ?"

"तुम्हें सारी खबरें एक साथ बेचकर, मोटी रकम कमा लेनी चाहिये।

"मैं तुम्हारी बातों में फंसने वाला नहीं।"

"आखिर तुम चाहते क्या हो?"

"जब वक्त आयेगा, जरूर बताऊंगा।"

"तुमने पहले कहा था कि वक्त आने पर सौदा करोगे। पैसा लोगे।" रतनचंद बोला

"कहा था।"

"वो वक्त कब आयेगा, जब—।"

"आ जायेगा।"

"तुम एक बार जानकारी की कीमत कह कर तो देखो।"

"मैं जानता हूं कि तुम मुझे मुंहमांगी रकम दोगे।"

"तो फिर देर किस बात की?"

"पैसा मेरे लिये कोई समस्या नहीं है। मैं ये सब पैसा कमाने के लिये नहीं कर रहा।"

"तो?"

"वक्त बिताने के लिये कर रहा हूं।"

"वक्त बिताने के लिये—यहां मेरी जान पर बनी है और तुम्हें खेल सूझ रहा है?"

"तुम्हारी जान से मुझे क्या लेना-देना! मेरे पास खबरें हैं तो वो तुम्हें बताकर अपना वक्त बिता रहा हूं। अगर तुम्हें इस खेल में बोरियत हो रही है तो दोबारा फोन नहीं करूंगा।"

"तुम करो। मैं तुम्हें फोन के लिये मना नहीं कर रहा।" रतनचंद ने जल्दी से कहा।

"तुम्हारा सवाल होना चाहिये कि मैंने तुम्हें फोन क्यों किया?"

"क्यों किया?"

"ये बताने के लिये कि शादी में तुम पर तगड़ा हमला हो सकता है। R.D.X. के भरोसे मत रहना।"

रतनचंद ने गहरी सांस ली।

"वो—क्या वो मेरे पीछे है?"

"वो कहीं भी हो सकता है।" इतना कहने के साथ ही उधर से केकड़ा ने फोन बंद कर दिया।

रतनचंद कुछ पलों तक फोन हाथ में लिए बैठा रहा। उसके चेहरे पर बेचैनी दौड़ रही थी। फिर उसने फोन संभाला और आगे जा रही कार में बैठे राघव को फोन किया।

"कहो रतनचंद।" राघव की आवाज कानों में पड़ी।

"केकड़ा का फोन आया था। वो कहता है कि शादी में मुझ पर हमला होगा।" रतनचंद ने कहा।

राघव की तरफ से आवाज नहीं आई।

"तुमने जवाब नहीं दिया मेरी बात का?" रतनचंद पुनः बेचैनी से बोला।

"तुम किसी बात की फिक्र न करो। तुम सुरक्षित हो।"

"क्या कहते हो—मैं....।"

"जो हमला होगा, धर्मा पर होगा। तुम पर नहीं। धर्मा, इस वक्त तुम्हारे चेहरे में है और कोई नहीं जानता कि तुम कहां हो। मजे करो, मस्त रहो, जो होगा, हम निपट लेंगे।" कहने के साथ ही उधर से राघव ने फोन बंद कर दिया।

रतनचंद ने गहरी सांस ली। वो जानता था कि राघव ठीक कह रहा है, फिर भी वो परेशान था।

❑❑❑

शाम गहरा गई थी।

6.40 का वक्त था, जब तीनों कारें शादी वाले घर पर पहुंचीं। बहुत खूबसूरत बंगला था, जो कि रोशनियों की लड़ियों से पूरी तरह सजा हुआ था। आस-पास कारें-ही-कारें खड़ी थीं। लोगों की चहल-पहल थी वहां। बैंड वाले रह-रह कर बैंड बजाने लगते थे। तो कभी ढोल बज उठता था। लड़के को सेहरा बांधा जा रहा था, कुछ ही देर में बारात रवाना हो जानी थी।

हर तरफ रौनक और चहल-पहल थी।

कार रुकने पर राघव बोला—

"चलो, बाहर निकलो।"

राघव और एक्स्ट्रा बाहर निकले।

रतनचंद के चेहरे में धर्मा बाहर निकला।

तब तक पीछे की कारों से गनमैन भी बाहर निकल आये थे। उनमें दाढ़ी-मूंछ लगाये रतनचंद भी था। सिर पर कैप। गन उठाये वो खामोशी से एक तरफ खड़ा हो गया।

तीन गनमैन आगे R.D.X. के पास पहुंचे।

धर्मा ने रतनचंद के ढंग में बाहर निकलकर हर तरफ गर्दन घुमाई।

"लगता तो सब ठीक है।" धर्मा बोला।

"तुम रतनचंद हो, उसी के रौब में रहो।" एक्स्ट्रा बोला—"और बंगले के गेट की तरफ बढ़ो। वहां तुम्हें रतनचंद की पत्नी मिलेगी, उससे बहुत ही स्वभाविक तौर पर मिलना है, क्योंकि वो तुम्हें अपना पति समझ कर मिलेगी।"

राघव ने गर्दन घुमाकर पीछे देखा। वो रतनचंद को तलाश रहा था।

रतनचंद सबसे हटकर, गन थामे, एक कार के पास खड़ा दिखा।

फिर राघव ने अपना ध्यान धर्मा पर लगा दिया।

धर्मा ने कदम बंगले के गेट की तरफ उठाये।

सादे से ढंग से, गनमैन के वेष में खड़ा रतनचंद इधर-उधर देख रहा था कि जगमोहन पास आ पहुंचा।

"बड़े लोगों के भी क्या ठाठ हैं!" जगमोहन बोला—"शादी में इतना खर्च करते हैं कि पूछो मत।"

जवाब में रतनचंद ने उसे देखकर सिर हिलाया।

"ये कौन साहब हैं, जिनके साथ तुम लोग आये हो?" जगमोहन बोला।

"ये।" रतनचंद संभला—"सेठ रतनचंद हैं।"

"काफी अमीर लगता है।"

"इसके साले की शादी है।" रतनचंद बोला।

"तभी तो—आज जानबूझकर, दिखाने के लिए ज्यादा सिक्योरिटी वालों को लाया होगा कि बिरादरी पर रौब झाड़ सके।"

रतनचंद ने गहरी सांस लेकर मुंह फेर लिया।

उधर धर्मा ने चार-पांच कदम ही आगे बढ़ाये थे कि एकाएक हवा में गोलियां चलने लगीं।

चीखने की आवाज आई।

फिर काशीनाथ दिखा। जिसने चेहरे पर रूमाल बांध रखा था।

उसके साथ छः सात लोग थे।

सबके हाथों में रिवाल्वरें थीं।

वो हवा में गोलियां चलाने के बाद रतनचंद बने धर्मा की तरफ लपके और उसके बाद तो जैसे भगदड़ ही मच गई। काशीनाथ अपने आदमियों के साथ रतनचंद को घेरे में लेकर उसे ले जाने का ड्रामा करने लगा।

रतनचंद बने धर्मा को तीन आदमी जबरन एक तरफ खींचने लगे।

बाकी के रिवाल्वरें लहराते चिल्ला रहे थे कि खबरदार कोई आगे आया तो...।

सच बात तो ये थी कि R.D.X. ये सब होने पर हक्के-बक्के रह गये थे। उन्हें तो ज़रा भी आशा न थी कि इस तरह खुल्लम-खुल्ला हमला किया जा सकता है। उन्होंने रिवाल्वरें निकाल लीं और पोजीशन ले ली।

राघव ने एक की टांग पर फायर किया।

उस आदमी को गोली लगी और चीखते हुए नीचे जा गिरा।

ये देखकर काशीनाथ को गुस्सा आ गया और उसने जोरदार चांटा रतनचंद बने धर्मा के गाल पर मारा।

"क्यों बे—तू तो कहता था, कि अपहरण का ड्रामा करना है और तेरे आदमी गोलियां चला रहे हैं।"

"क्या बकवास करता है?" धर्मा चीखा और उसने रिवाल्वर निकालनी चाही।

"खूब, तो अब मेरी बात को बकवास कहता है।"

शादी-ब्याह वाला घर था।

भीड़ बढ़ गई, ये सब देखकर।

राघव और एक्स्ट्रा इस भीड़ में गोली न चलाना चाहते थे। क्योंकि फायरिंग होने पर कई लोगों को गोली लगनी थी।

बहरहाल अच्छा-खासा शोर-शराबा पड़ गया था।

❑❑❑

और ये सब होने की शुरूआत होते ही—

जगमोहन ने रिवाल्वर निकाली और गनमैन बने खड़े, रतनचंद की कमर में, चुपके से इस तरह लगा दी कि पास में कोई व्यक्ति रिवाल्वर को देख न सके।

रतनचंद चिहुंक उठा।

"चुपचाप खड़ा रह रतनचंद।"

अपना नाम सुनते ही रतनचंद ठगा सा रह गया।

"क-कौन हो तुम?" रतनचंद के होंठों से निकला।

"उधर चलओमनी वैन में, वो सामने सफेद वाली...।" जगमोहन गुर्राया।

"लेकिन तुम—।"

"साले, गोली यहीं मारूं क्या?" जगमोहन दबे स्वर में गुर्रा उठा।

रतनचंद ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी। जगमोहन को देखा।

"दबाऊं ट्रेगर?"

रतनचंद जोरों का कांपा और जगमोहन के साथ चल पड़ा।

सबका ध्यान आगे शोर-शराबे पर था।

जगमोहन, रतनचंद को चार कदमों की दूरी पर खड़ी ओमनी वैन के पास ले गया। उनके पास पहुंचते ही वैन का साईड का दरवाजा खुला तो जगमोहन ने रतनचंद को भीतर धकेला और खुद भी भीतर आकर दरवाजा बंद कर दिया।

वैन के शीशे काले थे। बाहर से भीतर देखा जाना सम्भव नहीं था।

रतनचंद परेशान, हक्का-बक्का और घबराया हुआ था।

तभी रतनचंद बुरी तरह चिहुंक उठा।

उसके सामने उसका ही हमशक्ल बैठा था। उसके शरीर पर अण्डरवियर के अलावा कुछ नहीं था।

रतनचंद की आंखें फैलती चली गईं।

"क-कौन हो तुम लोग—म-मेरी शक्ल!"

जगमोहन ने रिवाल्वर रतनचंद के सिर पर लगा दी।

"गोली चलाऊं।"

"नहीं...।" रतनचंद कांपा।

"कपड़े उतार।"

"क्या?"

"कपड़े उतार—वरना गोली चली—जल्दी कर।"

रतनचंद जल्दी और कांपते हाथों से कपड़े उतारने लगा।

जगमोहन ने उसके सिर पर रखी कैप उतार कर अपने सिर पर रख ली।

रतनचंद कपड़े उतारता चला गया और देवराज चौहान पहनने लगा।

फिर जगमोहन ने उसकी दाढ़ी-मूंछ निकालीं और देवराज चौहान की तरफ बढ़ा दीं।

देवराज चौहान ने चेहरे पर दाढ़ी-मूंछ लगाईं।

"ये–क्या–कर।" रतनचंद ने कहना चाहा।

"चुप।" जगमोहन गुर्राया।

रतनचंद होंठ भींच कर रह गया।

देवराज चौहान ने वो गन थामी जो, रतनचंद ने गनमैन के रूप में थाम रखी थी। जगमोहन ने कैप देवाराज चौहान के सिर पर रख दी।

"इसे बंगले पर ले जाना।" देवराज चौहान ने कहा।

"हां, तुम अपना ख्याल रखना।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

देवराज चौहान ने कपड़ों में रखा रतनचंद का मोबाईल फोन निकाला।

"ये तुम्हारा है?" देवराज चौहान ने पूछा।

रतनचंद ने सूखे होंठों पर जीभ फेरते हुए सिर हिला दिया।

देवराज चौहान अब रतनचंद बना, गन थामे, दरवाजा खोल वैन से बाहर निकल गया। फौरन ही दरवाजा बंद कर दिया गया। रतनचंद अब अण्डरवियर में बैठा था।

जगमोहन ने रिवाल्वर थामें कठोर निगाहों से उसे देखा।

"तुम लोग कौन हो और ये क्या कर–"

"तेरे को नहीं पता?"

"न-हीं।"

अगले ही पल जगमोहन ने रिवाल्वर की नाल का तीव्र प्रहार उसकी कनपटी पर किया।

रतनचंद चीखा तो जगमोहन ने दूसरी चोट की।

रतनचंद गुड़मुड़ सा बेहोश होकर सीट पर ही लुढ़कता चला गया।

रतनचंद बना देवराज चौहान उसी जगह पर जाकर खड़ा हो गया, जहां रतनचंद पहले खड़ा था। देवराज चौहान को देखकर कोई भी ये नहीं कह सकता था कि ये वो ही शख्स

नहीं है, जो यहां चार मिनट पहले खड़ा था। सिर पर कैप, चेहरे पर दाढ़ी, शरीर पर वर्दी और हाथ में गन और चेहरे पर मास्क था रतनचंद का।

देवराज चौहान उधर देखने लगा, जहां शोर-शराबा पड़ा हुआ था।

R.D.X. का दिमाग खराब हुआ पड़ा था।

वो समझ न पा रहे थे कि आखिर ये क्या हो रहा है?

अभी तक उन्हें ये महसूस हो चुका था कि दुश्मन बहुत समझदार और चालाक है। वो सिर्फ चुनकर ही वार करने में विश्वास रखता है। परन्तु अब जो हो रहा था, वो बेवकूफी वाली, अनाड़ी वाली हरकत थी।

क्या ये वो ही दुश्मन है, या कोई नया ही पंगा है?

इसी में R.D.X. उलझकर रह गये थे।

एकाएक काशीनाथ रिवाल्वर वाला हाथ हिलाकर कह उठा–

"चलता हूं।" उसने रतनचंद से कहा–"देख लूंगा तुझे।"

रतनचंद बना धर्मा उसे देखता रहा। समझ नहीं पाया कि क्या कहे!

"चलो।" काशीनाथ ऊंचे स्वर में अपने आदमियों से बोला।

सबके चेहरे ढके हुए थे।

उन्होंने अपने घायल साथी को उठाया, जिसकी टांग पर गोली लगी थी। उसके बाद वे कारों पर सवार होकर वहां से निकल गये। उनके जाते ही वहां अजीब सा सन्नाटा घिर आया।

"ये सब क्या हुआ?" धर्मा ने दोनों को देख कर कहा।

"मुझे तो कुछ समझ नहीं आ रहा।" राघव बोला।

"मेरे ख्याल में कोई और ही चक्कर है। हमारा दुश्मन समझदार है। वो ऐसी हरकत नहीं कर सकता।" एक्स्ट्रा ने कहा।

"रतनचंद को पता होगा कि क्या चक्कर है।" धर्मा बोला।

"यहां से चलो।" राघव ने आसपास देखते हुए कहा।

तभी रतनचंद की पत्नी सोनिया भीड़ में से निकली और धर्मा की तरफ लपकी।

"ये क्या हो रहा है–क्या आप पर गोलियां चल रही थीं?"

इससे पहले धर्मा कुछ समझता, सोनिया उससे आ लिपटी।
"सब ठीक है।" धर्मा जल्दी से बोला—"तुम भीतर चलो।"
"सब ठीक है? ये आपकी आवाज को क्या हो—?"
"गला खराब है—तुम—।"
"देखा, तभी तो मैं मायके नहीं आती। जब भी जाती हूं, पीछे से आपको कुछ-न-कुछ हो जाता है।"
"तुम भीतर चलो, मैं आता हूं।"
धर्मा ने सोनिया को अपने से अलग किया और भीतर भेजा।
"निकलो।" राघव बोला।
सब वापस अपनी कारों की तरफ लपके।
एक्स्ट्रा, रतनचंद के वेष में खड़े देवराज चौहान के पास पहुंचा।
"तुम ठीक हो रतनचंद?" एक्स्ट्रा ने पूछा।
देवराज चौहान ने सिर हिलाया फिर बोला—
"ये क्या हो रहा है?" आवाज धीमी थी। इस झंझट के वक्त एक्स्ट्रा उसकी आवाज पर ध्यान न दे पाया।
"तुम्हें पता होगा।"
"मुझे क्या पता?"
"वो लोग तुम्हारे लिये आये थे।"
"मेरे लिए इस तरह कोई क्यों आयेगा?" बेहद धीमा स्वर था देवराज चौहान का।
"कुछ भी समझ नहीं आ रहा...।" एक्स्ट्रा आस-पास नज़रें दौड़ाता कह उठा—"हम यहां से चल रहे हैं।"
"ठीक है।"
"दाढ़ी तो ठीक तरह लगाओ।" एक्स्ट्रा ने कहा और एक तरफ से लटकती दाढ़ी को हाथ से दबाकर ठीक किया।
उसके बाद सब कारों में जा बैठे।
देवराज चौहान उसी कार में बैठ गया, जिसमें रतनचंद बैठा आया था।
भीड़ में से रास्ता बनाती कारें वहां से चल पड़ीं।

❑❑❑

वे बंगले पर पहुंचे।

सुन्दर बंगले पर ही था। वो रतनचंद के पास आया।
"सब ठीक है?" सुन्दर ने पूछा।
"इन लोगों से पूछो।" देवराज चौहान बोला।
"आपकी आवाज को क्या हुआ?"
"गले में खराश सी उभर आई है। चलो, मेरे कमरे में।"
सुन्दर उसके साथ चल पड़ा।
देवराज चौहान नहीं जानता था कि उसे किस कमरे में जाना है। इसलिये उसने सुन्दर को साथ लिया था। चलते समय जान बूझकर देवराज चौहान उससे एक कदम पीछे रहा।
सुन्दर, देवराज चौहान को लेकर रतनचंद के कमरे में पहुंचा।
देवराज चौहान सामने पड़ी कुर्सी पर बैठता कह उठा—
"वहां हमला हो गया।"
"हमला!" सुन्दर के होंठों से निकला—"धर्मा पर हमला हुआ होगा? आप पर तो नहीं?"
"धर्मा पर ही हुआ।" बात को समझते हुए देवराज चौहान ने कहा।
"कौन थे वे लोग?"
"R.D.X. को पता होगा। मैं तो एक तरफ खड़ा था।"
सुन्दर कुछ कहने लगा कि दरवाजे पर एक गनमैन आया।
"वहां गये गनमैनों में से एक गनमैन नहीं आया साथ में।" वो बोला।
"क्या कहते हो?" सुन्दर के माथे पर बल पड़ा।
"वो तब मेरी ही कार में था। परन्तु वापसी पर उसे साथ न पाकर सोचा कि वो दूसरी कार में बैठ गया होगा, परन्तु यहां आकर पता चला कि वो वापस आया ही नहीं।" उस गनमैन ने कहा।
"ये कैसे हो सकता है?" सुन्दर परेशान सा बोला।
गनमैन खड़ा रहा।
"ठीक है। तुम चलो—मैं आता हूं।"
गनमैन चला गया।
सुन्दर ने सोच में डूबे देवराज चौहान को देखा।
"कितनी अजीब बात है सर कि एक गनमैन कम वापस लौटा है।" सुन्दर कह उठा।

"हम जल्दबाजी में निकले थे। वो वहीं रह गया होगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"असम्भव सर। हमारे सारे गनमैन चुस्त हैं। वे इस तरह की गलती नहीं कर सकते।" सुन्दर कह उठा।

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

"आपको कुछ चाहिये सर?"

"गला ठीक करना है। गर्म पानी ले आओ।" देवराज चौहान बोला।

सुन्दर बाहर निकल गया।

देवराज चौहान फुर्ती से उठा और कमरे को अच्छी तरह देखा। अटैच बाथरूम भी देखा। यहां की चीजों से वो इस तरह अभ्यस्त (वाकिफ) हो जाना चाहता था, जैसे कि रतनचंद था।

कमरे की अच्छी तरह छानबीन करने के बाद उसने शरीर पर से वर्दी उतारी और वार्डरोब से कपड़े निकाल कर पहने, फिर उतारी वर्दी में से दो मोबाईल फोन निकाले। एक रतनचंद का फोन था, दूसरा उसका अपना।

देवराज चौहान ने जगमोहन को फोन किया।

जगमोहन से बात हो गई।

"तुम ठीक तरह उन लोगों के साथ हो?" उधर से जगमोहन ने पूछा।

"हां। मैं बंगले पर पहुंच गया हूं।" देवराज चौहान ने धीमे स्वर में कहा।

"उन्हें किसी तरह का शक तो नहीं हुआ?"

"नहीं। सब ठीक है। रतनचंद कैसा है?"

"अभी बेहोश है।"

"उसके होश में आने पर तुमने जो काम करना है, वो सुन लो। बंगले में मौजूद आदमियों के बारे में और यहां की बातों के बारे में रतनचंद से मालूम करके, मुझे बताना है, ताकि मैं किसी मौके पर फंस न जाऊं।"

"समझ गया।"

"रतनचंद का बंगले में खास आदमी कौन सा है और इन दिनों बंगले पर क्या चल रहा है।"

"ठीक है, उसके होश में आने पर मैं बात करूंगा, फिर तुम्हें फोन करूंगा।"

❑❑❑

देवराज चौहान को गर्म पानी देने के बाद सुन्दर R.D.X. के पास पहुंचा।

"एक गनमैन कम वापस लौटा है।" सुन्दर ने कहा।

R.D.X. की नज़रें मिलीं।

"ये कैसे हो सकता है।" धर्मा कह उठा, जो कि अब अपने चेहरे में था।

"समझ में नहीं आता कि ये कैसे हुआ है।" सुन्दर बोला।

"हमारे किसी आदमी को कोई गोली नहीं लगी?" एक्स्ट्रा बोला।

"नहीं, सब ठीक रहा।"

"तो फिर गनमैन कहां चला गया?" राघव बोला—"वो कब हमारे से अलग हुआ?"

"जब हम वहां से चले और यहां पहुंचने पर उसे नहीं पाया।"

"नाम क्या है उस गनमैन का?"

"प्रदीप।"

"उसके पास मोबाईल फोन तो होगा।"

"है, परन्तु यहां से चलते समय वो मोबाईल साथ नहीं ले गया था। मैंने उसे फोन किया तो पता चला कि फोन पीछे बने उसके क्वाटर में बज रहा है। कमरे में ही पड़ा था फोन।" सुन्दर ने कहा।

"उसकी वापसी का इंतजार करो। अगर रात भर में नहीं लौटा तो सुबह उसे तलाश करना।" धर्मा ने कहा।

"दूसरे गनमैनों से पता किया?"

"हां, किसी को उसके बारे में कोई खबर नहीं।"

"अभी कुछ इंतजार करो उसका।" एक्स्ट्रा ने कहा।

सुन्दर वहां से बाहर निकल गया।

R.D.X. की नज़रें मिलीं।

धर्मा सोच में डूबा कह उठा—

"यहां जो भी हुआ, हमारी सोच के बिल्कुल विपरीत हुआ।

रतनचंद को मारने वाला समझदार है, फिर उसने कैसी हरकत कर दी?"

"क्या पता, उन लोगों का रतनचंद की हत्या करने की चेष्टा में लगे व्यक्ति से कोई सम्बन्ध न हो?" राघव बोला।

"जो भी हुआ, न समझ में आने वाली बात....।"

"जब उन लोगों में से एक आदमी की टांग पर गोली लगी तो जानते हो उस आदमी ने मेरे से क्या कहा?" धर्मा ने दोनों को देखा।

"क्या?"

"वो मेरे से बोला, तू तो कहता था कि अपहरण का ड्रामा करना है और यहां तेरे आदमी गोलियां चला रहे हैं।"

"वो ऐसा बोला?"

"हां।"

"इस बात से लगता है कि रतनचंद के इशारे पर, वो सब आदमी आये हों।" एक्स्ट्रा कह उठा!

"हां, ऐसा ही लगता है।"

तीनों एक-दूसरे को देखने लगे।

"क्या रतनचंद ने उन लोगों को बुलाया होगा?" राघव के माथे पर बल दिखने लगे।

"रतनचंद ऐसा नहीं कर सकता।" धर्मा ने इंकार में सिर हिलाया।

"तो फिर वो तेरे से ऐसा क्यों बोला?" राघव ने धर्मा को देखा।

"यही तो समझ में नहीं आ रहा कि चक्कर क्या है?"

कुछ चुप्पी के बाद धर्मा बोला—

"वो सात-आठ लोग थे। सबने चेहरों पर रूमाल बांधे हुए थे। उन्होंने दिखावा किया कि वो रतनचंद के लिए आये हैं। हवा में गोलियां चला कर शोर-शराबा किया, परन्तु उन्होंने ऐसी कोशिश एक बार भी न की कि लगे, वो रतनचंद को ले जाने आये हैं।"

"तुम्हें ऐसा लगता है कि ये ड्रामा जानबूझ कर किया गया है?" एक्स्ट्रा बोला।

"शायद ऐसा ही हो।"

"फिर तो ये सोचा जा सकता है कि कहीं से हमारा ध्यान हटाने के लिये वो सब किया गया।" एक्स्ट्रा ने धर्मा को देखा।

"लगता तो ऐसा ही है कि वो सब खामखाह का शोर-शराबा था।"

"सवाल ये उठता है कि वो किस चीज की तरफ से हमारा ध्यान हटाना चाहते थे?" बोला राघव।

"और वो कौन थे?" एक्स्ट्रा ने पहलू बदला—"हमसे एक गलती हो गई। उन लोगों के बारे में जानने के लिये किसी को उनके भी पीछे जाना चाहिये था, कम-से-कम उन लोगों के बारे में पता तो चलता कि वो कौन लोग हैं जो—।"

"तब जो हुआ, हमारी आशा के विपरीत हुआ। सब कुछ भूलकर हम, उसी शोर-शराबे में उलझ गये थे।"

"और जिसने वो सब करवाया, यही वो चाहता था कि हम सब कुछ भूलकर, उस शोर-शराबे में उलझ जायें।"

"हमारे सामने ये जानना जरूरी है कि वो सब किसने करवाया और उसका मकसद क्या था?"

धर्मा उठ खड़ा हुआ।

"किधर?" राघव ने उसे देखा।

"रतनचंद से बात करते हैं।"

"क्या?"

"उस वक्त मैं रतनचंद के रूप में था और उनमें से एक आदमी ने जाते ही मेरे से बोला था कि तूने कहा था कि अपहरण का ड्रामा करना है और यहां तेरे आदमी गोलियां चला रहे हैं।" धर्मा का स्वर गम्भीर था—"कहीं ये सब रतनचंद ने तो कहीं करवाया?"

"पागल हो गया है क्या—रतनचंद ऐसा क्यों करवायेगा? फिर वो हर वक्त मेरे सामने रहा है। किसी से मिला भी नहीं कि—।"

"फोन पर रतनचंद इस काम का इंतजाम करवा सकता है।"

राघव-एक्स्ट्रा की नज़रें धर्मा पर थीं।

"रतनचंद से ये बात करने में तो कोई हर्ज नहीं।" धर्मा ने कहा।

"कोई हर्ज नहीं, बात करने में क्या है!"

"आओ।"

R.D.X. रतनचंद के कमरे में पहुंचे।

❑❑❑

देवराज चौहान को पहले ही कदमों की आहट मिल गई थी

कि कोई आ रहा है। उसने फौरन गर्म पानी का गिलास उठाया और बाथरूम के दरवाजे पर जा खड़ा हुआ। और घूंट भर कर 'गरारे' करने लगा। ताकि वे उसे देखें तो ये बता सकें कि उसका गला खराब है और वो उसकी बदली आवाज पर शक न कर सकें।

देवराज चौहान को 'गरारे' करते पाकर राघव बोला—

"क्या हुआ?"

"गला खराब हो गया है।" देवराज चौहान ने बाथरूम में जाकर कुल्ला करने के बाद कहा।

"ये सब बाद में करना।" एक्स्ट्रा बोला—"पहले हमसे बात करो।"

देवराज चौहान ने गिलास एक तरफ रखा और कुर्सी पर जा बैठा।

"कहो।" अब वे उसकी बदली आवाज पर शक नहीं कर सकते थे।

"तुमने उन लोगों को वहां बुलाया था और वहां शोर-शराबा करने को कहा था?"

रतनचंद का मॉस्क लगाये देवराज चौहान मुस्करा कर बोला—

"मैं ऐसा क्यों करूंगा?"

"ये तुम जानो।"

"मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। फिर मैं तो हर वक्त बंगले पर हूं, ये सब कैसे...।"

"फोन पर भी तो तुम आदमियों का इंतजाम कर सकते हो।" राघव बोला।

"नहीं। मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।"

R.D.X. के चेहरों पर तनाव दिख रहा था। इसमें कोई शक नहीं कि वे तीनों नम्बरी चालू थे। परन्तु इस वक्त वे मात खा चुके थे। रतनचंद के रूप में देवराज चौहान उनके सामने था, लेकिन इस बात की तीनों को हवा तक भी नहीं थी। वो सोच भी नहीं सकते थे कि अपने जिस दुश्मन के बारे में वो जानना चाहते हैं, वो उनके सामने ही मौजूद है।

"तुम ये सब बातें मुझसे क्यों पूछ रहे हो?" देवराज चौहान कह उठा।

"क्यों कि उन लोगों ने मुझे कहा, यानि रतनचंद को कहा कि,

तुम तो अपहरण का ड्रामा करने को कहते थे, और यहां हम पर गोलियां चलाई जा रही हैं।" धर्मा शब्दों पर जोर देकर कह उठा।

"हैरानी है उन्होंने ऐसा कहा।" देवराज चौहान ने शांत निगाहों से धर्मा को देखा।

"हैरानी तो हमें भी है।"

"लेकिन ये सब किया क्यों गया?"

"हमारा ध्यान बंटाने के लिये।"

"किस पर से?" देवराज चौहान ने पूछा।

"इसी बात पर तो पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं रतनचंद कि आखिर कोई, किस बात से हमारा ध्यान हटाना चाहता था।" एक्स्ट्रा ने होंठ सिकोड़ कर कहा—"कुछ तो बीच में है ही, जो अभी हमारी समझ से बाहर है।"

"मैं तो इतना जानता हूं कि जो मेरी जान लेना चाहता है, वो हमारी हरकतों पर नज़र रखे हुए है।" देवराज चौहान बोला।

"हां, ये बात तो है ही।"

"हमारा दुश्मन खेला-खाया आदमी है।" राघव कह उठा।

"तुम लोग क्या कम हो।" देवराज चौहान मुस्कराया।

"कितनी अजीब बात है कि अभी तक हम ये नहीं जान पाये कि कौन तुम्हें गोली मारना चाहता है और किसके कहने पर वो तुम्हें मार रहा है। जब तक हम इस बात को नहीं जानेंगे, ये मामला खत्म नहीं होगा।" धर्मा बोला।

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

"रतनचंद!" एक्स्ट्रा बोला—"अब हम तुम्हें बंगले पर ज्यादा देर बंद करके नहीं रख सकते। उसका कोई फायदा नहीं होगा। तुम्हें थोड़ा-सा खतरा उठाना होगा, यानि कि कल से बाहर अपने काम पर जाना होगा और हम तुम्हारे साथ रहेंगे। इस दौरान तुम पर कोई हमला होता है तो उन लोगों से हम निपटेंगे और तब शायद उनके बारे में कुछ पता चले।"

"जैसा तुम लोग ठीक समझो।"

R.D.X. देवराज चौहान को वहीं छोड़कर कमरे से बाहर निकल गये।

देवराज चौहान ने जगमोहन को फोन किया।

"कहो।" जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

रतनचंद से मेरी बात कराना। मैं उसकी आवाज सुनना चाहता हूं। ताकि उसके जैसी आवाज में बोल सकूं यहां पर। आवाज खराब होने का बहाना ज्यादा देर तक नहीं चलेगा। R.D.X. को मुझ पर शक भी हो सकता है।

"ठीक है, करा दूंगा बात।"

"होश नहीं आया उसे?"

"आ गया है। इस वक्त मैं उसका हाल-चाल पूछ रहा हूं। कुछ देर बाद रतनचंद से तुम्हारी बात कराऊंगा, पहले उसे सीधा कर लूं।"

देवराज चौहान ने फोन बंद किया और कुर्सी पर ही बैठा रहा। चेहरे पर सोच के भाव थे।

तभी फोन बजा।

"हैलो।" देवराज चौहान ने बात की।

"आप कहां हैं?" सोनिया की आवाज कानों में पड़ी—"यहां से आप कहां चले गये थे?"

देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं।

"क्या बात है, आप ठीक तो हैं?"

अब देवराज चौहान को महसूस हुआ कि दूसरी तरफ रतनचंद की पत्नी है।

"मैं ठीक हूं।" देवराज चौहान ने धीमे स्वर में कहा—"सिर्फ गला खराब है।"

"तभी आपकी आवाज बदली हुई है। वहां गोलियां कैसे चलीं और—"

"तुम किसी बात की फिक्र मत करो।"

"मैं आज भाई की शादी से निपट कर, कल ही वापस आ जाती हूं।"

"मैं कुछ कामों में व्यस्त हूं, तुम आराम से आओ, कोई जल्दी नहीं है।"

"मुझे लगता है आप मुझसे कुछ छिपा रहे हैं।"

"नहीं, सब ठीक है, वहम में मत पड़ो। तुम आराम से रहो, मैं यहां ठीक हूं।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"सच कह रहे हैं?"

"हां।"

"ठीक है। अब मैं हर रोज फोन करके आपका हाल पूछूंगी और दो-तीन दिन बाद मैं आ भी जाऊंगी।"

"ठीक है।"

देवराज चौहान ने फोन बंद करके वापस रखा।

उसी पल कदमों की आहट गूंजी और सुन्दर ने भीतर प्रवेश किया।

"अब आपका गला कैसा है?"

"पहले से ठीक है, सुबह तक फर्क पड़ जायेगा।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा—"लापता गनमैन का कुछ पता चला?"

"अभी तो नहीं।"

"कल मैं कामों के लिये निकलूंगा। घर में बंद नहीं रहूंगा।"

"ये आप क्या कह रहे हैं सर? बाहर आपको खतरा है।"

"खतरा उठाये बिना मामला खत्म भी नहीं होगा।"

"R.D.X. से बात की इस बारे में?"

"मेरा बाहर निकलना, उनका ही प्रोग्राम है।"

"ओह!"

परन्तु देवराज चौहान के लिए समस्या थी कि कल जायेगा कहां? क्यों कि रतनचंद के कामों के बारे में उसे ठीक से जानकारी नहीं थी कि वो कहां-कहां जाता है और क्या-क्या करता है?

"मैं परेशान चल रहा हूं। कुछ काम करने को भी मन नहीं कर रहा।" देवराज चौहान ने लम्बी सांस लेकर कहा।

"मैं समझता हूं सर।" सुन्दर ने सिर हिलाया।

"कल मैंने कहां जाना है, मेरा ये प्रोग्राम तुम ही बनाओ। तुम जानते हो मेरे कौन से जरूरी काम रुके पड़े हैं।"

"जानता हूं सर। मैं तो हमेशा आपके साथ ही रहता हूं।"

"तो जब तक मेरी ये परेशानी खत्म नहीं होती, मेरे बाहर जाने के प्रोग्राम तुम ही तय करोगे।"

"ठीक है सर। गले के लिये अगर डाक्टर की जरूरत हो तो उसे बुला—"

"सुबह तक फर्क न पड़ा तो डाक्टर को बुलाऊंगा।"

"ठीक है।"

"जो कोई भी नई बात हो, मुझे बताते रहना। R.D.X. जो कर रहे हैं, उन्हें करने दो।"

"जी।"

"कल मेरा कहां का प्रोग्राम बनाओगे कि मुझे किधर-किधर जाकर क्या काम करने हैं।"

"मैं आपका सारा प्रोग्राम तय करके, आपको एक घंटे तक बता दूंगा।" सुन्दर ने कहा।

देवराज चौहान ने सिर हिलाया तो सुन्दर बाहर निकल गया।

❑❑❑

R.D.X. अपने कमरे में मौजूद थे। अभी वे रतनचंद यानि कि देवराज चौहान से बात करके लौटे थे।

"मेरे ख्याल से।" राघव बोला—"हमारे साथ, खेल खेला गया है।"

"किसने?"

"कैसा खेल?"

"उसी ने जो रतनचंद की जान लेना चाहता है। उसने वहां पर कुछ आदमियों को भेज कर, हमारा ध्यान बंटाया और अपना जो काम वो करना चाहता था, कर दिया। हमें पता भी न चला कि उसने क्या किया!" राघव का स्वर कठोर हो गया।

"आखिर वो करना क्या चाहता था, तब उसके लायक करने को था ही क्या?"

"एक बात और नई हुई है।" धर्मा ने कहा—"वो जो भी है, रतनचंद की जान लेना चाहता है, तब मैं रतनचंद बना खुले में मौजूद था, वो चाहता तो आसानी से मेरा निशाना ले सकता था, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया।"

एक्स्ट्रा और राघव की नज़रें मिलीं।

"धर्मा ठीक कहता है।" एक्स्ट्रा बोला।

"तो क्या अब वो रतनचंद की जान नहीं लेना चाहता?" राघव ने एक्स्ट्रा को देखा।

"मैं नहीं मानता कि वो अपने इरादे से पीछे हट गया है।" एक्स्ट्रा ने इंकार में सिर हिलाया।

"केकड़ा के मुताबिक उसने रतनचंद को मारने की, तीन करोड़ की सुपाड़ी ली है, वो पीछे नहीं हट सकता।"

"तो उसने तब मेरा निशाना क्यों नहीं लिया, जब कि उसके पास अच्छा मौका था।" धर्मा बोला।

"ये मामला अब ज्यादा उलझ गया है।" राघव बोला।

"क्योंकि हम ये नहीं समझ पा रहे कि वहां पर आदमी भेज कर, वो क्या करना चाहता था, या क्या किया?"

"साला, हरामी, एक बार हाथ आ जाये तो—"

तभी सुन्दर भीतर आया।

तीनों की निगाह सुन्दर की तरफ उठी।

सुन्दर के साथ एक गनमैन भी था।

"ये वो ही गनमैन है, जो हमारे साथ वापस नहीं लौटा था।" सुन्दर ने बताया।

"प्रदीप?"

"हां।" सुन्दर बोला—"ये उन लोगों के पीछे गया था, जिन्होंने वहां हंगामा किया था।"

R.D.X. की नज़रें मिलीं।

"खूब!" एक्स्ट्रा कह उठा—"जो हमसे गलती हुई थी, वो इसने सुधार ली।"

"तुमने।" राघव ने प्रदीप से पूछा—"ये देखा कि वो लोग कहां रहते हैं?"

"मैंने उनके ठिकाने को देखा है। उनके बारे में थोड़ा सा पता भी किया। उनका बड़ा काशीनाथ नाम का बदमाश है। कई केस उस पर चल रहे हैं और इस वक्त वो जमानत पर है।"

"बन गया काम।" धर्मा उठा—"ये काशीनाथ बतायेगा कि असल मामला क्या है।"

"अभी चलेंगे।" एक्स्ट्रा बोला।

"यहां कौन रहेगा?" राघव कह उठा।

"यहां?" एक्स्ट्रा कह उठा—"सुन्दर है। दस-ग्यारह गनमैन हैं। हम तीनों बाहर जा सकते हैं। रतनचंद को कोई खतरा नहीं आयेगा, आया तो सुन्दर और गनमैन, सब संभाल लेंगे।"

"हां, इधर की परवाह मत करो।"

"चलो।" राघव प्रदीप से बोला—"हमें काशीनाथ के ठिकाने पर ले चलो।"

"चलिये।"

"किधर है?"

"उल्हास नगर में।"

"मैं वहां पर रतनचंद के चेहरे में ही जाऊंगा। अभी आया उसका चेहरा लगाकर।"

"मेरे ख्याल में तो ऐसे ही ठीक है।" राघव बोला।

"नहीं।" धर्मा बोला—"वो मुझे रतनचंद के चेहरे में देखेगा, तभी मुंह खोलेगा। जैसे कि उसने वहां पर कहा था कि तुमने अपहरण का ड्रामा करने को कहा था और यहां तुम ही गोलियां चला रहे हो।" धर्मा बाहर निकल गया।

दस मिनट बाद धर्मा वापस आया तो वो रतनचंद के रूप में था।

R.D.X. प्रदीप को लेकर बाहर निकल गये।

सुन्दर, रतनचंद यानि कि देवराज चौहान के पास पहुंचा।

"सर। लापता गनमैन वापस लौट आया है।" सुन्दर ने कहा—"वो उन लोगों के पीछे गया था।"

"जिन्होंने वहां हंगामा किया?" देवराज चौहान ने सामान्य स्वर में पूछा।

"जी। अब R.D.X. प्रदीप को लेकर वहां गये हैं। उसका नाम काशीनाथ है, छंटा हुआ बदमाश है। R.D.X. उससे जानेंगे कि असल मामला क्या है, वहां पर उन्होंने हंगामा क्यों किया। किसने कहा उन्हें ऐसा करने के लिये।"

"ये तो अच्छी बात है। शायद हमें पता चल जाये कि कौन पीछे पड़ा है।"

"जी, मेरे ख्याल में कल एक्स्ट्रा ने, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर की इमारत में जाकर, उस आदमी की जान लेने की जल्दी कर दी। वरना उस आदमी से जाना जा सकता था कि कौन-कौन आपके पीछे हैं।" सुन्दर सोच भरे स्वर में बोला।

देवराज चौहान ने कुछ ना कहा और सिर हिला दिया।

"मैं जरा गनमैनों पर नज़र मार लूं। R.D.X. तो प्रदीप को लेकर बाहर गये हैं।" कहकर सुन्दर चला गया।

देवराज चौहान के चेहरे पर विषैली मुस्कान उभर आई।

"कुछ नहीं पता चल पायेगा R.D.X. को।" देवराज चौहान बड़बड़ा उठा।

तभी देवराज चौहान का फोन बजा। उधर जगमोहन था।

"लो, रतनचंद से बात करो, उसकी आवाज पहचानो ताकि

तुम उसकी आवाज में वहां बात कर सको।" जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

"रतनचंद से अभी तक तुम्हारी क्या बात हुई?"

"बातचीत चल रही है अभी। बंगले पर सुन्दर नाम का आदमी, रतनचंद के सबसे करीब है।" जगमोहन ने सुन्दर का हुलिया बताया—"R.D.X. का हुलिया भी सुन लो कि कौन राघव है, कौन धर्मा और कौन एक्स्ट्रा।" जगमोहन ने तीनों के हुलिये बताये।

"कोई नई बात?"

"रतनचंद का कहना है कि कोई केकड़ा नाम से उसे फोन करता था और वो ही इन्हें, हमारी हरकतों के बारे में बताता था कि कब हम क्या करने जा रहे हैं। परन्तु अजीब बात तो ये है कि उसने कभी ये नहीं बताया कि कौन रतनचंद की हत्या करवाना चाहता है, ना ही उसने इन लोगों को हमारे बारे में बताया।"

"अजीब बात है! केकड़ा कौन हो सकता है?"

"रतनचंद कहता है कि उसे मोटी रकमों के लालच दिए गये कि वो, हम लोगों के बारे में बता दे, परन्तु उसने लालच स्वीकार नहीं किया। ठीक वक्त पर वो फोन पर ये बता देता है कि हम क्या करने वाले हैं। हम डिस्ट्रिक्ट सेन्टर की इमारत के आफिस में डेरा जमाये हुए हैं, ये बात भी केकड़ा ने ही बताई।"

देवराज चौहान के चेहरे पर सोच के भाव नाच उठे।

"इसे केकड़ा ने ये भी बताया कि शादी वाले घर में उस पर हमला होगा।"

"मतलब कि केकड़ा जानता था कि वहां हम कुछ करने वाले हैं।" देवराज चौहान बोला।

"उसे हमारी हर तरह की खबर है।"

"अब हमारे साथ नागेश शोरी के आदमी नहीं हैं, फिर खबर कैसे बाहर गई?" देवराज चौहान बोला।

"नागेश शोरी से तो तुमने शादी वाले घर का पता पूछा था और।"

"नागेश शोरी ये काम नहीं कर सकता।" देवराज चौहान ने टोका।

"वो नहीं कर सकता, लेकिन उसके आदमी—दिनेश चुरू, [illegible] मीणा और अवतार सिंह तो खबर बाहर कर सकते हैं।

उनमें जो भी गद्दार है, उसने ये जान लिया होगा शोरी से कि हम क्या करने जा रहे हैं।"

"केकड़ा कौन हो सकता है?" देवराज चौहान सोच भरे स्वर में बोला।

"कोई कमीना ही होगा।" उधर से जगमोहन ने जले-भुने स्वर में कहा।

"रतनचंद को भी एहसास नहीं हो पाया कि केकड़ा कौन है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"नहीं पता लगा उसे। केकड़ा ने एक दो बार R.D.X. से भी बात की।"

"इसका मतलब केकड़ा के हाथ लगते ही, गद्दार सामने होगा। केकड़ा ही वो गद्दार है, जो कि केकड़ा के नाम से खबरें रतनचंद को दे रहा था। ये केकड़ा नागेश शोरी के करीब रहने वाला ही कोई बंदा है।" देवराज चौहान ने कहा—"और क्या बोला रतनचंद?"

"बातचीत जारी है। रतनचंद का भीतरी सारा हाल जल्दी ही बाहर होगा। तुम्हें केकड़ा का फोन आया?"

"नहीं।"

"रतनचंद का फोन है तुम्हारे पास?"

"हां—है।"

"उसी फोन पर केकड़ा फोन करता है।"

"हूं। रतनचंद से मेरी बात कराओ। मैं उसकी आवाज सुनना चाहता हूं कि वो कैसे बोलता है और किन शब्दों का प्रयोग करता है। कैसी आवाज है उसकी।" देवराज चौहान के चेहरे पर सोच दौड़ रही थी, चंद क्षणों के बाद रतनचंद की आवाज कानों में पड़ी।

"ह-हैलो।" वो घबराया हुआ था।

"रतनचंद?" देवराज चौहान बोला।

"हां—लेकिन तुम लोग कौन हो? मुझे इस तरह कैद करके पूछताछ क्यों की जा रही है? क्या किया है मैंने?"

"तुम्हें बताया नहीं?"

"नहीं।"

"तो जो तुम्हारे पास खड़ा है, वो ही तुम्हें, तुम्हारे सवालों का जवाब देगा।" देवराज चौहान बोला।

"ये तो बता दो कि तुम लोग हो कौन?"

"तुम्हारी इन बातों का जवाब, तुम्हारे पास वाला—।"

"ये अपना नाम जगमोहन बताता है।"

"जगमोहन नाम ही है उसका।"

"तुम वो ही हो ना, जो मेरी शक्ल में मुझे वैन में मिले थे?"

"हां, वो ही हूं मैं।"

"तुम इस वक्त रतनचंद बनकर, मेरे बंगले पर हो?"

"हां।"

"आखिर ये सब हो क्या रहा है...तुम लोग...।"

"इन बातों का जवाब तुम्हें जगमोहन देगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"मैंने पूछा है, लेकिन ये कुछ भी बताता नहीं। मेरे से पूछे जा रहा है। तुम ही बता दो कि—।"

"मेरी बात ध्यान से सुनो।"

"क्या?"

"मैं रतनचंद बनकर, तुम्हारे बंगले पर मौजूद हूं। ऐसी हालत में तुम मुझे कुछ कहना चाहते हो तो कह सकते हो।"

"क्या कहूं?"

"तुम्हारा कोई जरूरी काम हो, ऐसी कोई भी बात। तुम्हारी इस तरह की परेशानी मैं दूर कर सकता हूं।"

कुछ चुप्पी के बाद रतनचंद की आवाज कानों में पड़ी।

"बंगले पर R.D.X. भी हैं?"

"हां।"

"वे तुम्हें पहचान लेंगे। तुम उनकी नज़रों से बच नहीं सकोगे।" रतनचंद के स्वर में गुस्सा आ गया।

"उनके लिये ये जानना आसान नहीं है कि मैं, रतनचंद नहीं हूं।" देवराज चौहान मुस्कराया।

"तुम उन्हें नहीं जानते।"

"और तुम मुझे नहीं जानते।"

"आखिर मेरी जगह पर बैठकर तुम करना क्या चाहते हो— कहीं—कहीं तुम मेरी पत्नी के साथ कुछ बुरा—"

"चिन्ता मत करो। तुम्हारी बीवी मेरे लिये पूजनीय है। औरतों को मैं इज्जत की नज़रों से देखता हूं।"

आखिर तुम चाहते क्या हो—मैं।"

"जानना चाहते हो मेरे बारे में?"

"ह-हां—बताओ—बोलो।"

"मेरा नाम देवराज चौहान है। शायद तुमने कभी डकैती मास्टर देवराज चौहान का नाम सुना हो?"

"ह-हां—सुना है। सुना है—तुम वो ही हो?"

"वो ही हूं मैं।"

उधर से रतनचंद की आवाज नहीं आई।

"मैंने तुम्हारी हत्या की सुपाड़ी ली है।"

"सुपाड़ी—तुम—तुम वो हो।" रतनचंद का फटा-फटा सा स्वर देवराज चौहान के कानों में पड़ा—"तुमने—तीन करोड़ में मेरी हत्या की सुपाड़ी ली है।"

"हां, रकम की बात तुम्हें किसने बताई?"

"केकड़ा ने।" रतनचंद के गहरी सांस लेने की आवाज देवराज चौहान के कानों में स्पष्ट पड़ी—"अगर तुम मेरी हत्या करना चाहते हो तो मुझे इस तरह कैद क्यों कर लिया? मेरी जगह पर, मेरा चेहरा लेकर तुम क्यों जा बैठे? मेरी हत्या क्यों नहीं की?"

"क्यों कि तुम्हारी हत्या करने से पहले मैं ये जानना चाहता हूं कि कौन मेरी खबरें, तुम तक पहुंचा रहा है।"

"केकड़ा...।"

"केकड़ा कोई नाम नहीं है। और अब मुझे जानना है कि केकड़ा है कौन?"

"फिर—उसके बाद, मुझे मार दोगे?"

"ख्याल तो यही है।"

"तुम पागल तो नहीं हो क्या?"

"क्यों?"

"किसी के कहने पर तुम मेरी जान क्यों लेना चाहते हो? मेरे से सौदा कर लो। मुझे ये बता दो कि किसने तुम्हें मेरी हत्या की सुपाड़ी दी है। तुम मुझे न मारो, बदले में मैं तुम्हें पांच करोड़ दूंगा।" रतनचंद की आवाज कानों में पड़ी।

"ये कभी नहीं होगा।"

"तो मैं भगवान से यही कहूंगा कि R.D.X. तुम्हें पहचान लें और तुम्हारे सिर में गोली मारें।" रतनचंद की आवाज में गुस्सा आ गया था।

"तुम्हारे बंगले से बहुत जल्दी एक-एक करके R.D.X. गायब हो जायेंगे रतनचंद।" देवराज चौहान कड़वी मुस्कान से बोला।

"क्या मतलब?"

"जब मरोगे, तब तक हर बात का मतलब समझ चुके होओगे।" देवराज चौहान ने कहा और फोन बंद कर दिया।

इतनी बात करके देवराज चौहान, रतनचंद के स्वर को अच्छी तरह पहचान चुका था और अब उसे रतनचंद जैसे स्वर में बोलने में कोई परेशानी नहीं आने वाली थी।

❑❑❑

रात के साढ़े दस बज रहे थे, जब वे उल्लासनगर में पहुंचे और गनमैन प्रदीप के कहने पर एक मकान के पास कार रोकी। ये स्लम एरिया था। छोटे-छोटे, आसमान की तरफ बढ़ते घर बने हुए थे। हर तरफ चहल-पहल थी, लोग आ-जा रहे थे। किसी स्ट्रीट लाईट का बल्ब रोशन था तो किसी का बंद।

R.D.X. बाहर निकले।

धर्मा रतनचंद के वेष और चेहरे में था।

"किधर चलना है?" एक्स्ट्रा (X-TRA) ने प्रदीप से पूछा।

"उधर, वहां कार नहीं जा सकती। हमें पैदल ही जाना होगा। दो-तीन गलियों के पार वो जगह है, जहां वे लोग हैं।"

चारों पैदल ही आगे बढ़ गये।

कुछ देर बाद ही वे एक मकान के बंद दरवाजे पर खड़े थे। पचास गज का वो मकान चार-मंजिला बना हुआ था। कुछ दूर खम्बे पर लगा बल्ब रोशन था। गली में लोगों का आना था।

राघव ने दरवाजा थपथपाया कॉलबेल तो वहां लगी नहीं थी।

दूसरी बार थपथपाने पर पहली मंजिल की सुरंग जैसी बॉलकानी पर कोई दिखा।

"क्या है?"

चारों ने ऊपर देखा।

"दरवाजा खोलो।" एक्स्ट्रा ने कहा।

"किससे मिलना है, गलत जगह आ गये लगते हो।" आवाज से वो कुछ नशे में महसूस हुआ।

"काशीनाथ भीतर ही है ना?" राघव ने पूछा।

"काशीनाथ? तुम लोगों को काशीनाथ से मिलना है?"

"हां।"

वहां इस कदर पर्याप्त रोशनी नहीं थी कि ऊपर वाला व्यक्ति उनके चेहरे स्पष्ट देख पाता।

वो व्यक्ति वहां से हट गया।

पांच-सात मिनट बाद नीचे वाला दरवाजा खुला।

"कहो, मैं हूं काशीनाथ।" पर्याप्त रोशनी न होने की वजह से उसका चेहरा स्पष्ट नज़र न आ रहा था।

धर्मा ने आवाज से पहचाना कि यही व्यक्ति वहां रूमाल बांधे गोलियां चला रहा था।

"भीतर चलो, तुमसे बात करनी है।" धर्मा बोला।

"मुझसे? मैं तुम लोगों को नहीं जानता और शरीफ लोगों का मेरे पास काम नहीं है।"

"मुझे देखो।" धर्मा बोला—"क्या तुम मुझे जानते नहीं?"

काशीनाथ ने उसे देखा। अंधेरा होने की वजह से स्पष्ट न देख पाया तो जेब से माचिस निकाल कर तीली जलाई। अगले ही पल उसके होंठों से निकला।

"तुम?"

"भीतर चलो, तुमसे बात करनी।"

"आओ। मैं भी तेरे से बात करना चाहता हूं। तूने हेरा-फेरी की है मेरे साथ।"

वो भीतर एक कमरे में जा पहुंचे।

प्रदीप उनके साथ था।

वहां रोशनी में एक-दूसरे को स्पष्ट देख पाये।

काशीनाथ नाराजगी से धर्मा को देख रहा था।

"मुझे पहचानते हो?" धर्मा बोला?

"तुझे तो—।"

"काशीनाथ, इस वक्त मैं जो पूछ रहा हूं, वो बोलो, तुम्हारी बातें भी हो जायेंगी। हम पहली बार कब और कहां मिले थे?"

"ये तुम पूछ रहे हो—तुम तो—।"

"मैंने कहा है, हर बात होगी, लेकिन जो—।"

"तुम यहां तक कैसे पहुंचे—इस जगह के बारे में तो मैंने किसी को नहीं बता—।"

"तेरे को बार-बार कह रहे हैं कि पहले हमारी बात का जवाब

दे, बाकी बातें भी हो जायेंगी।" एक्स्ट्रा तीखे स्वर में बोला—"लेकिन तुम हर बात तो कर रहे हो,—लेकिन जो हम चाहते हैं, वो नहीं।"

"मैं तेरे बाप का नौकर लगा हूं कि तेरी बात मानूं।" काशीनाथ गुर्रा उठा।

एक्स्ट्रा ने रिवाल्वर निकाली और काशीनाथ की तरफ कर दी।

"अब बोल, नौकर लगता है या नहीं?" एक्स्ट्रा कड़वे स्वर में बोला।

दांत भिंच गये काशीनाथ के।

"मेरे से दादागिरी करता है, जानता है मेरे को?" काशीनाथ गुरार्या।

"जानता हूं।"

"नहीं जानता, तभी मुझे धमकी दे रहा है! ऊपर के कमरे में मेरे दस आदमी हैं, अगर उन्हें पता चल गया तो—।"

"कुछ नहीं होगा क्योंकि तब तक मैं तुझे गोली मार चुका होऊंगा।" एक्स्ट्रा पूर्ववतः स्वर में बोला।

काशीनाथ ने एक्स्ट्रा को घूरा।

"तू है कौन—तू तो...।"

"सुन।" राघव बोला—"फालतू की बातें छोड़, काम की बात कर, नहीं तो खामखाह ही बात बढ़ जायेगी।"

काशीनाथ ने रतनचंद बने, धर्मा को देखा।

"बोल—क्या है?" काशीनाथ की आवाज में तीखे भाव थे।

"तूने मेरे को पहले कब देखा—कब मिला मुझसे?" धर्मा बोला।

"आज—जब तू मेरे पास आया था।"

"मैं आया था?"

"हां, तो क्या तेरा भूत था वो?"

"कहां आया मैं?"

"मेरे दूसरे ठिकाने पर।" काशीनाथ ने उस ठिकाने के बारे में बताया।

"कितने बजे आया था मैं?"

"दस-बारह का वक्त होगा...। ये बेकार की बातें क्यों पूछ रहा है?"

धर्मा ने एक्स्ट्रा और राघव को देख कर कहा—

"सुना, रतनचंद सुबह मिला इससे, जबकि तब वो हमारे पास मौजूद था।"

"क्या पागलों वाली बातें कर रहे हो...।" काशीनाथ कह उठा—"तुम आज मेरे पास आये नहीं थे क्या?"

"तो मैंने तुम्हें क्या कहा?"

"यही कि उस शादी वाले घर में जब तुम पहुंचोगे तो तुम्हारे अपहरण का ड्रामा करना है, खासा शोर-शराबा डालकर वहां से चले आना है। वो ही मैंने किया, लेकिन तुम्हारे आदमियों ने गोली क्यों चलाई? उसकी टांग पर गोली लगी है। बीस हजार तो उसके इलाज में और खाने-पीने में लग जायेगा। सिर्फ लाख रुपये दिया तुमने इस काम का—।"

"लाख रुपया?"

"मुझे तो लगता है कि ये बकवास कर रहा है।" राघव बोला— "रतनचंद भला कैसे मिल सकता है इसे?"

"इससे पूछ लो। ये कल मुझे मिला था या नहीं—और मेरे साथी इस बात के गवाह हैं।"

"इसके साथ कौन था?"

"एक आदमी था जो कि ड्राईविंग सीट पर बैठा रहा। मेरी उससे कोई बात नहीं हुई। बहुत हो गया, अब बताओ कि ये सब क्या हो रहा है? क्यों मुझसे ये बातें पूछी जा रही हैं? जो पूछना है, इस रतनचंद से पूछ लो।"

R.D.X. की नज़रें मिलीं।

उनके चेहरों पर अजीब सी परेशानी नज़र आने लगी थी।

"तुमसे मिलने वाला मैं नहीं था।" धर्मा बोला।

काशीनाथ ने उसे घूरा।

"तू मुझे बेवकूफ समझना है जो ऐसी बात कर रहा है? मैं ही मिला था तेरे को जो—।"

"ये ठीक कह रहा है।" एक्स्ट्रा ने कहा।

"तुम लोगों ने कैसे सोच लिया कि मैं तुम्हारी बातों पर यकीन कर लूंगा?"

वे चुप रहे।

"फिर सबसे बड़ी बात है कि मुझे ये सब क्यों कह रहे हो?"

काशीनाथ अपनी जगह पर सही था।

R.D.X. तो काशीनाथ से पता करने आये थे कि मामला क्या है।

"पच्चीस हजार और दो, जो मेरे साथी की टांग पर गोली मारी ताकि....।"

"तुमसे कल जो मिला, वो मैं नहीं, मेरा बहरूपिया था।" धर्मा बोला।

"बकवास—तुम्हारी बात पर कौन यकीन करेगा?" काशीनाथ उखड़े स्वर में कह उठा—"पच्चीस हजार नहीं देना चाहते तो कोई दूसरा बहाना बनाओ, ऐसे घटिया बहाने को दूर ही रखो।"

"मैं सच कह रहा हूं, तुम्हें मेरी बात का विश्वास करना चाहिये।"

"तेरा कोई जुड़वां भाई है?"

"नहीं।"

"आज मुझसे मिलने वाला, तू ही था। मुझे पागल समझा है क्या—जो ये बात मुझे सुना रहा है।"

राघव, एक्स्ट्रा और धर्मा से बोला—

"मेरे ख्याल में हम जो जानने आये थे, वो जान लिया है।"

"हां, अब हमें चलना चाहिये।"

"ये क्या बात हुई, मुझे पच्चीस हजार रुपया—।" काशीनाथ ने कहना चाहा।

"मैंने तेरे को कोई फोन नम्बर दिया था?"

"फोन नम्बर क्यों देगा तू—तेरे को नहीं पता जो ये बात मेरे से पूछ रहा है?"

"उस कार का नम्बर पता है, जिस पर मैं आया था?" धर्मा ने पूछा।

"ये तू क्यों पूछ—।"

"बता तो सही।"

"मैं भला तेरी कार का नम्बर क्यों देखूंगा!"

"शायद देख लिया हो, कई लोगों की आदत होगी है, कारों के नम्बर पढ़ने की।"

"मुझे ये आदत नहीं है। तूने मेरे आदमी को गोली मारी है, पच्चीस हजार मुझे दे। मैं तो सोच भी रहा था कि गोली का हर्जाना लेने के लिये तुझे कहां ढूंढूं।" काशीनाथ लड़ने वाले स्वर में कह उठा।

"बच गया तू अभी, शुक्र कर कि तेरे को गोली नहीं मारी।" राघव ने सख्त स्वर में कहा।

"क्यों—मेरे को गोली क्यों मारोगे। एक तो मेरे से काम करवाते हो और ऊपर से—।"

"हमने तेरे से काम नहीं करवाया।"

"इससे पूछ—ये आज दिन में मेरे पास आया और लाख रुपया देकर काम—।"

धर्मा ने चेहरे पर लगा रखा मास्क उतार दिया।

काशीनाथ हक्का-बक्का रह गया।

"तुम—तुम!"

"अब समझा कि दिन में तेरे से मिलने वाला मैं नहीं था।" धर्मा ने शांत स्वर में कहा।

काशीनाथ की शक्ल देखने वाली थी।

"इसलिये तेरे से पूछ रहे हैं कि तेरे से मिलने वाला कौन था?"

"इस—इस चेहरे का असली मालिक...।" काशीनाथ के होंठों से निकला—"असली मालिक ही होगा।"

"इस चेहरे का असली मालिक आज हर वक्त हमारे साथ रहा है।"

"ये कैसे हो सकता है।"

"ये ही हुआ है। तभी तो ये बातें पूछने तेरे पास आये हैं।"

"लेकिन—लेकिन तुम लोग हो कौन?"

"चलो यहां से।" धर्मा बोला।

"ये सब आखिर हो क्या रहा है?"

"तेरे जानने लायक कुछ भी नहीं है। मजे कर।"

R.D.X. और प्रदीप बाहर निकल आये।

काशीनाथ से खतरनाक जानकारी मिली थी।

कोई आज दिन में, रतनचंद बनकर, काशीनाथ से मिला और रतनचंद का नकली अपहरण करने का ड्रामा करने को कहा। इसके लिये उसे लाख रुपये दिये गये। वो कौन था जो रतनचंद का चेहरा ओढ़े, काशीनाथ से मिला था?

❑❑❑

"अगर हम काशीनाथ की बातों पर विश्वास करें तो ये बात सामने आती है कि कोई रतनचंद का चेहरा इस्तेमाल कर रहा है।"

राघव और एक्स्ट्रा, धर्मा को देखने लगे।

वे बंगले पर आ चुके थे और कमरे में पहुंचते ही धर्मा बोला था।

"ये हैरानी वाली बात है कि कोई रतनचंद का चेहरा इस्तेमाल कर रहा है।"

"वो कोई, वो ही हो सकता है, जो रतनचंद की हत्या करना चाहता है।"

R.D.X. एक-दूसरे को देखने लगे।

"मुझे हालात कुछ बदलते से लग रहे हैं।"

"ऐसा क्यों?"

"शाम को जब काशीनाथ ने शादी वाले घर पर हंगामा किया तो, मारने वाले के पास तब पूरा मौका था कि रतनचंद बने धर्मा पर वो आसानी से हमला कर सके, परन्तु उसने हमला नहीं किया।"

"क्या पता वो वहां हो ही नहीं।"

"वो वहीं था। पक्का वहीं था, रतनचंद बनकर वो ही, काशीनाथ से मिला।"

"रतनचंद बनना आसान नहीं, समझ में नहीं आता कि कोई रतनचंद के चेहरे का मॉस्क कहां से हासिल कर सकता है?"

"कहीं से तो उसने हासिल किया ही है।"

"उसने काशीनाथ को हंगामा करने को क्यों कहा? ये जवाब ढूंढना होगा कि इसके पीछे उसकी मंशा क्या थी।"

एक्स्ट्रा उठा और कमरे में चहल कदमी करने लगा।

"क्या हुआ?" धर्मा ने उसे देखा।

"सोचने की ये बात है कि रतनचंद के चेहरे का मॉस्क उसने कहां से बनवाया होगा।" एक्स्ट्रा ने कहा।

"जगजीत।" राघव के होंठों से निकला।

R.D.X. की नज़रें मिलीं।

"हमने जगजीत से बनवाया था। ये काम सुन्दर करने गया था।" धर्मा बोला।

"तो क्या उसने भी जगजीत से बनवाया होगा?"

"जगजीत कम से कम रतनचंद का मॉस्क किसी को नहीं बना के देगा। क्योंकि उसने ये काम हमारे लिये किया है।"

"सोचने की बात है कि ये खबर सुन्दर ने बाहर निकाली है, या उसने अपने तरीके से हांसिल की है?"

"वो जो भी हैं, सुन्दर को खरीद सकता है।"

"सुन्दर नहीं बिकेगा।"

"क्यों नहीं बिकेगा? नोटों की महक सबका ईमान खराब कर देती है। कोई दस रुपये पर बिकता है तो कोई दस लाख में। सब की अपनी-अपनी कीमत होती है। हो सकता है सुन्दर यहां की खबरें बाहर दे रहा हो।"

चंद पलों के लिये उनके बीच खामोशी छा गई।

"हमें पता लगाना होगा कि क्या जगजीत ने रतनचंद के चेहरे का फेस मॉस्क बनाकर किसी को दिया है।"

धर्मा ने फोन निकाला और जगजीत का नम्बर मिलाने लगा।

धर्मा ने कई बार नम्बर मिलाया, फिर कह उठा–

"उसने अपना फोन बंद कर रखा है।"

"मैं जगजीत के पास होकर आता हूं।" राघव उठते हुए बोला और बाहर की तरफ बढ़ा।

"ध्यान से, रास्ते में तुम्हें खतरा हो सकता है।" पीछे से एक्स्ट्रा ने कहा।

एक्स्ट्रा और धर्मा की नज़रें मिलीं।

"सुन्दर के बारे में हमें अपनी तसल्ली कर लेनी चाहिये कि वो गद्दार है या नहीं?"

"अगर जगजीत ने ही किसी को रतनचंद का मॉस्क बना कर दिया है तो....। मैं कुछ गलत सोच रहा हूं। कुछ भी हो सकता है। सुन्दर ने पता लगा लिया होगा कि हमने उसे जगजीत के पास किस काम के लिये भेजा है और उसने ये खबर बाहर निकाल दी। सुन्दर बिका हुआ हो सकता है। कुछ भी हो सकता है धर्मा–।"

"हां, कुछ भी हो सकता है, परन्तु किसी नतीजे पर पहुंचने की जल्दी मत करो। अब बात तो स्पष्ट हो गई कि हमारा दुश्मन उससे कहीं ज्यादा खतरनाक है, जितना कि हम सोच रहे थे। वो हमसे खेल, खेल रहा है।"

"पता चलेगा कि कहां गड़बड़ है।" एक्स्ट्रा बोला–"रतनचंद का हमशक्ल बनकर वो ना जाने क्या खेल खेल रहा है।"

"हम अभी तक ये नहीं जान पाये कि वो कौन है?"

तभी रतनचंद के रूप में देवराज चौहान ने भीतर प्रवेश किया।

"आओ रतनचंद–बैठो।"

देवराज चौहान आगे बढ़कर बैठ गया और रतनचंद की आवाज में बोला–

"जहां तुम लोग गये थे, वहां कुछ पता चला?"

"अजीब सी बात पता चली है।"

"क्या?"

"जो तुम्हारा निशाना लेने की फिराक में है, वो तुम्हारे चेहरे के रूप में भी नज़र आता है।"

"ये कैसे हो सकता है?" देवराज चौहान (रतनचंद) ने हैरानी जाहिर की।

"यही हो रहा है। जिन लोगों ने आज शाम, वहां हम लोगों पर हमला किया, उनका सरदार कहता है कि रतनचंद ने एक लाख रुपये देकर उसे ये काम करने को कहा था।" एक्स्ट्रा एक-एक शब्द पर जोर देकर कह उठा।

"ये कैसे हो सकता है? मैं तो हर वक्त इस बंगले पर, तुम लोगों के सामने मौजूद रहा हूं।"

"हां, तभी तो हम कह रहे हैं कि, वो तुम्हारा चेहरा लगाये भी घूमता है।"

"मेरा चेहरा–मेरा चेहरा उसने कहां से लिया?"

"राघव, जगजीत के पास गया है, ये पता करने कि उससे तो मॉस्क नहीं बनवाया गया।"

"ये बात तो उसे फोन करके भी पूछ लेते कि–।"

"फोन नहीं लग रहा उसका।"

"ओह!"

"हमें सुन्दर के बारे में बताओ, उस पर किस हद तक विश्वास किया जा सकता है?"

"पूरी हद तक। लेकिन ये बात तुमने क्यों पूछी?"

"उस मास्क को सुन्दर के द्वारा ही जगजीत से बनवाया था, ये जुदा बात है कि हमने सुन्दर को नहीं बताया कि वो तुम्हारे चेहरे का मॉस्क जगजीत से ला रहा है। परन्तु ये बात आसानी से जान सकता था कि जगजीत से हम मॉस्क बनवा रहे हैं तुम्हारे चेहरे का, और ये बात उसने बाहर किसी को बता दी हो।"

देवराज चौहान मुस्कुराया।

धर्मा और एक्स्ट्रा की नज़रें उस पर जा टिकीं।
"क्यों मुस्कुरा रहे हो रतनचंद?"
"बात कुछ भी हो, सुन्दर मेरा विश्वासी आदमी है। वो कोई गड़बड़ नहीं कर सकता।"
"विश्वासी ही तो धोखेबाजी करते हैं।"
"सुन्दर ऐसा नहीं है, मेरा विश्वास करो।"
देवराज चौहान बहुत अच्छी तरह से रतनचंद के रूप को निभा रहा था।
"मुझे मारने वाला, मेरा चेहरा लिए घूम रहा है तो हालात खतरनाक हो गये हैं।"
"सब ठीक हो जायेगा।"
"कैसे ठीक होगा? तुम लोग कुछ करते—।"
"इसी काम में लगे हुए हैं रतनचंद।"
"मुझे तो अब शंका होने लगी है कि वो जल्द ही मुझे कोई नुकसान पहुंचा देगा।" देवराज चौहान बोला।
"हम तुम्हारे साथ हैं, तुम्हें कुछ नहीं होगा। वो तुम्हें छू भी नहीं पायेगा।"
"क्या पता?" देवराज चौहान उठता हुआ बोला—"जल्दी करो। पहले उसे पहचान तो लो कि वो कौन है?"
देवराज चौहान वहां से निकलकर रतनचंद के कमरे में पहुंचा और फोन उठाकर जगमोहन के नम्बर मिलाये।
"हैलो।"
"एक काम तुम्हें अभी करना है।" देवराज चौहान धीमे स्वर में बोला।
"क्या?"
"राघव, जगजीत के घर की तरफ गया है। जगजीत का पता सुनो।" देवराज चौहान ने जगजीत का पता बताया—"राघव पर कब्जा करो और उसे बंगले पर ले जाकर कैद कर लो। सावधानी से ये काम करना। वो खतरनाक है।"
"समझ गया।"
"रतनचंद का क्या करोगे?"
"उसे बेहोश करके, हाथ-पांव बांध कर निकल जाता हूं।"
देवराज चौहान ने फोन बंद कर लिया।

❑❑❑

फोन बजा। एक्स्ट्रा ने बात की। दूसरी तरफ राघव था।
"कहो।" एक्स्ट्रा बोला—"जगजीत क्या कहता है?"
"जगजीत नहीं मिला। उसके फ्लैट का दरवाजा बंद है।" राघव की आवाज कानों में पड़ी—"गली का चौकीदार कहता है कि कल उसकी दिन में ड्यूटी थी, तब उसने जगजीत को ताला बंद करके दो लोगों के साथ जाते देखा, उसके बाद जगजीत नहीं लौटा।"
"कल से?"
"हां। वो खाली हाथ गया है, साथ में कपड़े वगैरह नहीं ले के गया।"
"तेरे को क्या लगता है?"
"मेरे को कुछ ठीक नहीं लगता। चौकीदार के मुताबिक, जगजीत कल दो के साथ निकला था। उनमें से एक तो सामने खड़ी कार में जा बैठा और दूसरे के साथ जगजीत पैदल ही गली से बाहर निकल गया।"
"जगजीत कहीं पर गया हो सकता है।" एक्स्ट्रा बोला—"उन दोनों का हुलिया कैसा है?"
"चौकीदार से पूछा है मैंने।" कहने के साथ ही राघव ने देवराज चौहान और सोहनलाल के हुलिये बता कर कहा—"मेरे ख्याल में तो ऐसे हुलिये वाले, दोनों लोगों से हमारा कभी वास्ता नहीं पड़ा।"
"हर बात में शक मत लाओ। जगजीत काम से कहीं गया हो सकता है। जगजीत के फ्लैट पर ताला है?"
"हां।"
"ताला तोड़ो और भीतर जाकर देखो कि क्या हमारे काम की कोई बात पता चलती है?"
"ठीक है।" इसके साथ ही उधर से राघव ने फोन बंद कर दिया था।
एक्स्ट्रा ने फोन टेबल पर रखते हुए धर्मा को देखा, जो कुर्सी पर आंखें बंद किए बैठा था।
"तेरे को क्या हुआ?" एक्स्ट्रा बोला।
"मैं सोच रहा हूं...।" धर्मा ने आंखें न खोलीं।

"क्या?"

"रतनचंद को निशाना बनाने वाला व्यक्ति, शाम को खामख्वाह का शोर-शराबा डाल के, अपना कौन-सा मतलब हल करना चाहता था? इतना तो जाहिर है कि काशीनाथ से उसने ये सब इसलिये करवाया कि, हम उस शोर-शराबे में उलझ कर रह जायें और वो जो करना चाहता है, हमारी निगाहों में आये बिना कर ले। आखिर वो करना क्या चाहता था?" धर्मा बन्द आंखों से बोला—"तब वहां पर उसके मतलब का कौन सा काम करने वाला हो सकता है?"

"पहली बार कोई खास हरामी हमारे सामने पड़ा है। साले ने हिला कर रख दिया है।" एक्स्ट्रा मुस्कुराया।

धर्मा ने आंखें खोलीं। एक्स्ट्रा को देखा।

"मैं जान लूंगा कि शोर-शराबे की आड़ में वहां उसने क्या किया!"

"कैसे जानोगे—सोच-सोच कर?" एक्स्ट्रा मुस्कुरा रहा था।

"हां। वहां पर उसके काम के लोग हम तीनों थे जिनमें से एक, यानि कि धर्मा रतनचंद बना हुआ था। हम तीनों के अलावा वहां पर अपनी सूरत बिगाड़कर रतनचंद गनमैन के रूप में मौजूद था। कुल चार लोगों से तब उसका वास्ता हो सकता है लेकिन रतनचंद को मैं चार में से बाहर निकाल देता हूं कि तब हम चंद लोगों के अलावा कोई नहीं जानता था कि रतनचंद गनमैन के रूप में वहां मौजूद है।" धर्मा अपने ही शब्दों के जाल में उलझ कर झल्ला कर बोला—"समझ में नहीं आता कि आखिर शोर-शराबे की आड़ में वो क्या करना चाहता था? जो चाहता था, वो कर भी पाया या नहीं। तुम्हारा क्या ख्याल है कि उसने वो कर लिया होगा, जो वो चाहता होगा?"

"क्या पता!" एक्स्ट्रा ने गहरी सांस ली—"क्योंकि हमें नहीं पता कि वो क्या करना चाहता था और उस काम के लिए उसे कितना वक्त मिला होगा। लेकिन इतना तो जाहिर है कि वो कुछ खास करना चाहता होगा, तभी उसने वहां शोर-शराबे का ड्रामा करवाया। साले ने दिमाग खराब करके रख दिया है!" धर्मा बड़बड़ा उठा।

❑❑❑

राघव ने चौकीदार को दो सौ रुपये दिए कि वो ताला तोड़कर

भीतर जाकर देखना चाहता है। उसका चोरी का कोई इरादा नहीं है। दस मिनट की मगजमारी करनी पड़ी चौकीदार से। अंत में चौकीदार ने वार्निंग के तौर पर राघव को समझा दिया कि अगर भीतर का माल लेकर बाहर निकला तो, वो उसे छोड़ेगा नहीं।

राघव ने दरवाजे पर लगे ताले से मुक्ति पाई और भीतर प्रवेश कर गया। वो पहले भी कई बार यहां आ चुका था। बहरहाल वो ये बात चैक करने लगा कि जगजीत ने उन्हें रतनचंद का मॉस्क देने के बाद क्या एक और मास्क बना कर किसी को दिया है। तभी उसकी निगाह सामने ही छोटे से टेबल पर पड़ी, वहां रतनचंद की दोनों तस्वीरें रखी हुई थीं, जो उन्होंने जगजीत को चेहरे की पहचान के लिये भेजी थीं कि इस चेहरे का मास्क बना सके।

राघव ने दोनों कमरों की अच्छी तरह तलाशी ली।

परन्तु वो समझ न पाया कि जगजीत ने रतनचंद का मॉस्क किसी को बनाकर दिया है या नहीं। उसी पल उसने जगजीत का मोबाईल फोन पड़ा देखा। राघव ने फोन को उठाकर चैक किया तो वो चार्ज नहीं था, राघव समझ नहीं पाया कि ये मोबाईल फोन जगजीत का है, या यूं ही यहां रखा हुआ है। उसने चार्जर तलाशा और उस मोबाईल फोन को चार्जिंग पर लगाया। अगले ही पल फोन चार्ज होने लगा। राघव ने अपना फोन निकाला और जगजीत के नम्बर मिलाये।

दूसरे ही पल चार्ज होता फोन बजने लगा।

राघव की आंखें सिकुड़ीं। होंठों के बीच कसाव आ गया।

फोन जगजीत का ही था परन्तु वो फोन साथ नहीं लेकर गया था। भारी गड़बड़ है कहीं, ये बात महसूस करने के लिये जगजीत का फोन यहां पड़े होना बहुत था।

राघव ने एक्स्ट्रा को फोन करके बात की।

"जगजीत का फोन फ्लैट में रखा है, मोबाईल फोन—।"

"ये कैसे हो सकता है कि वो अपना मोबाईल फोन भी अपने साथ न ले जाये।" एक्स्ट्रा की आवाज कानों में पड़ी—"राघव, जगजीत के साथ कोई गड़बड़ हुई है, कोई बड़ी गड़बड़—जो हमसे ही वास्ता रखती हो।"

"मेरा यहां कोई काम नहीं है। मैं वापस आता हूं।"

"हां, आ जाओ।"

राघव ने अपना फोन बंद करके जेब में रखा तो उसके कानों में चलने की आवाज पड़ी।
अगले ही पल दरवाजे पर जगमोहन दिखा।
दोनों की नज़रें मिलीं।
"क्यों भाई!" जगमोहन कह उठा—"तुम यहां क्या कर रहे हो?"
"मैं—मैंने क्या करना है?" राघव ने अपने को संभाला।
"ये ही तो पूछ रहा हूं कि तूने ताला क्यों तोड़ा, इस तरह भीतर क्यों आया?"
"तुम्हें किसने कहा कि मैंने ताला—।"
"बाहर बैठे चौकीदार ने। तूने उसको दो सौ दिए और मैंने पांच सौ—उसने सारी बातें बाहर कर दीं।"
राघव के माथे पर बल उभरे।
"तुम कौन हो?"
"जगमोहन....।"
"मेरा मतलब है कि पड़ौसी हो या जगज़ीत के दोस्त जो कि...।"
"पड़ौसी कभी भी पांच सौ खर्च नहीं करेगा।"
"तो जगजीत के दोस्त हो—। मैं भी उसका दोस्त—।"
तभी जगमोहन आगे बढ़ा और राघव के करीब आ पहुंचा।
"जो ताला तुमने तोड़ा है, वो कल मैंने ही लगाया था।"
"तुमने?" राघव चौंका।
"हां—मैंने।" जगमोहन मुस्कुराया।
"तो क्या जगजीत कल तुम्हारे साथ गया था?"
"हां।"
"कहां है वो, उसका तो मोबाईल फोन भी यहां पड़ा है?"
"वो जहां है, वहां उसे मोबाईल फोन की जरूरत नहीं।"
"कहां है?" राघव के चेहरे पर अजीब से भाव उभरे।
जगमोहन ने फुर्ती से रिवॉल्वर निकाली और राघव के पेट से नाल लगाते हुए कहा—
"मेरी कैद में।"
राघव एकाएक सतर्क नज़र आने लगा।
दोनों की नज़रें मिलीं।

"तुमने रिवॉल्वर क्यों निकाली?"
"तुम्हें लेने ही यहां आया हूं।"
"मुझे लेने?" राघव कोई मौका ढूंढ रहा था, जगमोहन पर हमला करने का।
"तेरे को जगजीत सिंह से मिलाता हूं—चलेगा? मेरे पास तेरी दिलचस्पी का और सामान भी है।"?
"और सामान?"
"चलेगा तो दिखाऊंगा—लेकिन यहां नहीं बताऊंगा।" जगमोहन मुस्कुरा कर खतरनाक स्वर में बोला।
"तुम हो कौन?"
"वो ही, जिसके बारे में शायद तुम लोग अभी तक जान नहीं सके। हमने ही रतनचंद की हत्या की सुपाड़ी ली है।"
यही वो पल थे कि राघव ने बिजली की सी तेजी से उसके रिवॉल्वर वाले हाथ को अपने पेट से हटाते हुए, जोरों से झटका दिया। सब कुछ इतनी फुर्ती से हुआ कि जगमोहन कुछ समझ न सका और रिवॉल्वर हाथ से निकल गई।
राघव ने जोरों का घूंसा जगमोहन के पेट में मारा।
जगमोहन पेट थामे दोहरा होता चला गया। परन्तु सब कुछ भूल कर उसी क्षण, झुके सिर से उसने सांड की तरह राघव के पेट में मारा तो राघव के पांव उखड़ गये और वो नीचे आ गिरा।
जगमोहन फुर्ती से झपटा और नीचे गिरी पड़ी रिवॉल्वर उठा ली। पेट में अभी दर्द भी हो रहा था। घूंसा बहुत ठिकाने पर पड़ा था। पीड़ा की लाली चेहरे पर आ ठहरी थी।
राघव ने अपने को संभाला, सीधा हुआ वो।
"घिसा हुआ हरामी है तू—। सुना था R.D.X. के बारे में, परन्तु मुलाकात अब हुई!" जगमोहन कड़वे स्वर में बोला—"क्या नाम है तेरा?"
"राघव।" कहते हुए राघव के दांत भिंचने लगे।
"पलट।"
"क्या?"
"पलट। मेरी तरफ पीठ कर। तेरे को बेहोश करके साथ ले चलना है। अगर बेहोश नहीं होना चाहता और गोली खाना

चाहता है तो मुझे कोई एतराज नहीं, तेरी लाश यहीं छोड़ जाता हूं।" जगमोहन की आवाज में दरिन्दगी भर आई थी।

"छोडूंगा नहीं तेरे को–।" राघव घूमता हुआ कहर भरे स्वर में बोला।

तभी जगमोहन आगे बढ़ा और एक-के-बाद एक रिवॉल्वर की नाल की चोट राघव के सिर पर की।

राघव बेहोश होकर नीचे गिरता चला गया।

जगमोहन ने रिवॉल्वर जेब में रखी और बेहोश राघव को उठा कंधे पर डाला, फिर बाहर निकलता चला गया।

❑❑❑

काफी देर से राघव का फोन नहीं आया तो धर्मा ने राघव को फोन किया।

दूसरी तरफ बेल बजती रही। परन्त राघव ने बात नहीं की।

दस मिनट में धर्मा ने कई बार राघव का फोन मिलाया। हर बार बेल हुई, परन्तु राघव ने बात नहीं की।

"राघव बात क्यों नहीं कर रहा?" धर्मा परेशान-सा कह उठा।

"शायद वो कहीं पर व्यस्त हो और बात न कर पा रहा हो।" उलझन में फंसे एक्स्ट्रा ने कहा।

"ऐसी भी क्या व्यस्तता!" धर्मा के माथे पर बल पड़े–"वो मुसीबत में हो सकता है।"

"मुसीबत?"

"हां, जगजीत के फ्लैट में किसी तरह का कोई पंगा हो गया हो।"

"वहां भला क्या पंगा हो होगा?" एक्स्ट्रा के होठों से निकला।

"कुछ हुआ हो सकता है, वरना राघव–!"

"जल्दी मत सोचो, इन्तजार करो। मेरे ख्याल में राघव कुछ ही देर में फोन करेगा।"

धर्मा ने कुछ न कहा। चेहरे पर परेशानी रही।

❑❑❑

जगमोहन ने बंगले के एक कमरे में राघव को लिटाया। वो बेहोश था, परन्तु अब कभी भी उसे होश आ सकता था। जगमोहन ने सबसे पहले नाईलोन की डोरी से मजबूती से राघव के हाथ-पांव बांधे, फिर देवराज चौहान को फोन किया।

"कहो।" देवराज चौहान की आवाज कानों में पड़ी।

"काम हो गया। राघव को बंगले पर ले आया हूं।" जगमोहन ने कहा।

"गुड। राघव और रतनचंद पर सख्त निगाह रखनी है। वो बंगले से निकल न सकें।"

"मैं सोच रहा हूं कि सोहनलाल को यहीं बुला लूं, वो जगजीत को लेकर यहां आ–।"

"उसे वहीं रहने दो। बंधक को लेकर इधर-उधर घूमना ठीक नहीं।" कहकर देवराज चौहान ने फोन बंद कर दिया।

जगमोहन ने बेहोश राघव पर निगाह मारी, फिर दूसरे कमरे में पहुंचा।

वहां रतनचंद बंधा पड़ा था–और उसे होश आ चुका था। जगमोहन को देखते ही वो भड़क कर बोला–

"तुमने ये क्या तमाशा लगा रखा है, बार-बार बेहोश करके बांध देते हो?"

"मुझे बाहर जाना था।" जगमोहन मुस्कुराया।

"तो मुझे बांधा क्यों?"

"अगर तुम्हें बांधा न होता तो तुम भाग लिए होते।" जगमोहन ने कहा और आगे बढ़कर उसके बंधन खोलने लगा।

बंधन खुलते ही रतनचंद ने राहत की सांस ली और अपने हाथ- पांवों को मलने लगा।

जगमोहन शांत खड़ा रहा।

रतनचंद ने जगमोहन को अपनी तरफ देखते पाकर कहा–

"क्या है?"

"सोच रहा हूं कि तुम्हारी वजह से खासा झंझट खड़ा हो चुका है।"

"मेरी वजह से?"

"हां! जब से तुम्हें मारने का काम हाथ में लिया है, तब से चैन खो गया है।"

"तीन करोड़ कमाने आसान नहीं होते।" रतनचंद मुस्कराया।

"तुम्हें इस बात का डर नहीं लग रहा कि हम तुम्हें बहुत जल्द गोली मार देंगे?"

"खास डर नहीं है।"

"क्यों?"
"मुझे विश्वास है कि R.D.X मुझे बचा ले जायेंगे।" रतनचंद ने कहा।
"इस हालत में भी उन पर विश्वास है?"
"तुम R.D.X. को ठीक से जानते हो?"
"नहीं।"
"तभी। जानते होते तो तुम्हें हर वक्त इस बात की शंका लगी रहती कि R.D.X. यहां पहुंच सकते हैं।"
"इतना विश्वास तो इन्सान को भगवान पर होता है।"
"इस हालत में तो मेरे लिए भगवान ही हैं R.D.X.।" रतनचंद ने जगमोहन को घूरते हुए कहा।
"उठो, तुम्हें कुछ दिखाता हूं।" एकाएक जगमोहन मुस्कुराया।
"क्या?"
"उठो तो। दूसरे कमरे में तुम्हारे लिये कुछ लाया हूं।"
रतनचंद माथे पर बल समेटे उठा।
जगमोहन उसे लेकर उस कमरे में पहुंचा जहां राघव बंधा था।
राघव पर निगाह पड़ते ही रतनचंद चिहुंक उठा।
राघव होश नें आ चुका था।
"तुम?" रतनचंद के होठों से निकला।
"रतनचंद!" राघव अजीब से स्वर में कह उठा—"तुम यहां कैसे?"
"मैं...मैं...मुझे तो ये कल शाम यहां ले आया था।" रतनचंद ने कहा।
"कल शाम को....?"
"हां, जब मैं गनमैन बना तुम लोगों के साथ गया था और धर्मा मेरे रूप में था। जब वहां पर कुछ लोगों ने आकर हंगामा किया, तो तभी इन लोगों ने मुझे वैन में बिठा लिया। वहां मेरी शक्ल लिए, एक आदमी मौजूद था। उसने मेरी गनमैन वाली वर्दी पहनी। मेरी दाढ़ी-मूंछ उतार कर अपने चेहरे पर लगा ली—और गन पकड़ कर मेरी जगह वो पहुंच गया।"
राघव के चेहरे पर जहान भर की हैरानी फैली हुई थी।
"तो इसका मतलब वापसी पर हमारे साथ तुम नहीं, कोई और था?" राघव के होठों से निकला।

"हां—वो—।"
"और इस समय बंगले पर तुम नहीं, कोई दूसरा है? सत्यानाश!" राघव की हालत देखने लायक थी।
"वो जानते हो, कौन है?" कहते हुए रतनचंद ने जगमोहन पर निगाह मारी।
जगमोहन बराबर मुस्कुरा रहा था।
"कौन है?"
"डकैती मास्टर देवराज चौहान।"
"डकैती मास्टर देवराज चौहान?" राघव के होठों से अजीब सा स्वर निकला। उसने जगमोहन को देखा—"तुम कौन हो?"
"जगमोहन।"
"देवराज चौहान का साथी, जगमोहन, नाम सुन रखा है। त-तो क्या तुम लोग रतनचंद को मारना चाहते थे?"
जगमोहन ने सहमति से सिर हिलाया।
"देवराज चौहान तो डकैतियां डालता है, फिर ये कत्ल की सुपाड़ी?"
"कसम तो नहीं ले रखी कि डकैतियां ही डालनी हैं, कत्ल भी किया जा सकता है।" जगमोहन बोला।
"हैरानी है कि हमारे सामने देवराज चौहान है।" राघव ने गहरी सांस ली।
"सोचा नहीं था।"
"नहीं, कभी नहीं सोचा था कि देवराज चौहान जैसे डकैती मास्टर से पंगा हो जायेगा। काश हमें पहले मालूम होता तो हम और भी सतर्कता से काम करते, तब तुम लोगों की कोई चाल सफल नहीं होती। ओफ्फ—देवराज चौहान वहां रतनचंद के चेहरे में मौजूद है और हम नहीं जानते इतनी बड़ी बात—देवराज चौहान कितनी आसानी से हमारे करीब पहुंच गया?"
"आसानी से नहीं, मेहनत की है।"
"तुम्हें, देवराज चौहान ने ही बताया होगा कि मैं जगजीत के फ्लैट पर जा रहा हूं।"
"हां।"
"वो वहां बैठा हर भेद ले रहा है।"

"तुम लोगों ने हमारे एक साथी की हत्या की है।" जगमोहन बोला—"डिस्ट्रिक्ट सैन्टर की इमारत में।"

"हां, एक्स्ट्रा (X-TRA) ने मारा है उसे।"

"उसे नहीं मारना चाहिये था।"

राघव जगमोहन को देखता रहा। सोचता रहा।

कुछ पल चुप्पी में गुजरे।

"रतनचंद!" जगमोहन बोला—"एक तो यहां आ गया, बाकी के दो भी आ जायेंगे।"

"तुम उन पर हाथ डालने में सफल नहीं हो सकते।" रतनचंद दांत भींचकर बोला।

"तुम तो ये भी कह रहे थे कि इस पर हाथ नहीं डाला जा सकता।" जगमोहन ने कड़वे स्वर में राघव की तरफ इशारा किया।

रतनचंद ने होंठ भींच लिये।

"बाजी देवराज चौहान के हाथ में है रतनचंद। हम चूक चुके हैं। देवराज चौहान इस वक्त छुरा लेकर हमारी बगल में बैठा है।" राघव ने परेशानी भरे स्वर में कहा—"देवराज चौहान जबर्दस्त चाल चल चुका है।"

जगमोहन मुस्कुराया।

"जगजीत भी तुम लोगों के पास है?" राघव ने पूछा।

"हां।"

"कहां?"

"किसी और जगह पर।"

"देवराज चौहान के चेहरे पर रतनचंद का मॉस्क है, वो जगजीत ने ही बनाया?"

"उसी ने बनाया।"

"यकीन नहीं होता कि जगजीत तुम लोगों के लिये रतनचंद के चेहरे वाला मॉस्क बनाने को तैयार हो गया।"

"सिर पर रिवॉल्वर लगी हो और किसी भी समय गोली चल सकती हो तो सामने वाले की बात माननी पड़ती है।"

राघव ने खा जाने वाली नज़रों से जगमोहन को देखा।

"मुझे खायेगा क्या?" जगमोहन बोला।

"तुम ये सब करके समझते हो कि तुम लोग ज्यादा चालाक और समझदार हो।"

"तो हमें अपने को क्या समझना चाहिये?"

"किस्मत के धनी।"

"वो कैसे?" जगमोहन के चेहरे पर व्यंग्य भरी मुस्कान आ ठहरी।

"इस वक्त बाजी तुम लोगों के हाथ में है, जानते हो ऐसा क्यों हुआ?"

"क्यों हुआ?"

"क्योंकि हम खुले रहकर खेल, खेल रहे थे और तुम लोग छिपकर खेल, खेल रहे थे। हम क्या कर रहे हैं, तुम लोगों को सब कुछ पता था, लेकिन तुम लोग कौन हो, हम ये नहीं जान सके। इसी वजह से तुम लोगों ने छिप कर हम पर वार किया और देवराज चौहान रतनचंद की जगह लेकर, हमारी बगल में बैठ गया। किस्मत के धनी हो तुम लोग।"

"एक बात मैं भी कहूं।"

"कह—।"

"खेल, खेल ही होता है, बेशक वो मौत का खेल ही क्यों न हो! दोनों पार्टियों में एक किस्मत का धनी होता है, जो जीतता है।"

"लेकिन तुम दोनों ज्यादा किस्मत के धनी निकले। आज तक हम लोगों से कोई जीत नहीं सका। हम हारे नहीं।"

"आज से पहले कभी तुम लोग देवराज चौहान के रास्ते में आये?"

राघव ने होंठ भींच लिये।

"पहली बार देवराज चौहान से टकराये हो—और हार पर तिलमिला रहे हो।"

"हार, कैसी हार? अभी तो खेल चल रहा है।"

"हम लोगों की मेहरबानी से ही खेल चल रहा है।" जगमोहन ने कठोर स्वर में कहा—"हम लोग जब चाहें, खेल खत्म कर दें। इधर तुम दोनों मेरे पास हो, उधर तुम्हारे दोनों साथियों के पास देवराज चौहान। हम चाहें, तुम सबको खत्म कर सकते हैं।"

राघव ने भस्म कर देने वाली निगाहों से जगमोहन को देखा।

"अभी तुम हमें ठीक से जानते नहीं कि—।"

"हम तुम लोगों को जानने नहीं निकले।" जगमोहन ने पूर्ववत: स्वर में कहा—"अपने काम पर निकले हैं।"

"और तुम लोगों का काम रतनचंद की हत्या करना है।"

"ठीक समझे।"

"तो अपना काम निपटा क्यों नहीं रहे, रतनचंद को कैद करके क्यों रखा है?"

"इसलिए कि देवराज चौहान पहले ये जानना चाहता है कि तुम लोगों को कौन हमारी खबरें दे रहा है। देवराज चौहान को गड़बड़ लग रही है, लेकिन वो समझ नहीं पा रहा कि गड़बड़ कहां है!"

"मैं बता तो चुका हूं कि खबरें केकड़ा दे रहा है।" रतनचंद बोला।

"और केकड़ा कौन है?"

"ये तो हम भी नहीं जानते।"

"ये ही जानने के लिये देवराज चौहान, उस बंगले में रतनचंद बन कर बैठ गया है।" जगमोहन ने कहा—"इस बात का पता लगते ही रतनचंद, तेरे को टपका दिया जायेगा।"

रतनचंद ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

राघव के होंठ भिंच गये।

"तुमने तीन करोड़ में रतनचंद की हत्या की सुपाड़ी ली है।" राघव कह उठा—"जान बचाने के लिए रतनचंद पांच करोड़ तुम्हें दे सकता है।"

जगमोहन मुस्कराया।

"मंजूर—?"

"मुंह बंद रख। थोड़ी-बहुत बेईमानी तो मैं धंधे में कर लेता हूं, लेकिन धोखाधड़ी नहीं करता।" जगमोहन कह उठा।

"जिसने मेरी हत्या की सुपाड़ी दी है, तुम उससे मिले हो?" रतनचंद ने जगमोहन से पूछा।

"हां।"

"कौन है वो? उसका नाम तो बता सकते हो। अब तो मैं तुम्हारी कैद में हूं और कभी भी तुम मेरी जान ले सकते हो।"

"चिन्ता मत कर रतनचंद—।" जगमोहन कड़वे स्वर में बोला—"तेरे को मारने से पहले, तेरे को उसके बारे में जरूर बताऊंगा। अब बहुत बातें हो गईं। चल, दूसरे कमरे में, तेरे हाथ-पांव बांध कर...।"

"कुछ खाने को नहीं दोगे?" रतनचंद ने गहरी सांस लेकर कहा।

"कल दूंगा। आज तो मेरे पास खाने को कुछ नहीं है।"

"जो एक्स्ट्रा के हाथों मरा था, वो कौन था—तुम्हारा ही साथी था?" राघव ने पूछा।

"वो उसका बंदा था जिसने रतनचंद की हत्या की सुपाड़ी दी है।"

तभी जगमोहन की जेब में पड़ा फोन बजा।

जगमोहन ने फोन निकाला। वो राघव का फोन था।

"तेरे यार-भाई, तेरे से बात करने को परेशान हो रहे हैं। जब तेरे को यहां ला रहा था, तो रास्ते में ये बहुत बार बजा था।"

राघव के दांत भिंच गये।

"बात कर लेने दे इसे।" रतनचंद कह उठा।

"इसके बात करते ही हमारा खेल खत्म हो जायेगा। ये अपने साथियों को पहली बात ये बतायेगा कि बंगले में मौजूद रतनचंद, रतनचंद नहीं, डकैती मास्टर देवराज चौहान है। ऐसा होते ही बाजी पलट जायेगी।"

जगमोहन, रतनचंद को लेकर कमरे से बाहर निकला।

पीछे से राघव की आवाज आई।

"मेरे को क्या रात भर इसी तरह बांधोगे?"

जगमोहन ने उसकी बात का जवाब न दिया और दूसरे कमरे में ले जाकर, रतनचंद को बांधा।

"तुम मुझे राघव के पास ही बांध देते।" रतनचंद बोला।

"ताकि तुम एक-दूसरे को खोल दो—।"

"हमारे हाथ तो बंधे हैं? कैसे हम—।"

"दांतों से एक-दूसरे के बंधन खोल सकते हो। उसके बाद मेरा बिस्तरा गोल करोगे। चुपचाप यहीं पड़ा रह।"

जगमोहन रतनचंद को बांधकर निकला। उसका इरादा अब कॉफी बनाकर पीने का था।

तभी पुनः फोन बजा।

राघव वाला फोन ही था। जगमोहन ने फोन निकाल देखा। सोचा, फिर कॉलिंग स्विच दबाकर बात की।

"यारों का दिल नहीं लग रहा, यार के बिना—।" जगमोहन व्यंग भरे स्वर में कह उठा।

एकाएक फोन पर चुप्पी छा गई।

"यार की आवाज कानों में नहीं पड़ी, तो कहने को कुछ नहीं रहा?" जगमोहन पुनः बोला और किचन की तरफ बढ़ गया।
"कौन हो तुम?"
"पहले अपने बारे में बताओ, धर्मा हो या एक्स्ट्रा?"
"धर्मा।" इस बार धर्मा की आवाज में कठोरता आ गई थी।
"तुम्हारा यार मेरे रहमो-करम पर है। हाथ-पांव बांध कर, एक तरफ डाल रखा है उसे।"
"कौन हो तुम?"
"जगजीत भी मेरी कैद में है।"
"उल्लू के पट्ठे तू है कौन—अपने बारे में बता?" उधर से धर्मा गुस्से से कह उठा।
"जगमोहन हूं उल्लू के पट्ठे।" जगमोहन हंसा।
"कौन जगमोहन?"
"इस वक्त तुम हमसे ही पंगा लिए बैठे हो।"
"ओह!"
"दूसरा नाम भी बताऊं क्या—परेशान हो चुके हो तुम लोग कि अपने दुश्मन का नाम नहीं जानते—और हवा में तीर-तोप यूं ही चलाये जा रहे हो। बोल बताऊं क्या?" जगमोहन किचन में पहुंचा और कॉफी, बातों के दौरान बनाने लगा। एक हाथ से फोन कान से लगा रखा था। चेहरे पर गुस्सा भी और मुस्कान भी।
"बता।" धर्मा की आवाज कानों में पड़ी।
"डकैती मास्टर देवराज चौहान का नाम सुना है?"
"सुना है।"
"तुम लोग उसी से पंगा ले बैठे हो।"
चंद क्षणों के लिये लाईन पर खामोशी छा गई।
कोई आवाज नहीं उभरी।
"मर गया हरामी।" जगमोहन बड़बड़ा उठा।
"तुम उस देवराज चौहान के साथी जगमोहन हो—?"
"हां।"
"रतनचंद को मारने की सुपाड़ी देवराज चौहान ने ली है?"
"नोट मैंने ही गिने थे।" जगमोहन हंसा।
"तो छाती ठोंक कर क्यों अपने बारे में बता रहे हो?" धर्मा का भिंचा स्वर कानों में पड़ा।

"ताकि तूने हमारा जो बिगाड़ना हो, बिगाड़ ले। पहले तुम इसलिये हमारे बारे में नहीं जान सके कि सीधा-सीधा हमारा वास्ता नहीं पड़ा। बात नहीं हुई, अब बात हुई तो बता दिया कि दिल में जो अरमान हो, वो पूरा कर लेना।"
"इतना ही बहादुर है तो अपना पता ठिकाना बता, अभी आ जाते हैं।"
"इतना बहादुर नहीं हूं मैं कि मूसल पड़ती ओखली में सिर रख दूं।" जगमोहन पुनः हंसा।
"तेरा टाईम आ गया लगता है...।" धर्मा का क्रूर स्वर कानों में पड़ा।
"तू चिन्ता क्यों करता है। अपनी सोच, मुझे तो लगता है कि तू भी मेरे पास होगा जल्दी ही।"
दो पलों की खामोशी के बाद धर्मा की आवाज़ पुनः कानों में पड़ी।
"एक बात बता।"
"बोल—बोल— ।"
"तेरे को किसने बताया कि राघव, जगजीत के पास जा रहा है, या तू बंगले पर नज़र रख रहा था?"
"मुझे बंगले में मौजूद किसी शख्स ने ही बताया कि राघव जगजीत के पास जा रहा है।"
"किसने?"
"तू क्या सोचता है कि मैं तेरे को बता दूंगा कि वो खबरी कौन है?"
"चाहता क्या है—राघव का क्या करेगा?"
"मेहमान बनाकर रखा है। काम खत्म होते ही, उसे छोड़ दूंगा।"
"तू हमसे दोस्ती कर ले।"
"मतलब कि रतनचंद को न मारूं और तेरी गोद में आ बैठूं?"
"इसकी तेरे को कीमत मिलेगी। ये बता, रतनचंद की जान की सुपाड़ी किसने दी है?"
"ऐसा सवाल मत पूछ, जिसके बारे में तेरे को पहले ही पता हो कि जवाब नहीं मिलेगा।"
"मुंहमांगी कीमत मिलेगी, एक बार हां तो कर— ।"
"फिर बात करेंगे, अब तेरा दिमाग खराब होने लगा है।"

"राघव को कोई तकलीफ तो नहीं दोगे?"

"दूंगा तो तू क्या कर लेगा—आकर बचा लेगा क्या?" जगमोहन ने व्यंग से कहा और फोन बंद करके जेब में रख लिया—फिर तैयार हो चुकी कॉफी प्याले में डाली और किचन से बाहर आ गया।

तभी रतनचंद की आवाज कानों में पड़ी—वो चिल्ला रहा था।

"भूख लगी है, कुछ खाने को दे दे—।"

"सुबह तगड़ा नाश्ता दूंगा—।" जगमोहन ने ऊंचे स्वर में कहा और सोफे पर बैठ कर, काफी के घूंट भरने लगा।

❑❑❑

धर्मा ने फोन बंद किया और एक्स्ट्रा को देखा।

एक्स्ट्रा करीब ही बैठा उसकी सारी बातें सुन रहा था।

"डकैती मास्टर देवराज चौहान का मुकाबला कर रहे हैं हम।" धर्मा ने कहा—"राघव उसकी कैद में पहुंच चुका है।"

"देवराज चौहान!" एक्स्ट्रा ने मुंह बनाया—"सुन रखा है कि खतरनाक बंदा है।"

"शायद हम महसूस भी कर चुके हैं कि वो हमसे कम नहीं है।" धर्मा ने बेचैनी से पहलू बदला।

एक्स्ट्रा गम्भीर नज़र आने लगा था।

"इस वक्त तक की सबसे खतरनाक बात ये है कि कोई बंगले में है जो देवराज चौहान और जगमोहन को बंगले की खबरें दे रहा है। बंगले में ही से ये बात उन लोगों को किसी ने बताई कि राघव जगजीत के पास गया है और वहां राघव पर हाथ डाल दिया।"

"यकीनन राघव लापरवाह रहा होगा।"

"तो उसे क्या पता था कि जगजीत के यहां उसके लिये जाल बिछा होगा।" धर्मा ने कहा—"बंगले में उनका खबरी कौन हो सकता है?"

दोनों की नज़रें मिलीं।

"राघव, जगजीत के पास गया—ये बात किन-किन को मालूम थी?" धर्मा बोला।

"हमें, रतनचंद को—सुन्दर को।"

"सुन्दर से ये बात गनमैनों के सामने भी निकल सकती होगी।"

एक्स्ट्रा ने सोच भरा चेहरा हिलाया।

"इस तरह हम काम कैसे कर सकेंगे कि हमारी खबरें बंगले से बाहर जा रही हैं।" धर्मा ने दांत भींच कर कहा।

"खबरें बाहर करने वाला सुन्दर भी हो सकता है।"

"रतनचंद से इस बारे में बात करते हैं, वो तो कहता है कि सुन्दर उसका खास है।"

"इसमें रतनचंद भी क्या करेगा—अगर सुन्दर दगाबाज बन जाये? देवराज चौहान ने सुन्दर को खरीदा हो सकता है।"

"लेकिन ये सब पक्की बातें नहीं हैं, हमारी सोच है।"

"जो भी हो, राघव मुसीबत में जा फंसा है, ये हमारे लिये बड़ी बात है।"

धर्मा और एक्स्ट्रा रतनचंद, यानि कि देवराज चौहान के कमरे में पहुंचे।

बैड पर लेटा हुआ था देवराज चौहान। कमरे में जीरो वॉट का बल्ब जल रहा था।

एक्स्ट्रा ने बड़ी लाइट ऑन की तो देवराज चौहान फौरन उठ बैठा। दोनों को देखा।

"कोई खास बात?" देवराज चौहान ने आवाज में शांत भाव ने पूछा।

"तुम्हारी हत्या डकैती मास्टर देवराज चौहान करना चाहता है।" एक्स्ट्रा बोला।

"क्यों?" पल भर के लिये तो देवराज चौहान अचकचा उठा।

"देवराज चौहान ने ही तुम्हारी हत्या की तीन करोड़ में सुपाड़ी ली है।"

"किसने बताई ये बात?"

"जगमोहन ने, जो देवराज चौहान का साथी है।"

अब देवराज चौहान समझा कि मामला क्या है!

"जगमोहन से कैसे बात हो गई तुम्हारी?" रतनचंद की आवाज में बोल रहा था देवराज चौहान।

"राघव, देवराज चौहान की कैद में जा पहुंचा है। राघव का फोन जगमोहन के पास आया था और उससे बात हो गई।"

"राघव कैसे?"

"रतनचंद।" धर्मा कठोर स्वर में बोला—"राघव, जगजीत के फ्लैट पर गया था। देवराज चौहान और जगमोहन को ये

बात पता चल गई। जगमोहन का कहना है कि ये बात उन्हें बंगले के ही किसी आदमी ने बताई।"

"ओह! तो देवराज चौहान ने राघव को कैद कर लिया है।"

"हां।"

"वो क्या उसे मारेंगे?"

"पता नहीं, वैसे जगमोहन का कहना है कि राघव को, तुम्हारी हत्या करने के बाद छोड़ दिया जायेगा।"

"और जगजीत भी देवराज चौहान की कैद में है।"

"जगमोहन ने ही बताया सब कुछ?" रतनचंद बना देवराज चौहान भोलेपन से बोला।

"हां।"

"अब सबसे बड़ा सवाल तो ये पैदा होता है कि देवराज चौहान को किसने खबर दी कि राघव, जगजीत के फ्लैट पर गया है।"

"जिसे पता हो, वो ही तो ये खबर आगे भेजेगा।"

"हमारे अलावा ये बात तुम्हें और सुन्दर को पता थी।"

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

"तुम कहते हो कि सुन्दर तुम्हारा विश्वसनीय है, वो गद्दारी नहीं करेगा।"

"ये बात तो मैं अब भी कहता हूं।"

"तो फिर तुमने देवराज चौहान को खबर दी होगी कि राघव, जगजीत के फ्लैट पर गया है।" धर्मा कड़वे स्वर में बोला।

"मैं खबर क्यों दूंगा?"

"वो ही तो हम कहते हैं कि तुम खबर बाहर क्यों करोगे—करेगा तो सुन्दर करेगा।"

देवराज चौहान दोनों को देखने लगा।

"क्या सोच रहे हो रतनचंद।" धर्मा ने पूछा।

"सुन्दर गद्दारी नहीं कर सकता।" देवराज चौहान कह उठा।

"क्यों नहीं कर सकता?" धर्मा ने दांत भींचकर कहा।

"वो मेरा परखा हुआ है और पूरी तरह भरोसे के काबिल है।" रतनचंद बने देवराज चौहान ने स्वर को गम्भीर बनाकर कहा—"इन बातों में सबसे बड़ी सोचने की बात तो ये है कि देवराज चौहान ने जगजीत को क्यों कैद में रख लिया?"

"क्या मतलब?" धर्मा की आंखें सिकुड़ीं।

"राघव को तो उसने इसलिए पकड़ा होगा कि उससे दुश्मनी चल रही है। एक को पकड़, तुम तीनों की तिगड़ी को कमजोर करे और तुम लोग राघव की वजह से परेशान हो जाओ, परन्तु जगजीत को कैद में रखने के पीछे देवराज चौहान का क्या इरादा हो सकता है?"

धर्मा और एक्स्ट्रा की नज़रें मिलीं।

"रतनचंद, तूने सही बात पकड़ी!" एक्स्ट्रा होंठ सिकोड़ कर बोला—"तेरा दिमाग भी चलता है।"

धर्मा, एक्स्ट्रा से कह उठा—

"तेरा क्या ख्याल है कि देवराज चौहान ने, जगजीत को क्यों कैद किया होगा?"

"मेरे ख्याल में कुछ भी नहीं है।" एक्स्ट्रा सोच भरे स्वर में कह उठा—"ये बात तो हमारे सामने स्पष्ट हो चुकी है कि देवराज चौहान ने भी जगजीत से रतनचंद के चेहरे का मास्क बनवाया। क्योंकि रतनचंद के रूप में ही, देवराज चौहान, काशीनाथ से मिला था। परन्तु जगजीत को कैद करने के पीछे उसका क्या मकसद हो सकता है, ये आसानी से समझ नहीं आयेगा।"

"आसानी से समझ क्यों नहीं आयेगा?"

"क्योंकि देवराज चौहान बहुत ठण्डे दिमाग से हमसे चालबाजियां चल रहा है। उसकी बात को हम समझ नहीं पा रहे।"

धर्मा कुछ कहने लगा कि तभी सुन्दर ने भीतर प्रवेश किया।

"तुम दोनों यहां हो, मैं वहां कमरे में गया, परन्तु—।"

"कोई काम था?"

"कॉफी के लिये पूछने गया था।"

"कॉफी भी पी लेंगे।" एक्स्ट्रा ने कहा—"तुम्हें मालूम था कि राघव, जगजीत के पास गया है?"

"मालूम था।" सुन्दर ने फौरन सिर हिलाया।

"तुमने ये बात किसी को बताई?"

"मैं क्यों बताऊंगा?"

"शायद किसी के सामने मुंह से निकल गई हो।"

"नहीं। तुम लोगों की बात मैं किसी से क्यों करूंगा? लेकिन हुआ क्या, सब ठीक तो है?" सुन्दर ने पूछा।

एक्स्ट्रा ने उसे सारी बात बताई।

"मैंने किसी से कुछ नहीं कहा।" सुन्दर सब कुछ जानकर कह उठा।

"तुम देवराज चौहान के हाथों बिके हुए तो नहीं हो? तुमने ही देवराज चौहान को बताया हो कि–।"

"बस, आगे मत बोलना।" सुन्दर का चेहरा कठोर हो गया–"मेरी तरफ उंगली उठाने की कोशिश मत करो। जिस काम के लिये आये हो, उस पर ध्यान दो। ठीक से काम नहीं कर पा रहे हो और मुझ पर उंगली उठाने लगे।"

"तेरी तो–।" धर्मा ने गुस्से से कहना चाहा।

एक्स्ट्रा ने धर्मा को रोका।

"ये हमारा मामला नहीं है, सुन्दर को देखना रतनचंद का काम है। हम इस बात का ध्यान रखेंगे कि हम जो करें, वो सुन्दर न जान सके।"

सुन्दर ने दोनों को घूर कर देखा और बाहर निकल गया।

"रतनचंद!" एक्स्ट्रा कह उठा–"अब ये तुम ही सोचो कि बात बाहर कैसे गई?"

इसके बाद एक्स्ट्रा और धर्मा कमरे से बाहर निकल गये।

रतनचंद बने, देवराज चौहान के चेहरे पर जहरीली मुस्कान थिरक उठी।

कमरे में पहुंचते ही एक्स्ट्रा कह उठा–

"राघव खतरे में है। जैसे भी हो, हमें राघव को देवराज चौहान के हाथों से निकाल लाना होगा।"

"ठिकाना पता करना होगा।"

"ये आसान नहीं होगा।" धर्मा ने इन्कार में सिर हिलाते हुए कहा।

"आसान तो नहीं होगा, लेकिन इस बारे में गोकुल से बात की जा सकती है।"

"गोकुल!" धर्मा ने एक्स्ट्रा को देखा।

"ठीक रहेगा?" एक्स्ट्रा बोला।

धर्मा ने सिर हिला दिया।

एक्स्ट्रा ने फोन निकाला और नम्बर मिलाने लगा।

रात का डेढ़ बज रहा था।

दूसरी तरफ से बेल हुई और होती रही। काफी देर बाद ही उधर से बात की गई।

"हैलो।" स्वर में नींद के भाव भरे पड़े थे।

"गोकुल!" एक्स्ट्रा बोला।

"नाम बोल–नाम अपना।"

"R.D.X.।"

"ओह।" अगले ही पल गोकुल की आवाज में चुस्ती आ गई–"एक्स्ट्रा, अब पहचाना। लेकिन तूने नींद खराब कर दी।"

"काम सुन।"

"खाली-खाली काम ही है या कुछ मिलेगा भी?"

"काम जितनी जल्दी करेगा, उतना ही ज्यादा पैसा मिलेगा।"

"फंसे पड़े लग रहे हो। बोल–काम बता।"

"डकैती मास्टर देवराज चौहान का ठिकाना जानना है।"

"देवराज चौहान?"

"हां–वो।"

"एक्स्ट्रा, ये बहुत ही कठिन काम है। देवराज चौहान का ठिकाना मालूम करना आसान होता तो पुलिस ने कब का कर लिया होता!"

"ये जरूरी है गोकुल।" एक्स्ट्रा ने अपने शब्दों पर जोर दिया– "तेरे को ज्यादा पैसा मिलेगा।"

"ठीक है, पता करने की कोशिश करता हूं। नींद तो तुमने खराब कर दी। दो चार फोन खड़का कर पूछता हूं। लेकिन देवराज चौहान से क्या पंगा हो गया? वो ठीक बंदा नहीं है। सुना है, काफी खतरनाक है।"

"R.D.X के बारे में नहीं सुना क्या?"

"समझ गया। पंगा तगड़ा है, मैं मालूम करके तुम्हें फोन कर रहा हूं।"

"मैं तेरे फोन के इन्तजार में जाग रहा हूं।"

उधर से गोकुल ने फोन बंद कर दिया। एक्स्ट्रा ने फोन टेबल पर रख दिया।

"हम क्या कर रहे हैं, ये बात अब किसी को पता नहीं चलनी चाहिये।" धर्मा ने कहा।

"ठीक कहते हो। बंगले से बातें निकल कर देवराज चौहान के पास पहुंच रही हैं।"

"मुझे तो सुन्दर पर शक है कि वो–।"

"इस मामले में चुप रहना ही अच्छा है। वरना सुन्दर हत्थे से उखड़ेगा और उसके खिलाफ हमारे पास कोई सुबूत नहीं है।"

धर्मा होंठ भींचकर रह गया।

"गोकुल ने देवराज चौहान का ठिकाना बता दिया तो हम अभी उस तरफ निकल जायेंगे।" एक्स्ट्रा बोला–"आज से पहले हमें किसी ने इस तरह टक्कर नहीं दी।" धर्मा ने कहा।

एक्स्ट्रा ने कुछ नहीं कहा और कमरे में टहलने लगा।

"देवराज चौहान इसलिए हम पर भारी पड़ रहा है कि वो छिपकर वार कर रहा है। हम उसके बारे में नहीं जान पाये, जबकि वो हम पर पूरी तरह नज़र रखे रहा और हमारी बातें–मूवमेंट उस तक पहुंचती रहीं।"

"वो हम पर भारी पड़ा?" एक्स्ट्रा मुस्कुराकर खतरनाक स्वर में कह उठा–"यूं समझो कि उसने अपनी बारी चल ली–अब हमारी बारी है। हमें भी जल्द ही मौका मिलेगा कुछ करने का।"

"इस वक्त मुझे सिर्फ राघव की चिन्ता है।"

तभी टेबल पर रखा मोबाईल फोन बजा।

"हैलो।" एक्स्ट्रा ने फौरन फोन उठाकर बात की।

"एक्स्ट्रा!" गोकुल की आवाज कानों में पड़ी–"कइयों से फोन करके पूछा है देवराज चौहान के बारे में। परन्तु उसके ठिकाने के बारे में कोई नहीं जानता। एक ने कहा है कि सोहनलाल बता सकता है देवराज चौहान के बारे में।"

"सोहनलाल?"

"मशहूर तालातोड़। बड़े-बड़े ताले पलक झपकते ही खोल लेता है। बहुत बार देवराज चौहान के साथ काम कर चुका है।"

"कहां मिलेगा ये?"

गोकुल ने सोहनलाल के फ्लैट का पता बताया। फिर पूछा–

"बात क्या है, क्या पंगा हो गया?"

"तूने अभी तक पैसा कमाने वाला कोई काम नहीं किया।" एक्स्ट्रा ने कहा।

"क्या कहता है? तेरे को अभी सोहनलाल के बारे में–।"

कर दिया है। इस पर भी तूने उन दोनों को अपनी मौजूदगी का एहसास दिलाने की चेष्टा की तो सबसे पहले मैं तेरे को गोली मारूंगा, बाकी बातें बाद में निपटूंगा। समझा क्या?"

जगजीत ने आंखें बंद कर लीं। गहरी सांस ली।

सोहनलाल ने टेबल की ड्राज़ से रिवॉल्वर निकाली। उसे चैक की। फिर रिवॉल्वर को अपने कपड़ों में फंसाकर कमरे से बाहर निकला और दरवाजा बाहर से बंद करके मुख्यद्वार पर आ पहुंचा।

दरवाजा खोला सोहनलाल ने और एक्स्ट्रा और धर्मा से बोला–

"आओ।"

दोनों भीतर आये तो सोहनलाल ने दरवाज़ा बंद करते हुए कहा–

"इस वक्त कोई चाय-पानी नहीं होगा और ज्यादा वक्त भी नहीं है मेरे पास। बैठ जाओ।"

दोनों सोफे पर बैठ गये।

सोहनलाल उनके सामने बैठा और गोली वाली सिग्रेट सुलगा ली।

"जैसा कि तुम्हें बताया है कि हमारे पास एक ऐसी जगह है, जहां पर बहुत बड़ी डकैती की जा सकती है। परन्तु हमारे पास डकैती करने की हिम्मत नहीं है। इसलिए हम देवराज चौहान को योजना बताना चाहते हैं।"

"क्या योजना है?" सोहनलाल बोला।

"देवराज चौहान को बतायेंगे।"

"मेरे पास क्यों आये हो?"

"तुम हमें देवराज चौहान से मिलवा सकते हो।" धर्मा ने कहा।

सोहनलाल मुस्कुरा पड़ा।

"ये बात तुमसे किसने कह दी?"

"किसी ने कही है। क्या तुम देवराज चौहान को जानते नहीं?" एक्स्ट्रा ने भोलेपन से कहा।

"मैं जानता हूं। अच्छी तरह जानता हूं। जब भी देवराज चौहान को मेरी जरूरत होती है, वो मुझे अपने काम में ले लेता है। परन्तु मेरे पास उसका फोन नम्बर भी नहीं है और वो कहां रहता है, ये भी नहीं पता।"

"ऐसा कैसे हो सकता है?"

"हो नहीं सकता, ऐसा ही है। तुम दोनों को किसी ने गलत कह दिया कि मैं देवराज चौहान को जानता हूं।" सोहनलाल ने कश लिया। फिर बोला—"तुम दोनों के नाम क्या हैं?"

"ये विनोद है, मैं सुरेश।"

"अपना फोन नम्बर दे जाओ, अगर दो-चार दिन में देवराज चौहान का फोन आ गया तो तुम्हें फोन कर दूंगा।"

एक्स्ट्रा और धर्मा की नज़रें मिलीं।

"यार, ये ड्रामा छोड़ो, हमें देवराज चौहान से मिलवा दो।" धर्मा ने गहरी सांस लेकर कहा।

"ड्रामा?" सोहनलाल ने धर्मा को घूरा—"मेरी बात को तुम ड्रामा कह रहे हो?"

"मेरा मतलब है कि तुम हमें देवराज चौहान से—।"

"पागल तो नहीं हो गये हो?" सोहनलाल उखड़ा—"जब एक बार कह दिया कि मैं देवराज चौहान के बारे में कुछ नहीं जानता, जब भी देवराज चौहान को जरूरत होती है तो वो फोन पर मुझसे बात कर लेता है—।"

"कोई और रास्ता नहीं है देवराज चौहान से मिलने का?"

"मैं क्या तुम लोगों के लिये 'रास्ते' लिये बैठा हूं?" सोहनलाल ने मुंह बनाकर कहा—"तेरे को बोला कि देवराज चौहान का फोन आया तो उसे बता दूंगा, अपना नम्बर दे जाओ।"

"समझा क्या?" एक्स्ट्रा धर्मा से बोला—"अपना फोन नम्बर इसे दे दो। समझदार को इशारा काफी होता है, कल तक ये देवराज चौहान से हमारी बात करा देगा।"

"ओह, अब समझा।" धर्मा बोला और फोन नम्बर सोहनलाल को नोट करा दिया।

"अब तुम लोग जाओ।"

"मुझे पूरी आशा है कि तुम कल तक देवराज चौहान से हमारी बात करा दोगे।" एक्स्ट्रा ने मुस्करा कर कहा।

सोहनलाल कुछ नहीं बोला।

दोनों बाहर निकल गये।

सोहनलाल ने दरवाजा बंद किया और दूसरे कमरे में जगजीत सिंह के पास पहुंचा।

उसने जगजीत के मुंह में फंसा कपड़ा निकाला।

जगजीत मुंह खोले गहरी-गहरी सांसें लेने लगा। सोहनलाल ने उसकी टांगों के बंधन खोले, फिर कपड़ों में फंसी रिवॉल्वर निकाल कर टेबल की ड्राज़ में रखी। तभी अपनी सांसों को संभालता जगजीत बोला—

"एक्स्ट्रा और धर्मा तुम्हारे पास क्या करने आये थे?"

"पूछ रहे थे कि जगजीत गुम हो गया है, मैंने उसे देखा तो नहीं?"

"मजाक मत करो—मैं—।"

सोहनलाल कमरे से निकला और फोन पर देवराज चौहान से सम्बन्ध बनाने लगा।

कुछ देर बाद ही सोहनलाल, देवराज चौहान को, उन दोनों के आने के बारे में बता रहा था। तब देवराज चौहान से ही उसे पता चला कि राघव, जगमोहन की कैद में पहुंच चुका है और वो खुद रतनचंद बना, एक्स्ट्रा और धर्मा के बीच मौजूद है।

❑❑❑

अगले दिन सुबह जगमोहन ने रतनचंद और राघव को तगड़ा नाश्ता कराया। इस दौरान वे दोनों अलग-अलग कमरों में रहे और नाश्ते के दौरान बारी-बारी दोनों के हाथ खोले और जगमोहन पहरेदारी के तौर पर पास ही रहा।

"तुम इस तरह कब तक मुझे बांधे रखोगे?" राघव ने परेशानी से कहा।

जगमोहन ने नाश्ते के बाद उसके हाथ पुनः बांध दिये थे।

"जब तक जरूरत रहेगी।"

"मेरा तो बहुत बुरा हाल हो जायेगा, इस तरह बंधे-बंधे—।" राघव ने उखड़े स्वर में कहा।

"तो मैं क्या कर सकता हूं?" जगमोहन ने कहा और दूसरे कमरे में रतनचंद के पास पहुंचा।

जगमोहन, रतनचंद को भी नाश्ता कराकर हाथ बांध चुका था।

"सिग्रेट होगी?" रतनचंद बोला।

"मैं नहीं पीता।" कहते हुए जगमोहन कुर्सी पर बैठ गया।

रतनचंद ने जगमोहन को देखा और गम्भीर स्वर में बोला—

"एक बात का जवाब दोगे?"

"देने लायक हुआ तो जरूर दूंगा।" जगमोहन ने कहा।

"जिसने मुझे मारने की सुपाड़ी देवराज चौहान को दी है, वो मुझे क्यों मारना चाहता है? ये तो बता सकते हो। मालूम तो होगा तुम्हें—।"

"हां, मालूम है।"

"तो बताओ मुझे।"

"तुम्हारे ड्रग्स के धंधे की वजह से, उसकी पत्नी को नशे की लत लगी और वो जान गवां बैठी।"

रतनचंद के चेहरे पर अजीब से भाव उभरे।

"मेरे ड्रग्स के धंधे की वजह से।" उसके होठों से निकला।

"हां।"

"मैं कौन-सा ड्रग्स का धंधा करता हूं?"

"ये तो सबको ही पता है तुम—।"

"क्या बकवास करते हो?" रतनचंद मुंह बनाकर कह उठा—"मैं और ड्रग्स का धंधा?"

"हां, तुम और तुम्हारा ड्रग्स का धंधा!"

"कहने वाले ने कहा और तुमने मान लिया?"

"क्यों? नहीं मानना चाहिये क्या?"

"मैं ड्रग्स का धंधा नहीं करता। एक्सपोर्ट का बिजनेस है मेरा। टी.वी. बनाने की फैक्ट्रियां हैं। कई बड़े-बड़े शो-रूम हैं मेरे और सरकारी तौर पर मैं हथियारों की दलाली करता हूं। ड्रग्स की तो मैं शक्ल भी नहीं जानता।" रतनचंद ने तीखे स्वर में कहा।

"और तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारी बात मान लूं—।"

"जैसे तुमने दूसरे की बात मानी है, वैसे ही मेरी बात पर भी यकीन कर लो।"

जगमोहन के चेहरे पर अचकचाहट के भाव दिखाई दिए।

कई पलों तक वो रतनचंद को देखता रहा।

"क्या देख रहे हो?" रतनचंद बोला।

जगमोहन उठा और बाहर निकल गया।

मिनट भर बाद वापिस आया तो उसके हाथों में अखबारों की कटिंग्स का पुलिंदा था।

"ये अखबारों की कटिंग्स हैं।" जगमोहन कुर्सी पर बैठते हुए बोला—"इनमें तुम्हारे ड्रग्स के व्यापार के बारे में खुलासा किया गया। तुम पर जो अदालत में केस चल रहे हैं—।"

"देवराज चौहान के बारे में जानना है मुझे। पता कर और जल्दी से मुझे बता।"

"ठीक है—और पता करता हूं। आधी रात का वक्त है, किसी को फोन करता हूं तो वो काट खाने को दौड़ता....।"

एक्स्ट्रा ने फोन रखा और धर्मा से बोला—

"देवराज चौहान के पहचान वाले सोहनलाल का पता मालूम हुआ है। शायद वो जानता हो कि देवराज किधर मिलेगा।"

"हम दोनों सोहनलाल के पास चलेंगे।" धर्मा कह उठा—"हम दोनों में से कोई भी तब तक अकेला बाहर नहीं जायेगा, जब तक देवराज चौहान से निपट नहीं लिया जाता। उसकी नज़र हम पर है और राघव के अकेले होने का फायदा उठाकर, देवराज चौहान ने उसे पकड़ लिया।"

"सच बात तो ये है कि राघव उस वक्त सतर्क नहीं होगा।" एक्स्ट्रा ने कहा—"अभी चल, सोहनलाल के पास चलते हैं।"

"अगर सोहनलाल को देवराज चौहान का पता भी हुआ तो हमें, उसका ठिकाना बतायेगा क्यों?" धर्मा बोला।

"मैं बात ही इस ढंग से करूंगा कि वो हमें अवश्य बता देगा।"

एक्स्ट्रा और धर्मा बाहर की तरफ बढ़ गये।

रास्ते में सुन्दर मिला।

"कहीं जा रहे हो क्या?" सुन्दर बोला।

"कुछ काम है, घंटे भर में लौट आयेंगे।" एक्स्ट्रा ने मुस्कुराकर कहा।

❑❑❑

सोहनलाल और जगजीत आज दिन भर साथ रहे थे। शाम आठ बजे वे उठे थे। यही वजह थी कि रात के इस वक्त भी दोनों जगे हुए थे और वक्त बिताने के लिए टी.वी. देख रहे थे।

जगजीत के हाथ सोहनलाल ने पीछे की तरफ बांध रखे थे। ताकि यहां से फरार होने के लिये वो कोई हरकत न कर दे। खाने-पीने के दौरान ही जगजीत के हाथ खोलता था। नींद लेते वक्त सोहनलाल, जगजीत की टांगें भी बांध देता था कि उसकी नींद का फायदा उठाकर, वो कोई हरकत न कर दे।

बंधनों की वजह से जगजीत परेशान हो चुका था।

"मैं तुम्हारे पास ही हूं, ऐसे में मेरे हाथ-पांव बांधने की जरूरत क्या....?"

"तुम मेरे पास हो, तभी तो तुम्हारे हाथ-पांव बांध रहा हूं। क्या भरोसा तुम्हारा कि टेबल उठाकर मेरे सिर पर मार दो।"

"मुझ पर भरोसा नहीं क्या?"

"तूने अपनी बहन मेरे से ब्याही है, जो तुम्हारा भरोसा करूं?" सोहनलाल भोलेपन से बोला।

जगजीत ने उसे घूरा।

"उखड़ गया–।" सोहनलाल ने आंखें नचाईं।

"अच्छा ही किया जो तू मेरे हाथ बांध के रखता है।" जगजीत ने कड़वे स्वर में कहा।

"क्यों?"

"हाथ खुले होते तो बहन ब्याहने की बात पर, मैं तेरी जान जरूर ले लेता।" जगजीत कठोर स्वर में बोला।

"इसमें नाराज होने की क्या बात है, आखिर बहन किसी से तो ब्याहेगी ही, कोई तो उसे–।"

"मेरे हाथ खोल, फिर बताता हूं–।"

"साला!" सोहनलाल ने दांत दिखाये–"मुझे बेवकूफ समझता है जो तेरे हाथ खोलूंगा।"

जगजीत तिलमिलाया-सा सोहनलाल को देखने लगा।

"R.D.X. को कब से जानता है?" सोहनलाल ने पूछा।

"चार सालों से।"

"कितनी बार उनके लिये फेस मॉस्क बनाया?"

"दो बार। मैं फेस मास्क ही नहीं, कई तरह के अन्य काम भी करता हूं। किसी भी तरह के सरकारी विभाग का आई-कार्ड बनवाना हो, दो घंटे में बना दूंगा और मेरा बनाया नकली कार्ड, असली से भी असली होगा।"

"पहुंचा हुआ कारीगर है, और क्या गुल खिलाता है तू?"

"हर तरह के डुप्लिकेट कागज़ात बना सकता हूं।"

"नोट तगड़े लेता होगा इस काम के?"

"हां, धंधा है ये तो।"

"ऐसे में तू कभी भी अपनी बहन मेरे से ब्याह कर, मेरे लिए मुफ्त काम नहीं करना चाहेगा।" सोहनलाल ने दांत फाड़े।

"तेरी तो–।"

तभी कॉलबेल बजी।

बरबस ही सोहनलाल की निगाह वॉल क्लॉक पर गई, जहां घड़ी में रात के ढाई बज रहे थे।

जगजीत के शब्द मुंह में ही रह गये।

"कौन हो सकता है?" जगजीत ने अजीब से स्वर में पूछा।

सोहनलाल ने कुछ नहीं कहा और उठकर कमरे से बाहर निकल गया।

ड्राईगरूम में पहुंचा और मेन दरवाजे की सिटकनी हटाकर दरवाजा खोला।

अगले ही पल सोहनलाल की ऐसी हालत हुई, जैसे अन्जाने में सांप पर पांव रख दिया हो। परन्तु कमाल तो ये रहा कि चेहरे के भाव सामान्य ही रहे। बेहद शांत दिखा वो।

सामने एक्स्ट्रा और धर्मा खड़े थे।

"ये वक्त है किसी के घर की बेल बजाने का?" सोहनलाल दिलो-दिमाग की भीतरी हलचल पर काबू पाता कह उठा।

"सोहनलाल हो तुम?"

"बिल्कुल हूं।"

"इस वक्त तुम्हें तकलीफ देने की माफी चाहते हैं।" धर्मा मुस्कुराया–"हम भीतर आकर बात करें तो ज्यादा ठीक रहेगा।"

"मैं तुम दोनों को नहीं जानता। फिर भीतर आना....।"

"सोहनलाल, हम बहुत ही खास काम से आये हैं।"

"काम बोलो।"

"बहुत बड़ी डकैती की प्लानिंग है हमारे सामने, परन्तु करने का हौंसला नहीं है। पता लगा कि तुम डकैती मास्टर देवराज चौहान को जानते हो तो, सीधा तुम्हारे पास आ गये। आखिर यार ही यार के काम आता है।" धर्मा ने दोस्ताना स्वर में कहा।

सोहनलाल का दिमाग तेजी से काम कर रहा था।

"यार कौन–तुम–देवराज चौहान?"

"सब ही यार हैं। यार को यार से फायदा होगा तो–।"

"यहीं रुको।" सोहनलाल कह उठा–"मैं पांच मिनट बाद दरवाजा खोलूंगा। तब तुम भीतर आना।" इसके साथ ही सोहनलाल ने दरवाजा बंद कर लिया।

एक्स्ट्रा और धर्मा की नज़रें मिलीं।

सोहनलाल होंठ सिकोड़े जगजीत के पास पहुंचा।

इतना तो सोहनलाल समझ चुका था कि एक्स्ट्रा और धर्मा ने उसके बारे में पता लगा लिया होगा कि वो देवराज चौहान को जानता है, ये भी पता लगा लिया होगा कि रतनचंद के पीछे देवराज चौहान है। ऐसे में ये उसके पास देवराज चौहान की टोह लेने आ गये हैं। यकीनन ये ही वजह होगी, इसके यहां आने के पीछे।

जगजीत ने सोहनलाल को देखा।

"रिश्तेदार आये हैं मेरे।" सोहनलाल एक तरफ पड़ी नाईलॉन की रस्सी उठाता बोला।

जगजीत ने रस्सी को देखा और आंखें सिकोड़ कर कह उठा—

"रिश्तेदार आये हैं तो रस्सी उठाने की क्या जरूरत है?"

"तेरी टांगें बांधनी हैं, हाथ तो पहले ही बंधे पड़े हैं। दरअसल मैं नहीं चाहता कि तू बातों के दौरान परेशान—।"

"मैं भला क्यों परेशान करूंगा?"

सोहनलाल उसकी टांगों को बांधने लगा।

जगजीत गुस्से से सोहनलाल को देखता रहा।

उसकी टांगें बांधने के बाद सोहनलाल ने अलमारी से कपड़ा निकाला और उसके मुंह में ठूंसने लगा।

"ये क्या कर रहे....।"

"थोड़ी देर बर्दाश्त कर ले तकलीफ।" सोहनलाल कठोर स्वर में बोला—"वरना तेरे को गोली मारनी पड़ेगी।"

जगजीत बात मानने को मजबूर था।

सोहनलाल ने उसके मुंह में कपड़ा ठूंस दिया।

अब जगजीत बुरे हाल बैड पर पड़ा था।

"अब तू जंच रहा है।" सोहनलाल विषैले स्वर में मुस्कुराया—"जानता है बाहर कौन आया है?"

पूछने के लिये जगजीत ने आंखें नचाईं।

"एक्स्ट्रा और धर्मा।"

जगजीत की आंखें फैल गईं। वो तड़फा।

"शांत रह शांत। वैसे तो मैंने तेरे को अच्छी तरह फिट

"कोई जरूरत नहीं थी बताने की। तुम्हारी या सुन्दर की तरफ से यहां की खबरें देवराज चौहान तक पहुंच रही हैं—इसी कारण राघव, देवराज चौहान के हाथ लगा। इसलिये अब हम चुप रहना ही ठीक समझते हैं।"

"मैं क्यों यहां की खबरें बाहर करूंगा?" देवराज चौहान बोला—"सोच-समझ कर बोलो।"

"हमारा मतलब सुन्दर से है।"

"वो गलत काम नहीं करेगा, मेरा विश्वासी आदमी है।"

"तो फिर हमारी बातें तुम बाहर निकाल रहे होगे।" एक्स्ट्रा गहरी सांस लेकर कह उठा।

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

"कहीं कुछ नहीं है, तुम लोग गलत सोच रहे हो। सुन्दर पर शक मत करो। कोई गद्दार है तो, कह नहीं सकता।"

दोनों चुप रहे।

"सोहनलाल से मिलने का कोई फायदा हुआ, उससे देवराज चौहान का पता चला?" देवराज चौहान ने पूछा।

"शायद आज कुछ पता चले।"

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

"बाहर चलने के लिए तुम तैयार नहीं हुए?"

"हम आधे घण्टे में यहां से निकल चलेंगे।" कहकर देवराज चौहान बाहर निकला और अपने कमरे की तरफ बढ़ गया।

रास्ते में सुन्दर मिला।

"आज मैंने कहां-कहां जाना है और क्या काम करना है, लिस्ट बना ली तुमने—?"

"जी सर।"

"कुछ ही देर में हम चलेंगे, तैयारी कर लो।" कहकर देवराज चौहान आगे बढ़ गया।

रतनचंद बना देवराज चौहान कमरे में पहुंचा तो वहां पड़ा रतनचंद वाला मोबाईल फोन बजते पाया।

"हैलो—।" देवराज चौहान ने फोन पर बात की।

"केकड़ा।"

एकाएक देवराज चौहान सतर्क हो उठा।

"बच गये कल—।"

"हां— ।" देवराज चौहान उसकी आवाज पर ध्यान दे रहा था, परन्तु बोलने वाला अपनी असली आवाज को छिपाने की भरपूर चेष्टा कर रहा था। ऐसा लगता था जैसे उसने फोन पर भी कोई कपड़ा लगा रखा हो कि आवाज स्पष्ट न हो सके उसकी।

"मैंने तो सोचा कि वे लोग तुम्हें गोली मार देंगे रतनचंद, लेकिन सब वैसे ही चले गये।"

"तुम वहीं थे?"

"नहीं, मेरा आदमी वहां था। उसने सब कुछ देखा।"

देवराज चौहान का ध्यान पूरी तरह उसकी बातों पर था।

"अब ये तो पता चल गया कि कौन मुझे गोली मारना चाहता है।" देवराज चौहान रतनचंद की आवाज में शांत-सा बोला।

"पता चल गया—कैसे—कौन है वो?"

"डकैती मास्टर देवराज चौहान।"

"खूब, कैसे पता चला?" केकड़ा के हंसने की आवाज आई।

"देवराज चौहान ने राघव को पकड़ कर अपनी कैद में रख लिया है।"

"ये खबर मैंने पहली बार सुनी है—अच्छी खबर है कि राघव पकड़ा गया। एक्स्ट्रा या धर्मा तो बल खा रहे होंगे।"

"हां—तुम्हारे पास कोई नई खबर हो तो बताओ।"

"ये कैसे पता चला कि वो देवराज चौहान ही है?"

"धर्मा की, राघव के फोन पर देवराज चौहान के साथी, जगमोहन से बात हो गई थी, जगमोहन ने ही ये बात बताई। ये बात तुम बता देते तो तुम्हें मुझसे अच्छी रकम मिल सकती थी।"

"इस मामले में मैं पैसे नहीं कमा रहा। तेरी सेवा कर रहा हूं। गुप्त सेवा। तेरे को पहले ही बता देता हूं कि कब तेरे पे हमला होने जा रहा है।"

"ये सब बताकर तुम्हें क्या मिलता है केकड़ा?" देवराज चौहान ने पूछा।

"बेकार की बातें मत पूछ।"

"तू है कौन?"

"ये भी बेकार की बात है।"

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई, कश लिया।

"रतनचंद—तू बचने वाला नहीं, देवराज चौहान तेरे को मार देगा। उसने काम पूरा करने का तीन करोड़ लिया है।"

देवराज चौहान कुछ नहीं बोला।

"R.D.X. भी तेरे को बचा नहीं सकते। राघव कैद में पहुंच गया, बाकी दो को भी देवराज चौहान नहीं छोड़ेगा।"

"तेरे को देवराज चौहान के बारे में बहुत जानकारी है?"

"खास नहीं। काम चल जाये, इतनी ही जानकारी है।" केकड़ा की आवाज में लापरवाही भरी हुई थी।

"अब नई खबर क्या है?"

"नई खबर?"

"देवराज चौहान मुझ पर कब हमला करेगा?"

केकड़ा की आवाज नहीं आई।

"आज मैं बाहर जा रहा हूं।"

"रतनचंद, थोड़ी-सी गड़बड़ हो गयी है, अब देवराज चौहान की खबरें मिल नहीं पा रहीं।"

"गड़बड़?" देवराज चौहान के चेहरे पर विषैली मुस्कान उभरी—"मेरे ख्याल में तेरा कोई साथी देवराज चौहान के साथ होगा।"

"ये बातें जानने की कोशिश मत कर रतनचंद— ।"

देवराज चौहान को अब लगने लगा था कि आवाज को वो पहले भी कहीं सुन चुका है। परन्तु बोलने वाला अपनी आवाज छिपा कर बोल रहा था, इसलिये अभी स्पष्ट तौर पर पहचानने में कठिनाई हो रही थी।

"इस वक्त तो।" केकड़ा की आवाज पुनः कानों में पड़ी—"मैं ये भी नहीं जानता कि देवराज चौहान कहां है, लेकिन एक बात तो पक्की है कि वो तेरे ही चक्कर में पड़ा है और तेरे को मार के ही दम लेगा।"

"मतलब कि तेरे पास कोई खबर नहीं है।"

"नहीं।" केकड़ा की आवाज आई।

"मेरे लिये तू बेकार हो गया है।"

"मैं इतनी जल्दी बेकार नहीं होता।"

"तो फिर ये बता कि मेरी जान की सुपाड़ी किसने दी है?"

"ये बात तू कई बार पूछ चुका है और हर बार मैंने इंकार ही किया है।" केकड़ा की आवाज कानों में पड़ी।

"बताने में तेरे को इंकार क्यों?"

"मैं ऊपरी खबरें तो तेरे को दे सकता हूं, लेकिन बीच की बात तेरे को नहीं बताऊंगा।"

"ऐसा क्यों?"

"क्योंकि मुझे तेरे से कोई हमदर्दी नहीं। कल का मरता तू आज मरे, कोई परवाह नहीं।"

"तो फिर तू मुझे खबरें क्यों दे रहा था?"

"ये बात तेरे को बताने का कोई फायदा नहीं। सबसे बड़ा सच तो ये है कि तू मर के ही रहेगा।"

"मेरे से तुझे क्या दुश्मनी?"

केकड़ा की आवाज नहीं आई।

"तू मत बता, मैं तेरे को बता देता हूं कि कौन मेरी हत्या की सुपाड़ी देकर, मुझे मरा देखना चाहता है। बताऊं क्या?"

"बता।

"नागेश शोरी।"

दूसरी तरफ से केकड़ा के गहरी सांस लेने का स्वर सुनाई दिया।

"तेरे को कैसे पता रतनचंद?"

"ये बात तेरे को नहीं बताऊंगा कि मुझे कैसे पता!"

"और वो तेरे को क्यों मारना चाहता है—ये भी तेरे को पता होगा?"

"मेरे को तो पता है—लेकिन तेरे मुंह से सुनकर मुझे और भी अच्छा लगेगा।" रतनचंद की आवाज में बोल रहा था देवराज चौहान।

"अपनी करतूत मेरे मुंह से क्यों सुनना चाहता है?" केकड़ा का स्वर अब शांत था।

"क्योंकि मुझे लगता है कि तू ये बात नहीं जानता।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"तूने कैसे सोच लिया कि मैं नहीं जानता?"

"मेरा ख्याल है कि तू कुछ नहीं जानता और खामख्वाह ही इस मामले में टांग अड़ा बैठा है।" देवराज चौहान जानबूझकर

"बकवास मत करो। मैं तुम्हारा मुंह तोड़ दूंगा— ।" रतनचंद गुर्रा उठा—"मैं कोई ड्रग्स का धंधा नहीं करता। मेरे बारे में ऐसी खबरें अखबारों में छपने का सवाल ही नहीं पैदा होता तो तुम्हारे पास ये कटिंग्स कहां से आ गईं? ऊपर से कहते हो कि ड्रग्स के केस, मेरे खिलाफ अदालतों में चल रहे हैं। मुझे तुम पागल लगते हो। लगता है तुमने मेरे बारे में पता नहीं किया— ।"

"किया था।" जगमोहन व्यंग से बोला—"तुम्हारे बारे में सुनी हर बात सही निकली।"

"कुत्ते हो तुम जो ऐसा कह रहे हो।" रतनचंद का चेहरा गुस्से से लाल हो गया—"किसी ने कहा और तुमने मान लिया? ऊपर से कहते हो कि तुमने मेरे बारे में पता किया है और ड्रग्स वाली बात सही निकली। कहां फंस गया हूं मैं। मेरे सामने मेरे बारे में दावे के साथ झूठ बोल रहे हो और आंखों में ज़रा भी शर्म नहीं— ।"

"घूंघट निकाल लूं क्या?"

"तुम्हें तो डूब मरना चाहिये, ड्रग्स के धंधे के झूठ की एवज में— ।"

जगमोहन के होंठ सिकुड़े।

रतनचंद का चेहरा गुस्से से भरा रहा।

जगमोहन ने महसूस किया कि रतनचंद जैसे सच कह रहा हो। वो सोचों में डूबा उठा और रतनचंद के हाथ खोलकर, अखबारों की कटिंग्स का पुलन्दा, उसे थमा दिया।

"ये देखो।" जगमोहन बोला।

रतनचंद उन कटिंग्स को देखने लगा।

कटिंग्स में अखबारों के साथ कई जगह उसकी तस्वीर भी थी।

"ये तस्वीर तुम्हारी नहीं हैं?" जगमोहन बोला।

"मेरी हैं। बल्कि तस्वीरों में जो कपड़े पहने हैं, वो भी मेरे हैं।" रतनचंद के होठों से हक्का-बक्का स्वर निकला—"लेकिन ये—ये सब झूठी खबरें हैं। मैंने तो आज तक पढ़ीं नहीं, ये कैसे हो सकता है?"

"तुम्हारे कह देने भर से खबरें झूठी नहीं हो जायेंगी।" जगमोहन ने तीखे स्वर में कहा।

"ये किसी की चाल है।"

"कैसी चाल?"

"मैं नहीं जानता, लेकिन जिसने तुम्हें मेरी हत्या के लिये कहा है, ये उसकी चाल हो सकती है। ये कटिंग्स तुम्हें किसने दीं?"

"उसी ने, जो तुम्हें मरवाना चाहता है।"

रतनचंद पुनः अखबारों की कटिंग्स को देखने लगा।

कई पल इसी चुप्पी में निकल गये।

"ये–ये अखबार हैं ही नहीं।" एकाएक रतनचंद बोला।

"क्या मतलब?"

"अखबारों का पेपर स्पेशल होता है, घटिया रद्दी का बना होता है, परन्तु ये पेपर बेहतर क्वालिटी का है। ये कटिंग्स दिखाकर तुम लोगों को बेवकूफ बनाया गया है।" रतनचंद का चेहरा पुनः गुस्से से भरने लगा।

रतनचंद जगमोहन को देख लेगा।

"मुझे लगता है कि तुम्हें बेवकूफ बनाकर, मेरी हत्या के लिये तैयार किया गया है। जब तुम मेरे बारे में पता करने निकले तो क्या वो आदमी जानता था कि तुम मेरे बारे में पता कर रहे हो?"

"शायद जानता हो।"

"तो उसने सबकुछ प्लांट किया है। तुमने जिस से भी पूछा होगा, वो उसी का आदमी होगा।"

"ऐसा कैसे हो सकता है?" जगमोहन की आंखें सिकुड़ीं।

"मैं बड़े-बड़े बिजनेस करता हूं और जानता हूं कि सब काम किया जा सकता है। मेरे बारे में जिन लोगों से पता किया, उनसे तुम एक ही बार मिले–दोबारा तो उनसे नहीं मिले?"

"नहीं।"

"तो आज फिर उनसे मिलने जाओ।"

"क्यों?"

"क्योंकि वो सब उसी आदमी के प्लांट किए व्यक्ति थे जिसने मेरी हत्या करने के लिए तुम्हें तीन करोड़ दिये और अखबारों के दफ्तर जाकर इन कटिंग्स की सच्चाई का भी पता करो। उसके बाद तुम मेरे से बात करना।"

"तुम तो बहुत ही रौब से बात कर रहे हो।" जगमोहन मुस्करा पड़ा।

"बेवकूफों से मैं इसी तरह बात करता हूं।" रतनचंद ने दांत भींचकर कहा।

जगमोहन उठा और रतनचंद के हाथ बांधते कह उठा–

"बड़ी बात कह रहे हो तुम कि ये कटिंग्स झूठी हैं और हमें बेवकूफ बनाया गया है।" जगमोहन बोला।

"मेरी बातों की सच्चाई जानो, उसके बाद मेरे से बात करना।"

"जरूर, मैं आज ही सब कुछ एक बार फिर पता करूंगा।" जगमोहन की आवाज में गम्भीरता आ गई थी।

❑❑❑

एक्स्ट्रा और धर्मा नाश्ता कर रहे थे।

"तुम्हारा क्या ख्याल है कि सोहनलाल आज, देवराज चौहान से बात करा देगा?"

"करानी तो चाहिये।"

"सोहनलाल जानता है कि देवराज चौहान किधर है, लेकिन उसने हमें नहीं बताया।" धर्मा ने कहा।

"कोई भी इस तरह, एकदम देवराज चौहान के बारे में नहीं बतायेगा।" एक्स्ट्रा बोला।

"अब तक हो सकता है कि उसने देवराज चौहान से बात कर ली हो और देवराज चौहान का फोन कभी भी आये।"

एक्स्ट्रा कुछ चुप रहकर बोला–

"मुझे राघव की चिन्ता हो रही है।"

धर्मा ने फौरन मोबाइल फोन निकाला और नम्बर मिलाने लगा।

"किसे फोन कर रहे हो?"

"राघव को।"

"परन्तु उसका फोन तो उस जगमोहन के पास–।"

"जगमोहन से ही बात करूंगा, उसका हाल-चाल पूछूं।"

फोन लग गया। बेल जाने के पश्चात जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

"हैलो।"

"मैं धर्मा।"

"बोलो।"

"राघव कैसा है?"

"हाथ-पांव बांध कर डाल रखा है–कहता है बंधन खोल दूं, हाथ-पांव दर्द कर रहे हैं।"

"मतलब कि वो ठीक है।"
"एकदम। उसे तब तक कोई तकलीफ नहीं पहुंचेगी, जब तक वो कोई उलटी हरकत नहीं करेगा।"
"तुम ठीक नहीं कर रहे हो।"
"ठीक क्या है, गोली मार दूं राघव को?"
"राघव को कुछ मत करना।"
"ये बकवासबाजी छोड़, मुझे नहीं लगता कि तेरे पास कोई काम की बात करने को है।"
"मैंने उसका हाल-चाल पूछने के लिये फोन किया था।"
"हाल-चाल हो गया। अब फोन बंद करता हूं।" इसके साथ ही उधर से जगमोहन ने फोन बंद कर दिया था।
धर्मा ने फोन बंद किया।
"तो राघव सलामत है।"
"हां, मेरे ख्याल में आज हम राघव को छुड़ा लेंगे वहां से। एक बार देवराज चौहान का फोन आ जाये, मैं सब ठीक कर लूंगा।"
तभी रतनचंद बने देवराज चौहान ने भीतर प्रवेश किया।
देवराज चौहान की निगाह उस पर गई।
देवराज चौहान कुर्सी पर बैठता कह उठा—
"केकड़ा का फोन आया था। अभी—।" देवराज चौहान के ये शब्द एकदम झूठ थे।
"केकड़ा—क्या बोला?" एक्स्ट्रा कह उठा।
"केकड़ा ने बताया कि रात तुम दोनों देवराज चौहान की पहचान वाले मशहूर तालातोड़ सोहनलाल के घर पर गये थे।"
धर्मा का चेहरा गुस्से से भर उठा।
"तो ये हरामी केकड़ा हम पर नज़र रखवा रहा है।" धर्मा ने एक्स्ट्रा को देखा।
"और क्या बोला केकड़ा?" एक्स्ट्रा के माथे पर बल नज़र आ रहे थे।
"यही, जो बताया।" देवराज चौहान ने कहा।
"एक बार हाथ लग जाये, तब साले को बहुत मारूंगा।" धर्मा पूर्ववतः स्वर में बोला—"हमारी बातें दूसरों को बता रहा—।"
"तुम दोनों ने रात को मुझे नहीं बताया कि कहां जा रहे हो?" देवराज चौहान बोला।

ऐसे शब्द इस्तेमाल कर रहा था कि केकड़ा भड़के और जो जानना चाहता है, केकड़ा बता दे।
केकड़ा की तरफ से आवाज नहीं आई।
"मुझे लगता है तू कुछ नहीं जानता इस बारे में कि नागेश शोरी क्यों मेरी जान लेना चाहता है। इसलिये फोन बंद करता—।"
"तूने उसकी बीवी की जान ली है, ऐसे में वो तेरी हत्या तो करवायेगा ही—।"
"नागेश शोरी की बीवी की जान?"
"हां। नहीं ली क्या?" केकड़ा का स्वर शांत था।
"नहीं।" देवराज चौहान के माथे पर बल पड़ चुके थे।
"तेरे कहने से क्या होता है, नागेश शोरी तो इस बात को जानता है कि तू उसकी बीवी का हत्यारा है।"
"ठीक है—बता क्या किया था मैंने उसकी बीवी के साथ?"
केकड़ा की आवाज नहीं आई।
"चुप क्यों हो गया—बता।"
"तू कौन है?" केकड़ा के स्वर में इस बार शक के भाव भरे हुए थे।
"रतनचंद।"
"नहीं, मुझे नहीं लगता कि तू रतनचंद है।"
"मैं रतनचंद ही हूं।"
"तो फिर तू ऐसी बातें पूछने पर क्यों लगा है, जो तू जानता है?"
"दूसरे के मुंह से सुनकर मुझे अच्छा लगता है।"
"नहीं। रतनचंद नहीं है तू—बता कौन है तू?"
"मेरी आवाज नहीं पहचान रहा?"
"आवाज रतनचंद की बना लेने से तू रतनचंद नहीं बन सकता। अब मुझे पूरा विश्वास हो चुका है कि तू रतनचंद नहीं।"
"वहम है तेरा।"
"मुझे आसानी से वहम नहीं होता।"
देवराज चौहान के होठों पर अजीब-सी मुस्कान उभर आई।
"छोड़ इन बातों को, ये बता मैंने क्या किया था उसकी बीवी के साथ ?" देवराज चौहान बोला।
"तू है कौन?"

"रतनचंद–।"
कुछ चुप्पी के पश्चात् केकड़ा की आवाज आई–
"रतनचंद के बंगले पर है तू?"
"हां, मैं ही रतनचंद हूं, ये मेरा ही बंगला है।"
"बता–पिछली बार मैंने तेरे को किसका नाम बताया था?" एकाएक उधर से केकड़ा ने पूछा।
"किसका नाम बताया था?" देवराज चौहान के होंठ गोल हुए।
"तू बता, मैंने तेरे को कल सुबह फोन किया था और किसका नाम बताया था?"
"याद नहीं–बाद में याद आ जायेगा।"
केकड़ा की हंसने की आवाज आई।
देवराज चौहान जानता था कि केकड़ा को विश्वास हो चुका है कि वो रतनचंद नहीं।
"सोच ले, शायद याद आ जाये।"
"जब याद आयेगा, बता दूंगा।"
"अब मेरी सुन–मैंने तेरे को पिछली बार कोई भी नाम नहीं बताया था। समझा, तू रतनचंद नहीं है। अब तो तू अपनी अग्नि परीक्षा भी दे, तो तब भी मैं तेरी बात का यकीन न करूं।" केकड़ा के स्वर में दृढ़ता के भाव थे।
देवराज चौहान ने गहरी सांस ली और बोला–
"ठीक सोचा तूने।"
"यानि कि तू रतनचंद नहीं है। मानता है इस बात को?"
"हां।"
"तो फिर कौन है तू?"
"देवराज चौहान।"
"कौन?" केकड़ा के स्वर में हैरानी के भाव आ गये थे।
"देवराज चौहान!"
"तू–तू रतनचंद की जगह पर बैठा है?"
"हां।"
"और R.D.X.?"
"वो भी यहीं हैं।"
"उन्हें शक नहीं हुआ?"

"राघव मेरी कैद में है और बाकी दोनों को कोई शक नहीं हुआ।"
"तेरा चेहरा–वो–।"
"जगजीत से मैंने रतनचंद का फेस मॉस्क बनवा लिया था।" देवराज चौहान का स्वर सामान्य था–"एकदम रतनचंद हूं मैं अब।"
"लेकिन तूने तो–रतनचंद की जान लेनी थी, फिर–फिर–।"
"मैं तेरे को इस बात का जवाब क्यों दूं?" देवराज चौहान बोला।
केकड़ा की तरफ से खामोशी रही।
"अब तो बता दे कि रतनचंद ने क्या किया था शोरी की बीवी के साथ?"
"सच में देवराज चौहान, तू बहुत खतरनाक है।" केकड़ा के गहरी सांस लेने की आवाज आई।
"खतरनाक?"
"हां। इस तरह रतनचंद का चेहरा ओढ़ कर रतनचंद की जगह ले लेना और वो भी तब जबकि R.D.X. पास में मौजूद हों, और उन्हें शक न हो सके। ये सारा काम किसी हिम्मत वाले का ही हो सकता है।"
"मेरी बात का जवाब दे कि मैंने क्या किया था शोरी की बीवी–।"
उधर से केकड़ा ने फोन बंद कर दिया।
देवराज चौहान ने होंठ सिकोड़ कर फोन कान से हटाया और गहरी सांस ली।
चेहरे पर सोच के भाव नज़र आ रहे थे।
नागेश शोरी का कहना था कि रतनचंद ड्रग्स का धंधा करता है और उनकी बीवी की मौत ड्रग्स लेने की वजह से हो गई, तो वो रतनचंद को खत्म करवा देना चाहता है।
जबकि केकड़ा की बातों में कुछ और ही झलक रहा है।
रतनचंद की ड्रग्स की वजह से शोरी की बीवी मरी होती, तो केकड़ा अवश्य बता देता कि वो कैसे मरी? ये देवराज चौहान का ख्याल था और उसे अपना ख्याल बहुत हद तक ठीक लग रहा था।

ये सवाल फिर देवराज चौहान के सामने था कि आखिर रतनचंद ने शोरी की बीवी के साथ क्या किया जो वो मर गई?

दूसरी बात, केकड़ा अब तक रतनचंद को बताता रहा कि कब उस पर हमला होगा, जबकि केकड़ा के मन में रतनचंद के लिये कोई दोस्ताना नहीं है। बातों से यही लगा कि केकड़ा भी रतनचंद के खिलाफ है। तभी तो वो रतनचंद को नागेश शोरी का नाम नहीं बता रहा था। तभी तो अब तक उसने रतनचंद को ये भी नहीं बताया कि देवराज चौहान ने उसकी हत्या की सुपाड़ी ली है, असल बात वो रतनचंद से हमेशा छिपाता रहा है।

आखिर केकड़ा है कौन और किस मकसद से वो रतनचंद को आधी-अधूरी खबरें देता रहा?

केकड़ा की आवाज के भावों से लगता है कि उसने आवाज कहीं सुनी है, परन्तु फिलहाल लगता है कि वो गलत सोच रहा है, ये आवाज उसने कहीं नहीं सुनी। खास कुछ स्पष्ट नहीं हो पाया था देवराज चौहान के सामने।

अब असल बात रतनचंद से जानी जा सकती थी कि हुआ क्या था?

तभी कदमों की आवाज सुनाई दी और सुन्दर ने भीतर प्रवेश किया।

"सर, अभी तक आप तैयार नहीं हुए।" वो बोला।

"हो रहा हूं।" देवराज चौहान का स्वर सोचों में था।

"सब ठीक तो है सर?"

"हां।" देवराज चौहान ने सिर हिलाकर सुन्दर को देखा—"एक्स्ट्रा और धर्मा का ख्याल है कि तुम यहां की बातें बाहर निकाल रहे हो। देवराज चौहान ने तुम्हें खरीद लिया है। वो तुम्हें पैसा दे रहा है।"

सुन्दर का चेहरा सख्त हो गया।

"वो गलत सोच रहे हैं। मैं ये काम नहीं कर रहा।"

"मैं जानता हूं, परन्तु तुम्हें उनकी बात का गुस्सा नहीं करना चाहिये।" देवराज चौहान मुस्करा पड़ा—"सही बात तो ये है कि वो भी परेशान हैं। एक तो राघव देवराज चौहान के हाथों में फंस गया, दूसरे वे देवराज चौहान पर काबू नहीं पा सके हैं।"

"उन्हें इस तरह मेरी तरफ उंगली नहीं उठानी चाहिये।"

"उनकी बातों की परवाह मत करो। मैं तो जानता हूं कि तुम मेरे विश्वासी हो।"

सुन्दर ने कुछ नहीं कहा।

"मैं दस मिनट में तैयार होकर आता हूं। धर्मा और एक्स्ट्रा से चलने को कह दो।"

"कह चुका हूं, वे तैयार हो रहे हैं।" सुन्दर ने कहा और बाहर निकल गया।

देवराज चौहान कपड़े बदलने लगा।

❑❑❑

एक्स्ट्रा और धर्मा, सारा दिन, रतनचंद बने देवराज चौहान को लेकर घूमते रहे। साथ में सुन्दर था और छः अन्य गनमैन। तीन का काफिला रहा उनका।

कभी एक जगह तो कभी दूसरी जगह।

काम के वक्त देवराज चौहान मन न होने का बहाना बनाकर काम टाल देता तो कभी सुन्दर से पूछकर काम कर देता। ऐसा इसलिये करता कि वो नहीं जानता था कि कौन-सा काम कैसे करना है। जहां रतनचंद के साइन करने की बात आती, तो देवराज चौहान बाद में करने को कहकर टालता रहा।

कुल मिलाकर देवराज चौहान पांच जगह पूरे दिन में गया।

पांचवीं जगह पर पहुंचे तो शाम के छः बज रहे थे।

सुन्दर, रतनचंद के साथ आफिस में चला गया। साथ में दो गनमैन थे। बाकी के चार गनमैन बाहर की फैल गये।

धर्मा और एक्स्ट्रा कार के पास ही खड़े रहे।

"कुछ नहीं हुआ।" धर्मा बोला।

"जबकि देवराज चौहान चाहता तो रतनचंद का निशाना ले सकता था। कई बार ऐसा हुआ कि जब रतनचंद को आसानी से निशाने पर लिया जा सके।" एक्स्ट्रा सोच भरे स्वर में कह उठा—"कल शाम जब वह काशीनाथ ने पंगा खड़ा किया तो तब भी रतनचंद को नहीं मारा गया। जबकि तब ये काम आसानी से किया जा सकता था।"

"तेरे को नहीं लगता कि देवराज चौहान पीछे हट गया है? वो रतनचंद को नहीं मार रहा या कुछ ऐसा ही। कल भी उसने रतनचंद का निशाना लेने की कोशिश नहीं की और अब भी नहीं।"

"इसके पीछे भी जरूर कोई वजह हो कि वो क्यों खामोश बैठ गया। लेकिन देवराज चौहान कभी भी रतनचंद पर वार कर सकता है।"

"ऐसा क्यों?"

"क्योंकि रतनचंद को मारने के लिये उसने तीन करोड़ की सुपाड़ी ले रखी है।"

"देवराज चौहान का फोन नहीं आया अभी तक।"

"सोहनलाल, देवराज चौहान से मिल नहीं पाया होगा।"

"बकवास करता है सोहनलाल कि देवराज चौहान का पता-ठिकाना नहीं जानता। सब जानता है। देवराज चौहान का फोन भी होगा उसके पास।"

"फिर तो अब तक देवराज चौहान ने हमसे बात कर ली होगी।"

"की होती तो अब तक देवराज चौहान ने उससे बात कर ली होती।"

दोनों की नजरें मिलीं।

"आज पकड़ें हरामी सोहनलाल को? मुंह में हाथ देकर सब कुछ बाहर निकलवाते हैं।" धर्मा कह उठा।

"देखते हैं, हो सकता है कि शायद देवराज चौहान का फोन आ ही जाये।"

"नहीं आया तो रात को पकड़ते हैं सोहनलाल को। हमारे लिये शर्म की बात है कि हम राघव को ढूंढ नहीं पा रहे।"

"इस बार ऐसे दुश्मन से पाला पड़ा है कि सामने का रास्ता साफ नज़र नहीं आ रहा। छापामारों की तरह देवराज चौहान काम कर रहा है, वो अचानक ही कोई हरकत करता है और लुप्त हो जाता है। हम उसके बारे में ठीक से जान नहीं पाते। मैं तो सोच रहा हूं कि आखिर बंगले में कौन है, जो हमारी खबरें देवराज चौहान को दे रहा है।"

"रतनचंद तो खबरें देने से रहा। सुन्दर ही ये सब काम कर रहा है।"

"यकीन के साथ कुछ भी नहीं कह सकते—और कल शाम काशीनाथ से वहां हंगामा क्यों करवाया देवराज चौहान ने? वो खामख्वाह का हंगामा था परन्तु तब देवराज चौहान

का मकसद खास रहा होगा। हंगामें की आड़ में उसने क्या किया होगा?"

धर्मा होंठ भींच कर रह गया।

"हम कुछ भी नहीं कर पा रहे हैं, सिर्फ रतनचंद को सुरक्षा दे पा रहे हैं। उधर देवराज चौहान कुछ भी करने को आजाद है।"

"ये सब ज्यादा देर नहीं चलेगा।" धर्मा दांत किटकिटा उठा।

"एक बात और–।"

धर्मा ने एक्स्ट्रा को देखा।

एक्स्ट्रा के चेहरे पर अजीब भाव थे।

"अब ये तो स्पष्ट हो चुका है कि देवराज चौहान ने जगजीत से रतनचंद के चेहरे का मास्क बनवाया।"

"तो?"

"देवराज चौहान ने उस फेस मॉस्क का क्या इस्तेमाल किया होगा?"

"क्या इस्तेमाल किया होगा?" धर्मा के माथे पर बल पड़े।

"खामख्वाह तो वो फेस मॉस्क बनवाने से रहा, उसका कोई इस्तेमाल तो होगा ही–।"

"जरूर होगा, लेकिन फेस मॉस्क का क्या इस्तेमाल हो सकता है?"

"तुम सोचो।" एक्स्ट्रा कह उठा—"ये सवाल बहुत महत्वपूर्ण है। सवाल ये भी महत्वपूर्ण है कि देवराज चौहान अब रतनचंद का निशाना क्यों नहीं ले रहा, ये सवाल भी महत्वपूर्ण है कि काशीनाथ से हंगामा करवा कर, देनराज चौहान आखिर अपना कौन-सा मतलब निकालना चाहता था?"

दोनों एक-दूसरे को देखते रहे।

धर्मा कुछ कहने लगा कि तभी देवराज चौहान, यानि कि रतनचंद बाहर आता दिखाई दिया। उनकी बातचीत अधूरी रह गई और ध्यान रतनचंद की तरफ हो गया।

शाम सवा सात बजे वे सब बंगले पर पहुंचे।

एक्स्ट्रा और धर्मा दिन भर की भागदौड़ से थक चुके थे।

सुन्दर को चैन था कि आज दिन में कुछ नहीं हुआ। सब कुछ शांत सा रहा।

बंगले में पहुंचकर धर्मा ने देवराज चौहान से कहा—

"आज हमारी आशा के विपरीत ठीक रहा।"

"हां।" देवराज चौहान ने सिर हिलाया।

"और ये ठीक-ठाक रहना, किसी गड़बड़ की तरफ इशारा करता है।" एक्स्ट्रा बोला।

"कैसी गड़बड़?"

"यही तो पता नहीं चल रहा।" एक्स्ट्रा मुस्करा पड़ा—"कहां तो देवराज चौहान हाथ धोकर तुम्हारी जान के पीछे था और कोई मौका नहीं छोड़ता था और अब देवराज चौहान तुम्हारी हत्या करने के प्रति उदासीन दिख रहा है।"

"क्या पता वो कोई बड़ी तैयारी कर रहा हो।" रतनचंद बोला।

"ऐसा भी हो सकता है।" सुन्दर ने कहा—"हमें किसी भी तरफ लापरवाह नहीं होना चाहिये।"

"देवराज चौहान मुझ पर गोली चलाने के लिये देर कर रहा है, ऐसा शायद वो इसलिए कर रहा हो कि हम लोग कुछ लापरवाह हो जायें और वो मौका देखकर नपा-तुला वार कर दे।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"ये भी सम्भव है।" एक्स्ट्रा ने सोच भरे स्वर में कहा।

"मैं थक गया हूं।" धर्मा बोला—"कुछ आराम करूंगा।"

फिर वे लोग अपने-अपने कमरों में चले गये।

"कुछ और चाहिये सर?"

"नहीं—।" देवराज चौहान ने काफी का घूंट भरा—"मुझे काम से बाहर जाना है।"

"चलिये सर, मैं तैयार हूं।"

"मैं अकेला जाऊंगा।"

"अकेले?" सुन्दर पल भर के लिये हड़बड़ा उठा—"ये आप क्या कह रहे हैं?"

"काम ही ऐसा है।"

"नहीं सर। इन हालातों में आपका अकेले जाना ठीक नहीं। गनमैन को लेकर जाइये। एक्स्ट्रा या धर्मा को—।"

"सुन्दर।" देवराज ने शांत स्वर में कहा—"मुझे अकेले ही जाना है।"

"नहीं सर। ये ठीक न होगा।" सुन्दर ने गम्भीर स्वर में कहा—"एक्स्ट्रा और धर्मा आपको कभी भी अकेले नहीं—।"

"उन्हें मत बताना कि मैं बाहर जा रहा हूं।"

"ये कैसे हो सकता है। जब उन्हें पता चलेगा तो वो मुझे नहीं छोड़ेंगे। अगर आपको कुछ हो गया तो?"

"मुझे कुछ नहीं होगा, मैं दो घंटे में वापस आ जाऊंगा। तुम चुपचाप मेरे लिये कार तैयार रखो। पन्द्रह मिनट बाद में निकलूंगा।"

"सर।" वो बोला—"मैं आपके साथ चलता।"

"नहीं। मैं अकेला ही जाऊंगा और दो घंटे बाद वापस आ जाऊंगा। मुझे कुछ नहीं होगा—मेरे लिये कार तैयार रखो।"

न चाहते हुए भी सुन्दर कार तैयार रखने के लिए बाहर निकल गया।

"मैं सोहनलाल से बात करके आता हूं।" धर्मा बोला।

"हां, उससे ये जानना जरूरी है कि देवराज चौहान से डकैती के बारे में उसने बात की या नहीं?"

"साले के गले में हाथ डालकर देवराज चौहान का ठिकाना पता करूंगा।"

"शान्ति से काम लो। क्रोध से गड़बड़ हो जायेगी। आते वक्त सोहनलाल का फोन नम्बर लेते आना।"

"तुम नहीं चलोगे?"

"मैं आराम करना चाहता हूं और सोचना चाहता हूं कि हम से चूक कहां हो रही है।" एक्स्ट्रा ने कहा—"तुम ही चले जाओ।"

"ठीक है। कुछ ही देर में मैं सोहनलाल से मिलने के लिए यहां से निकलूंगा।"

तभी सुन्दर ने भीतर कदम रखा।

"देवराज चौहान की पहचान वाले सोहनलाल से मिलने जा रहे हो, जिससे कल मिले थे?" सुन्दर बोला।

"तुम्हें कैसे पता?"

"सुबह सेठ जी ने बताया था।"

"तुम–।" एक्स्ट्रा ने गहरी सांस लेकर कहा–"हमारी तरफ से अपने कान बंद रखा करो।"

"मैं कॉफी के लिये पूछने आया था।"

"ये काम तो नौकर भी कर सकता है।"

"खास मेहमानों की सेवा मैं ही करता हूं, लाऊं क्या?"

"ले आओ।"

सुन्दर बाहर निकल गया।

"ये अच्छा नहीं हुआ कि सुन्दर को पहले ही पता चल गया है कि तुम, सोहनलाल से मिलने जा रहे हो।"

देवराज चौहान ने कॉफी समाप्त की कि उसका फोन बजा।

दूसरी तरफ जगमोहन था।

"तुमसे बहुत जरूरी बातें करनी हैं।" जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

"मैं बंगले पर ही पहुंच रहा हूं। घंटे भर बाद वहीं मिलूंगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"रतनचंद वाला मामला उतना सीधा नहीं है, जैसा कि हम समझ रहे हैं।"

"वो कैसे?"

"रतनचंद कहता है कि वो ड्रग्स का धंधा नहीं करता। उसने कहा कि अखबारों की कटिंग्स झूठी हैं। मैंने उसकी बातों की सच्चाई जानने के लिये, उसके बारे में सब पता किया फिर से। वो ठीक कह रहा है।"

देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं।

"वो ठीक कहता है कि वो ड्रग्स का धंधा नहीं करता?"

"हां, वो ठीक कहता है।"

"ये तो तुमने ही मालूम किया था कि वो ड्रग्स का धंधा करता है। शोरी ठीक कहता है।"

"मेरे ख्याल में वो सब शोरी की चाल थी। उसने मुझ पर नज़र रखी कि मैं कहां-कहां जाकर रतनचंद के बारे में पता कर रहा हूं, वहां पर उसने अपने आदमी फैला दिए, जिन्होंने यही कहा कि रतनचंद ड्रग्स का धंधा करता है। हमसे चालबाजी खेली गई है।"

"और वो अखबारों की कटिंग्स?"

"झूठी हैं। उन कटिंग्स को तैयार किया गया है–ताकि उन्हें देखने वाले को लगे कि रतनचंद ड्रग्स के धंधे में है। मैंने अखबार के दफ्तर जाकर उन कटिंग्स की सत्यता की जांच की। कटिंग्स की तारीखों वाले अखबार निकलवाये, उन अखबारों में रतनचंद से वास्ता रखती कोई खबर नहीं थी। अखबार के चीफ एडीटर से रतनचंद के बारे में पूछा, वो रतनचंद के बारे में जानकारी रखता था, उसने बताया कि रतनचंद गलत काम नहीं करता।"

देवराज चौहान के चेहरे पर अजीब से भाव आ ठहरे।

"हमें गलत रास्ता दिखा कर शोरी ने इस काम के लिये तैयार किया है।"

"मैं एक घंटे में बंगले पर आ रहा हूं।"

"आ जाओ। वहां सब ठीक है?"

"ठीक है।" देवराज चौहान ने कहा और फोन बंद कर दिया।

नागेश शोरी ने झूठ की आड़ लेकर, उन्हें रतनचंद की हत्या के लिये तैयार किया। अखबारों की कटिंग्स झूठी थीं।

देवराज चौहान एक बार फिर पूरे मामले पर नज़र दौड़ाने लगा।

तभी सुन्दर ने भीतर प्रवेश किया और धीमें स्वर में बोला–

"सर, धर्मा सोहनलाल के पास जाने के लिये तैयार हो रहा है।"

"सोहनलाल–देवराज चौहान की पहचान वाला वो?"

"जी, कल धर्मा और एक्स्ट्रा दोनों ही सोहनलाल से मिले। रात को गये थे।"

"ठीक है, वो जो करते हैं, उन्हें करने दो। कार तैयार है मेरे लिये?"

"जी।" सुन्दर ने सिर हिलाया–"लेकिन आपका अकेले जाना...।"

"चुप रहो, दो घंटे में मैं वापस आ जाऊंगा।"

उसके बाद देवराज चौहान बंगले में मौजूद कार में बैठा और बाहर निकल गया।

कुछ आगे जाकर उसने कार रोकी और बाहर निकलकर कार से टेक लगाकर खड़ा हो गया। हर तरफ अंधेरा फैला था, सड़क पर हैडलाइटें जलाये, तेजी से वाहन दौड़े जा रहे थे।

❑❑❑

धर्मा कार ड्राइव करता हुआ, बंगले से बाहर निकला और कार आगे दौड़ा दी। वो जल्द-से-जल्द सोहनलाल के पास पहुंच जाना चाहता था। सोहनलाल से जानना चाहता था कि उसने देवराज चौहान से बात की तो देवराज चौहान ने क्या कहा, नहीं बात की तो, क्यों नहीं की। वो राघव को जल्द-से-जल्द देवराज चौहान की कैद से निकाल लेना चाहता था।

एकाएक धर्मा चिहुंक उठा।

रतनचंद को उसने सड़क के किनारे कार के साथ टेक लगाए खड़े देखा।

रतनचंद बंगले से बाहर है?

ये कैसे हो सकता है, वो तो बंगले के भीतर था।

धर्मा ने फौरन सड़क किनारे कार रोकी और बाहर निकला। रतनचंद का इस तरह बंगले से बाहर नज़र आना हैरानी की बात थी। देवराज चौहान उसे गोली मार सकता था।

धर्मा मन-ही-मन सतर्क हुआ कि ये देवराज चौहान या उसका कोई आदमी रतनचंद का मॉस्क पहने हो सकता है, क्योंकि देवराज चौहान ने भी जगजीत से, रतनचंद के चेहरे वाला फेस मॉस्क बनवाया था।

धर्मा ने जेब में पड़ी अपनी रिवाल्वर टटोली।

देवराज चौहान की निगाह भी करीब आते धर्मा पर टिक चुकी थी। उसके शरीर पर दिन वाले ही कपड़े थे और कार वही थी, जो शाम को बंगले में खड़ी थी, इसलिए धर्मा को कुछ तसल्ली हुई कि ये रतनचंद ही है।

"तुम बंगले से बाहर कैसे आ गये?" धर्मा ने संदिग्ध स्वर में पूछा।

"काम था, तभी बाहर निकला।" देवराज चौहान ने कहा।

"तुम्हें बाहर जाना था तो हमें बताना चाहिये था।" धर्मा उखड़े स्वर में बोला—"सारा दिन तुम्हारे साथ चिपके रहे—और अब तुम अकेले ही बाहर आ गये और यहां खड़े हो। सच में

तुम्हारी हिम्मत की दाद देनी पड़ेगी! ये नहीं सोचा कि देवराज चौहान तुम्हें मार देगा?"

"मैं केकड़ा से मिलने जा रहा हूं।" देवराज चौहान ने झूठा बम का गोला छोड़ा।

"केकड़ा से?" धर्मा चिहुंक पड़ा।

"हां। कुछ देर पहले केकड़ा का फोन आया था। वो मुझसे मिलना चाहता है और वो नहीं चाहता कि मैं इस बारे में किसी को बताऊं। लेकिन अब तुम मिल गये तो केकड़ा से मिलने मेरे साथ चल सकते हो।" देवराज चौहान ने कहा।

"मैं?"

"सुन्दर ने बताया था कि तुम सोहनलाल से मिलने जा रहे हो। वापसी पर उससे मिल लेना, अब केकड़ा के पास चलो—।"

"ठीक है, चलो।" धर्मा ने उसी पल सिर हिलाया—"और क्या कह रहा था केकड़ा?"

"चल रहे हो, पूछ लेना—सुन लेना।"

"मेरे ख्याल में वो उसके बारे में बताना चाहता होगा, जिसने तुम्हारी हत्या की सुपाड़ी दी है।"

"तुम अपनी कार यहीं छोड़ दो। इस कार में मेरे साथ चलो।" देवराज चौहान ने कहा।

दोनों भीतर बैठे। देवराज चौहान ने कार स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी।

"कहां मिलेगा केकड़ा?"

"चल रहे हैं वहां, उसने किसी बंगले का पता बताया है।"

कार अब सड़क पर दौड़ रही थी।

"जो भी हो, तुम्हें इस तरह खुले में नहीं आना चाहिये था रतनचंद। हमें साथ लेकर आते।"

"अब तो तुम मेरे साथ ही हो।" देवराज चौहान मुस्करा कर कह उठा।

❑❑❑

देवराज चौहान ने कार बंगले में ले जाकर पोर्च में रोकी।

धर्मा ने अजीब सी निगाहों से देवराज चौहान को देखा।

"क्या हुआ?" देवराज चौहान ने उसे देखते हुए, कार का इंजन बंद किया।

"तुमने यहां इस तरह कार रोकी है रतनचंद, जैसे अक्सर यहां आते रहते हो।" धर्मा ने कहा।

"ऐसा कुछ नहीं है।" देवराज चौहान मुस्कराया—"केकड़ा ने मिलने के लिये मुझे इसी बंगले का पता दिया था।"

"मुझे तो लगता है कि तुम यहां पहले भी आ चुके हो।" पुनः धर्मा बोला।

"पहली बार आया हूं मैं।"

"मुझे नहीं लगता।" धर्मा ने कहा और जेब से रिवाल्वर निकाल कर हाथ में ले ली।

"ये क्या?" देवराज चौहान उसे रिवाल्वर निकालते पाकर बोला।

"सावधानी के नाते, मुझे यहां कुछ ठीक नहीं लग रहा।" धर्मा ने गहरी निगाहों से देवराज चौहान को देखा—"तुम कहते हो कि केकड़ा ने मिलने के लिए इस बंगले में बुलाया है—जबकि तुम्हारे आने का ढंग बताता है कि तुम यहां पहले भी आये हुए हो।"

"वहम है तुम्हारा।"

"ये मेरा वहम ही हो तो, अच्छा है।" धर्मा ने आस-पास नज़रें घुमाईं।

"बाहर निकलें?" देवराज चौहान ने पूछा।

"जरूर।"

तभी सामने, मुख्यद्वार खुला।

जगमोहन दिखा।

धर्मा की निगाह उस पर जा टिकी।

"ये कौन है?" धर्मा की आंखें सिकुड़ीं।

"केकड़ा होगा...।" देवराज चौहान लापरवाही से बोला।

"मुझे सब कुछ अजीब सा लग रहा है रतनचंद।"

"वो कैसे?"

"केकड़ा किसी ऐसी जगह पर नहीं मिलेगा, जैसा कि ये बंगला है। इससे उसके पहचाने जाने का डर होगा। ना ही वो इस तरह खुलकर सामने आयेगा—और तुम कहते हो कि ये केकड़ा होगा।" धर्मा ने शक भरे स्वर में कहा।

देवराज चौहान मुस्कराया।

"मैंने अपना ख्याल जाहिर किया है कि ये केकड़ा होगा।"

जगमोहन के कदम इस तरफ उठने शुरू हो गये थे।

"देखा है इसे कभी?" देवराज चौहान ने पूछा।

"नहीं।"

जगमोहन पास पहुंचा।

रिवाल्वर थामें धर्मा सतर्क हो उठा।

"कौन हो तुम?" धर्मा ने रिवाल्वर जगमोहन की तरफ करके, सतर्क स्वर में पूछा।

जबकि जगमोहन धर्मा को देखते ही चौंका।

देवराज चौहान ने ऐसा कुछ नहीं बताया था कि वो धर्मा के साथ यहां आयेगा।

जगमोहन ने झुककर दूसरी तरफ बैठे रतनचंद रूपी देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान मुस्कराया।

"कौन हो तुम?" धर्मा ने रिवाल्वर वाला हाथ आगे करके जगमोहन से पूछा।

"जगमोहन।"

"जगमोहन?" धर्मा चिहुंक उठा—"क-कौन जगमोहन?"

"देवराज चौहान का साथी।"

धर्मा ने फौरन चौंक कर, रतनचंद रूपी देवराज चौहान को देखा।

"ये क्या हो रहा है रतनचंद, ये तो—"

तभी देवराज चौहान के हाथ में दबी रिवाल्वर धर्मा की कमर से लग गई।

धर्मा को उसी पल महसूस हो गया कि वो फंस गया है।

"कौन हो तुम?" धर्मा ने दांत भींच देवराज चौहान से पूछा।

"देवराज चौहान।"

धर्मा की हालत देखने लायक थी।

"तुम—तुम देवराज चौहान हो?" उसके होठों से निकला।

"हां।"

"तो—तो रतनचंद कहां है?"

"इसी बंगले में।"

"ये अदला-बदली कब की तुमने?" धर्मा अजीब से स्वर में कह उठा।

"जब काशीनाथ ने हंगामा किया था वहां।"

"ओह, तो तुम्हें मालूम था कि तब रतनचंद गनमैन के रूप में वहां है–। ये बात तुम्हें किसने बताई?"

देवराज चौहान ने रिवाल्वर का दबाव उसकी कमर में बढ़ाया।

धर्मा के होंठ भिंचे।

"राघव से मिलना चाहते हो?"

"वो, यहीं है?"

"यहीं है। रतनचंद यहीं है और तुम भी यहीं हो।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा–"अपनी रिवाल्वर जगमोहन के हवाले करो और नीचे उतरो। तुम्हें भीतर ले चलना है।"

जगमोहन ने धर्मा के हाथ से रिवाल्वर ले ली।

धर्मा का चेहरा कठोर हो चुका था और शरीर गुस्से से भर चुका था।

"तुम देवराज चौहान हो?"

"हां।"

"और रतनचंद के रूप में, तुम हमारे बीच ही रह रहे थे?"

"सही समझे।"

"ओह, कितनी बड़ी धोखेबाजी के शिकार हुए–और हम समझ नहीं सके।" धर्मा अभी भी सकते की हालत में था।

जगमोहन ने दरवाजा खोला।

"बाहर आओ।"

धर्मा बाहर निकला।

जगमोहन ने उसे रिवाल्वर पर रख लिया।

धर्मा की निगाह बंगले पर फिरने लगी।

"चलो भीतर।"

"मुझे अभी भी विश्वास नहीं आ रहा है कि मैं फंस गया हूं।"

"राघव को विश्वास आ चुका है कि वो कैद में है, वो तुम्हें भी विश्वास दिला देगा।" जगमोहन ने व्यंग से कहा।

देवराज चौहान भी बाहर निकल आया था।

वो धर्मा को लिए दरवाजे की तरफ बढ़ने लगे।

वे बंगले के भीतर पहुंचे।

"तलाशी लो इसकी।" जगमोहन ठिठकता हुआ रिवाल्वर थामें सतर्क स्वर में बोला।

देवराज चौहान ने तलाशी ली।

रिवाल्वर एक ही थी, जिसे जगमोहन पहले ले चुका था।

मोबाइल फोन मिला, जिसे देवराज चौहान ने अपनी जेब में रख लिया।

रोशनी में धर्मा ने दोनों को देखा।

"कोई चालाकी मत करना।" बोला जगमोहन।

धर्मा मुस्करा पड़ा।

"दांत क्यों फाड़ रहे हो?"

"अपनी बेवकूफी पर कि कितनी आसानी से मुझे फांस लिया गया। हम सोच भी नहीं सकते थे कि देवराज चौहान, रतनचंद की जगह पर बैठा हुआ है और यही सब करने के लिये देवराज चौहान ने रतनचंद का फेस मॉस्क जगजीत से बनवा लिया था। हम कुछ भी न समझ सके।"

"जगजीत का रास्ता तुम लोगों ने ही हमें दिखाया था।"

"दिखाया नहीं, तुम लोगों ने देख लिया था।"

"अपना चेहरा तो दिखा दो देवराज चौहान।"

"फुर्सत में, अभी मैं व्यस्त हूं।"

"मुझे और राघव को कैद करके तुम लोग करना क्या चाहते हो?" धर्मा ने गम्भीर स्वर में पूछा।

"वक्ती तौर पर तुम लोगों को कैद किया गया है क्योंकि तुम लोग मेरे काम में अड़चन पैदा कर रहे हो।" देवराज चौहान बोला–"रतनचंद का काम निपटने पर, तुम दोनों को छोड़ दिया जायेगा।"

"और रतनचंद का क्या करोगे?"

"उसका अभी कुछ भी तय नहीं है कि उसके साथ क्या करना है। इसे ले जाओ जगमोहन।" देवराज चौहान ने कहा और सिगरेट सुलगा ली।

❑❑❑

जगमोहन धर्मा को एक कमरे में बांध कर छोड़ आया। देवराज चौहान के पास पहुंचा।

"तुम कह रहे थे कि नागेश शोरी की बताई बातें झूठी हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

जगमोहन ने सारी बात बताई।

आज की भाग-दौड़ के बारे में भी बताया।
देवराज चौहान के चेहरे पर गम्भीरता आ ठहरी।
"आज केकड़ा का फोन भी आया था।" देवराज चौहान बोला।
"केकड़ा?"
"वो ही, जो हमारे बारे में रतनचंद को खबरें देता रहा कि हम उसके खिलाफ कब, क्या करने जा रहे हैं, परन्तु केकड़ा ने रतनचंद को ना तो कभी हमारा नाम बताया और ना ही उसका, जिसने उसकी हत्या की सुपाड़ी दी है।" देवराज चौहान ने कहा—"केकड़ा की बातों से रतनचंद के खिलाफ मैंने नफरत का एहसास पाया।"
जगमोहन के चेहरे पर सोच के भाव नाच रहे थे।
"केकड़ा से बात करके मुझे जाने क्यों महसूस हुआ कि शोरी की बीवी की मौत ड्रग्स की वजह से नहीं हुई।"
"ओह!"
"मेरे ख्याल में ये मामला हमारे सामने स्पष्ट नहीं है। शोरी ने हमें धोखे में रखा है।"
"अभी साले की गर्दन—।"
"पहले रतनचंद से बात करेंगे। स्पष्ट तौर पर उसके सामने खुलना पड़ेगा।"
"रतनचंद मुंह खोलेगा—बतायेगा सब कुछ?"
"बताना पड़ेगा, इस वक्त वो फंसा पड़ा है। आओ, रतनचंद से बात करें।"
देवराज चौहान और जगमोहन, रतनचंद के पास पहुंचे। वो बंधा पड़ा था। अपने चेहरे वाले को देखकर चौंका।
"तुम—।" रतनचंद चौंका।
"इसके सारे बंधन खोल दो।"
"तुम इन दिनों रतनचंद बने पड़े हो?"
"हां।"
"देवराज चौहान हो तुम—डकैती मास्टर?"
देवराज चौहान ने सिर हिलाया।
"मेरी हत्या की सुपाड़ी तुमने ली है?"
"हां।"
"तो फिर मुझे कैद करके क्यों रखा हुआ है, मुझे मारा क्यों नहीं? आखिर क्या चाहते हो तुम? बेहतर होगा कि मेरे से सौदा

कर लो। मैं तुम्हें पांच करोड़ दूंगा छोड़ने के। लेकिन मुझे उसका नाम भी बताना, जिसने तुम्हें सुपाड़ी दी है।"
देवराज चौहान मुस्कराया।
"अपना असली चेहरा तो दिखा दो।"
"मैं ऐसे ही ठीक हूं।"
"मेरी जगह लेने से तुम्हें परेशानी तो आ रही होगी, क्योंकि मेरे बारे में सब कुछ तो पता नहीं होगा।" रतनचंद बोला।
"अभी तो कोई परेशानी नहीं आई, क्योंकि मुझे बंगले में ही रहना पड़ रहा है।"
"हैरानी है कि R.D.X. को तुम पर शक नहीं हुआ।"
"राघव के बाद धर्मा भी यहां आ गया है।"
"धर्मा भी?" रतनचंद के चेहरे पर हैरानी उमड़ी—"R.D.X. इतने कमजोर तो नहीं कि उन्हें इस तरह बंदी बना....।"
"वो तुम्हारे धोखे में मात खा रहे हैं।"
"मेरे धोखे में?" रतनचंद देवराज चौहान को देखने लगा।
"वो रतनचंद पर शक नहीं कर सकते और मैं रतनचंद बना बैठा हूं, इसलिए उन पर हाथ डालने में कोई परेशानी नहीं हो रही।"
जगमोहन ने रतनचंद के हाथ-पांव खोल दिए।
रतनचंद हाथ-पांवों को रगड़ते हुए बोला—
"मुझे छोड़ने वाले हो?"
"नहीं।"
"तो फिर मेरे हाथ-पांव क्यों खोले?"
"तुमसे बात करनी है। मैं चाहता हूं हम, आराम से बात करें।"
"मेरे से बात करनी है, ठीक है, करो।"
"ये बात तो अब तुम्हें अच्छी तरह पता है कि हमने तुम्हारी हत्या की सुपाड़ी ली है और तुम्हें कभी भी मार सकते हैं।"
"मैं तुम्हें पांच करोड़—।"
"मेरी बात का जवाब दो, मैं तुमसे जरूरी बात करने जा रहा हूं।"
"ठीक है, तुम मुझे मार सकते हो।" रतनचंद गम्भीर हुआ।
"इसलिये तुमसे जो बात करने जा रहा हूं, उसका महत्व समझना और सही जवाब देना।"
रतनचंद ने सिर हिलाया।

"तुम ये जानने को बहुत उतावले हो कि किसने तुम्हारी हत्या की सुपाड़ी दी?"

"हां।"

"नागेश शोरी को जानते हो?"

"नागेश शोरी?" रतनचंद चौंका।

"जानते हो?"

"अच्छी तरह से।"

"उसने तुम्हारी हत्या की सुपाड़ी मुझे दी है।" देवराज चौहान ने कहा।

रतनचंद, अजीब सी निगाहों से देवराज चौहान को देखने लगा। फिर बोला—

"मुझे यकीन नहीं आता।"

"ये बात मैं कह रहा हूं, इसलिए तुम्हें यकीन करना पड़ेगा। नागेश शोरी का कहना है कि तुम ड्रग्स का धंधा करते हो और ड्रग्स लेने की वजह से उसकी बीवी को जान से हाथ धोना पड़ा। शहर भर में तुम्हीं ड्रग्स फैलाते हो, इसलिए वो तुम्हें मारना चाहता है। अपनी बीवी की मौत का हिसाब वो इस तरह बराबर करना चाहता है।" देवराज चौहान ने कहा।

रतनचंद, देवराज चौहान को देखता रहा।

"अब बोलो—तुम क्या चाहते हो। सिर्फ सच बोलना। तुम्हारे झूठ का एहसास हो जायेगा मुझे।"

"मैं सोच भी नहीं सकता था कि नागेश शोरी ऐसा कुछ करेगा।" रतनचंद के होठों से निकला।

"जानते हो उसे?"

"बहुत अच्छी तरह से। वो मेरा दोस्त था।"

"दोस्त?"

"हां। उसकी बीवी मेरे को भाई मानती थी। हम लोगों में अच्छे सम्बन्ध रहे हैं। लेकिन बीवी की मौत के साथ ही शोरी का दिमाग खराब हो गया था। वो मुझे कहने लगा कि उसकी बीवी के साथ मेरे सम्बन्ध थे।" रतनचंद ने गहरी सांस ली।

"नागेश शोरी ने कहा ये?"

"हां, जबकि मैं उसे बहन मानता था। वो भी मुझे भाई मानती थी। अक्सर वो घर पर अकेली ही आ जाया करती थी।

घंटों बैठतीं, बातें करती, फिर वो चली जाती। अक्सर इस दौरान मेरी बीवी सोनिया भी पास ही होती थी।" रतनचंद ने व्याकुलता भरे स्वर में कहा—"नागेश का ये सोचना गलत भी नहीं था कि उसकी बीवी मीरा के किसी के साथ सम्बन्ध हैं।"

"क्या मतलब?"

रतनचंद ने गहरी सांस ली, फिर कह उठा—

"नागेश की बीवी मीरा के रंजन श्रीवास्तव के साथ सम्बन्ध थे। अक्सर वो दो-दो दिन, रंजन श्रीवास्तव के घर पड़ी रहती और नागेश को नहीं पता होता कि वो कहां है, वो यही सोचता कि मीरा मेरे घर पर होगी या हम दोनों किसी और जगह पर एक साथ होंगे। कई बार तो मीरा, नागेश से झूठ ही कह देती कि वो मेरे यहां थी। वो नहीं जानती थी कि उसका पति नागेश मुझे और मीरा को लेकर शक करता है। दिन-ब-दिन नागेश का ये बे-वजह का शक पक्का होता रहा।"

"तुमने नागेश को रंजन श्रीवास्तव के बारे में नहीं बताया?"

"नहीं, क्योंकि इस मामले में मीरा जुड़ी हुई थी, जिसे मैं बहन मानता था। ऐसे में उसकी शिकायत क्यों करता मैं?"

"तुमने मीरा को समझाने की चेष्टा नहीं की?"

"ये उसका व्यक्तिगत मामला था। मैं समझाता भी तो क्या समझाता? वो नागेश को छोड़ने के रास्ते तलाश कर रही थी।"

"क्यों?"

"क्योंकि नागेश ड्रग्स का धंधा करता है।"

देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा।

जगमोहन ने दूसरी तरफ मुंह घुमा लिया।

"शोरी ड्रग्स का धंधा करता है?"

"हां।" रतनचंद गम्भीर स्वर में कह रहा था—"ये बात मीरा को पसन्द नहीं थी। उधर शोरी ड्रग्स का धंधा छोड़ने को तैयार नहीं था, क्योंकि दूसरे कामों में वो काफी नुकसान खा चुका था, ड्रग्स के धंधे ने ही उसे, नुकसान से बाहर निकाला था। यूं भी शोरी महीने में पच्चीस दिन ड्रग्स के धंधे की वजह से शहर से बाहर रहता था। ऐसी जिन्दगी मीरा को रास नहीं आ रही थी और तब उसे रंजन श्रीवास्तव मिल गया। रंजन श्रीवास्तव से उसकी अच्छी पटने लगी और वो नागेश को छोड़ने की फिराक में थी।"

"रंजन श्रीवास्तव क्या करता है?"

"छोटा-मोटा बिजनेसमैन है। मीरा ने बताया था।"

"फिर क्या हुआ?"

"मीरा ने मुझे दो-तीन बार कहा था कि वो नागेश शोरी को छोड़ देगी, मैंने उसे समझाने की चेष्टा की, परतु वो तय कर चुकी थी। उधर नागेश यही सोचता रहा कि मीरा के सम्बन्ध मेरे साथ हैं, मैं ही उसे उकसाता रहता हूं।"

देवराज चौहान और जगमोहन, रतनचंद को देखते रहे।

"जब मीरा ने नागेश से अलग होने की बात, नागेश से कही तो वो हत्थे से उखड़ गया। मीरा के साथ-साथ वो मुझे भी गालियां देने लगा। दो बार नागेश ने मुझे फोन करके कहा कि मैंने उसकी बीवी को भड़का दिया है। वो मुझे छोड़ेगा नहीं। तब भी मैंने उसे ये बात नहीं बताई कि वो शख्स मैं नहीं, रंजन श्रीवास्तव है।"

"तुम्हें बता देना चाहिये था।" जगमोहन बोला।

"ऐसे में वो उसी वक्त रंजन श्रीवास्तव को खत्म करवा देता।"

"अब वो तुम्हें अपराधी मानकर, तुम्हें खत्म करने पर लगा है।"

"मैं नहीं जानता था कि वो ऐसा करेगा मेरे साथ।"

"उसकी निगाहों में अभी भी तुम ही हो, उसकी बीवी को भड़काने वाले—तो वो ऐसा क्यों नहीं करेगा?"

रतनचंद परेशान लग रहा था।

"उसकी बीवी मरी कैसे?"

"मैं नहीं जानता।" रतनचंद की आवाज में व्याकुलता के भाव आ गये—"मीरा और नागेश में लड़ाई चल रही थी। मीरा तलाक लेकर उससे अलग होना चाहती थी। नागेश नहीं चाहता था कि मीरा ऐसा करे। फिर एक दिन मीरा ने अपना सूटकेस तैयार कर लिया। वो घर से जाने को तैयार हो गई थी। ये बात मीरा ने मुझे फोन करके बताई तो मैंने उसे समझाया, लेकिन मेरी बात नहीं सुनी उसने। उसके बाद मीरा से मेरी बात नहीं हुई। परन्तु अगले दिन सुबह खबर मिली कि मीरा अपने घर में मृत पाई गई। उसकी मौत ज्यादा ड्रग्स लेने से हुई।"

"और ये ड्रग्स कैसे ली उसने?"

"जहां तक मेरा ख्याल है, ड्रग्स मीरा ने ली नहीं बल्कि नागेश ने उसे दी होगी। ड्रग्स के माध्यम से नागेश ने ही उसकी हत्या की। परन्तु ये बात साबित कैसे होती? नागेश को अपना बचाव करना आता है। पुलिस में उसकी पहचान है। मुझे इस बात में कोई दिलचस्पी नहीं रही कि मीरा को कैसे मारा गया। मैं मन से मीरा को ही दोषी मानता था। क्योंकि रंजन श्रीवास्तव के चक्कर में पड़कर वो नागेश को छोड़ने जा रही थी। जो कि गलत बात थी। मीरा को ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

"फिर?"

"मीरा की मौत के दो दिन बाद नागेश ने मुझे फोन करके व्यंग भरे स्वर में कहा कि मेरी माशूका मर गई। गलतफहमी थी नागेश को। तब मैंने नागेश को समझाने की चेष्टा की कि मेरी तरफ से ऐसा कुछ नहीं था, परन्तु उसने मेरी एक न सुनी और फोन बंद कर दिया। मैंने उसकी बात की परवाह नहीं की। वक्त बीतता चला गया। अब करीब साल भर बाद नागेश ने मेरी हत्या की सुपाड़ी तुम्हें दे दी। मैं तो कभी सोच भी नहीं सकता था कि नागेश मेरे साथ ऐसी कोई हरकत करेगा।"

"साल भर में तुम्हारे और नागेश के बीच कोई बात नहीं हुई?"

"नहीं। हम दोनों में दोस्ती का रिश्ता खत्म हो चुका था। क्योंकि वो मुझ पर, मीरा को लेकर शक करता था।"

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाई और कुर्सी पर जा बैठा।

रतनचंद गम्भीर दिख रहा था।

जगमोहन चुप रहा।

"तुमने जो बताया है, वो सच है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"पूरी तरह।"

"रंजन श्रीवास्तव का पता जानते हो?"

"हां।" कहकर रतनचंद ने रंजन श्रीवास्तव का पता बता दिया।

"अगर तुम सच बोल रहे हो तो तुम्हें हम नहीं मारेंगे।"

"क्यों—मेरी हत्या के लिये तुमने तीन करोड़—।"

"शोरी ने झूठ बोलकर, तुम्हारी हत्या की सुपाड़ी हमें दी। उसने मनगढ़ंत अखबारों का पुलन्दा हमें दिया, जिसे कि उसने खुद ही तैयार किया था। उसने ये बात भी झूठ कही कि तुम

ड्रग्स का धंधा करते हो। उसकी बीवी किसी और वजह से मरी और इल्जाम तुम पर लगा दिया।" देवराज चौहान ने कहा—"इसलिए सारा मामला तो यहीं खत्म हो जाता है।"

रतनचंद कुछ नहीं बोला।

"शोरी ने हमसे झूठ क्यों बोला?" जगमोहन ने कहा।

"वो ही बतायेगा ये बात, तुम रंजन श्रीवास्तव से मिलकर, बातों की सच्चाई का पता करो।"

"मैं अभी रंजन श्रीवास्तव से मिलकर आता हूं।" जगमोहन ने कहा।

"मैं जा सकता हूं?" रतनचंद बोला।

"अभी नहीं, पहले बातों की सच्चाई तो परख लेने दो। क्या पता झूठे तुम ही हो?" जगमोहन बोला।

"मैंने सच कहा है।"

"पता चल जायेगा।"

"इन बातों का गवाह कोई और भी है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"मेरी पत्नी है।"

"उसकी गवाही नहीं चलेगी, वो तुम्हारे लिये झूठ भी बोल सकती है।" देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा—"तुम रंजन श्रीवास्तव से मिलकर बात करो और इसके हाथ-पांव बांध दो।"

जगमोहन रतनचंद के हाथ-पांव बांधने की तैयारी करने लगा।

"मुझे बांधना जरूरी है?" रतनचंद बोला।

"बहुत जरूरी है।"

"मैं भागूंगा नहीं—मैं—"

"चुप रह। तेरी कोई बात नहीं मानी जायेगी।"

जगमोहन ने उसके हाथ-पांव अच्छी तरह बांधे।

"तुम कब तक मेरी बातों की सच्चाई का पता लगा लोगे?" रतनचंद बोला।

"अगले कुछ घंटों में।"

उसे बांधने के पश्चात देवराज चौहान और जगमोहन बाहर निकले।

धर्मा के पास उस कमरे में पहुंचे, जहां वो बंधा पड़ा था।

रतनचंद रूपी देवराज चौहान को देखते ही धर्मा का चेहरा कठोर हो गया। वो कह उठा—

"बहुत कमीने हो तुम!"

"वो कैसे?"- देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।

"इस तरह धोखे में रखकर, किसी को कैद कर लेना कोई बहादुरी नहीं होती।"

"ये धोखा नहीं था। हमारी खामोश लड़ाई है। तुम लोग अपने पैंतरे चला रहे हो और हम अपने। लड़ाई दो तरह की होती है, हथियारों से या फिर शान्ति से। ये लड़ाई चुप्पी वाली है। इसलिये जो हो रहा है, सब ठीक हो रहा है।"

"एक बार मुझे मौका मिल जाये देवराज चौहान—तब—।"

"तुम्हें इसी में तसल्ली होनी चाहिये कि मैं तुम्हारा अहित नहीं चाहता—सिर्फ कुछ देर के लिये कैद में रखा है।"

"वक्त आने दे, तेरी सारी बातों का जवाब देंगे।" धर्मा ने कड़वे स्वर में कहा।

"जुबान बंद रख।" जगमोहन तीखे स्वर में बोला—"एक लात भी पड़ गई तो फालतू बोलना छोड़ देगा।"

धर्मा ने कहर भरी निगाहों से जगमोहन को घूरा।

"तेरे को तो नहीं छोड़ूंगा मैं।" धर्मा गुरा उठा।

"बहुत ढीठ है। लात खा के ही मानेगा!"

उसके बाद दोनों राघव के कमरे में पहुंचे।

राघव के हाथ-पांव बंधे हुए थे और फर्श पर पड़ा था वो।

जगमोहन के साथ इस तरह रतनचंद को घूमते पाकर राघव चौंका।

"क्या चक्कर है रतनचंद?" राघव कह उठा—"जगमोहन से दोस्ती हो गई?"

"मैं रतनचंद नहीं, देवराज चौहान हूं।"

"देवराज चौहान?" राघव के माथे पर बल पड़े—"क्या कहते हो?"

"ठीक कह रहा हूं मैं।"

"लेकिन तुम रतनचंद—।" राघव ने कहना चाहा।

"मैं तभी रतनचंद बन चुका था, जब काशीनाथ ने खामखाह गोलियां चलाकर तुम लोगों का ध्यान बांटा, रतनचंद

तब गनमैन के रूप में था और मैंने उस पर काबू पाकर, उसकी जगह ले ली और तुम लोगों के साथ बंगले पर पहुंचा।"

"ओह–और हम सोचते रहे कि काशीनाथ ने वहां शोर-शराबा क्यों किया। तुम सच में बहुत चालाक हो।"

"खेल तो खेल ही होता है। जिसका वार चल जाये, उसे चालाक कहा जाता है। जीता हुआ कहा जाता है। मौत के खेल में कोई भी हमेशा चालाक बना नहीं रह सकता। सब कुछ वार चलने पर निर्भर करता है।" देवराज चौहान ने कहा।

"अपना चेहरा दिखाओ।" राघव बोला।

"बाद में दिखाऊंगा, अभी खेल जारी है।"

"एक्स्ट्रा और धर्मा को शक नहीं हुआ तुम पर कि–।"

"नहीं। वो दोनों मुझे रतनचंद ही समझते रहे। अब तुम यहां अकेले नहीं हो, धर्मा भी यहां आ चुका है।"

"धर्मा, यहां?" राघव की आंखें सिकुड़ीं।

"कुछ देर पहले ही उसे यहां लाया हूं। तुम लोग मेरे कामों में अड़चन पैदा कर रहे थे।"

"हम पर काबू पाना हिम्मत का काम है, लेकिन तुम हिम्मत नहीं, चालाकी से काम ले रहे हो। रतनचंद बनकर हमारे बीच रहे, ऐसे में तो कोई भी धोखा खा सकता है। हम भी धोखे में आ गये।" राघव ने गहरी सांस ली।

"एक्स्ट्रा भी जल्दी ही यहां आ जायेगा।" जगमोहन बोला

राघव देवराज चौहान से बोला।

"मुझे ये समझ नहीं आ रहा कि आखिर तुम्हारा मकसद क्या है? तुम रतनचंद को मारना चाहते थे, परन्तु उसे कैद करके रखा हुआ है, आखिर तुम करना क्या चाहते हो?"

"ये जानना चाहता हूं कि हमारे बारे में रतनचंद को खबरें कौन दे रहा था। उसे कैसे हमारे बारे में मालूम हो रहा था। कौन है मेरे आस-पास, जो ये काम कर रहा है।" देवराज चौहान ने कहा।

"केकड़ा–ये काम तो केकड़ा कर–।"

"केकड़ा असल में कौन है, ये तो नहीं मालूम।"

राघव, देवराज चौहान को देखने लगा। बोला–

"आज से पहले हमारी ये हालत कभी नहीं हुई।"

"जिस धंधे में हो, वहां कभी भी कुछ भी हो सकता है।" देवराज चौहान ने कहा और जगमोहन के साथ बाहर आ गया।

राघव कुछ पल तो खुले दरवाजे को देखता रहा–फिर कसमसा कर बंधनों से आजाद होने की चेष्टा करने लगा।

कमरे से बाहर आते ही देवराज चौहान बोला–

"तुम रंजन श्रीवास्तव से मिलकर रतनचंद की बातों की सच्चाई का पता करो।"

तभी देवराज चौहान के पास मौजूद मोबाइल की बेल बजी।

देवराज चौहान ने फोन निकाला। धर्मा वाला फोन बज रहा था।

"हैलो।" देवराज चौहान ने बात की।

"तुम कहां हो धर्मा–फोन भी नहीं किया। सोहनलाल से क्या बात हुई?"

"मैं देवराज चौहान हूं एक्स्ट्रा।"

"देवराज चौहान?" उधर से एक्स्ट्रा का स्वर हैरानी भरा था–"ये फोन तुम्हारे पास कैसे?"

"धर्मा, राघव की तरह मेरी कैद में पहुंच चुका है।"

एक्स्ट्रा की आवाज नहीं आई।

"दोनों मेरे पास सुरक्षित हैं, तुम्हें उनकी चिन्ता करने की जरूरत नहीं। मेरा काम खत्म होते ही उन्हें छोड़ दिया जायेगा।"

"मुझे विश्वास नहीं आता कि धर्मा तुम्हारी कैद में है।" एक्स्ट्रा अजीब से स्वर में कह उठा।

देवराज चौहान ने फोन बंद कर दिया।

❑❑❑

धर्मा के जाने के बाद, एक्स्ट्रा कुछ देर तक अपने कमरे में ही रहा, फिर टहलने के अंदाज में कमरे से निकला और बंगले के बाहर आ गया, जहां गनमैन अपनी जगहों पर मौजूद थे। उसने हर तरफ घूमकर सिक्योरिटी पर तसल्ली भरी निगाह मारी–फिर वापस बंगले में आ गया।

जाने क्या सोचकर उसके कदम, रतनचंद के कमरे की तरफ बढ़ गये।

एक्स्ट्रा रतनचंद के कमरे में पहुंचा।

कमरा खाली था। रतनचंद वहां नहीं दिखा। बैड की चादर

पर एक भी सिलवट नहीं थी। स्पष्ट था कि अभी तक वहां लेटा कोई नहीं था। उसने बाथरूम के दरवाजे पर निगाह मारी। बाथरूम का दरवाजा बंद पाकर वो समझ गया कि रतनचंद बाथरूम में है और वहां पड़ी कुर्सी पर जा बैठा।

एक्स्ट्रा की नज़रें इधर-उधर घूमती रहीं।

रात के नौ बज रहे थे।

बंगले पर चुप्पी का माहौल था।

दो, चार, पांच, सात और दस मिनट बीत गये। उसने बाथरूम के बंद दरवाजे की तरफ देखा, फिर उठकर उस तरफ बढ़ गया। बाथरूम के दरवाजे को थपथपाते हुए बोला—

"रतनचंद, मैं बाहर तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं।"

परन्तु भीतर से कोई आवाज नहीं आई।

दरवाजे का हैंडिल दबाते हुए एक्स्ट्रा ने पल्ला धकेला तो वो खुलता चला गया।

एक्स्ट्रा ने भीतर झांका।

बाथरूम खाली था।

एक्स्ट्रा चौंका। रतनचंद कहां गया?

उसने उसी पल सुन्दर को फोन किया।

"कहां हो तुम?" एक्स्ट्रा ने पूछा।

"अपने कमरे में।"

"रतनचंद कहां है?"

सुन्दर की आवाज न आई।

"मैंने पूछा, रतनचंद कहां है?"

"बाहर गये हैं।"

"बाहर—किधर बाहर?" एक्स्ट्रा का स्वर तेज हो गया।

"बंगले से बाहर। काम था उन्हें और—"

"तुमने बाहर अकेले क्यों जाने दिया और—"

"मैंने रोका था परन्तु...."

"तो हमें कहते।"

"उन्होंने मना कर दिया था कि तुम लोगों को नहीं बताना।"

"अब देवराज चौहान ने रतनचंद को शूट कर दिया तो कौन जिम्मेवार होगा?"

"वो कह रहे थे कि दो घंटे में लौट आऊंगा।"

"बेवकूफ हो तुम।"

सुन्दर की तरफ से आवाज न आई।

"कब गया रतनचंद बाहर?"

"पौन घंटा हो गया। जब धर्मा गया, उससे कुछ पहले।"

"सारा काम खराब कर दिया!" गुस्से में भरे एक्स्ट्रा ने फोन बंद किया और कमरे से बाहर निकल गया।

अपने कमरे में पहुंचा।

गुस्सा अभी भी उसके चेहरे पर सवार था।

नौकर को बुलाकर कॉफी लाने को कहा। कॉफी आ गई तो घूंट भरते हुए गहरी सोचों में डूब गया। उसकी सोचों का केन्द्र देवराज चौहान था कि उसने इस सारे मामले पर क्या-क्या किया?

सब सोचा उसने, परन्तु दो बातों का जवाब उसे नहीं मिल पाया।

एक तो ये कि काशीनाथ से हो-हल्ला करवाकर, उसने उस दिन अपना कौन-सा मतलब निकाला?

दूसरी बात ये कि रतनचंद का मॉस्क बनवाकर, उसने उसका क्या इस्तेमाल किया?

ये दोनों बातें एक्स्ट्रा को परेशान कर रही थीं।

❑❑❑

सोहनलाल ने खाने का थाल बैड पर एक तरफ रखा और जगजीत के बंधन खोलने लगा।

"मैं तेरा कितना ध्यान रख रहा हूं।" सोहनलाल कह उठा—"तेरे को सुबह नाश्ता देता हूं। दोपहर को लंच और रात को डिनर। तेरे को जरा भी भूखा नहीं रहने देता। इतना ख्याल तो तेरी बीवी भी नहीं रखती होगी।"

"मैंने शादी नहीं की।"

"तब तो तेरे को मेरा एहसानमंद होना चाहिये कि मुझे तेरी कितनी चिन्ता है।"

सोहनलाल ने बंधन खोल दिया।

"चल, खा ले खाना।"

"पानी तो ला दे।" जगजीत हाथ-पांवों को सीधा करते बोला।

"खाना शुरू कर। पानी भी आ जायेगा।"

जगजीत खाना खाने बैठ गया।

"तूने बताया नहीं कि कल एक्स्ट्रा और धर्मा तेरे पास क्या करने–"

"बताऊंगा भी नहीं। बार-बार मत पूछ।"

"मेरे को कैद से कब रिहा करेगा?"

"जब देवराज चौहान का आर्डर आयेगा। तेरे को क्या पड़ी रिहा होने की–तेरी सेवा तो पूरी कर रहा हूं।"

जगजीत ने कुछ नहीं कहा। खाना खाता रहा।

"मिर्ची तेज है।"

"अभी पानी लाता हूं।" कहने के साथ ही सोहनलाल बाहर निकल गया।

जगजीत फुर्ती से उठा। उसकी निगाह कमरे में घूमी और छोटी तिपाई को उठाकर, दरवाजे के पास ही पल्ले की ओट में जा खड़ा हुआ। तिपाई को दोनों हाथों से सिर के ऊपर उठा लिया था। इस वक्त वो घबरा भी रहा था और हिम्मत से भी काम ले रहा था। इस कैद से निकलना चाहता था जगजीत, परन्तु उसे मौका नहीं मिल पा रहा था। लड़ाई-झगड़े के कामों से उसका कभी खास वास्ता नहीं पड़ा था, परन्तु जब-जब जरूरत पड़ी तो वो कर लेता था।

तभी कानों में कदमों की आहट पड़ी।

सोहनलाल, पानी का गिलास थामें भीतर आया। खाने का थाल देखा। पास में जगजीत नहीं था। एकाएक सोहनलाल को खतरे का एहसास हुआ–तभी दरवाजे की ओट में खड़े जगजीत ने तिपाई उसके सिर पर दे मारी।

सोहनलाल की आंखों के सामने लाल-पीले तारे नाचे। गिलास उसके हाथ से छूट गया। फिर उसके घुटने मुड़े और वो नीचे गिरता चला गया। उसके बाद वहां शान्ति सी छा गई।

जगजीत ने अभी भी तिपाई थाम रखी थी। वो गहरी-गहरी सांसें ले रहा था।

नज़रें सोहनलाल पर थीं।

जब उसे विश्वास हो गया कि सोहनलाल बेहोश हो चुका है तो उसने तिपाई को नीचे फैंका और सोहनलाल के शरीर को सीधा किया। कई पलों तक सोहनलाल के चेहरे पर नज़रें टिकाये रहा।

"सच में तूने बहुत सेवा की मेरी।" जगजीत बड़बड़ा उठा–

"और तेरी सेवा करके, मैंने हिसाब बराबर कर दिया।" इसके साथ ही जगजीत कमरे से निकला और फिर मुख्यद्वार खोलकर बाहर निकलता चला गया।

❑❑❑

एक्स्ट्रा ने कलाई पर बंधी घड़ी में वक्त देखा। धर्मा को गये काफी देर हो गई थी। अब तक उसका फोन आ जाना चाहिये था कि क्या हुआ–सोहनलाल क्या कहता है। एक्स्ट्रा ने फोन निकाला और धर्मा के नम्बर मिलाये।

पाठकों को याद होगा कि देवराज चौहान ने फोन आने पर, एक्स्ट्रा से बात की थी।

एक्स्ट्रा फोन हाथ में थामें ठगा सा बैठा रह गया।

राघव के बाद धर्मा भी, देवराज चौहान की कैद में जा पहुंचा। हैरत की बात है कि इतनी आसानी से देवराज चौहान ने राघव और धर्मा को कैसे पकड़ लिया? राघव-धर्मा आसानी से किसी के हत्थे चढ़ने वाले नहीं। कहीं तो गड़बड़ है? फिर देवराज चौहान को कैसे पता चला कि धर्मा बाहर जा रहा है? देवराज चौहान चौबीसों घंटे बंगले की निगरानी करने से तो रहा।

आखिर मामला क्या है?

ये सब हो क्या रहा है?

एक्स्ट्रा के चेहरे पर खतरनाक भाव नजर आने लगे। उन लोगों को किसी ने पकड़ कर इस तरह कैदी बनाया हो, ये कभी नहीं हुआ था। पहली बार ये सब हो रहा था उनके साथ–और एक्स्ट्रा ये मानने को तैयार नहीं था कि देवराज चौहान कोई अफलातून है कि हर काम को कर डालता है। वो भी तो इन्सान ही है!

गुस्से में एक्स्ट्रा अपने कमरे से बाहर निकल आया।

तभी सामने से सुन्दर आता दिखा।

"इधर आ।" एक्स्ट्रा बोला।

"सेठ जी को गये काफी वक्त हो गया...।"

"तूने किसको बताया था कि धर्मा बंगले से बाहर जा रहा है?" एक्स्ट्रा ने खा जाने वाले स्वर में पूछा।

"क्यों?"

"मेरी बात का जवाब दे, तूने किसको बताया कि धर्मा बाहर जा रहा है।"

"सेठ जी को।"

एक्स्ट्रा, सुन्दर का चेहरा देखने लगा।

"क्या हुआ?"

"उस दिन राघव के बाहर जाने के बारे में भी, तूने रतनचंद को बताया था, फिर राघव गायब हो गया। बाद में पता चला कि राघव देवराज चौहान की कैद में है।" एक्स्ट्रा ने कहा।

"हां, लेकिन अब धर्मा को भी कुछ हुआ क्या?"

"वो भी देवराज चौहान की कैद में जा पहुंचा है।"

"नहीं!" अनायास ही सुन्दर के होंठों से निकला।

एक्स्ट्रा की निगाहें सुन्दर पर टिकी रहीं।

"रतनचंद भला कैसे गड़बड़....।"

एक्स्ट्रा अपने शब्द पूरे न कर सका—उसके शरीर में जैसे चींटियां सी रेंग उठीं। शरीर के रोयों में सनसनाहट सी महसूस की। सिर से पांव तक एक कम्पन सा उठा। आंखों में हैरानी भरे अजीब से भाव आ गये।

"क्या हुआ?" सुन्दर फौरन बोला।

"क-कुछ नहीं। तू जा। निकल।" एक्स्ट्रा अपने पर काबू पाता कह उठा।

"लेकिन हुआ क्या?"

"कॉफी बना के ला।" कहने के साथ ही एक्स्ट्रा पलटकर अपने कमरे में प्रवेश कर गया।

बिजलियां सी कौंध रही थीं एक्स्ट्रा के मस्तिष्क में।

एक ही विचार उसके मन-मस्तिष्क में आ रहा कि क्या देवराज चौहान ने रतनचंद की जगह ले रखी है? क्या इसी काम के लिये देवराज चौहान ने रतनचंद के चेहरे का मॉस्क बनवाया था?

अगर बनवाया था तो देवराज चौहान ने रतनचंद की जगह कब ली?

आखिर कब...?

अगले ही क्षण एक्स्ट्रा के मस्तिष्क में बिजलियां कौंधने लगीं।

काशीनाथ!

काशीनाथ ने जब शादी वाले घर के बाहर खामखाह का शोर शराबा करके सबका ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया—तब ही देवराज चौहान के लिये मौका था कि रतनचंद के चेहरे

पर मॉस्क लगाकर, उसके रूप में, रतनचंद की जगह पर आ जाये। क्योंकि तब रतनचंद गनमैन बना हुआ था। उस वक्त उस पर हाथ डालना सबसे आसान था—अगर ये मालूम हो कि रतनचंद गनमैन के वेष में है! तो क्या देवराज चौहान को तब मालूम था कि रतनचंद गनमैन के वेष में है?

अब तो यही कहा जा सकता था कि देवराज चौहान को ये बात मालूम थी।

कैसे मालूम हुई ये बात?

इसका मतलब, कोई बंगले की खबरें निकालकर, देवराज चौहान तक पहुंचा रहा होगा। परन्तु अब सवाल ये नहीं था कि कोई खबरें अन्दर-बाहर कर रहा था या नहीं—सवाल ये था कि इस वक्त देवराज चौहान रतनचंद बना हुआ, उन्हीं की बगल में मौजूद है और एक-एक करके राघव और धर्मा को अपनी कैद में ले जा फंसाया।

एक्स्ट्रा का चेहरा दरिन्दगी से भर उठा।

"हरामजादा!" एक्स्ट्रा दांत भींचकर बड़बड़ा उठा—"हमसे पंगा! ऐसी की तैसी साले देवराज चौहान की!"

तभी उसका फोन बजा।

एक्स्ट्रा ने स्क्रीन पर आया नम्बर देखा। उसके लिये अंजान नम्बर था वो।

"हैलो!" एक्स्ट्रा ने बात की। वो अभी भी उत्तेजना में था।

"एक्स्ट्रा!" जगजीत की आवाज कानों में पड़ी।

"जगजीत।" एक्स्ट्रा चौंका।

"हां। मैं....।"

"तू...तो देवराज चौहान की कैद में था?"

"हां, कुछ देर पहले ही कैद से भागने में सफल हुआ हूं। जानता है मैं कहां कैद था?"

"कहां?"

"सोहनलाल के फ्लैट पर—पीछे वाले कमरे में।"

एक्स्ट्रा चिहुंक उठा।

"वहां तो कल मैं और धर्मा गये थे..."

"पता है। तब मैं पीछे वाले कमरे में बंधा पड़ा था। मुंह में कपड़ा ठुंसा हुआ था।"

"साला—कुत्ता!"
"क्या?"
"तेरे को नहीं कहा, देवराज चौहान को कहा।"
"उसी के बारे में तेरे को बताने के लिये फोन—"
"तूने उसको रतनचंद के चेहरे का मॉस्क बनाकर दिया?"
"देना पड़ा, सिर पर रिवाल्वर लगा रखी थी—मैंने तेरे को ये बताने के लिये फोन किया है कि तुम लोगों के पास जो रतनचंद है, वो नकली हो सकता है, उसकी जगह देवराज चौहान नें ली हो सकती है।"
एक्स्ट्रा हंसा—अजीब-सी हंसी।
"क्या हुआ?"
"अगर ये बात तूने कुछ घंटे पहले बता दी होती तो बात कुछ और ही होती।"
"अब क्या हुआ?"
"अभी-अभी मैं भी इसी नतीजे पर पहुंचा हूं, जो तूने बताया। मेरी बगल में रतनचंद के रूप में बैठा देवराज चौहान एक-एक करके राघव और धर्मा को अपनी कैद में ले गया।"
"ओह!"
"अब साले को मैं नक्शा दिखाऊंगा।"
"मैं आऊं क्या?"
"तू क्या करेगा आकर—ये मामले तेरे बस के नहीं हैं।"
"लगता है देवराज चौहान ने नचा दिया, तुम लोगों को!"
"अब देवराज चौहान नाचेगा। तू बेशक अपने फ्लैट पर जाकर आराम कर। अब देवराज चौहान को मैं इतना मौका नहीं देने वाला कि वो इधर-उधर देख सके।" कहने के साथ ही एक्स्ट्रा ने फोन बंद किया। उसके चेहरे पर रह-रह कर जहरीले भाव चमक मारने लगते। मस्तिष्क में एक ही नाम था, देवराज चौहान!
तभी सुन्दर ने भीतर प्रवेश किया और कॉफी का प्याला टेबल पर रखते बोला—
"कम पिया करो। कॉफी सेहत के लिये अच्छी नहीं होती।"
"बैठ—तेरे से बात करनी है।"
सुन्दर ने एक्स्ट्रा के चेहरे को देखा और बैठ गया।

"क्या हुआ?" उसके चेहरे के भाव देखकर सुन्दर कह उठा—"सब ठीक तो है?"
"हमने तेरे पे शक किया कि तू ही है जो खबरें बाहर भेज रहा है। हम गलत थे।" एक्स्ट्रा मुस्करा पड़ा।
"अब शक नहीं है?"
"नहीं।"
"क्यों?"
"क्योंकि खबरें बाहर करने वाला रतनचंद है, वो—"
"ये कैसे हो सकता है?" सुन्दर के माथे पर बल पड़ गये—"सेठ जी, क्यों....।"
"जिसे तू रतनचंद समझ रहा है, वो रतनचंद नहीं, देवराज चौहान है।" एक्स्ट्रा ने कड़वे स्वर में कहा।
सुन्दर की आंखें फैल गईं।
"ये नहीं हो सकता।"
"ये ही हुआ पड़ा है। देवराज चौहान ने हमें तगड़ा गच्चा दिया।" एक्स्ट्रा खुंदक भरे स्वर में बोला—"वो हमारे बीच रहता रहा, परन्तु हमें पता न चला। राघव, जब जगजीत से मिलने गया तो, देवराज चौहान ने वहां अपने बंदे भेज दिए कि राघव को पकड़कर कैद में डाला जा सके। धर्मा जब बाहर निकला तो देवराज चौहान पहले ही बाहर जा खड़ा हुआ और उसके रतनचंद होने की वजह से धर्मा गच्चा खा गया और फंस गया।"
"लेकिन देवराज चौहान ऐसा कैसे कर पायेगा? सेठ जी की जगह कैसे ली होगी?"
"रतनचंद के चेहरे वाला, फेस मॉस्क तो देवराज चौहान ने बनवा लिया था। उस दिन जब हम रतनचंद के साथ, उसके साले की शादी पर गये, रतनचंद गनमैन बना हमारे साथ मौजूद था, तो वहां काशीनाथ ने हो-हल्ला मचाया।"
सुन्दर ने सिर हिलाया।
"उसी हो-हल्ले में देवराज चौहान ने रतनचंद पर हाथ डाला, वो जानता था कि रतनचंद गनमैन बना हुआ है। मैं नहीं जानता कि ये खबर देवराज चौहान तक कैसे पहुंची। बहरहाल वो ही वक्त था, जब देवराज चौहान ने रतनचंद की जगह ले ली और रतनचंद को अपनी कैद में कर लिया। मुझे याद है, तब मैं रतनचंद के पास गया था और

उसके चेहरे पर लगी दाढ़ी को मैंने ही ठीक किया था, जो कि एक तरफ से हटकर लटक रही थी। तब मुझे क्या मालूम था कि मैं रतनचंद की नहीं, देवराज चौहान की दाढ़ी ठीक कर रहा हूं।"

"ये सब बातें मेरी समझ से तो बाहर हैं।" सुन्दर परेशान सा कह उठा—"क्या देवराज चौहान सच में....।"

"हां-हां सच में। अभी वो आयेगा तो देख लेना।" एक्स्ट्रा कहर भरे स्वर में बोला।

सुन्दर, एक्स्ट्रा को देखता रहा।

"इतना बड़ा धोखा....।"

"तो राघव के बाद धर्मा भी देवराज चौहान के फंदे में फंस गया?" सुन्दर ने कहा।

"हां। लेकिन अब देवराज चौहान नहीं बचेगा।"

"अगर सेठ जी वास्तव में, सेठ जी हुए, देवराज चौहान न हुआ तो?"

"वो देवराज चौहान ही है, आने दे उसे।" एक्स्ट्रा दांत भींचकर कह उठा।

❑❑❑

जगमोहन अच्छी कालोनी के एक मकान के सामने पहुंचा। कार रोकी। उतरा और मकान का नम्बर देखा। ये ही रंजन श्रीवास्तव का मकान था। रात के ग्यारह बज रहे थे।

जगमोहन ने कॉलबेल बजाई।

जल्दी ही दरवाजा खुला। दरवाजा खोलने वाला बीस बरस का नेपाली नौकर था।

"कहिये?" नेपाली बोला।

"रंजन श्रीवास्तव से मिलना है।" जगमोहन ने कहा।

"भीतर आ जाइये।"

जगमोहन मकान के भीतर छोटे से ड्राइंग रूम में पहुंचा। साफ-सफाई वाला घर था।

जगमोहन बैठा तो उसी पल पैंतालीस-सैंतालिस बरस के व्यक्ति ने वहां कदम रखा, उसने नाईट गाउन पहन रखा था और आंखों से स्पष्ट लग रहा था कि उसने पैग लगा रखे हों।

"कहिये!" वो आगे बढ़ कर जगमोहन से हाथ मिलाता बोला—"मैंने आपको पहले कभी देखा नहीं।"

"आप ही रंजन श्रीवास्तव हैं?"

"जी हां।" उसने सिर हिलाया। वो सामने ही बैठ गया।

"मैं प्राईवेट जासूस जगमोहन हूं और मीरा के बारे में आपसे बात करना चाहता हूं।"

"मीरा?" रंजन श्रीवास्तव चौंका।

"नागेश शोरी की बीवी।"

रंजन श्रीवास्तव ने बेचैनी से पहलू बदला।

"मीरा से वास्ता रखता क्या केस है आपके पास?"

"खास नहीं, नागेश शोरी ने मुझे ये पता कराने को कहा है कि मौत से पहले मीरा के सम्बन्ध किस-किस से थे?"

"ओह!"

"मैं सबसे मिल रहा हूं, रतनचंद से भी मिला और अब आपके पास आया हूं।"

"नागेश शोरी मेरे बारे में जानता है कि....।" कहते-कहते वो ठिठका।

"कहिये—क्या कह रहे थे आप?"

"आप कहिये—मेरे से क्या पूछने आये हैं आप?"

"मीरा के सम्बन्ध आपके साथ थे?"

"हां। हम एक-दूसरे को प्यार करते थे।"

"ये जानते हुए भी कि वो नागेश शोरी की पत्नी है?"

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वो औरत थी और मैं मर्द था।" रंजन श्रीवास्तव ने कहा।

"आपकी शादी हुई?"

"नहीं, मैंने मीरा से ही शादी करने का प्रोग्राम बना लिया था। वो न मरती तो आज मेरी बीवी होती।"

"नागेश शोरी, तुम्हें मीरा से शादी करने देता?"

"मैं नहीं जानता।" उसने बेचैनी से कहा।

"जानते हो वो कैसे मरी?"

"ये बात क्यों पूछ रहे?"

"मैं जानना चाहता हूं कि तुम्हें उसकी मौत का असली कारण पता है कि नहीं?"

"पता है।"

"कैसे मरी?"

"नागेश शोरी ने मीरा को जबर्दस्ती ड्रग्स की ओवरडोज़ दे दी, जिससे उसकी मौत हो गई।"

"कैसे जाना?"

"ये बातें छिपी नहीं रहतीं। मैंने तब पता किया था और पता चल गया।"

"तुम्हें नागेश शोरी ने, जानते हो, क्यों कुछ नहीं कहा?"

"क्यों?"

"क्योंकि वो अभी तुम्हारे बारे में जानता नहीं है। उसे नहीं पता चला कि, वो तुम्हारे लिये उसे छोड़ रही थी।"

"अब ये बात तुम उसे बताओगे?"

"मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं।"

रंजन श्रीवास्तव अब व्याकुल नज़र आने लगा था।

"अब एक बात का जवाब दो।"

"क्या?"

"मीरा के रतनचंद के साथ भी सम्बन्ध थे?"

"नहीं।"

"लेकिन मुझे कुछ ऐसे सबूत मिले हैं कि मीरा का खास वास्ता रतनचंद से था।"

"वो सबूत झूठे हैं।" रंजन श्रीवास्तव ने सख्त स्वर में कहा—"दोनों में पवित्र रिश्ता था।"

"मुझे ऐसा नहीं लगता।"

"तो फिर तुम्हें अपना काम करना नहीं आता।" रंजन श्रीवास्तव ने गुस्से से कहा—"मीरा मुझे सब बताती रहती थी कि नागेश शोरी सोचता है कि उसका सम्बन्ध रतनचंद के साथ है। वो रतनचंद का नाम लेकर उसे ताने देता रहता है। परन्तु हकीकत में मीरा का रिश्ता मेरे साथ था। रतनचंद तो उसके भाई जैसा था।"

"पक्का?"

"हां। ये बात मुझसे ज्यादा कोई दूसरा नहीं जान सकता।" रंजन श्रीवास्तव ने दृढ़ स्वर में कहा।

"नागेश शोरी और रतनचंद में से ड्रग्स का धंधा कौन करता है?"

"नागेश शोरी।"

"तुम्हें कैसे पता?"

"मीरा बताया करती थी। नागेश शोरी की पूरी तस्वीर मेरे सामने है। वो परेशान थी शोरी की हरकतों से। उसे अपना पति शोरी अच्छा लगना बन्द हो चुका था, क्योंकि वो उससे क्रूरता वाला व्यवहार करता था। महीने में पच्चीस दिन वो बाहर रहता था। इस दौरान मीरा को पता चला कि शोरी के किसी और के साथ भी रिश्ते हैं।"

"वो तो मीरा के तुम्हारे साथ भी रिश्ते थे।" ज़गमोहन बोला।

"हां। मेरे साथ रिश्ते थे। मजबूरी में मीरा ने मुझे चुना। क्योंकि ड्रग्स का धंधा, मीरा को अच्छा नहीं लगता था। वो कब से कह रही थी शोरी से कि ये धंधा छोड़ दे, परन्तु शोरी को ये धंधा छोड़ना गंवारा न था। जब से नागेश शोरी ने ड्रग्स का धंधा शुरू किया था, तब से शोरी में कड़वाहट ज्यादा आ गई थी। वो बात-बात पर मीरा को डांटता और हाथ भी उठा देता था। एक बार तो उसने मीरा को चार दिन कमरे में बंद रखा, क्योंकि उसने शोरी से अलग होने को कह दिया था। तुम शोरी के लिये काम कर रहे हो, तो उसके खिलाफ बात क्यों सुनोगे!"

"ऐसी बात नहीं। मैं प्राईवेट जासूस हुआ तो क्या हुआ, मुझे मामले की तह तक भी पहुंचना है। अगर शोरी की गलती है तो मैं उसे अवश्य कहूंगा कि वो गलत है। तुम्हारे पास मीरा के साथ खींची तस्वीरें होंगी?"

"क्यों?"

"मैं जानना चाहता हूं कि क्या सच में तुम ठीक कह रहे हो कि मीरा के साथ तुम्हारा रिश्ता था।"

"मुझे नहीं समझ आता कि आखिर तुम चाहते क्या हो!" रंजन श्रीवास्तव उठते हुए बोला—"फिर भी तुम्हें तस्वीरें दिखा देता हूं।" कहने के साथ ही वो कमरे से बाहर निकल गया।

जल्दी ही वो कमरे में लौटा।

उसके हाथ में छोटा सा बक्सा था, जिसे कि उसने टेबल पर रखा और खोल दिया। भीतर तस्वीरों का ढेर लगा हुआ था। ज़गमोहन ने तस्वीरें उठाकर देखीं।

तस्वीरों के साथ बैठा शख्स एक औरत के साथ था। औरत तीस-पैंतीस से ज्यादा की न लग रही थी। वो खूबसूरत थी।

जगमोहन ने कई तस्वीरें देखीं। विभिन्न मुद्रा में दोनों की ढेरों तस्वीरें थीं।

जगमोहन ने चुपके से एक तस्वीर जेब में डाल ली।

बक्सा बंद किया और उठते हुए बोला—

"अब मैं चलूंगा।"

"तुम शोरी को मेरे बारे में बताओगे?"

"नहीं।"

"तो फिर तुमने एक तस्वीर क्यों अपने पास रख ली?"

जगमोहन ने गहरी सांस ली और बोला—

"दरअसल, मैंने मीरा को कभी देखा नहीं है। उसकी तस्वीर देखना भी याद नहीं रहा। क्या पता तुम किसी और की तस्वीर दिखा कर मुझे बेवकूफ बना रहे हो, इसलिए मैं किसी से पता करूंगा कि ये तस्वीर मीरा की ही है।"

"किससे पता करोगे?"

"रतनचंद से।"

"तुम्हारा मकसद मैं ठीक से समझ नहीं पाया कि तुम मेरे पास क्यों आये हो। फिर भी तुम तस्वीर ले जा सकते हो। अब इस मामले में कुछ भी नहीं रहा। तुम नागेश को मेरे बारे में न ही बताओ तो ठीक रहेगा। वो ठीक बंदा नहीं है। मेरे को मरवा देगा। खामखाह ही मेरी जान खतरे में पड़ जायेगी।"

"इतना ही डर था तो मीरा पर हाथ नहीं डालना था।"

"जब तक मीरा जिंदा थी, मुझे कोई डर नहीं था। उसकी मौत के बाद, मेरे सामने ऐसा कुछ नहीं है कि मैं किसी से झगड़ा करूं।"

"निश्चिंत रहो। मेरी वजह से तुम्हारा नाम शोरी तक नहीं पहुंचेगा।"

रंजन श्रीवास्तव ने सिर हिला दिया।

जगमोहन बाहर निकला और देवराज चौहान को फोन किया। फौरन ही बात हो गई।

"तुम कहां हो?" जगमोहन ने पूछा।

"रास्ते में, रतनचंद के बंगले पर जा रहा हूं—बात हुई रंजन श्रीवास्तव से?" उधर से देवराज चौहान ने पूछा। जगमोहन ने सारी बातचीत बताकर कहा—

"उसकी बातों से तो लगता है कि रतनचंद ठीक कहता है।"

"इसका मतलब शोरी ने हमसे झूठ बोला कि रतनचंद ड्रग्स का काम करता है और उसकी वजह से उसकी पत्नी मरी।"

"लगता तो ऐसा ही है।"

"तुम बंगले पर पहुंचो और राघव, धर्मा और रतनचंद का ध्यान रखो—अब हमें जल्दी ही शोरी से मिलना पड़ेगा।"

"शोरी ने हमें झूठ के जाल में फंसाकर काम के लिये तैयार क्यों किया?" जगमोहन बोला।

"शोरी बतायेगा ये बात।"

"केकड़ा के बारे में पता चला?"

"उससे बात करके, कभी-कभार उसकी आवाज मुझे पहचानी-सुनी सी लगी थी। वो आवाज बदलकर और फोन पर कपड़ा रखकर बोल रहा था, ताकि उसकी आवाज को पहचान न लूं।"

"लेकिन तब तो वो यही सोच रहा होगा कि, वो रतनचंद से बात कर रहा है। इसका मतलब, रतनचंद उसे पहचानता होगा, तभी वो आवाज बदलकर, बोलने की कोशिश कर रहा होगा।"

"सही कहा तुमने।"

"तो केकड़ा, रतनचंद की पहचान का है।"

"हां। लेकिन वो जो भी है, जल्दी सामने आयेगा।" कहने के साथ ही उधर से, देवराज चौहान ने फोन बंद कर दिया था। जगमोहन कार में बैठा और कार आगे बढ़ा दी।

बंगले पर पहुंचा जगमोहन।

कार पोर्च में खड़ी की।

मुख्यद्वार खुला पड़ा था। जगमोहन को ये बात अजीब सी लगी। देवराज चौहान को जाते वक्त दरवाजा बंद करके जाना चाहिये थे। शायद वो दरवाजा खुला छोड़ेगा भी नहीं।

फिर दरवाजा कैसे खुला है?

जगमोहन भीतर प्रवेश करता चला गया।

चुप्पी सी छाई हुई थी बंगले में। जगमोहन उस कमरे में पहुंचा, जहां राघव को बांध कर रखा गया था। कमरे में प्रवेश करते ही जगमोहन हक्का-बक्का रह गया।

राघव वहां नहीं था। वो नाईलोन की रस्सी अवश्य फर्श पर पड़ी थी। जगमोहन फौरन उस कमरे में पहुंचा जहां धर्मा था। वहां अब धर्मा नहीं था। नाईलोन की डोरी फर्श पर पड़ी मिली।

तीसरे कमरे में देखा, रतनचंद भी वहां नहीं था।

जगमोहन की हालत देखने वाली थी। उसने रिवाल्वर निकाली और पूरा बंगला छान मारा।

तीनों में से कोई भी न दिखा।

अब वो समझा कि मुख्यद्वार क्यों खुला हुआ है।

राघव धर्मा और रतनचंद वहां से निकल भागे थे। किसी एक ने अपने बंधनों से आजादी पा ली होगी और उसने बाकी दोनों के बंधन खोले और भाग लिए तीनों।

जगमोहन के मस्तिष्क में धमाके हो रहे थे।

उसे विश्वास न आ रहा था कि वो तीनों भाग निकले हैं।

अगले ही पल जगमोहन के शरीर में ठण्डी सिरहन दौड़ती चली गई।

देवराज चौहान खतरे में है।

वो तीनों बंगले पर पहुंचेंगे। वहां देवराज चौहान होगा—यानि कि देवराज चौहान फंसा।

जगमोहन उसी पल फोन निकालकर देवराज चौहान को फोन करने लगा।

उसकी निगाह बंगले में घूम रही थी।

रिवाल्वर उसने जेब में रख ली थी।

दूसरी तरफ बेल होने लगी। जगमोहन की व्याकुलता उसके चेहरे पर गहरी होती जा रही थी। वो चाहता था कि देवराज चौहान से जल्दी से बात हो जाये और बात हो गई। देवराज चौहान की आवाज कानों में पड़ी।

❑❑❑

देवराज चौहान कार को बंगले में ले जाता चला गया।

पोर्च में कार रोकी और उतरकर भीतर की तरफ बढ़ गया। चेहरे पर किसी तरह का भाव नहीं था। रात के बारह बजने वाले थे। देवराज चौहान सीधा रतनचंद के कमरे में पहुंचा और हाथ-मुंह धोकर कपड़े बदलने लगा।

तभी सुन्दर वहां पहुंचा।

"आ गये सर।" सुन्दर ने कहा।

देवराज चौहान ने सुन्दर को देखा और सिर हिलाने के बाद अपने काम में व्यस्त हो गया।

देवराज चौहान न समझ पाया कि सुन्दर परखने वाली निगाहों से उसे देख रहा है।

"ऐसा क्या काम पड़ गया था आपको कि इन हालातों में आपको अकेले बाहर जाना पड़ा?"

"था कोई काम।" देवराज चौहान के होंठों से रतनचंद जैसी आवाज निकली।

"खाना लगा दूं?"

"भूख नहीं है। कॉफी ला दो। उसके बाद मैं नींद लूंगा।"

सुन्दर बाहर निकल गया।

सुन्दर सीधा एक्स्ट्रा के कमरे में पहुंचा।

कुर्सी पर बैठे एक्स्ट्रा ने अपना कठोर हुआ चेहरा उठाकर उसे देखा।

"सेठ जी आ गये हैं।"

एक्स्ट्रा के दांत भिंच गये।

"मेरी बात सुनो।" सुन्दर ने गम्भीर स्वर में कहा—"जल्दबाजी मत करो।"

"क्या मतलब?"

"मैंने सेठ जी को ध्यानपूर्वक देखा है, मुझे तो वो सेठ जी ही लगे।"

एक्स्ट्रा के चेहरे पर कड़वे भाव फैल गये।

"जल्दबाजी में कोई काम गलत मत कर देना, मुझे नहीं लगता कि वो देवराज चौहान है।"

"वो देवराज चौहान ही है।" एक्स्ट्रा गुर्रा उठा।

"मुझे तो नहीं लगता।"

"देखता रह।" एक्स्ट्रा गुर्राया—"तू बीच में दखल मत देना, वरना तेरे दांत तोड़ दूंगा।"

"अगर तुमने कोई ज्यादती की तो मैं दखल दूंगा। मैं तुम्हारी नहीं—सेठ जी की नौकरी करता हूं।"

"वो रतनचंद नहीं, देवराज चौहान है।"

"ये बात अभी साबित नहीं हुई।"

एक्स्ट्रा ने रिवाल्वर निकाली और दांत किटकिटाकर कह उठा—

"अभी साबित हो जायेगी। अगर तूने मेरे काम में दखल दिया तो, तेरे को गोली मार दूंगा।"

"तैश में न आ, यहां तुम अकेले हो और बाहर मौजूद दसियों गनमैन मेरे हैं।" सुन्दर ने गम्भीर स्वर में कहा।

"दखल मत देना मेरे काम में।" एक्स्ट्रा ने कहा और रिवाल्वर थामें बाहर निकलता चला गया।

सुन्दर फुर्ती से उसके पीछे चल पड़ा।

देवराज चौहान तब बैड पर, तकिये से टेक लगाये बैठा था, जब एक्स्ट्रा ने भीतर प्रवेश किया।

एक्स्ट्रा के पीछे सुन्दर भी भीतर आ गया।

देवराज चौहान की निगाह एक्स्ट्रा के हाथ में दबे रिवाल्वर पर पड़ी तो उसकी आँखें सिकुड़ीं।

"क्या बात है?" देवराज चौहान कह उठा।

एक्स्ट्रा का चेहरा तप रहा था।

देवराज चौहान को महसूस हो चुका था कि कोई बात तो है ही।

सुन्दर सतर्क दिख रहा था।

"मैं सोच भी नहीं सकता था कि रतनचंद की आड़ में देवराज चौहान मेरी बगल में बैठा होगा..."

देवराज चौहान के होंठ सिकुड़े।

"तूने नहीं सोचा होगा कि तेरा भेद खुल जायेगा।" एक्स्ट्रा ने दांत भींचकर कहा।

"भेद—।" देवराज चौहान ने खुद को संभाला—अपना चेहरा सामान्य रखा—"किस भेद की बात कर रहे हो? तुम मुझे देवराज चौहान कह रहे हो? क्या मैं रतनचंद नहीं हूं?"

"नहीं, तुम देवराज चौहान हो।" खतरनाक स्वर में कहते हुए एक्स्ट्रा मुस्करा पड़ा—"इसमें कोई शक नहीं कि तुमने शानदार प्लानिंग का इस्तेमाल किया। हम सोच भी नहीं सकते थे कि तुम ऐसा कर गुजरोगे। जगजीत से रतनचंद का चेहरा बनवा लिया और काशीनाथ से हो-हल्ला करा कर हमारा ध्यान बांटा और गनमैन बने रतनचंद को गायब करके उसकी जगह ले ली। हम

सोच भी नहीं सकते थे कि ऐसा कुछ तुम कर सकोगे। हम बहुत बड़ा धोखा खा गये।"

"मुझे नहीं समझ आ रहा कि तुम क्या कहे जा रहे—"

"तुम ही थे देवराज चौहान जो यहां की खबरें बाहर करते रहे। राघव जब जगजीत से मिलने गया तो सुन्दर जानता था ये बात, सुन्दर ने तुम्हें बताया कि राघव कहां जा रहा है तो तुमने फोन करके अपने आदमियों को खबर दे दी, लेकिन धर्मा को तो तूने ही गायब किया। जब वो बंगले से बाहर निकला, रास्ते में तुम उसे मिले, चूंकि तुम रतनचंद बने हुए हो, तो वो धोखा खा गया।"

"कह लिया?" देवराज चौहान मुस्कुराया।

"बहुत कुछ है मेरे पास कहने को—।"

"मैं रतनचंद हूं, ये बात अच्छी तरह जान लो।"

"अभी तुम कबूल करोगे कि तुम देवराज चौहान हो।"

"मैं कबूल करूंगा?" देवराज चौहान बराबर मुस्कुरा रहा था।

"हां।"

"कराओ मुझसे कबूल—।"

"जगजीत सोहनलाल की कैद से कुछ देर पहले भाग निकला है। उसका फोन आया था।"

देवराज चौहान उसे देखने लगा।

एक्स्ट्रा ने हाथ में पकड़ी रिवॉल्वर का रुख, देवराज चौहान की तरफ कर दिया।

"तो—जगजीत और सोहनलाल का मुझसे क्या सम्बन्ध?" देवराज चौहान बोला।

"कोई सम्बन्ध नहीं?"

"नहीं, तुम खामखाह ही मुझ पर शक—।"

"सुन्दर!" एक्स्ट्रा की आवाज में गुर्राहट आ गई—"इसने चेहरे पर रतनचंद के चेहरे वाला फेसमॉस्क पहन रखा है, वो उतार—।"

"मैं उतारूं?"

"हां।"

"मैं रिवॉल्वर संभाल लेता हूं—तू मास्क उतार—।" सुन्दर बोला।

"नहीं—रिवॉल्वर मेरे पास ही रहेगी— ।"
"क्यों?"
"वक्त आने पर तू गोली चलाने पर हिचक जायेगा, क्योंकि सामने रतनचंद का चेहरा है और मैं— ।"
"अभी ये बात स्पष्ट नहीं हुई कि हमारे सामने सेठ जी नहीं हैं, देवराज चौहान है।"
"वो ही तो स्पष्ट करने जा रहा हूं।" एक्स्ट्रा ने भिंचे स्वर में कहा—और सिग्रेट निकाल कर सुलगाने लगा।
एक्स्ट्रा ने सुन्दर को इशारा किया।
उलझन में फंसा सुन्दर आगे बढ़ा।
"वहीं रुक जाओ।" देवराज चौहान ने कश लेते हुए कहा।
सुन्दर ठिठका।
अगले ही पल देवराज चौहान ने अपने चेहरे पर लगा रखा, रतनचंद के चेहरे वाला फेस मॉस्क हटा दिया।
अब सामने देवराज चौहान था।
एक्स्ट्रा के दांत भिंच गये।
"तो तुम हो डकैती मास्टर देवराज चौहान।"
"हां—मैं हूं देवराज चौहान।"
"तुमने हमारे मामले में दखल देकर अच्छा नहीं किया।"
"तुम लोगों ने दखल दिया है मेरे मामले में, मैंने नहीं।"
"अब इन बातों का वक्त निकल चुका है। सुन्दर...।"
सुन्दर ने गहरी सांस ली।
"इसके हाथ-पांव बांधकर किसी कमरे में डाल दे।" एक्स्ट्रा ने कड़वे स्वर में कहा।
"राघव और धर्मा मेरे कब्जे में हैं।" देवराज चौहान ने कहा—"तुम मेरे साथ बुरा नहीं कर सकते।"
"तुम मेरे कब्जे में हो—अब मुझे उन दोनों की चिन्ता नहीं। वे मुझे वापस मिल जायेंगे। दोनों मुझे मिलेंगे तो तुम्हें छोड़ा जायेगा।"
देवराज चौहान मुस्कुराया
"सुन्दर, हाथ-पांव बांध इसके।"
सुन्दर ने पर्दे की नायलोन की डोरी निकाली और देवराज चौहान के हाथ पीछे करके बांधने लगा।
एक्स्ट्रा ने सावधानी से उस पर निवॉल्वर तान रखी थी।

सुन्दर ने मजबूती से देवराज चौहान के हाथ बांधे।
एक्स्ट्रा ने आगे बढ़कर बंधनों को चैक किया, फिर तसल्ली से सिर हिलाकर रिवॉल्वर जेब में रखते हुए बोला—
"अब बोलो, किसने तुम्हें तीन करोड़ दिए, रतनचंद को मारने के लिये?"
"ये बात रतनचंद से पूछना।"
"रतनचंद से?"
"हां, उससे बात करके आ रहा हूं, उसे ये बात मैं बता चुका हूं।" देवराज चौहान ने कहा।
एक्स्ट्रा ने उसे सिर से पांव तक गहरी निगाहों से देखा और व्यंग से कह उठा—
"तो डकैती मास्टर देवराज चौहान हो तुम!"
जवाब में उसे देखता देवराज चौहान मुस्कुरा कर रह गया।
"डंका बजता है तुम्हारे नाम का अण्डरवर्ल्ड में। नाम भी बहुत सुना था तुम्हारा। वैसे काम भी तुमने हिम्मत का किया है—कि जो हमारे बीच रतनचंद बनकर आ बैठे। तुम्हें डर नहीं लगा कि तुम्हारा भेद खुल सकता है, हमें कभी भी मालूम हो सकता है कि तुम रतनचंद नहीं?"
"मैं डर को नहीं जानता। मेरे जीवन में डर नाम की कोई चीज नहीं।"
"पक्का।" एक्स्ट्रा ने व्यंग्य से कहा।
देवराज चौहान देखता रहा।
"अगर मैं रिवॉल्वर तुम्हारे सिर से लगाकर ट्रेगर दबा दूं— ।"
"तुम ऐसा कुछ भी नहीं करने वाले। अगर तुम्हारा इरादा ऐसा कुछ करने का होता तो मुझे मालूम होता।"
एक्स्ट्रा ने देवराज चौहान को घूरा।
"तुम्हारा मतलब कि मैं तुम्हें गोली नहीं मारूंगा?"
"नहीं।"
"क्यों नहीं मारूंगा?"
"क्योंकि तुम्हें राघव और धर्मा चाहिये। मुझे गोली मार दी तो, वो तुम्हें जिन्दा कैसे मिलेंगे?"
"वो भी जिन्दा मिल सकते हैं।" एक्स्ट्रा गुर्राया।
"कैसे?"

"मैं अब तुम्हारा मुंह खुलवाऊंगा कि राघव और धर्मा को तुमने कहां रखा है, तुम बताओगे, फिर मैं राघव और धर्मा को वहां से आजाद करा दूंगा और आकर तुम्हें गोली मार दूंगा।" एक्स्ट्रा ने गुस्से से कहा।

"तुम्हारे बस का कुछ नहीं है।"

"बकवास मत करो। दिल तो करता है कि अभी तुम्हारी जुबान काट लूं–।"

"अपने दिल की बात पूरी क्यों नहीं करते?"

"जुबान कट गई तो तुम राघव और धर्मा का पता-ठिकाना कैसे बताओगे। सुन्दर–इस साले को कुर्सी पर बांध दे। चाकू और नमक-मिर्च ले आ। मैं इसके शरीर के साथ तब तक खेलता रहूंगा, जब तक कि ये राघव और धर्मा के बारे में नहीं बताता।"

सुन्दर खड़ा रहा।

एक्स्ट्रा ने सुन्दर को देखा।

"जो कहा है वो कर–।"

"नहीं।" सुन्दर बोला।

"क्यों?"

"सेठ जी भी इसकी कैद में हैं। मुझे उनके बारे में इससे पूछना....।"

"रतनचंद याद है मुझे। भूला नहीं हूं।" एक्स्ट्रा ने तीखे स्वर में कहा–"राघव-धर्मा के साथ रतनचंद भी है।"

"इसे यातना देने की जरूरत नहीं पड़ेगी। मुझे बात करने दो।"

"तू बात करेगा?"

"मैं बात क्यों नहीं कर सकता?" सुन्दर ने उसे देखा।

"बात तो मैं भी कर सकता हूं।" एक्स्ट्रा ने कहा–"लेकिन पहले मैं देवराज चौहान की हैकड़ी तोड़ना चाहता हूं। यातना के दौरान ये अपने मुंह से कहेगा कि बस करो। मुझे छोड़ दो। साला कहता है कि मैं किसी से डरता नहीं–।"

"ये कुछ भी कहे, तुझे क्या–तू क्यों इसे डरा देखना चाहता है?" सुन्दर उखड़ा।

"बहुत लम्बी-लम्बी बातें बोल रहा है।" एक्स्ट्रा ने सुन्दर को घूरा।

सुन्दर की निगाह देवराज चौहान पर गई।

देवराज चौहान मुस्कुराता हुआ दोनों को देख रहा था।

"सेठ जी कहां हैं?" सुन्दर ने गम्भीर स्वर में पूछा।

"उसकी फिक्र मत करो। रतनचंद सही-सलामत वापस मिल जायेगा।" देवराज चौहान बोला।

"कब?"

"ये मामला थोड़ा सा बचा है। उसके निपटते–।"

"क्या बचा है मामला?"

"ये तुम्हें बताना जरूरी नहीं–।"

क्षणिक सोच के पश्चात सुन्दर पुनः बोला–

"राघव और धर्मा के साथ तुम क्या करना चाहते हो?"

"कुछ नहीं। तीनों को, काम खत्म होने पर, एक साथ छोड़ देने का इरादा है मेरा।"

सुन्दर ने एक्स्ट्रा को देखा।

"अब तुम कहोगे कि मैं इसे छोड़ दूं, ताकि ये काम खत्म करके तीनों को छोड़ने की स्थिति में आ सके।"

"नहीं। मैं ऐसी कोई बात तुम्हें नहीं कहने वाला।"

एक्स्ट्रा की नज़रें देवराज चौहान पर जा टिकीं।

"तुमने रतनचंद को मारना था, फिर उसे कैद में क्यों रख लिया?"

"मुझे यहां आना पड़ा।"

"क्यों?"

"क्योंकि मेरी बातें रतनचंद तक पहुंच रही थीं और मैं जानना चाहता था कि कौन बातें पहुंचा रहा है?"

"केकड़ा है वो।"

"केकड़ा तो है, परन्तु असल में वो कौन है, ये जानना था मुझे।"

"जाना?"

"अभी नहीं।"

"राघव और धर्मा को क्यों कैद–?"

"तुम लोग मेरे रास्ते में अड़चनें डाल रहे थे। कभी भी मेरे लिए रुकावट बन सकते थे।"

"इसलिए एक-एक करके उन्हें कैद कर लिया?"

"तुमने सामने डिस्ट्रिक्ट सैन्टर की इमारत में मेरे एक आदमी को मारा।" देवराज चौहान बोला।

"हां। वो गन पर बैठा इधर का निशाना लेने की चेष्टा कर रहा था। उसे मारकर मैंने समझा कि काम निपट गया, उसी ने रतनचंद को मारने की सुपाड़ी ली होगी। परन्तु तुम बच गये–।"

"मैं ऐसे किसी आदमी को नहीं छोड़ता जो काम के दौरान मेरे आदमी को मार दे। परन्तु खुशकिस्मत हो कि वो मेरा आदमी नहीं था। वो सुपाड़ी देने वाले वाले का आदमी था।" देवराज चौहान ने सर्द स्वर में कहा।

"नहीं तो तुम मुझे मार देते?" एक्स्ट्रा मुस्कुराया।

"अब तक तुम मर चुके होते।" देवराज चौहान ने खतरनाक स्वर में कहा।

"अपनी हालत देख रहे हो।" एक्स्ट्रा व्यंग से मुस्कुराया– "अपनी परवाह करो।"

देवराज चौहान उसे देखता रहा।

"फालतू बातें छोड़ो और राघव-धर्मा की बात करो, वो कहां हैं? उन्हें मेरे हवाले कर दो, मैं तुम्हें आजाद कर देता हूं।" एक्स्ट्रा बोला।

"जब तक मेरा काम खत्म नहीं होगा, तब तक मैं उन्हें नहीं छोड़ूंगा।"

"मुझे सख्ती करने पर मजबूर कर रहे हो।"

"जो चाहो कर लो। मुझे मेरी सोच से नहीं हटा सकते।"

"सुन्दर!" एक्स्ट्रा दांत पीसकर कह उठा–"इसकी टांगें भी बांध और चाकू, नमक-मिर्च ले आ। मैं भी तो देखूं कि डकैती मास्टर देवराज के इरादे कितने बुलन्द हैं, जो कि हट ही नहीं सकते।"

"ज्यादती मत करो।" सुन्दर एक्स्ट्रा से बोला–"इसे सोचने का वक्त दो।"

"सोचने का वक्त?"

"हां–। इसके हाथ-पांव बांध कर एक तरफ डाल देते हैं। फिर ये सोचेगा कि इसे क्या करना है। मूंछ के बाल की साख वाली बात मत करो। हो सकता है, सोचने के बाद ये बताने को तैयार हो जाये कि–।"

तभी सुन्दर का फोन बजा।

सुन्दर ने फोन निकाल कर बात की। उसके चेहरे पर अजीब से भाव छाते चले गये।

"मैं अभी आया...।" सुन्दर कहते हुए पलट कर बाहर निकल गया।

देवराज चौहान एक्स्ट्रा की नज़रें मिलीं।

"कोई शरारत करने की मत सोचना....।" एक्स्ट्रा खतरनाक स्वर में कह उठा।

देवराज चौहान सिर्फ मुस्करा कर रह गया।

❑❑❑

तीन-चार मिनट बीते होंगे कि कई कदमों की आहटें उनके कानों में पड़ीं और देखते-ही-देखते सुन्दर के साथ रतनचंद, धर्मा और राघव ने भीतर प्रवेश किया।

देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं उन्हें देखकर।

एक्स्ट्रा का चेहरा हैरत से खुल गया।

"तुम तीनों यहां?" एक्स्ट्रा के होठों से निकला।

उनकी निगाह देवराज चौहान पर टिक चुकी थी। देवराज चौहान ने जो मॉस्क चेहरे से उतारा था, वो नीचे पड़ा था। रतनचंद ने उस मॉस्क को उठा कर देखा।

"तुम हो देवराज चौहान–।" रतनचंद ने गहरी सांस ली।

"तुम लोग वहां से निकल कैसे आये?" पूछा देवराज चौहान ने।

"बंगले में कोई नहीं था।" राघव कह उठा–"जब मुझे पता चला कि धर्मा भी कैद में आ पहुंचा है तो मौका मिलने पर मैं लुढ़कता हुआ किसी तरह कमरे से निकला और आवाज मार कर जाना कि धर्मा किधर है। फिर बहुत मेहनत के पश्चात मैं धर्मा के पास पहुंचा तो इसने मुंह से मेरे बंधन खोले, इस तरह सब आजाद हो गया। वहां से आ गये।"

देवराज चौहान गहरी सांस लेकर रह गया।

"अब तेरा क्या होगा देवराज चौहान।" धर्मा कड़वे स्वर में बोला।

"दो दिन से मैं बंधा पड़ा हूं।" राघव ने कहा–"बुरा हाल हो गया मेरा।"

"इन्हें यहां देखकर, तकलीफ तो हुई होगी देवराज चौहान।" एक्स्ट्रा हंस कर कह उठा–"R.D.X. पर हाथ डालना कठिन ही नहीं, असम्भव है। जो हम पर हाथ डालता है, उसे R.D.X. उड़ा देता है। तुम्हें सारे मामले में इस बात का फायदा मिला

कि तुम रतनचंद बन कर हमारे पास रहे और हमारी बगलों में छुरियां चलाते रहे। ऐसे में तूने समझा कि तू जीत गया, लेकिन R.D.X. जैसे बारूद को पार पाना, तेरे बस का नहीं देवराज चौहान।"

देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा।

"अब तेरे पास मुस्कुराने के अलावा दूसरा कोई रास्ता भी नहीं।" एक्स्ट्रा (X-TRA) कड़वे स्वर में बोला।

"मेरी एक सलाह ले लो।" देवराज चौहान कह उठा।

"बोल—बोल।"

"न तो कभी डर कर नीचे आना चाहिये और न ही कभी ज्यादा हवा में उड़ना चाहिये। क्योंकि हमारा धंधा ही ऐसा है, कभी भी कुछ भी हो जाता है। बाजी पलटते देर नहीं लगती।"

"तो क्या तेरा ख्याल है, तू अब हमारे हाथों से निकल जायेगा?"

"इस बारे में मैंने सोचा नहीं। परन्तु मैं अपने को फंसा हुआ भी नहीं समझ रहा। मेरे हाथ बांध देने से ये मत समझो कि तुमने देवराज चौहान पर काबू पा लिया। मेरे लिये ये सब मामूली सी बातें हैं।"

"वाह! ये तो बोलता भी है।" एक्स्ट्रा हंस पड़ा।

तभी राघव ने गम्भीर स्वर में कहा—

"मजाक बंद करो एक्स्ट्रा।"

"इसने तुम लोगों को कैद....।" एक्स्ट्रा ने कहना चाहा।

"कोई बात नहीं। इसके इरादे बुरे नहीं थे। हमें सिर्फ ये ही तकलीफ हुई कि इसने हमें बांध कर रखा। वैसे हमारा ख्याल रखा गया। बाद में ये हमें छोड़ने का इरादा रखता था।" राघव ने बेहद शांत स्वर में कहा—"मेरे ख्याल में ये बुरा नहीं है।"

"इसने हमें कैद किया।" धर्मा बोला—"इस बात का इसे सबक तो सिखाना चाहिये।"

"जरूर सिखायेंगे।" राघव बोला—"इसे ये समझाना है कि हमें कम समझने की भूल न करे।"

तभी रतनचंद कह उठा—

"तुमने उस बारे में रंजन श्रीवास्तव से बात की?"

"जगमोहन ने की।" देवराज चौहान ने कहा—"शायद तुम्हारी बात सही है।"

"मैं तो अब भी कहता हूं कि मैं सही हूं।" रत[illegible] अपने

शब्दों पर जोर देकर कह उठा—"शोरी की पत्नी मीरा, रंजन श्रीवास्तव को चाहती थी, मुझे नहीं। हमारा पवित्र रिश्ता था, परन्तु शोरी समझता रहा कि उसके सम्बन्ध मेरे साथ हैं।"

"ये बात तुम्हें शोरी से स्पष्ट करनी चाहिये थी।"

"नहीं कही।" रतनचंद ने गहरी सांस ली—"वो रंजन श्रीवास्तव को मार देता।"

"नतीजा तुम्हारे सामने है। अब वो तुम्हें मारने पर उतारू है।"

रतनचंद ने होंठ भींच लिए।

R.D.X. की नजरें मिलीं।

"क्या बातें हो रही हैं।" धर्मा बोला—"हमें भी बताओ।"

"शोरी-मीरा कौन हैं?"

"कौन तुम्हें मारना चाहता है रतनचंद?"

रतनचंद ने शांत स्वर में कहा।

"देवराज चौहान के हाथ खोल दो।"

"क्यों?"

"खोल दो, ये हमारा बुरा नहीं करेगा।"

"बुरा कर भी नहीं सकता।" एक्स्ट्रा ने देवराज चौहान को घूरा—"टेढ़ी आंख से भी हमें देखेगा तो हम इसकी आंखें फोड़ देंगे। परन्तु इसके हाथ नहीं खोलेंगे। राघव, धर्मा ने तकलीफ सही है बंधनों की, इसे भी तकलीफ महसूस कर लेने दो।"

"मेरे हाथ-पांव बांध कर तुम्हें खुशी मिलती है तो मैं चाहता हूं तुम खुश रहो।" देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।

"चुप रहो तुम—तुम्हारी राय किसी ने नहीं पूछी।" एक्स्ट्रा ने चिढ़कर कहा।

धर्मा ने रतनचंद को देखकर पूछा—

"क्या बातें कर रहे थे तुम देवराज चौहान के साथ?"

रतनचंद ने नागेश शोरी से वास्ता रखती सारी बात बताई।

R.D.X. ने सब कुछ सुना।

कई पलों के लिये वहां चुप्पी आ ठहरी।

"तो अब देवराज चौहान का इरादा तुम्हें मारने का नहीं है?"

"नहीं।" रतनचंद बोला—"होता तो कब का मुझे मार चुका होता।"

"तुम क्या कहते हो?" राघव ने देवराज चौहान से पूछा।

"जाने क्यों मुझे लगने लगा था कि रतनचंद ड्रग्स का धंधा नहीं करता। वो ऐसा नही है, जैसा कि मुझे नागेश शोरी ने.... ।"

"तुम्हें इसमें क्या, नोट लो और अपना काम खत्म करो। तुम्हें तीन करोड़ मिले ना?"

"परन्तु जानकारी गलत दी गई। मैं उन लोगों के लिये कभी काम नहीं करता, जो झूठ बोलते हैं।"

"अजीब बात है।" राघव ने गहरी सांस ली।

"ये इसी जमाने का है या दूसरे ग्रह का?" एक्स्ट्रा ने व्यंग से कहा।

"यही वजह है कि तुम रतनचंद को अब नहीं मार रहे।"

"हां, मैं पेशेवर हत्यारा नहीं। कोई मजबूरी में फंसा हो तो उसकी सहायता कर देता हूं, अगर वो सच्चा हो तो। यूं तो मुझे किसी को मारने का हक नहीं है, परन्तु ये जानकर कि रतनचंद शहर में ड्रग्स फैलाता है, इसे मारने को तैयार हो गया। लेकिन ये बात गलत कही थी शोरी ने।" देवराज चौहान गम्भीर था।

"उसूल वाला है देवराज चौहान।" धर्मा ने राघव से कहा।

"इसके बंधन खोल दो।" रतनचंद बोला।

"ये हमारा मामला है रतनचंद।" एक्स्ट्रा बोला—"दोबारा ये बात मत कहना कि—।"

तभी फोन बजा।

जो फोन बज रहा था, वो देवराज चौहान की जेब में था।

धर्मा ने फोन निकाला। स्क्रीन चमक रही थी। वहां नम्बर आ रहा था।

"किसका फोन आया है?" धर्मा ने स्क्रीन देवराज चौहान के सामने की।

स्क्रीन पर नजर मारने के पश्चात देवराज चौहान बोला—

"जगमोहन का।"

धर्मा के होंठ सिकुड़े। वो फौरन उन सब लोगों से दूर, दरवाजे के पास पहुंचा और बात की।

"हैलो!" धर्मा के होंठों से ठीक देवराज चौहान जैसा स्वर निकला था।

धर्मा के होंठों से अपनी आवाज निकलते पाकर, देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।

"तुम जब बंगले से निकले थे तो राघव-धर्मा और रतनचंद किस हाल में थे?" जगमोहन का सवाल कानों में पड़ा।

"वो बंधे हुए थे, क्या हुआ?" धर्मा देवराज चौहान की ही आवाज में बोला।

"गड़बड़ हो गई—मैं जब बंगले में पहुंचा तो वहां कोई भी नहीं था, नाईलोन की डोरियां खुली पड़ी थीं।"

"ओह—तो वे भाग गये?"

"हां। वो सीधा बंगले में ही पहुंचेंगे, तुम खतरे में हो, चुपचाप वहां से निकल लो।"

"अब मेरी बात सुनो।" धर्मा, देवराज चौहान की आवाज में कह उठा—"वो तीनों यहां आ गये हैं, परन्तु चिन्ता की कोई बात नहीं, मैंने उन सब पर काबू पाकर, बांधकर एक तरफ डाल दिया है।"

"सब पर?"

"हां, R.D.X. और रतनचंद। चारों को। बंगले में मौजूद किसी को भी इस बात का पता नहीं। बेहतर होगा कि तुम बंगले पर आ जाओ। तुम्हारी जरूरत पड़ सकती है।" धर्मा, देवराज चौहान की आवाज में बोला।

"आता हूं मैं।"

धर्मा ने फोन बंद किया और देवराज चौहान से मुस्करा कर बोला—

"देखा देवराज चौहान! चेहरा बदलकर, या आवाज बदलकर किसी को धोखा देना बहुत आसान होता है। इसलिए ये मत सोचना कि रतनचंद बनकर तुमने R.D.X. को झटका दे दिया। ये सब मामूली बातें हैं। तुम यहां अकेले पड़ गये हो, तुम्हारा दिल नहीं लग रहा होगा, इसलिये जगमोहन को बुला लिया। वो आ रहा है।"

देवराज चौहान मुस्कराया।

"ये मुस्कराता बहुत है।" एक्स्ट्रा बोला।

"कोई बात नहीं, जब मुस्करा-मुस्करा कर गाल थक जायेंगे तो सीधा हो जायेगा।"

"तुम लोग ये साबित करना चाहते हो कि, तुम तीनों मुझसे कम नहीं हो।" देवराज चौहान बोला।

"हम जानते हैं कि कम नहीं हैं, परन्तु ये बात तेरे को समझाना चाहते हैं।"

"जरूरत नहीं। मैं समझ चुका हूं।" देवराज चौहान पुनः मुस्करा पड़ा।

"साला, हमें खींच रहा है।" राघव ने माथे पर बल डालकर कहा।

"खींच नहीं रहा, सच कह रहा हूं। तुम तीनों सच में खतरनाक हो।"

"तमगा देने का शुक्रिया।"

❑❑❑

जगमोहन कार पर वहां पहुंचा।

बंगले का गेट बंद था। गेट पर हैडलाईट का प्रकाश पड़ते ही, गेट खोला गया और पहले से ही वहां खड़ा सुन्दर कार के पास जा पहुंचा। जगमोहन ने हैडलाईट की रोशनी में उसे सुन्दर के तौर पर पहचान लिया था।

"आपका नाम?" सुन्दर ने मुस्कराकर जगमोहन से पूछा।

"जगमोहन।"

"ओह, आईये। सेठ जी आपका इंतजार कर रहे हैं।" कहने के पश्चात सुन्दर कार के साथ घूम कर दूसरी तरफ पहुंचा और उसके बगल वाली सीट पर जा बैठा—"चलिये, सेठ जी ने मुझे कहा कि उनके खास मेहमान यानि कि आप आने वाले हैं, मैं गेट पर जाकर खड़ा हो जाऊं, तो मैं यहां खड़ा आपके आने का ही इंतजार कर रहा था।"

जगमोहन ने कार आगे बढ़ाई और कार गेट के भीतर प्रवेश करती चली गई।

"उधर—पोर्च में ले चलिये कार को। आप क्या मुम्बई में ही रहते हैं? या शहर के बाहर से आ रहे हैं?" सुन्दर ने उसे बातों में लगाए रखा।

"रतनचंद ने तुम्हें बताया नहीं?" जगमोहन ने शांत स्वर में कहा।

"पूछने की हिम्मत कहां होती है।" सुन्दर ने दांत दिखाये।

"रतनचंद से ही पूछना।"

पोर्च में कार रुकी।

दोनों बाहर निकले।

"आईये, सेठ जी आपका इंतजार कर रहे है। आईये-आईये।"

जगमोहन, सुन्दर के साथ बंगले में प्रवेश करता चला गया।

"किधर है रतनचंद?" जगमोहन बंगले में नज़रें दौड़ाता कह उठा।

"उधर कमरे में आप ही का इंतजार कर रहे हैं।"

सुंदर जगमोहन को लेकर एक कमरे में पहुंचा।

अगले ही पल जगमोहन ठगा सा रह गया। मस्तिष्क को तीव्र झटका लगा।

सामने ही R.D.X. मौजूद थे।

रतनचंद कुर्सी पर बैठा गम्भीर निगाहों से जगमोहन को देख रहा था।

जगमोहन को खतरे का एहसास हो चुका था। उसने गर्दन घुमाकर सुन्दर को देखा।

"गुलाम हूं।" सुन्दर दांत फाड़ता थोड़ा सा झुककर बोला—"मालिकों का हुक्म बजाना पड़ता है।"

जगमोहन का चेहरा सख्त हो चुका था।

"देवराज चौहान कहां है?" वो गुर्राया।

"दूसरे कमरे में।" एक्स्ट्रा जहरीले स्वर में बोला—"हाथ-पांव बंधे पड़े हैं, फ्लैट हुआ पड़ा है। तुम्हें भी वहीं भेजते हैं।"

"अपनी कैद में हमें बांध कर रखा।" राघव मुस्कराया—"इस तरह बंधे रहने से कैसी तकलीफ होती है, क्या इसका अनुभव नहीं करना चाहोगे? मुझे तो बहुत तकलीफ हुई थी, कैद में पड़े-पड़े।"

"हाथ-पांव सुन्न हो जाते हैं। जिस्म बेकार हो जाता है। दिमाग में आग लगी रहती है, परन्तु बस में कुछ नहीं होता।" धर्मा ने हंस कर कहा—"ये सब बातें अब पता चलेंगी तुम्हें। बांधो इसे।"

जगमोहन ने रिवाल्वर निकालने के लिये जेब में हाथ डाला।

उसी पल उसकी कमर में रिवाल्वर की नाल आ लगी। पीछे सुन्दर था।

"कोई शरारत मत करना। खाली हाथ बाहर निकालो।" सुन्दर ने कठोर स्वर में कहा।

जगमोहन ने खाली हाथ बाहर निकाला।

सुन्दर ने उसकी रिवाल्वर निकाल कर, फर्श पर एक तरफ सरका दी।

"मुझसे बात किसने की थी?" जगमोहन के होंठों से गुर्राहट निकाली।

"अपने हाथ पीछे करो।" सुन्दर ने कहा।

जगमोहन ने दोनों हाथ पीछे किए तो सुन्दर उसकी कलाईयों पर नायलोन की रस्सी लपेटने लगा।

"मैंने की थी तुमसे बात।" धर्मा कह उठा। मुस्कराया वो।

"देवराज चौहान की अच्छी आवाज बनाई तुमने।" जगमोहन ने चुभते स्वर में कहा—"धोखा खा गया।"

"तो तुम क्या समझते हो कि देवराज चौहान ही रतनचंद की आवाज निकाल सकता है?"

सुन्दर ने कस कर हाथ डोरी से पीछे की तरफ बांध दिए थे।

"तुम लोगों ने।" राघव कह उठा—"बहुत बड़ी हिम्मत का काम किया था, हमें कैद करके।"

"अब तुम लोग भी हिम्मत का काम रहे हो, मुझे और देवराज चौहान को इस तरह कैद करके।" जगमोहन ने राघव को घूरा।

"कभी वो पलड़ा भारी तो कभी वो पलड़ा भारी!"

एक्स्ट्रा उठा और आगे बढ़कर जगमोहन की बांह पकड़ी।

"चलो, देवराज चौहान वहां अकेला बोर हो रहा होगा।"

"बहुत चिन्ता हो रही है देवराज चौहान की?"

"क्यों न होगी। नई-नई रिश्तेदारी जो बनी है।"

एक्स्ट्रा, जगमोहन को लेकर बाहर निकल गया। सुन्दर उनके साथ चल दिया।

रतनचंद कह उठा—

"मुझे तुम लोगों की ये हरकत पसन्द नहीं आ रही है।"

"क्यों?"

"मेरे ख्याल में सारा मामला सुलझ गया है। देवराज चौहान मुझे नहीं मारना चाहता। बात खत्म करो।"

"साले ने हमें कैद करके रखा।" धर्मा कह उठा—"अब हिसाब भी तो बराबर करना है।"

तभी फोन बजा।

देवराज चौहान का ही फोन था बजने वाला।

"हैलो!"

"जगजीत मेरी कैद से भाग निकला है देवराज चौहान।" दूसरी तरफ सोहनलाल था।

धर्मा समझ गया कि सोहनलाल बोल रहा है।

"कोई बात नहीं। उसकी परवाह मत करो। तुम मेरे पास आ सकते हो?" धर्मा, देवराज चौहान की आवाज में बोला।

"अभी?"

"हां, काम है, मैंने जगमोहन को भी बुलाया है, वो भी आने वाला होगा।"

"सिर का बुरा हाल है। जगजीत ने स्टूल उठाकर सिर पर मारा था। मैं चूक गया।"

"तुम्हें उससे सावधान रहना चाहिये था।"

"जाने कैसे लापरवाही हो गई।"

"मेरे पास पहुंचो। मैं रतनचंद के बंगले पर, रतनचंद की शक्ल में हूं।"

"आ रहा हूं।"

धर्मा ने फोन बंद किया और मुस्करा कर राघव से बोला—

"तीसरा मुर्गा भी आ रहा है।"

जगमोहन को देखते ही देवराज चौहान मुस्कराया।

"एक बार यहां से निकल जाऊं, फिर इन्हें नाच नचाऊंगा।" जगमोहन ने खा जाने वाले स्वर में कहा।

"जो कैद में होता है, वो ऐसा ही सोचता है। मुझे इसका पुराना अनुभव है।" एक्स्ट्रा व्यंग से कह उठा—"टांगें बांध इसकी।"

सुन्दर ने जगमोहन को सोफा चेयर पर गिराया और उसकी टांगें बांधने लगा।

कमरे में एक तरफ बैड और दूसरी तरफ सोफा पड़ा था। बड़ा कमरा था ये।

जगमोहन को जब, अपने को घूरते पाया तो सुन्दर कह उठा—

"नौकर बंदा हूं। हुक्म तो मानना ही पड़ता है। मेरा कोई कसूर नहीं।"

"तुमने मुझ पर रिवाल्वर लगाई थी।" जगमोहन कड़वे स्वर में बोला।

"हां, तब जरूरी था मेरा रिवाल्वर निकालना। तुम रिवाल्वर निकाल कर गोलियां चला देते और मेरा मालिक मारा जाता तो मुझे तनख्वाह कौन देता? आजकल नई नौकरी ढूंढना भी तो आसान नहीं।"

तभी धर्मा कमरे में प्रवेश करता कह उठा—

"सोहनलाल भी आ रहा है। देवराज चौहान का पूरा कुनबा इकट्ठा हो रहा है इधर तो—।"

❑❑❑

R.D.X.

अगले दिन सुबह।

तीनों कॉफी के घूंट भर रहे थे। उनके बीच चुप्पी ठहरी हुई थी।

"मेरे ख्याल में देवराज चौहान ठीक कहता है कि वो अब रतनचंद की जान नहीं लेगा।" धर्मा बोला।

"हां, लेनी होती तो उसके पास ढेरों मौके थे। वो ले चुका होता।" राघव ने सिर हिलाया।

"तो हमारा काम खत्म।" एक्स्ट्रा ने दोनों को देखा।

"जल्दी मत करो।" धर्मा ने कहा—"अभी नागेश शोरी तो सलामत है जो रतनचंद की जान के पीछे है। देवराज चौहान ने रतनचंद को नहीं मारा तो शोरी किसी और को रतनचंद के पीछे लगा देगा। हम रतनचंद से मुंहमांगी कीमत ले रहे हैं, उसकी जान बचाने की—तो उसके सिर से खतरा पूरी तरह हटाना हमारी जिम्मेदारी है।"

"तो तुम क्या चाहते हो कि नागेश शोरी से निपटा जाये?"

"निपटना ही पड़ेगा।"

"रतनचंद से बात करें?"

"कर लेते हैं।"

"जैसा रतनचंद चाहेगा, हम वैसा ही करेंगे। क्योंकि जान उसकी फंसी पड़ी है।"

एक्स्ट्रा कॉफी समाप्त करते हुए कह उठा—

"देवराज चौहान और उसके कुनबे का क्या करना है?"

"देवराज चौहान ने हमारे साथ कुछ भी बुरा नहीं किया, जबकि वो चाहता तो कुछ भी कर देता।" राघव ने एक्स्ट्रा को देखा।

"हां। राघव ठीक कहता है।" धर्मा बोला—"हमारी देवराज चौहान से कोई दुश्मनी नहीं।"

"मतलब कि उसे छोड़ दें।" एक्स्ट्रा ने कहा।

राघव और धर्मा ने सहमति से सिर हिला दिया।

"आजाद होने के बाद देवराज चौहान हमारे पीछे पड़ गया तो?" एक्स्ट्रा ने दोनों को देखा—"उसके दिमाग का क्या भरोसा?"

तीनों एक-दूसरे को देखने लगे।

"वो हमारे पीछे पड़ा तो देख लेंगे। डरना किस बात का?" धर्मा एकाएक मुस्करा पड़ा।

"मेरे ख्याल में देवराज चौहान ऐसा करेगा नहीं।" राघव बोला।

तीनों की कॉफी खत्म हो चुकी थी।

"चलो। रतनचंद से बात कर लें। उसके बाद हम यहां से चलने की तैयारी करें।"

R.D.X. रतनचंद के पास पहुंचे।

रतनचंद की आंखों से लग रहा था कि वो अभी ही सोया उठा है।

R.D.X. को देखते ही रतनचंद मुस्कराया।

"खुश है पट्ठा कि जान बच गई।" राघव मुस्कराया।

"सच में। जिसकी जान पर बनी होती है, वो ही जानता है कि रातों की नींद-चैन हराम हो जाता है।" रतनचंद बोला।

"बात तो ठीक कहता है।" एक्स्ट्रा ने कहा।

R.D.X. ने कुर्सियां संभालीं। वे बैठे।

"काम तो निपट गया।" धर्मा बोला—"हमारे नोट दे, निकलें हमें यहां से।"

"नोट तैयार हैं।" रतनचंद बोला।

"आज तो दिल खोल दिया रतनचंद ने।" राघव ने पूर्ववतः लहजे में कहा।

रतनचंद ने R.D.X. को देखा और बोला—

"लेकिन काम अभी बाकी है।"

"बाकी है—वो कैसे?" एक्स्ट्रा ने मुंह बनाया।

"देवराज चौहान तो मेरी हत्या से पीछे हट गया है, परन्तु नागेश शोरी तो पीछे नहीं हटा।"

R.D.X. की नज़रें मिलीं।

"सुना।" धर्मा ने दोनों को देखा—"ये आसानी से मानने वाला नहीं। अपना काम पूरा करवा के ही रहेगा।"

"शोरी फिर किसी को मेरे पीछे लगा सकता है।" रतनचंद गम्भीर स्वर में बोला।

"जरूर लगायेगा।"

"उसे निपटो।"

"साफ कर दें उसे?"

"मैं नहीं चाहता, उसकी जान ली जाये।" रतनचंद गम्भीर स्वर में बोला—"वो पीछे नहीं हटता तो, उसे खत्म करना मजबूरी है।"

R.D.X. की नजरें मिलीं।

"क्या कहते हो?" राघव ने दोनों को देखा।

"रतनचंद ठीक कहता है। अगर शोरी नहीं मानता तो उसे खत्म कर देना ही ठीक रहेगा।"

"अपना काम तो रतनचंद को तसल्ली देना है। दो-चार को मारना पड़ा तो मार भी देंगे।" धर्मा ने कहा।

"तो मिलें शोरी से?"

"अब तो मिलना ही पड़ेगा।"

"रतनचंद!" एक्स्ट्रा बोला—"तू भी हमारे साथ चल।"

"साथ?"

"हां। तेरे सामने शोरी से बात होगी। अगर बात तसल्ली वाली नहीं हुई तो मुझे इशारा कर देना। साले को हलाल कर देंगे।"

"मेरे साथ जाने की क्या जरूरत है। तुम ही—"

"जरूरत इसलिए है कि हमें वो पीछे हटता लगा, हमने उसे छोड़ दिया—बाद में उसका दिमाग फिर गया और वो फिर तेरे पीछे पड़ गया तो तू सारी बात हम पर लाद देगा कि हमने काम अधूरा छोड़ दिया था। तभी शोरी फिर से तेरी जान लेना चाहता है। तब तू मुफ्त में हमसे काम करवायेगा। ऐसा न हो, इसलिये तेरा साथ चलना जरूरी है। तब सारी जिम्मेवारी तेरे सिर पर होगी।"

"ठीक है।" रतनचंद ने सिर हिलाया—"जैसी तुम्हारी मर्जी। साथ चलूंगा मैं।"

तभी सुन्दर ने भीतर प्रवेश किया। वो रतनचंद के लिये कॉफी लेकर आया था।

रतनचंद कॉफी का प्याला थामता सुन्दर से बोला—

"उन तीनों के लिये भी कॉफी बना लाओ। देवराज चौहान, जगमोहन और सोहनलाल के लिये।"

सुन्दर बाहर निकल गया।

रतनचंद R.D.X. को देखता कह उठा—

"उन तीनों को अब छोड़ दो। बहुत हो गया। रात भर बांध के रखा। इतना ही बहुत है।"

"हां, उन्हें छोड़ना ही है। हाथ-पांव बांधने का हिसाब बराबर हो गया। ऐसी कोई बात भी नहीं बची कि उन्हें रोक कर रखा जाये।"

❑❑❑

R.D.X. और रतनचंद उस कमरे में पहुंचे जहां देवराज चौहान, जगमोहन और सोहनलाल को बांध कर डाला गया था। साथ में सुन्दर ट्रे में कॉफी के तीन प्याले लिए हुए था।

कमरे का नजारा देखते ही वे चौंके।

R.D.X. की नज़रें मिलीं।

"बाप की जगह समझ कर पड़े हैं।" सुन्दर बड़बड़ा उठा।

देवराज चौहान और सोहनलाल बेड पर औंधे मुंह पड़े गहरी नींद में थे।

जगमोहन सोफे पर सो रहा था।

तीनों के बंधन खुले पड़े थे।

कौन कह सकता था कि उन्हें यहां कैदी बनाकर डाला गया है! कमरे का दरवाजा खुला हुआ था। वे चाहते तो आसानी से यहां से खिसक सकते थे, परन्तु खिसकने से बेहतर उन्होंने नींद लेना ही ठीक समझा था।

"ये तो मजे से पड़े हैं।" एक्स्ट्रा मुंह बनाकर बोला।

"हाथ-पांवों के बंधन भी खोल लिए।" राघव ने कहा।

"हम ये क्यों भूलते हैं ये डकैती मास्टर देवराज चौहान है और बाकी के दोनों इसके साथी। अपराध की नदी में तैरते रहना इनका पेशा है, मामूली से बंधन इन्हें कहां बांधेंगे।" धर्मा ने गहरी सांस लेकर कहा।

"अगली बार सालों को तबीयत से बांधेंगे।" एक्स्ट्रा ने सिर हिलाकर कहा।

तभी जगमोहन ने करवट ली और आंखें खोलता कह उठा।

"अगली बार हाथ-पांवों में लोहे की बेड़ियां डालना।"

"तू जाग रहा है?"

"तुम लोगों की आवाजें सुनकर आंख खुलीं।"

"तुम लोगों ने बंधन कब खोले?"

"तुमने ठीक से बांधे नहीं थे। मैं तुम्हें समझाऊंगा कि बांधते कैसे हैं। बेकार हो तुम लोग—देवराज चौहान की तलाशी भी ठीक से नहीं ली और रिवाल्वर उसके पास ही रहने दी। अगर रात को तुम सब को शूट कर देते तो?"

"ज्यादा हवा में न उड़—नीचे आ जा।" धर्मा ने कड़वे स्वर में कहा।

तब तक देवराज चौहान और सोहनलाल भी उठ गये थे।

"कॉफी ठण्डी हो रही है।" सुन्दर ट्रे थामें कह उठा।

"तो दे इन्हें, हमें क्या कह रहा है।" राघव बोला।

सुन्दर ने तीनों को काफी दी।

"शुक्रिया।" जगमोहन मुस्कराया—"ऐसी सेवा होती रहे तो हम और भी यहां रहने को तैयार हैं।"

"कॉफी खत्म करो और चलते बनो यहां से।" एक्स्ट्रा ने बारी-बारी तीनों को देखते हुए कहा।

"बस, इतना ही सेवा भाव था। सिर्फ एक रात!" जगमोहन हंसा।

"हमारा सेवा भाव बहुत मंहगा होता है। फिर कभी सामने पड़े तो समझ जाओगे। क्यों खामखाह हमारे मुंह लगते हो। सस्ते में बात निपट रही है तो तुम्हें खुश होना चाहिये।" धर्मा ने सख्त स्वर में कहा।

"भगवान जाने सस्ता सौदा किसके लिए है! तुम्हारे लिये या हमारे लिये। इस बारे में सोचा है क्या?"

"तेरी तबीयत हरी करूं?" एक्स्ट्रा दांत भींचकर कह उठा।

"तुम कुछ नहीं कह सकते। अपनी दादागिरी बंद कर दे, वरना अच्छी तरह समझा दूंगा।"

"तेरी तो!" एक्स्ट्रा ने गुस्से में उसकी तरफ बढ़ना चाहा।

उसी पल जगमोहन ने नीचे दबा रखी रिवाल्वर निकाली और उसकी तरफ कर दी।

एक्स्ट्रा ठिठक गया।

जगमोहन के एक हाथ में रिवाल्वर थी, दूसरे में कॉफी का प्याला।

"जगमोहन!" देवराज चौहान बोला—"रिवाल्वर नीचे कर।"

जगमोहन ने रिवाल्वर नीचे कर ली।

राघव आगे बढ़ा और एक्स्ट्रा (X-TRA) का कंधा थपथपा कर बोला—

"ये मामला बकाया रहने दे। फिर कभी सामने पड़े तो सारे मामले बराबर कर लेंगे।"

उसके बाद R.D.X. बाहर निकल गये।

रतनचंद और सुन्दर वहां रहे।

"मैं तुम लोगों का एहसानमंद हूं कि तुम लोगों ने मुझे मारा नहीं।" रतनचंद बोला।

तीनों ने रतनचंद को देखा।

"इसमें एहसानमंद होने की जरूरत नहीं।" देवराज चौहान बोला—"बल्कि मुझे खुशी है कि मेरी गोली से, एक बार तुम नहीं तुम्हारा साथी मरा। तुम मरे होते तो मुझे दुख होता कि मैंने गलत बंदा मार दिया। क्योंकि शोरी ने गलत जानकारी देकर मुझे इस काम पर लगाया था।"

"ये अच्छा हुआ कि वक्त रहते, तुम्हें इस बात का एहसास हो गया, वरना तुम मुझे मार के ही रहते।"

देवराज चौहान कुछ नहीं बोला।

"अब तुम क्या करोगे?"

"ये काम तो खत्म हो ही गया है। बस एक बार नागेश शोरी से मिलना रह गया है।"

"हम भी नागेश शोरी के पास मिलने जा रहे हैं।"

"हम?"

"R.D.X. और मैं।" रतनचंद बोला—"चाहो तो तुम भी हमारे साथ चल सकते हो।"

"तुम लोग शोरी के पास क्यों जा रहे हो?"

"क्योंकि उसी ने तुम्हें मेरी हत्या की सुपाड़ी दी थी, तुम्हारे

पीछे हटने पर वो, फिर किसी को मेरे पीछे लगा सकता है। इस बारे में उससे बात करनी है, अगर वो नहीं माना तो मुझे मजबूरन उसकी जान लेने के लिये कहना पड़ेगा।"

देवराज चौहान खामोश रहा।

"केकड़ा का कुछ पता चला कि वो कौन है?"

"नहीं।" देवराज चौहान ने इंकार में सिर हिलाया—"उससे एक बार ही बात की थी। कभी उसकी आवाज के भावों से लगता कि उसकी आवाज मैंने सुन रखी है, तो कभी लगता नहीं सुन रखी। वो जो भी था, अपनी आवाज बदलकर बात कर रहा था। अगर एक-दो बार और बात हुई होती तो शायद मैं उसे पहचान जाता—परन्तु मैंने उसे बताया कि मैं देवराज चौहान हूं, रतनचंद नहीं तो उसने दोबारा फोन नहीं किया।"

"वो मुझसे भी आवाज बदलकर ही बात करता था।" रतनचंद ने कहा—"इसका मतलब, वो मेरी पहचान का हो सकता है और उसे इस बात का डर रहा हो कि असली आवाज में बोलेगा तो कहीं मैं उसकी आवाज न पहचान जाऊं।"

कॉफी समाप्त करके देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगा ली।

"हमारे मोबाईल फोन और हथियार हमें वापस दे दो।" देवराज चौहान ने कहा।

"अभी भिजवा देता हूं। तुम चाहो तो नागेश शोरी के पास हमारे साथ चल सकते हो।"

देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा।

"हमें क्यों एतराज होगा।" जगमोहन ने कहा।

रतनचंद और सुन्दर बाहर निकल गये।

सोहनलाल ने अपने सिर पर हाथ फेरा जहां गूमड़ निकला पड़ा था।

"साले जगजीत ने बहुत जोरों से सिर पर स्टूल मारा था। ज़रा भी दया का इस्तेमाल नहीं किया।"

"तुमने उसे बांध कर रखा हुआ था तो वो दया का इस्तेमाल क्यों करेगा?" जगमोहन मुस्कराया।

सोहनलाल ने सिगरेट सुलगाई गोली वाली।

"फिर भी उसने जोरों का मारा।" सोहनलाल मुस्करा पड़ा।

तभी सुन्दर आया और उनके मोबाईल और रिवाल्वरें दे गया।

"इन सालों R.D.X. की तबीयत हरी करूंगा। तीनों ही बहुत उड़ते हैं।" जगमोहन कह उठा।

देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।

"तुम क्यों मुस्करा रहे हो?" जगमोहन ने मुंह बनाया।

"वो तीनों R.D.X. नामक बारूद से कम नहीं हैं। उनका नाम उनके काम पर फिट बैठता है।"

"हैरानी है। तुम पहली बार किसी की तारीफ कर रहे हो।" जगमोहन ने अजीब से स्वर में कहा।

"तारीफ उसी की की जाती है जो काबिल हो। R.D.X. सच में बहुत खतरनाक हैं। इन्हें कभी भी कम मत सझना।"

"तुम देखना, अब की बार रास्ते में आये तो इन्हें अच्छी तरह समझा दूंगा कि हम भी कम नहीं।"

"मैं ये नहीं कह रहा कि हम, उनसे कम हैं। बल्कि ये मतलब है मेरा कि उन्हें अपने से कम मत समझना।" देवराज चौहान बोला।

"देखूंगा।" जगमोहन भुनभुनाने वाले स्वर में कह उठा।

❑❑❑

आगे वाली कार में रतनचंद के साथ R.D.X. थे।

पीछे वाली कार देवराज चौहान, जगमोहन और सोहनलाल।

चालीस मिनट तक दोनों कारें सड़कों पर दौड़ती नागेश शोरी के बंगले पर पहुंचीं।

बंगले का फाटक बंद था।

दोनों कारें बाहर ही रुकीं। फाटक के भीतर की तरफ दो गनमैन मौजूद थे। उन्हें आया पाकर एक गनमैन 'विकेट' गेट खोलकर बाहर आया। कार के पास पहुंचा।

तब तक पीछे वाली कार से निकलकर जगमोहन भी वहां आ गया।

"गेट खोलो।" रतनचंद बोला—"नागेश शोरी से मिलना है।"

"वो तो बंगले पर हैं नहीं।" गनमैन बोला।

"कहां है?"

"कई दिन से वे गये हुए हैं। हमें खबर नहीं कि सेठ जी किधर हैं।"

रतनचंद के चेहरे पर सोच के भाव आ ठहरे।

गनमैन वापस चला गया।

"अब?" जगमोहन ने रतनचंद से पूछा।

"उसका एक ठिकाना मैं जानता हूं। फार्म हाउस है। वो अक्सर कई कई दिन के लिये वहां चला जाता है।" रतनचंद ने कहा।

"वो कहीं और भी गया हो सकता है।" जगमोहन बोला।

"हां, परन्तु उसके फार्म हाउस पर भी देख लेना ठीक रहेगा। तुम लोग अपनी कार में मेरे पीछे आओ। घंटे भर का रास्ता है।"

उसके बाद उनकी कारें आगे-पीछे फिर दौड़ने लगीं।

शोरी फार्म हाउस।

प्रवेश गेट पर बड़ा सा बोर्ड लगा हुआ था।

गेट बंद था। दोनों कारें वहां रुकीं। एक तरफ छाया में बैठा चौकीदार फौरन वहां आ पहुंचा। वो पुराना चौकीदार था और रतनचंद को जानता था। दुआ-सलाम के बाद चौकीदार ने गेट खोल दिया। उसने बताया कि सेठ जी फार्म हाउस पर ही हैं।

दोनों कारें फार्म हाउस में प्रवेश करती चली गईं।

लम्बा रास्ता था ये। उसके बाद पेड़ों में घिरा दो-मंजिला मकान नजर आ रहा था। खूबसूरत जगह थी और शान्ति-सुकून से भरा इलाका था ये। तेज हवा के कारण पेड़ों के पत्ते खड़क रहे थे। यहां न तो किसी वाहन की आवाज गूंज रही थी, न अन्य किसी तरह का शोर-शराबा। दोनों कारें उसी सड़क पर से होती, छोटे से पोर्च से पहले ही रुक गईं। वहां पर दो कारें पहले से ही मौजूद थीं। मकान का मुख्य दरवाजा खुला हुआ था।

वे सब बाहर निकले।

तभी देवराज चौहान की निगाह हरीश मोगा पर जा टिकी।

हरीश मोगा पेड़ की छाया में कुर्सी पर बैठा उसे देख रहा था। दोनों की नज़रें मिलीं। हरीश मोगा उठा और देवराज चौहान की तरफ बढ़ने लगा। तभी खुले दरवाजे से दिनेश चुरू बाहर निकला और उन सबको देखते ही सकपका उठा।

"तुम, रतनचंद के साथ—यहां कैसे?" हरीश मोगा सख्त स्वर में बोला।

"शोरी कहां है?" देवराज चौहान ने कहा।

"भीतर—पहले मेरी बात का जवाब—।"

"तुम कौन होते हो मुझसे सवाल-जवाब करने वाले?" देवराज चौहान ने उसकी आंखों में झांका—"अपने काम से मतलब रखो।"

"ये मेरा ही काम है।" हरीश मोगा ने कहा—"तुम मुसीबतें लेकर यहां आये हो।"

"मुसीबतें?" देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े।

"हां। रतनचंद की पत्नी सोनिया, इस वक्त शोरी के साथ भीतर है।"

देवराज चौहान चौंका।

"रतनचंद की पत्नी—शोरी के साथ?" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

हरीश मोगा ने सहमति से सिर हिलाया।

"ये कैसे हो सकता।"

"तुम्हें रतनचंद को खत्म कर देना चाहिये था। तीन करोड़ में सिर्फ एक हत्या तो करनी थी तुमने। बहुत आसान काम था। तुम्हारी जगह मैं होता तो ये काम कब का खत्म कर देता। परन्तु शोरी ने ये काम मुझे नहीं करने दिया, तुम्हें ही चुना इस काम के लिये।"

देवराज चौहान, हरीश मोगा की बात को समझने की चेष्टा कर रहा था।

तभी दिनेश चुरू पास आया। उसके आते ही हरीश मोगा मुख्य द्वार की तरफ बढ़ गया।

R.D.X. और रतनचंद इस वक्त मकान के भीतर प्रवेश कर रहे थे।

"ये क्या किया तुमने—रतनचंद और R.D.X. को अपने साथ क्यों लाये?" दिनेश चुरू बोला।

"मैं नहीं लाया उन्हें, बल्कि मैं उनके साथ आया।"

"लेकिन तुम इनके साथ—मुझे तो कुछ भी समझ—।"

"शोरी कहां है?"

"भीतर।"

"भीतर चलो। सब समझ में आ जायेगा।" देवराज चौहान ने सख्त स्वर में कहा और आगे बढ़ गया।

उस लम्बे-चौड़े मकान के ड्राईंग से ही, पहली मंजिल के लिये सीढ़ियां जा रही थीं। उन सीढ़ियों से नागेश शोरी उतर रहा था। उसके चेहरे पर कठोरता नाच रही थी। वो रह-रह कर रतनचंद को देख रहा था।

हाल में R.D.X., रतनचंद और देवराज चौहान, जगमोहन, सोहनलाल मौजूद थे।

दिनेश चुरू, हरीश मोगा और अवतार सिंह अलग-अलग सतर्क मुद्रा में खड़े थे।

सबकी निगाहें नागेश शोरी पर थीं।

नागेश शोरी नीचे पहुंचा और देवराज चौहान से कह उठा—

"इन लोगों के साथ तुम्हें देखकर मुझे हैरानी हुई।"

"ये इत्तफाक ही है शोरी कि हम लोगों का एक साथ आना हुआ।" बोला देवराज चौहान।

"उलझन में डाल देने वाला इत्तफाक है। मेरे ख्याल में तुमने इन्हें बता दिया है। कि मैंने ही तुम्हें रतनचंद को मारने को कहा था।"

"जरूरी हो गया था बताना।"

"क्यों?"

"क्योंकि तुमने जो झूठ बोला मुझसे रतनचंद के बारे में, उसकी सत्यता भी जाननी थी। जाने क्यों मुझे पहले से ही तुम्हारी बात पर शक सा हो रहा था, परन्तु जब जगमोहन ने मुझे कहा कि तुम्हारी कही बातें सच हैं तो मैं रतनचंद को शूट करने में लग गया। तुमने ऐसा जाल फंसाया कि जगमोहन को भी चक्कर में ला दिया। इसने रतनचंद के बारे में जिन लोगों से पता किया, वो तुम्हारे ही आदमी थे। तुम्हारी चाल बहुत हद तक कामयाब रही थी।"

नागेश शोरी खामोश रहा।

देवराज चौहान सिगरेट सुलगा कर बोला—

"तुमने झूठ कहा कि रतनचंद ड्रग्स का धंधा करता है। अखबारों की कटिंग्स तुमने झूठी तैयार कीं। रतनचंद के बारे में तुमने जो कहा, झूठा कहा। ऐसा क्यों किया तुमने शोरी?"

"क्योंकि मैं तुम जैसे शातिर से ही रतनचंद की हत्या कराना चाहता था। मैं जानता था कि तुमने अगर काम हाथ में ले लिया तो फिर हर हाल में पूरा करके रहोगे। परन्तु तुम्हारे बारे में मैं ये भी पता कर चुका था कि तुम बिना वजह मेरे कहने पर रतनचंद की जान नहीं लोगे। इसलिये मुझे ड्रग्स वाली वजह तैयार करनी पड़ी।"

"तुमने कहा कि तुम्हारी पत्नी की मृत्यु ड्रग्स लेने से हुई और ड्रग्स शहर में रतनचंद फैलाता है।"

"ये सब न कहता तो तुम इस काम के लिये तैयार भी न होते।"

"तो झूठ बोलकर मुझे काम के लिये तैयार किया?"

"हां।"

"इसका अंजाम जानते हो?" देवराज चौहान का चेहरा कठोर हो गया।

नागेश शोरी ने गम्भीर निगाहों से देवराज चौहान को देखा।

"धन्यवाद कर मेरे को जो मैंने तेरे को बचा लिया।" जगमोहन कह उठा—"देवराज चौहान तो तेरे को झूठ बोलने की एवज़ में गोली मार देना चाहता था। लेकिन मैंने इसे ये समझा कर चुप करा दिया कि शोरी के लिये झूठ की सजा यही बहुत है कि उसका तीन करोड़ वापस न दें। दोबारा कभी इसने ऐसा काम किया तो तब साले को मार देंगे।"

शोरी मुस्करा कर बोला—

"मुझे तीन करोड़ की परवाह नहीं है।"

"तेरे को नहीं तो मेरे को तो है। तभी मैंने ये बात छेड़ी कि तू बाद में तीन करोड़ न मांगने लगे।"

रतनचंद की कठोर निगाह, नागेश शोरी पर थी।

"अब तेरी आवाज मैं पास से सुन रहा हूं शोरी।" देवराज चौहान बोला—"तेरी और केकड़ा की आवाज में बहुत समानता है।"

"मैं ही हूं केकड़ा।"

"तुम?"

"हां, केकड़ा के नाम से मैं ही फोन किया करता था।" नागेश शोरी ने शांत स्वर में कहा।

सब चौंके।

"सुना रतनचंद!" एक्स्ट्रा बोला—"केकड़ा बनकर तेरे कानों में ये ही डण्डा घुमा रहा था।"

"तुम!" देवराज चौहान सख्त स्वर में बोला—"केकड़ा बनकर रतनचंद को मेरी खबरें क्यों पहुंचाते रहे?"

"मैं रतनचंद को डरा देना चाहता था। मैं इसे पागल बना देना चाहता था। इतना तो मैं जानता था कि तुम रतनचंद को देर सवेर में शूट कर दोगे। मुझे तुम पर पूरा विश्वास था, इसलिए थोड़ी-थोड़ी खबर मैं रतनचंद को देता रहा। ताकि ये हर वक्त खौफ के साये में रहे—रहा भी। उधर तुम इसे खत्म करने में लगे रहे।"

"सनकी है साला।" राघव कह उठा—"कभी ये खामखाह की मौत मरेगा।"

"तुमने ये नहीं सोचा कभी कि इन सब बातों को मेरे को पता चलेगा तो तेरा क्या होगा?" देवराज चौहान कड़वे स्वर में बोला।

"मैंने केकड़ा बनकर ऐसा कुछ गलत नहीं किया जो—।"

"अबे चुप कर, तूने बहुत गलत किया है।" जगमोहन सख्त स्वर में बोला—"ये कहकर कि तूने कुछ नहीं किया, हमें क्यों भड़का रहा है।"

नागेश शोरी ने गहरी सांस ली और मुंह घुमा लिया।

"ये सब तूने क्यों किया?" देवराज चौहान ने पूछा।

"मैं अपनी बीवी की मौत का बदला—।"

"झूठी बात मत कह। तेरे को अच्छी तरह मालूम है कि रतनचंद के साथ तेरी बीवी का कोई वास्ता नहीं था।" देवराज चौहान ने उसकी बात काट कर कहा—"जो सच है, वो ही बात बोल।"

नागेश शोरी खामोश हो गया।

"बोलेगा अब।" जगमोहन झल्लाया।

शोरी चुप रहा।

"मैं जानता हूं ऊपर कौन है।" देवराज चौहान कह उठा।

नागेश शोरी ने आंखें सिकोड़ कर उसे देखा।

"क्या जानते हो तुम?"

"कि ऊपर कौन है।" देवराज चौहान ने उसकी आंखों में झांका।

नागेश शोरी होंठ भींचकर रह गया।

R.D.X. की नज़रें मिलीं।

"कौन है ऊपर?" धर्मा ने धीमें स्वर में पूछा।

"क्या पता!" एक्स्ट्रा बोला।

"लेकिन देवराज चौहान को कैसे पता चल गया कि ऊपर कौन है—वो तो हमारे साथ ही आया है।" राघव ने कहा।

"बोलो।" देवराज चौहान ने कठोर स्वर में कहा—"रतनचंद की जान तुम क्यों लेना चाहते थे?"

"ये बात तुम क्यों पूछ रहे हो?" नागेश शोरी बोला।

"मैं नहीं पूछूंगा तो ये जानकारी मिलने पर कि ऊपर कौन है, रतनचंद तुमसे पूछेगा, R.D.X. तुमसे पूछेगा। तुम्हें बताना तो पड़ेगा ही। अभी तो बात आराम से हो रही है, फिर पता नहीं बात कैसे हो। कहो तो मैं नहीं पूछता—चला जाता हूं।"

रतनचंद ने उलझन भरी निगाहों से देवराज चौहान को देखा।

"कौन है ऊपर? तुम क्या कहना चाहते हो? मैं कुछ भी नहीं समझ रहा।"

"देखते-सुनते रहो। अगर ये नहीं बतायेगा तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि ये तुम्हारा कत्ल क्यों कराना चाहता था।"

कुछ चुप रहकर नागेश शोरी कह उठा—

"रतनचंद! सच बात तो ये है कि मैं और सोनिया, एक-दूसरे को बहुत चाहते हैं।"

"क्या?" रतनचंद चिहुंक पड़ा—"तुम मेरी बीवी की बात कर रहे हो?"

"हां। हम दोनों एक-दूसरे को चाहते—।"

"बकवास मत करो।"

"हम दोनों तीन सालों से एक-दूसरे को चाहते हैं। हम दोनों एक साथ अपनी जिन्दगी बिताना चाहते हैं, परन्तु इसके लिये तुम और मेरी पत्नी मीरा, हमारे रास्ते की अड़चन थे।" नागेश शोरी ने सामान्य स्वर में कहा।

रतनचंद हैरानी से भरा पड़ा था।

"इसलिए तुमने मीरा की जान ली?"

"हां। वो रंजन श्रीवास्तव के चक्कर में इसलिए पड़ी कि, क्योंकि वो जान चुकी थी कि मैं किसी औरत के चक्कर में हूं,

परन्तु वो ये नहीं जानती थी कि वो औरत सोनिया है। चूंकि तुम्हारी बीवी का रिश्ता, मेरे साथ हो गया था, इसलिए तुम्हें अपने से दूर करना जरूरी था—यही वजह थी कि मैंने तुम पर, मीरा के साथ सम्बन्ध होने का इल्जाम लगाया।"

"हे भगवान!" रतनचंद की हालत देखने वाली थी।

"मीरा ने जानबूझकर रंजन श्रीवास्तव से दोस्ती कर ली, ताकि मुझ पर दबाव बना सके। वो कहती थी कि मैं उसके अलावा किसी औरत के साथ रिश्ता न रखूं, तो वो भी रंजन को छोड़ देगी। परन्तु मुझे उसकी परवाह कहां थी! रोज-रोज की लड़ाई होते-होते एक दिन बात बढ़ी और वो सामान लेकर, रंजन श्रीवास्तव के पास जाने के लिये तैयार हो गई। उस समय हालात ऐसे हो गये कि, लड़ाई में मैं पागल हो गया था। पास ही ड्रग्स रखी थी। मैंने ड्रग्स की हैवी डोज़ का इंजेक्शन उसे लगा दिया।"

"और वो मर गई!" रतनचंद के होंठों से निकला।

"हां। मैं उसे रास्ते से ही तो हटाना चाहता था।"

"और ये बात सोनिया को मालूम है?" रतनचंद ने पूछा।

"मालूम है।"

"फिर भी वो तुम जैसे हत्यारे के साथ रहने को तैयार है?"

नागेश शोरी के चेहरे पर जहरीली मुस्कान नाच उठी।

"इस बात का उसी ने जोर लगाया है कि तुम्हारी हत्या करवा दूं।"

"मेरी हत्या के लिये सोनिया ने कहा?" रतनचंद का मुंह खुल गया।

"हां, वो मेरे साथ रहने को बेताब है और मैं भी। हम दोनों एक-दूसरे को बहुत प्यार करते हैं।"

"लानत है, ऐसे प्यार पर!" रतनचंद भड़क उठा—"तुम दोनों इतने ही मरे जा रहे थे तो मुझसे कह देते। मैं खुद अपने हाथों से तुम्हारी शादी करा देता। इस तरह खून-खराबा करने की क्या जरूरत थी?"

नागेश शोरी ने कुछ नहीं कहा।

तभी सीढ़ियों से सोनिया उतरती दिखी।

रतनचंद ने सोनिया को देखा तो सिर से पांव तक सुलग उठा। उसने सफेद चमकदार साड़ी पहनी हुई थी। बला की

खूबसूरत लग रही थी वो। उसके चेहरे पर शांत भाव नज़र आ रहे थे।

"आ, नागेश शोरी की लैला! मुझे मरवाने की क्या जरूरत थी? मुंह से कह देती, मैं इंकार नहीं करता। वैसे भी मुझे ऐसी औरत की जरूरत नहीं है, जो दूसरे मर्द के पहलू में बैठे और मेरी हत्या करवाती फिरे। जा, मैंने तेरे को आजाद किया। तेरा-मेरा कोई रिश्ता अब बाकी नहीं, तू नागेश शोरी की रातें सजा। दुख तो मुझे इस बात का है कि तू दगाबाज निकली। मेरे में क्या कमी तेरे को दिखी जो, नागेश शोरी का सहलाने लगी,"

"तुम अच्छे हो। कोई कमी नहीं तुममें। परन्तु मुझे शोरी भा गया।" सोनिया कह उठी।

नागेश शोरी मुस्करा पड़ा।

रतनचंद ने गहरी सांस लेकर कहा—

"तुम दोनों खुश रहो और मुझे कभी न दिखो, यही कामना करता हूं मैं।" फिर वो R.D.X. से बोला—"चलो यहां से।"

"यानि हमारी कोई जरूरत नहीं।"

"सब कुछ निपट गया। मैं अब इन दोनों को अपने सामने नहीं देखना चाहता।"

"नोट।"

"बंगले पर चलो और ले लो।"

R.D.X. की नज़रें मिलीं।

"पार्टी जब कहे काम खत्म हो गया तो फिर रुकना नहीं चाहिये। निकल चलो।" एक्स्ट्रा बोला।

जगमोहन ने देवराज चौहान से कहा—

"हमारी यहां जरूरत नहीं—चलें?"

"हां।"

"हम जा रहे हैं शोरी।" जगमोहन कह उठा—"फिर कभी हमसे झूठ बोला तो तेरी खैर नहीं।"

"तीन करोड़ मुफ्त में कमा लिए।" धर्मा व्यंग से बोला।

जगमोहन ने धर्मा को घूरा।

"खायेगा क्या?" धर्मा ने मुंह बनाया।

"R.D.X. को जलती तीली लगाने की जरूरत होती है, बाकी काम तो अपने आप ही हो जाता है।" जगमोहन तीखे स्वर में बोला।

"लगा, जलती तीली।"
"वो तीली ज़रा खास होती है। बनवा लूं, फिर मिलूंगा।"
"तुझे तो मैं भी देखूंगा।"
देवराज चौहान, जगमोहन और सोहनलाल के साथ बाहर निकल गया।
बाहर कार के पास ठिठका जगमोहन। ये वो कार थी जिस पर रतनचंद और R.D.X. आये थे। जगमोहन जानता था कि वो कभी भी बाहर आ सकते हैं। उसने फुर्ती से जेब से चाकू निकाला और कार के पहिये में घुसेड़ने लगा।
देवराज चौहान दूसरी कार के स्टेयरिंग पर बैठ चुका था—कार स्टार्ट की।
बगल में सोहनलाल बैठा था।
तभी जगमोहन फुर्ती से वहां से हटा और दूसरी कार की पीछे वाली सीट पर जा बैठा। देवराज चौहान ने कार आगे बढ़ा दी। जगमोहन ने उस खड़ी कार का पहिया देखा। हवा कम हो रही थी। तभी उसकी निगाह हरीश मोगा पर पड़ी जो दरवाजे पर खड़ा उसे घूर रहा था। उसने पहिया पंचर करते, जगमोहन को देख लिया था।
जगमोहन ने उसे देखते हुए मुस्करा कर हाथ हिला दिया।
❑❑❑
अगले दिन देवराज चौहान और जगमोहन की आंख देर से खुली। काम खत्म हो गया था। नींद से उठने की कोई जल्दी तो थी नहीं। सुबह के नौ बज रहे थे।
"मैं चाय बनाकर लाता हूं।" जगमोहन ने कहा और किचन की तरफ बढ़ गया।
देवराज चौहान बैड से उतरा ही था कि फोन बजा।
"हैलो।" देवराज चौहान ने बात की।
"कहां हैं आप। दस दिन से आये नहीं।" दूसरी तरफ नगीना थी, देवराज चौहान की पत्नी।
देवराज चौहान के होंठों पर मुस्कान बिखर गई।
"किसी काम में व्यस्त हो गया था, लेकिन अब फुर्सत में हूं, दो घंटे में तुम्हारे पास पहुंच जाता हूं।" देवराज चौहान ने कहा।
"देवर जी को भी साथ ले आईये—मैं बढ़िया सा लंच तैयार करती हूं।" दूसरी तरफ से नगीना ने कहा।

"ठीक है।" देवराज चौहान ने कहा और फोन रख दिया।
तभी जगमोहन वहां पहुंचा।
"किसका फोन था?"
"तेरी भाभी का।"
"कोई हुक्म?"
"हमें वहां जाना है।"
"मुझे भी?"
"लंच तैयार कर रही है नगीना, उसने कहा है तो तेरे को जाना पड़ेगा ही।" देवराज चौहान मुस्कराया।
"लंच, भाभी के हाथ का! वाह-मजा आ जायेगा। दो-चार दिन वहां आराम भी हो जायेगा।"
"चाय बना के ला।"
"अभी लाया।" जगमोहन चला गया।
देवराज चौहान पोर्च में आई अखबार ले आया। अखबार वाला वहीं अखबार फैंक जाता था।
जगमोहन जब चाय बनाकर लाया तो देवराज चौहान ने अखबार का पहला पन्ना खोला हुआ था।
"कोई खास खबर?" जगमोहन पास ही चाय का प्याला रखता बोला।
"हां।" देवराज चौहान ने गहरी सांस ली।
"क्या?"
"पढ़ लो।"
जगमोहन अखबार की ओर पहले पन्ने पर नज़र पड़ते ही चिहुंक उठा।
अखबार में नागेश शोरी और सोनिया की लाशों के चेहरों की तस्वीरें थीं। खबर ये थी कि कल शाम फार्म हाउस पर दोनों की किसी ने हत्या कर दी। हत्यारे का अभी पता नहीं चल पाया है।
"R.D.X.।" जगमोहन के होंठों से निकला।
"जाहिर है, रतनचंद ने R.D.X. के हाथों से ही, उन दोनों को खत्म कराया है।"
"रतनचंद ने—ओफ्फ—कोई भी कम नहीं।" जगमोहन ने अखबार एक तरफ रखी और फोन उठाकर नम्बर मिलाने लगा। फौरन ही नम्बर मिला और राघव की आवाज कानों में पड़ी—

"हैलो।"

"शोरी और सोनिया को साफ कर दिया?" जगमोहन छूटते ही बोला।

"जगमोहन!"

"हां—मैं।"

"नोट मिलने चाहिये। काम हम हर पूरा करते हैं। रतनचंद ने कहा। हमने शाम को ही दोनों को साफ कर दिया। बड़े लोगों की लड़ाई में, अपना भी कुछ फायदा हो जाता है।"

"सच में कमीने हो।"

"वो तो मैं तुम्हें मिलने पर बताऊंगा। तुमने कल कार का टायर पंचर कर दिया था।"

"मैंने—पंचर—पागल तो नहीं हो गया क्या?" जगमोहन फोन पर ही दांत निकालकर बोला—"क्या बच्चों जैसी बातें करता है, मैं भला ऐसा घटिया काम क्यों करूंगा। ये काम तो छोटे बच्चे करते हैं।"

"हरीश मोगा ने बताया कि ये काम तुमने किया।"

"वो तो वैसे भी मुझसे खार खाता है। पहले भी वो मेरे बारे में झूठी खबरें फैलाता....।"

"हमसे पंगा लेगा तो जल्दी मरेगा।" राघव का कठोर स्वर कानों में पड़ा।

"साले तू क्या तोप है? मुझे जानता नहीं। एक बार सामने पड़ियो, तेरी खटिया जमना में फैंककर आऊंगा। साला मुझे धमकी देता है। अब की बार कार के चारों टायर पंचर करूंगा। हरामी मुझ पर रौब मारता है।" जगमोहन ने तेज स्वर में कहकर फोन बंद कर दिया।

देवराज चौहान मुस्कराता हुआ उसे देख रहा था।

"क्या हुआ?" जगमोहन ने गहरी सांस ली और प्याला उठा लिया—"राघव मुझे अकड़ दिखा रहा था।"

"तैयार हो जाओ, नगीना के पास वक्त पर पहुंचना है।" देवराज चौहान ने कहा और चाय के घूंट भरने में व्यस्त हो गया।

"रतनचंद ने जो शोरी और सोनिया की हत्या करवाई, ठीक किया उसने?" जगमोहन ने पूछा।

"मैं नहीं जानता कि ठीक किया या गलत, परन्तु खून-

खराबे की शुरूआत शोरी ने की थी। जब सारी बात रतनचंद के सामने आई तो R.D.X के पास होने का फायदा उठाया और दोनों को खत्म करवा दिया।"

उसके बाद दोनों नगीना के पास जाने के लिये तैयार होने लगे।

सोहनलाल का फोन आया। जगमोहन ने बात की।

"आज का अखबार पढ़ा?" सोहनलाल ने पूछा।

"हां। रतनचंद ने दोनों का कत्ल करवा दिया।" जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"मुझे आशा नहीं थी कि रतनचंद ऐसा कदम उठायेगा।" खैर—तीन करोड़ तो मिल गया—उसमें से थोड़ा सा मुझे दे दो।"

"तुझे क्यों?"

"मैंने सिर पर जगजीत से स्टूल खाया है, मेरा भी कुछ हिस्सा बनता है....।"

"हैलो—हैलो—।" जगमोहन एकाएक फोन पर चीखने लगा—"हैलो, आवाज नहीं आ रही। कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा।" इसके साथ ही जगमोहन ने फोन बंद कर दिया और बड़बड़ा उठा—"पता नहीं, कहां-कहां से आ जाते हैं, हिस्सा मांगने। स्टूल सिर पर खाया है तो एक-दो गिलास जूस पिला देता हूं, हिस्सा काहे का। खामखाह ही—।"

समाप्त

"केशव....दुनिया मुझे छत्तीस इंच का शैतान यूं ही नहीं कहती, शकुनि का कूटनीतिक दिमाग है मेरे पास—मैं चाहूं तो अपनी कुटिल दृष्टि से ही देखकर अन्तरिक्ष में गर्दिश करते नक्षत्रों की दिशा बदल दूं....रावण की मानिन्द इतनी ताकत मेरे बदन में है कि—चट्टान भी मेरी मुट्ठी में आकर टूटकर रेत की मानिन्द बिखर जाती है....शेषनाग की फुंकार से भी ज्यादा जहर है मेरी सांसों में—अगर फौलाद भी उसकी चपेट में आ जाये तो आग पर रखे मोम की तरह फना हो जाये....नैपोलियन-सा खौफ है मेरे राज्य की जनता के दिलों में कि—लोग मेरा नाम सुनकर जूड़ी के मरीज की तरह कांप जाते हैं....अगर मैं यहीं से फूंक भी मार दूं तो तेरा पता न चले....और तू अदना-सा वकील मेरी धरती पर आकर मेरा वजूद नेस्तनाबूद करने की बात करता है।"

मौत का शिकंजा जब केशव पण्डित के गले में पड़ा तो वह मकड़ी के जाले में उलझे भुनगे की तरह विवश होकर रह गया, उसे उस छत्तीस इंच के शैतान हर शब्द सच लगने लगा।

कैसे टूटा मौत का शिकंजा?
कैसे बचा केशव?
क्या अंजाम हुआ उस शैतान का?
हर सवाल का एक ही जवाब—